अनुक्रम

अनुवादक   डॉ० मदनलाल 'मधु'

Александр Пушкин

ИЗБРАННЫЕ ПРОИЗВЕДЕНИЯ В 2-Х ТОМАХ

Том II. Проза

на языке хинди

Pushkin A

Selected Works. In two volumes.

Volume Two Prose
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

П $\frac{70301-467}{014(01)-82}$ 758-82   4702010100

अनुक्रम

दिवंगत इवान पेत्रोविच बेल्किन की कहानियां

सम्पादक की ओर से

इवान पेत्रोविच बेल्किन की कहानियों के प्रकाशन के लिये यत्न करते हुए, जो अब पाठकों के हाथों में है, हमने चाहा कि दिवगत लेखक के जीवन का संक्षिप्त विवरण भी इनके साथ जोड़ दिया जाये और इस तरह राष्ट्रीय गद्य साहित्य-प्रेमियों की सर्वथा तर्क-संगत जिज्ञासा की भी कुछ सीमा तक तुष्टि हो जायेगी। इसी उद्देश्य से हमने इवान पेत्रोविच बेल्किन की एक नज़दीकी रिश्तेदार और उनकी सम्पत्ति की वारिस मारिया अलेक्सेयेव्ना त्राफ़ीलिना से उनके बारे में बताने का अनुरोध किया। किन्तु खेद की बात है कि वह हमें इवान पेत्रोविच बेल्किन के सम्बन्ध में कुछ भी जानकारी नहीं दे पायी, क्योंकि उनसे परिचित तक नहीं थी। उन्होंने हमें सलाह दी कि इस सिलसिले में हम एक अन्य महानुभाव से, जो इवान पेत्रोविच के मित्र रहे थे, सम्पर्क स्थापित करें। हमने ऐसा ही किया और हमें वांछित उत्तर भी मिला। इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न करके और अपनी ओर से कोई टीका-टिप्पणी जोड़े बिना गहरी समझ और मर्मस्पर्शी मैत्री के एक मूल्यवान स्मारक तथा साथ ही जीवनी के सर्वथा पर्याप्त वक्तव्य के रूप में हम इसे यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

माननीय महानुभाव!

इस महीने की १५ तारीख़ का लिखा हुआ आपका कृपापत्र २३

---

* आदर्शवाक्य १८वीं शताब्दी के प्रमुखतम नाटककार और पत्रकार देनीस इवानोविच फ़ोनवीज़िन (१७४५–१७९२) द्वारा लिखे गये 'घोंघावसन्त' सुखान्ती नाटक से लिया गया है। –स०

सारीम को पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस पत्र मे आपने मेरे मृतपू
सच्चे मित्र और गाव के पडोसी दिवगत इवान पेत्रोविच बेल्किन
जन्म और मृत्यु उनके काम-काज, घरेलू जीवन, उनकी रुचियों तथ
आचार-व्यवहार के बारे मे विस्तृत जानकारी पाने की इच्छा प्रक
की है। मैं सहर्ष आपकी यह इच्छा पूरी कर रहा हू। प्रिय महानुभाव
मुझे उनकी जो बातचीत याद है तथा जिस रूप मे मैं उन्हें अपन
स्मृति मे सहेज पाया हू वह सब कुछ आपकी सेवा मे लिखकर भेज
रहा हू।

इवान पेत्रोविच बेल्किन का गोर्यूखिनो गाव के एक प्रतिष्ठि
कुलीन घराने मे सन् १७९८ मे जन्म हुआ। उनके स्वर्गीय पिता प्योत्र
इवानोविच बेल्किन ने, जो सेना मे सेकण्ड-मेजर थे, त्राफीलिन परिवार
की कन्या पेलागेया गव्रीलोव्ना से शादी की थी। वह धनी तो नहीं,
किन्तु अपनी चादर के अनुसार पाव फैलानेवाले व्यक्ति थे और अपने
काम-काज को बहुत अच्छे ढग से सम्भालने की क्षमता रखते थे। उनके बेटे
ने *गाव के पादरी से ही अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पाई। मुझे लगता है*
कि इसी भले व्यक्ति के ससर्ग से इवान पेत्रोविच बेल्किन को पुस्तकें
पढने और मातृभाषा मे सृजन करने का शौक पैदा हुआ। १८१५ में
वे *येगेर पैदल सेना में भर्ती हुए (रेजिमेंट का नम्बर मुझे याद नहीं)*
और १८२३ तक उसी मे रहे। माता-पिता की मृत्यु के बाद, जो
कुछ ही अन्तर के बाद चल बसे थे, उन्हे सेना से अवकाश लेना पड़ा
और वे गोर्यूखिनो गाव की अपनी पैतृक जागीर पर आकर रहने लगे।

जागीर का सचालन-भार अपने हाथ में लेने के कुछ ही समय बाद
अपनी अनुभवहीनता और कोमलहृदयता के फलस्वरूप इवान पेत्रोविच
ने उसकी देख-भाल मे ढील दे दी और वह कडा अनुशासन गडबडा
गया, जो उनके दिवगत पिता ने लागू किया था। गाव के सुयोग्य और
ईमानदार मुखिया को, जिससे किसान (अपनी आदत के मुताबिक)
नाखुश थे, उन्होंने छुट्टी कर दी और *जागीर की देख-भाल का सारा*
काम अपनी बूढ़ी भडारिन को सौंप दिया। इस भडारिन ने किस्से-
कहानियां सुनाने की कला-दक्षता से उनके दिल मे अपनी जगह बना
ली थी। पचीस और पचास रूबल के नोटों के बीच फर्क न जाननेवाली
यह वृद्ध बुढ़िया अनेक किसानो के बच्चों की धर्म-मा थी और किसान

उनमे जरा भी नही डरते थे। किसानो द्वारा चुना गया नया मुखिया उन्हे हर तरह की मनमानी करने और साथ ही मालिक की आखो मे धूल झोकने मे इतनी अधिक सीमा तक मदद देता था कि इवान पेत्रोविच को जल्द ही बेगार की प्रथा से इन्कार करके हल्का-सा लगान लागू करना पड़ा। इतना होने पर भी किसानो ने उनकी दुर्बलता से लाभ उठाते हुए पहले साल अतिरिक्त रियायते हासिल कर ली और अगले वर्ष लगान का दो तिहाई से भी अधिक भाग अखरोटो-गिरियो तथा बिल-बेरियो के रूप मे निबटा दिया और फिर भी पूरा लगान नही चुकाया।

चूकि मैं इवान पेत्रोविच के स्वर्गीय पिता का भी मित्र रहा था इसलिये बेटे को सलाह-मशविरा देना भी अपना कर्त्तव्य मानता था। बहुत बार मेरा मन हुआ कि फिर से पहले जैसी व्यवस्था स्थापित करने मे, जिसे उन्होंने गड़बड़ कर दिया था, उनकी मदद करू। इसी भावना से प्रेरित होकर मैं एक दिन उनके यहा गया, हिसाब-किताब के रजिस्टर मगवाये, मक्कार मुखिया को बुलवाया और इवान पेत्रोविच की उपस्थिति मे उनकी जाच-पडताल करने लगा। जवान मालिक ने शुरू मे तो बहुत ध्यान और बडी लगन से मेरे काम मे रुचि ली। किन्तु जैसे ही हिसाब देखने से यह पता चला कि पिछले दो सालो मे किसानो की सख्या मे वृद्धि हुई है और मुर्गे-मुर्गियो तथा ढोर-डगरो की सख्या को जान-बूझकर घटा दिया गया है, तो वे इन प्रारम्भिक तथ्यो की जानकारी से ही इतने सन्तुष्ट हो गये कि आगे मेरी बात पर कान ही नही दिया। ठीक उसी क्षण मे, जब छानबीन करने और मामले की तह मे जानेवाले मेरे प्रश्नो से मक्कार मुखिया बदहवास हो गया और उसकी जबान पर ताला पड गया मैंने इवान पेत्रोविच को अपनी आरामकुर्सी पर बडे चैन से खर्राटे लेते पाया। जाहिर है कि मुझे इससे बहुत दुख हुआ। उस दिन से मैंने उनके काम-काज मे दिलचस्पी लेना बन्द कर दिया और उन्हे भगवान के भरोसे पर (जैसा कि उन्होंने स्वय भी कर रखा था) छोड दिया।

इस सबके बावजूद हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो मे कोई फर्क नही पडा। कारण कि उनकी दुर्बलता और हमारे कुलीन युवाजन की सामान्य काहिली की भर्त्सना करते हुए भी मैं सच्चे मन से इवान पेत्रोविच को प्यार करता था। ऐसे विनम्र और ईमानदार युवक को प्यार न

करना सम्भव ही नहीं था। दूसरी ओर इवान पेत्रोविच मेरी बड़ी की इज्जत करते थे और मुझे हृदय से चाहते थे। जीवन-लीला समाप्त होने तक वे मुझ से लगभग हर दिन मिलते रहे, मेरी सीधी-सादी बातों को मूल्यवान मानते रहे यद्यपि स्वभाव, विचार-चिन्तन और आचार-व्यवहार की दृष्टि से हम दोनों के बीच कोई समानता नहीं थी।

इवान पेत्रोविच बहुत ही सादा जीवन बिताते थे, सभी प्रकार की अतिशयता से दूर रहते थे। मैंने उन्हें कभी शराब के नशे में मदहोश नहीं देखा (यह हमारे क्षेत्र में अनसुना-अनदेखा चमत्कार है)। नारियों की ओर वे बहुत खिंचते थे, किन्तु स्वयं भी लड़कियों जैसे शर्मीले थे।*

उन कहानियों के अतिरिक्त, जिनका आपके पत्र में उल्लेख है, इवान पेत्रोविच अनेक अन्य पाण्डुलिपियां भी छोड़ गये हैं। उनमें से कुछ मेरे पास हैं और कुछ का उनकी मालकिन ने विभिन्न घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उपयोग कर लिया है। उदाहरण के लिये पिछले जाड़े में घर के जिस भाग में वह स्वयं रहती है उसकी सभी खिड़कियों पर इवान पेत्रोविच बेल्किन के उस उपन्यास के पहले भाग के कागज चिपके हुए थे जिसे उन्होंने कभी समाप्त नहीं किया। जहां तक मुझे याद है, जिन कहानियों का आपने उल्लेख किया है, वे उनकी पहली रचनायें थीं। इवान पेत्रोविच के कथनानुसार, इनमें से अधिकांश कहानियां सच्ची हैं और उन्होंने किसी न किसी के मुंह से सुनी हैं।** किन्तु सभी पात्रों के नाम कल्पित हैं और गांव-बस्तियों के नाम हमारे क्षेत्र से लिये गये हैं। इसीलिये कहीं मेरे गांव का भी नाम आ गया है। किन्तु किसी दुर्भावना से ऐसा नहीं हुआ, बल्कि कल्पना के अभाव के फलस्वरूप।

१८२८ की शरद ऋतु में इवान पेत्रोविच को ठण्ड लग गयी और

---

* इस सम्बन्ध में एक किस्से का भी उल्लेख किया गया है जिसे हम अनावश्यक मानते हुए यहां छाप नहीं रहे हैं। साथ ही अपने पाठक को यह विश्वास दिलाते हैं कि इस किस्से में ऐसा कुछ नहीं, जिससे इवान पेत्रोविच बेल्किन की स्मृति पर किसी प्रकार की काली छाया पड़ती हो। **(अ० स० पुश्किन की टिप्पणी।)**

** वास्तव में ही श्री बेल्किन की पाण्डुलिपि में हर कहानी के ऊपर स्वयं लेखक के हाथ से यह लिखा हुआ है—फलां-फलां व्यक्ति से

बहुत जोर के बुखार ने उन्हे धर दबाया। बहुत ही अच्छे और गोखरू आदि पुराने रोगो की चिकित्सा मे विशेष रूप से दक्ष हमारे क्षेत्र के चिकित्सक की सभी कोशिशो के बावजूद वे कूच कर गये। तीस वर्ष की आयु मे उन्होंने मेरी बाहो मे ही अपनी अन्तिम सास ली। उन्हे गोर्यूखिनो गाव के गिरजाघर के अहाते मे उनके माता-पिता की कब्रो के निकट ही दफनाया गया है।

मझोला कद, भूरी आखे, ललौहे बाल, तीखी नाक, गोरा रग और छरहरा बदन – ऐसे थे इवान पेत्रोविच।

प्रिय महानुभाव, अपने दिवगत पडोसी और मित्र के जीवन-ढग, उनकी रुचियो, आचार-विचार और रग-रूप के बारे मे मुझे यही कुछ याद है। यदि आप मेरे इस पत्र को कही उद्धृत करना उचित समझे, तो आपसे यह बिनती करता हू कि मेरे नाम का उल्लेख न करे। यद्यपि यो तो मैं लेखको का बडा आदर करता हू और उनके प्रति स्नेह-भाव भी रखता हू, तथापि अपने को उनकी पात मे शामिल नही करना चाहता और अपनी आयु को ध्यान मे रखते हुए मुझे यह शोभा भी नही देगा।

हार्दिक सम्मान-भावनाओ सहित आपका

१६ नवम्बर, १८३०
नेनारादोवो गाव

हमारे लेखक के सम्मानित मित्र की इच्छा का आदर करना अपना कर्त्तव्य मानते हुए हम उनके द्वारा दी गयी जानकारी के लिये आभार-प्रदर्शन करते है और हमे आशा है कि पाठक उनकी निश्छलता तथा नेकदिली का ऊचा मूल्याकन करेगे।

अ० पु०

सुनी गयी (यह या उपाधि और नाम तथा कुलनाम के प्रथम अक्षर)। जिज्ञासु पाठक के लिये कुछ उदाहरण प्रस्तुत है – 'डाक-चौकी का मुशी' कहानी टिटुयुलर कौसिलर अ० ग० न० ने सुनाई, 'पिस्तौल का निशाना' लेफ्टीनेंट कर्नल इ० ल० प० ने, 'ताबूतसाज' दुकान के एक विक्रेता ब० व० ने, 'बर्फीली आधी' और 'प्रेम-मिलन' कुमारी क० इ० त० ने। (अ० स० पुश्किन की टिप्पणी।)

पिस्तौल का निशाना

हमने एक-दूसरे पर गोलियां चलाईं

*बरातीन्स्की***

द्वन्द्व-युद्ध के नियमानुसार मैंने उसकी हत्या कर डालने का प्रण किया था (गोली चलाने की मेरी बारी अभी शेष थी)।

*'पड़ाव की एक शाम'***

(१)

एक बस्ती में हम तैनात थे। फौजी अफसर की ज़िन्दगी कैसी होती है, यह सब जानते हैं। सुबह सैनिक-शिक्षा, घुड़सवारी, रेजिमेंट के कमाण्डर के घर या किसी यहूदी के भटियारखाने में दिन का भोजन, शाम को शराब और ताश। उस बस्ती में न तो किसी घर के दरवाज़े हमारे लिये खुले थे और न मुहब्बत करने लायक कोई जवान लड़की ही थी। हम एक-दूसरे के यहा एकत्रित होते, जहा अपनी वर्दियों के अलावा और कुछ भी देखने को न होता।

हमारे हलके के लोगो मे सिर्फ एक ही असैनिक व्यक्ति था। उसकी उम्र लगभग पैतीस साल थी और हम उसे बुजुर्ग मानते थे। जीवन के कही अधिक अनुभव की दृष्टि से वह हम से बढ-चढ़कर था।

---

* येव्गेनी बरातीन्स्की (१८००–१८४४) – पुश्किन के कवि-मित्र। उनकी 'बॉल-नृत्य' कविता से उद्धृत पक्ति। – सं०

** अलेक्सान्द्र बेस्तुजेव-मार्लीन्स्की की 'पडाव की एक शाम' कहानी से उद्धृत पक्ति। इस लेखक ने १४ दिसम्बर, १८२५ के सशस्त्र विद्रोह में भाग लिया था और उसकी कहानी के उद्धरण द्वारा पुश्किन ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनकी सहानुभूति दिसम्बरवादियो के साथ थी। – सं०

इसके अलावा उस पर छाई रहनेवाली सामान्य उदासी, उसकी तुनुक-मिजाजी और जहरीली जबान ने भी हम जवान लोगों के दिल-दिमाग पर उसकी काफी धाक जमा दी थी। उसका जीवन किसी रहस्य से घिरा-सा था। वह रूसी प्रतीत होता था, मगर उसका नाम विदेशी था। कभी वह हुस्सार घुड सेना में रह चुका था और वहां उसने अच्छी सफलता भी पायी थी। किस कारण उसने सेना से इस्तीफा दिया और इस छोटी-सी बस्ती में आ बसा, यह कोई नही जानता था। यहां वह एकसाथ ही फटेहाल और बडे ठाठ से भी रहता। हमेशा पैदल चलता, फटा-पुराना काला फ्राककोट पहनता, मगर हमारी रेजिमेंट के सभी अफसरों के लिये अपने घर के दरवाजे खुले रखता। यह सही है कि उसके यहां खाने की मेज पर दो या तीन चीजे ही होती, जिन्हे एक भूतपूर्व सैनिक तैयार करता था, मगर दूसरी ओर शैम्पेन की नदी बहती रहती थी। किसी को यह मालूम नही था कि उसकी हैसियत क्या है, उसकी आमदनी कितनी है और कोई भी उससे यह पूछने की जुर्रत नही करता था। उसके यहां बहुत-सी किताबे थी, अधिकतर सेना-सम्बन्धी और उपन्यास। वह खुशी से उन्हे पढने के लिये दूसरों को देता, मगर कभी वापिस न मांगता और खुद भी किसी से ली हुई पुस्तक न लौटाता। पिस्तौल से गोलियां चलाना – यही उसकी सबसे बडी दिलचस्पी थी। उसके कमरों की दीवारे गोलियों से छलनी हो गयी थी और मधुमक्खियों के छत्तों की भांति लगती थी। वह जिस कच्चे घर में रहता था, उसमे सिर्फ बढिया पिस्तौलों का बडा संग्रह ही विलासिता का द्योतक था। निशानेबाजी में तो उसने ऐसा कमाल हासिल कर लिया था कि अगर वह किसी की टोपी पर नाशपाती रखकर उसे बेधने की इच्छा प्रकट करता, तो हमारी रेजिमेंट का कोई भी अफसर किसी प्रकार की दुविधा के बिना उसके सामने अपना सिर पेश कर देता। हमारे बीच बहुधा द्वन्द्व-युद्ध की चर्चा चलती, किन्तु सील्वियो (हम उसे यही नाम देगे) उसमे कभी दिलचस्पी जाहिर न करता। यह पूछने पर कि उसे कभी द्वन्द्व-युद्ध करना पडा या नही, वह रुखाई से हामी भरता, मगर कभी भी उसकी तफसीलों में न जाता। उसके चेहरे के भाव से यह स्पष्ट हो जाता कि ऐसे सवाल उसे नापसन्द हैं। हम ऐसा मानने लगे थे कि कोई किस्मत का मारा उसकी निशाने-

के लिये भगवान को धन्यवाद दीजिये कि यह घटना मेरे घर में घटी है।'

इस किस्से का क्या नतीजा होगा, हमें इसके बारे में कोई सन्देह नहीं था और हम यह जानते थे कि हमारे इस नये साथी की मौत पत्थर की लकीर है। अफसर यह कहकर बाहर चला गया कि गल्लाधी महोदय, जब और जैसे भी चाहें, अपने इस अपमान का बदला ले सकते हैं। खेल कुछ देर तक और चलता रहा, किन्तु यह अनुभव करते हुए कि हमारे मेज़बान का मन अब खेल में नहीं लग रहा, हमने एक-एक करके उनसे विदा ली और शीघ्र ही रिक्त होनेवाले स्थान की चर्चा करते हुए अपने-अपने क्वार्टरों की ओर चले गये।

अगले दिन हम घुड़सवारी के मैदान में यह पूछ-ताछ कर ही रहे थे कि किस्मत का मारा लेफ्टिनेण्ट ज़िन्दा है या नहीं कि तभी वह खुद सामने आ गया। हमने उससे भी यही पूछा कि उसके साथ क्या बीतनेवाली है। उसने उत्तर दिया कि सील्वियो की ओर से उसे कोई सूचना नहीं मिली है। हमें इससे बड़ी हैरानी हुई। हम सील्वियो के यहां गये, उसे अहाते में पाया और देखा कि वह फाटक पर चिपकाये हुए इक्के पर एक के बाद एक गोली दागता जा रहा है। वह हर दिन की तरह हम से मिला और पिछले दिन की घटना के बारे में उसने एक भी शब्द मुंह से नहीं निकाला। तीन दिन बीत गये और लेफ्टीनेण्ट अभी भी ज़िन्दा था। हम हैरान होते हुए एक-दूसरे से पूछते – क्या सील्वियो उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती नहीं देगा? किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। अफसर के मामूली-सी माफी मांग लेने पर ही वह सन्तुष्ट हो गया और उसने उससे सुलह कर ली।

युवाजन की दृष्टि में यह सील्वियो के सम्मान को बड़ा धक्का लगानेवाली बात थी। जवान लोग कायरता को सबसे कम क्षमा करते हैं, वीरता को सबसे बड़ा गुण मानते हैं और सभी तरह की कमज़ोरियों-त्रुटियों को इसके लिये माफ कर देते हैं। किन्तु धीरे-धीरे यह भूली-बिसरी बात हो गयी और सील्वियो ने हमारे बीच फिर से पहले जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली।

एक मैं ही ऐसा था जो उसके निकट नहीं हो पाया। स्वभाव से ही रोमानी कल्पना का धनी होने के कारण मैं औरों की तुलना में इस व्यक्ति के प्रति, जो किसी रहस्यमय उपन्यास का नायक प्रतीत

त्काल यहा से चल दू। इसलिये मैं आज रात को ही रवाना हो जाऊगा। आशा करता हू कि आज शाम को आखिरी बार मेरे साथ भोजन करने का अनुरोध आप अस्वीकार नही करेंगे। आपकी भी प्रतीक्षा रहेगी मुझे," उसने मुझसे कहा, "अवश्य ही आइयेगा।" इतना कहकर वह जल्दी से बाहर चला गया और हम लोग सील्वियो के यहा मिलने की बात तय करके अपने-अपने रास्ते चले गये।

मैं नियत समय पर सील्वियो के यहा पहुचा और रेजिमेंट के लगभग सभी अफसरो को वहा पाया। उसका सारा सामान बधा हुआ था और गोलियो से छलनी हुई नगी दीवारो के सिवा वहा कुछ भी नजर नही आ रहा था। हम लोग खाने की मेज के गिर्द बैठ गये, मेजबान बडे रग मे था और जल्द ही हम सब भी उसके रग मे बह गये। शैम्पेन की बोतले फटाके के साथ लगातार खुलती जाती थी, सू-सू करती और फेन उगलती शैम्पेन गिलासो मे डाली जाती तथा हम जानेवाले के लिये खूब बढ-चढकर शुभ-यात्रा और सभी तरह की सफलताओ की कामनाए करते। शाम को काफी देर से हम मेज पर से उठे। सभी लोग अपनी फौजी टोपिया पहन-पहनकर उससे विदा लेने और जाने लगे। जब मैं चलने को तैयार हुआ, तो उसने मेरा हाथ पकडकर मुझे रोक लिया और धीरे-से कहा, "मुझे आपसे कुछ बात करनी है।" मैं रुक गया।

मेहमान चले गये, हम दोनो ही रह गये, एक-दूसरे के सामने बैठ गये और अपने-अपने पाइप से धुआ उडाने लगे। सील्वियो विचारो मे डूबा हुआ था और कुछ ही देर पहले की खुशी और मस्ती का चिह्न तक भी उसके चेहरे पर नही रहा था। उदासी मे डूबा पीला चेहरा, चमकती आखे और मुह से निकलता हुआ घना धुआ, यह सब कुछ उसे शैतान-सा बना रहा था। चन्द क्षण बीत जाने पर सील्वियो ने खामोशी तोडी।

"बहुत मुमकिन है कि हमारी फिर कभी मुलाकात न हो," उसने मुझसे कहा, "जुदा होने से पहले मैं आपसे कुछ कहना चाहता हू। आपने शायद इस बात की ओर ध्यान दिया होगा कि दूसरे लोग मेरे बारे मे क्या सोचते हैं, मैं इस चीज की खास परवाह नही करता। किन्तु मैं आपको चाहता हू और आपके दिमाग मे यदि मेरे बारे में

2—

कोई गलत धारणा जड जमाये रहेगी, तो मेरे मन पर एक बोझ-सा बना रहेगा।"

वह रुका और पाइप मे तम्बाकू भरने लगा। मैं नजर भुकाये चुपचाप बैठा रहा।

"आपको यह अजीब-सा लगा होगा," उसने अपनी बात आगे बढाई, "कि मैंने उस भक्की शराबी र मे बदला लेकर अपना जी ठण्डा करने की माग क्यो नही की। आपको मानना पडेगा कि पहले गोली चलाने का हक मेरा था और इसलिये उसकी जान मेरी मुट्ठी मे बन्द थी, जबकि मेरी जान के लिये लगभग कोई खतरा नही था। अपने ऐसे सयत व्यवहार को मैं अपनी उदारता भी कह सकता था, मगर मैं भूठ नही बोलना चाहता। अगर मैं अपनी जिन्दगी को बिल्कुल खतरे मे न डाले बिना उस र को सजा दे सकता, तो मैंने किसी भी हालत मे उसे माफ न किया होता।"

मैं बडे आश्चर्य से सील्वियो को देख रहा था। उसकी ऐसी आत्म-स्वीकृति से मैं स्तम्भित रह गया था। सील्वियो कहता गया—

"बिल्कुल यही बात है। मुझे अपनी जान को खतरे मे डालने का कोई अधिकार नही है। छ साल पहले किसी ने मेरे मुह पर तमाचा मारा था। और मेरा वह शत्रु अभी तक जीवित है।"

मेरी उत्सुकता की अब कोई सीमा नही थी। "आपने उससे द्वन्द्व-युद्ध नहीं किया?" मैंने पूछा, "शायद किन्ही परिस्थितियो के कारण आपका उससे आमना-सामना नही हो सका?"

"मैंने उससे द्वन्द्व-युद्ध किया था," सील्वियो ने जवाब दिया, "और हमारे द्वन्द्व-युद्ध की निशानी भी मेरे पास है।"

सील्वियो उठा और उसने गत्ते के डिब्बे मे से सुनहरे गुच्छे और फीतेवाली लाल टोपी निकाली (वैसी ही जिसे फासीसी bonnet de police* कहते हैं), उसे सिर पर पहन लिया। वह माथे से तनिक ऊपर गोली से छिदी हुई थी।

"यह तो आपको मालूम ही है," उसने अपनी बात जारी रखी, "कि मैं हुस्सारो की रेजिमेंट न मे काम करता रहा हू। मेरे स्वभाव

---

* पुलिस की टोपी (फासीसी)।

से भी आप परिचित है – सबसे आगे रहना मेरी आदत है और चढती जवानी के दिनो मे तो यह मेरे लिये जनून ही था। हमारे जमाने मे हुल्लडबाज़ी का फैशन था और मैं इस काम में सेना मे सब का गुरु था। कौन ज्यादा शराब पी सकता है – इस बात की हम डीग हाका करते थे और एक बार तो मैंने विख्यात बुर्त्सोव से भी, जिसे कवि देनीस दवीदोव* ने अपनी रचनाओ मे अमर कर दिया है, बाजी मार ली थी। हमारी रेजिमेट में द्वन्द्व-युद्ध तो हर दिन ही होते थे और मैं उन सब मे या तो साक्षी होता या खुद हिस्सा लेता। साथी तो मुझे पूजते थे और निरन्तर बदलते रहनेवाले रेजिमेंट-कमाडरों के लिये मैं हमेशा सिर पर बनी रहनेवाली मुसीबत था।

"मैं बडे चैन (या बेचैनी) से अपनी ख्याति का मजा ले रहा था कि तभी एक धनी और जाने-माने परिवार (मैं उसका कुलनाम नही बताना चाहता हू) का नौजवान अफसर हमारी रेजिमेट मे आया। अपने जीवन मे कभी ऐसा तकदीर का सिकन्दर और इतना होनहार आदमी मैंने नही देखा! ज़रा कल्पना कीजिये – जवानी की मस्ती, समझ-बूझ, रूप का जादू, खुशी से उमडता दिल, खतरे से आख मिलानेवाली दिलेरी, गूजता हुआ कुलनाम, बेहिसाब और कभी न खत्म होनेवाला पैसा – आप स्वयं ही सोच सकते हैं कि कैसा असर डाला होगा उसने हम सब पर। मेरा सिहासन डोल उठा। मेरी ख्याति से मेरी ओर खिचकर पहले तो उसने मेरे साथ दोस्ती करनी चाही, किन्तु मैंने उसे सीधा मुह न दिया। उसने किसी प्रकार के अफसोस के बिना मुझसे किनारा कर लिया। मैं उससे नफरत करता था। रेजिमेंट और औरतो के बीच उसकी बढती प्रतिष्ठा से मैं बिल्कुल जल-भुन गया। मैं उससे झगडा मोल लेने के मौके ढूढने लगा। मैं

---

* देनीस दवीदोव – कवि और सैनिक विषयो के लेखक तथा पुश्किन के मित्र थे। १८१२ मे दवीदोव ने किसान छापामारो के साथ मिलकर एक छापामार टुकडी का नेतृत्व किया और आक्रमणकारी फ़ासीसी सेना के विरुद्ध लडाई लडी। बुर्त्सोव ने भी १८१२ के देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे भाग लिया था और दवीदोव की कविताओ मे उसका अक्सर उल्लेख मिलता है। – सं०

इस पर कोई मज़ाकी करता, तो वह भी वैसा ही करता और मुझे उसके मज़ाकी हमेशा मेरे से ज्यादा तीखी और कहीं चुभती होतीं और मज़ेदार तो वे निश्चय ही मुझसे अधिक होतीं। वह ठहाका लगाता और मैं बहुत जलता। आखिर एक पोलैंडी ज़मींदार के घर नाच के समय उसे सभी महिलाओं और विशेषकर गृह-स्वामिनी के भी मन का हार बना देखकर, जिसके साथ मेरा अपना भी प्रेम-नाटक चल रहा था, मैंने उसके कान में कोई भद्दी-सी बात कह दी। उसने गुस्से में आकर मेरे मुंह पर तमाचा जड़ दिया। हमने म्यान से तलवारें खींच लीं, महिलाएं बेहोश हो गयी और हम दोनों को ज़बर्दस्ती अलग कर दिया गया। हमने उसी रात को द्वन्द्व-युद्ध के लिये एक-दूसरे को ललकारा।

"पौ फटनेवाली थी। मैं तीन साथियों को साथ लिये हुए नियत स्थान पर खड़ा था। तेज़ी बेसब्री से मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी की राह देख रहा था कि बयान से बाहर। वसन्त के दिनों का सूरज निकल आया था और कुछ-कुछ गर्मी भी हो गयी थी। मैंने उसे दूर से आते देखा। वह पैदल आ रहा था, अपनी फौजी कमीज को तलवार की नोक पर टांगे था और सिर्फ एक गवाह उसके साथ था। हम उसकी ओर बढ़े। वह चेरियों से भरी टोपी हाथ में लिये हुए हमारे निकट आया। गवाहों ने हमें बारह कदमों की दूरी पर एक-दूसरे के सामने खड़ा कर दिया। मुझे पहले गोली चलानी थी, किन्तु मैं गुस्से से ऐसे आग-बबूला हो रहा था कि गोली चलाते वक्त मेरा हाथ नहीं डोलेगा, मुझे इसका विश्वास नहीं था। इसलिये अपने को शान्त करने के ख्याल से मैंने उसे पहले गोली चलाने का अधिकार देना चाहा। किन्तु मेरा प्रतिद्वन्द्वी इसके लिये राज़ी नहीं हुआ। चुनांचे सिक्का उछालकर बारी तय की गयी। जन्म से ही तकदीर के उस सिकन्दर को पहले गोली चलाने का हक मिला। उसने गोली चलाई और वह मेरी टोपी को छेदती हुई निकल गयी। अब मेरी बारी थी। आखिर तो उसकी ज़िन्दगी पूरी तरह मेरी मुट्ठी में थी। मैंने यह जानने की कोशिश करते हुए बहुत ग़ौर से उसको देखा कि उसके चेहरे पर घबराहट का कोई निशान भी है या नहीं... वह पिस्तौल के निशाने के सामने खड़ा था, टोपी में चुन-चुनकर पकी हुई चेरियां खा रहा था और गुठलियां थूकता था, जो मुझ तक पहुंच रही थीं। उसकी ऐसी लापरवाही से

मैं बौखला उठा। मैंने सोचा कि ऐसे आदमी की जान लेने
क्या फायदा जो उसकी जरा भी परवाह नही करता ? एक कू
मेरे मस्तिष्क मे कौंध गया। मैंने पिस्तौल नीचे कर ली। 'मु
है कि इस समय आपको मौत से कोई मतलब नही,' मैंने उस
'आप अपना नाश्ता करने मे मस्त हैं। मैं आपके इस मजे
नही डालना चाहता।' – 'आपके ऐसा करने से जरा भी ख
पडेगा,' उसने मेरी बात काटी, 'गोली चलाइये। वैसे, आप
मुझ पर गोली चलाने का आपका यह हक हमेशा बना रहेगा।
चाहेंगे, मैं आपके सामने हाजिर हो जाऊगा।' मैंने साक्षियो से
इस समय गोली नही चलाना चाहता और द्वन्द्व-युद्ध यही खत्म

"मैं सेना से मुक्त होकर इस छोटी-सी जगह पर आ
से एक दिन भी ऐसा नही बीता कि उससे बदला लेने का
दिमाग मे न आया हो। अब वह घडी आ गई है "

इतना कहकर सील्वियो ने अपनी जेब से उसी सुबह
प्राप्त हुआ एक पत्र निकाला और मुझे पढने को दिया।
किसी ने (सम्भवत उसके वकील ने) उसे सूचित किय
"अमुक व्यक्ति" शीघ्र ही एक सुन्दर युवती से विवाह कर

"आपने अनुमान लगा लिया होगा," सील्वियो ने क
'अमुक व्यक्ति' कौन है। मैं मास्को जा रहा हू। देखेंगे वि
पहले भी वह उसी तरह मौत का सामना करेगा या नही,
चेरिया खाते हुए उसने किया था।"

इन शब्दो के साथ ही सील्वियो उठकर खडा हो गया, उ
टोपी फर्श पर फेंक दी और पिजरे मे बन्द शेर की तरह
इधर-उधर आने-जाने लगा। मैं बुत बना-सा उसकी बाते
था – अजीब और एक-दूसरी के प्रतिकूल भावनाए मेरे मन
कर रही थी।

नौकर ने कमरे मे आकर बताया कि घोडे जुत गये हैं
ने बहुत स्नेहपूर्वक मुझसे हाथ मिलाया और हमने एक-दूसरे
वह घोडा-गाडी मे जा बैठा जिसमे दो सूटकेस रखे हुए
पिस्तौलें थी और दूसरे मे उसका निजी सामान। हमने एक
एक-दूसरे से विदा ली और घोडे सरपट दौडने लगे।

(२)

कई साल बीत गये और घरेलू परिस्थितियों से मजबूर हो
मैं न जिले के एक गरीब गाव मे बस गया। जागीर की देख-भ
करता, किन्तु पहले की मस्त और हगामो से भरी हुई अपनी जिन्द
को याद करके दबी-घुटी टीस अनुभव किये बिना न रह पाता। नि
एकाकीपन मे पतझर और जाडे की शामे बिताने का आदी हो पा
मेरे लिये सबसे ज्यादा मुश्किल था। दोपहर के खाने तक तो मैं कि
तरह वक्त बिता लेता, मुखिया से बातें करता, काम-काज से घोड
गाडी में इधर-उधर आता-जाता, नये धन्धो को देखने के लिये चक्क
लगाता, किन्तु जैसे ही झुटपुटा होने लगता, मेरी समझ में यह
आता कि मैं क्या करू। अलमारियो के नीचे और सामान के कमरे
मुझे जो थोडी-सी किताबे मिली थी, वे तो बार-बार पढने से मुझे
जबानी याद हो गयी थी। भण्डारिन किरीलोव्ना को जितने भी किस्से
कहानिया याद थे, उन्हें वह दसियो बार सुना चुकी थी और देहाती
औरतो के गीतो-गानो से मैं गहरी उदासी मे डूब जाता था। मैंने शराब
का सहारा लेना चाहा, लेकिन इससे मेरे सिर मे दर्द होने लगता था।
इसके अलावा मुझे यह भी मानना चाहिये कि ऊब के कारण कही
शराबी न बन जाऊ, मैं इस चीज से भी डरता था। मेरा मतलब
ऐसे "गये-बीते" शराबियो मे था, जिनकी बहुत-सी मिसाले हमारे इलाके
में मौजूद थी। इसी तरह के दो-तीन "गये-बीते" पियक्कडो के अलावा
मेरे कोई अन्य पडोसी थे नही और उनकी बातचीत का ज्यादा हिस्सा
हिचकिया लेने और आहे भरने में ही गुजरता था। इनकी सगत से
तो अकेले रहना ही कही बेहतर था।

मेरे यहा से चार वेर्स्ता यानी लगभग छ किलोमीटर की दूरी पर
काउंटेस ब की सम्पन्न जागीर थी। किन्तु वहा केवल कारिन्दा
ही रहता था और काउंटेस तो अपनी शादी के पहले साल सिर्फ एक
बार ही जागीर पर आई थी और सो भी एक महीने से अधिक वहा
नही रही थी। ऐसा होने हुए भी मेरे एकाकीपन के दूसरे वसन्त मे
यह अफवाह फैली कि काउंटेस अपने पति के साथ पूरी गर्मी के लिये गाव
आनेवाली है। वास्तव मे ही जून महीने के शुरू मे वे गाव आ गये।

धनी पडोसी का आगमन गाववासियो के लिये एक युगान्तरकारी घटना होता है। जमीदार और उनके घर-बार के लोग ऐसे पडोसी के आने के दो महीने पहले से और जाने के तीन साल बाद तक इसकी चर्चा करते रहते है। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, तो मैं खुलकर मानता हू कि जवान और खूबसूरत पडोसिन के आने की खबर ने मेरे दिल मे बडी हलचल पैदा कर दी। मैं बडी बेचैनी से उसे देख पाने का इन्तजार करने लगा और इसलिये उसके आने के पहले ही इतवार को दोपहर का खाना खाने के बाद गाव की ओर रवाना हो गया ताकि निकटतम पडोसी और विनम्र सेवक के रूप मे अपने को उनके सामने पेश कर सकू।

नौकर ने मुझे काउट के अध्ययन-कक्ष मे ले जाकर बिठा दिया और स्वय मेरे बारे मे सूचना देने के लिये अन्दर चला गया। बडा-सा कमरा खूब बढिया ढग से सजा हुआ था। दीवारो के करीब किताबो से भरी अलमारिया रखी थी, हर अलमारी पर कासे की मूर्ति सजी थी, सगमरमर के आतिशदान के ऊपर खासा बडा दर्पण टगा था, हरे रग की बनात से मढे हुए फर्श पर कालीन बिछे थे। अपने गरीबी के वातावरण मे रहते हुए मैं इस तरह के ठाठ-बाट का आदी नही रहा था, बहुत समय से मैंने परायी दौलत का ऐसा रग भी नही देखा था, इसलिये मैं कुछ सहम-सा गया और ऐसे धडकते दिल से काउट की राह देखने लगा, जैसे किसी छोटे-से नगर से आनेवाला प्रार्थी मन्त्री के बाहर निकलने का इन्तजार करता है। दरवाजा खुला और कोई बत्तीस साल का सुन्दर पुरुष कमरे मे दाखिल हुआ। काउट अपनत्व और मैत्री का भाव लिये मेरे निकट आया। मैंने अपनी घबराहट पर काबू पाने की कोशिश की और अपना परिचय देना चाहा, किन्तु इसी बीच उसने अपना परिचय दे दिया। हम दोनो बैठ गये। उसके बातचीत के सहज और स्नेहपूर्ण अन्दाज से एकाकी जीवन बिताने के कारण मुझमे पैदा हुई झेप शीघ्र ही दूर हो गयी और मैं अपनी सामान्य-स्वाभाविक स्थिति मे आने लगा कि काउटेस ने कमरे मे प्रवेश किया और पहले से भी कही अधिक घबराहट ने मुझे दबोच लिया। वह तो सचमुच ही बडी सुन्दर थी। काउट ने मेरा परिचय दिया। मैंने अपने को बेतकल्लुफ जाहिर करना चाहा, लेकिन मैं बेतकल्लुफी का जितना

धिक ढोंग करता था, उतना ही ज्यादा अटपटापन महसूस करता था।
ने साथ किसी प्रकार की औपचारिकता न बरतने और अच्छे पड़ोसी
ा सा व्यवहार करते हुए उन्होंने मुझे सम्भलने और नये परिचय
ा अभ्यस्त होने का समय देने के लिये आपस में बातचीत शुरू कर
ी। इसी बीच मैं किताबों और तस्वीरों पर नजर दौड़ाने लगा।
स्वीरों की मुझे कोई खास जानकारी हो, ऐसी बात नहीं है, लेकिन
क तस्वीर ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उसमें स्विटज़रलैंड
ा कोई दृश्य अंकित था, पर मुझे चित्र ने नहीं, बल्कि इस बात
आश्चर्यचकित किया कि यह एक के ऊपर एक दो गोलियों से छिदा
आ था।

"यह हुआ न बढ़िया निशाना," मैंने काउंट को सम्बोधित करते
ए कहा।

"हां, बहुत बढ़िया निशाना है," उसने जवाब दिया। "आप
ी अच्छे निशानेबाज हैं क्या?" काउंट ने पूछा।

"हां, कुछ बुरा नहीं," मैंने इस बात से खुश होते हुए कि बात-
ीत का सिलसिला आखिर तो मेरे मनपसन्द विषय की ओर मुड़
या है, उत्तर दिया। तीस कदम की दूरी से तो ताश के पत्ते के बिन्दु
ो छेद डालूगा। जाहिर है कि ऐसी पिस्तौल से जिस पर मेरा हाथ
धा हुआ हो।"

"सच?" काउंटेस ने बड़ी गम्भीरता से जानना चाहा और फिर
ति से पूछा, "मेरे प्यारे, क्या तुम भी तीस कदम की दूरी से ऐसा
निशाना लगा सकते हो?"

"कभी आजमाकर देखेंगे," काउंट ने जवाब दिया। "अपने
ज़माने मे मैं भी कुछ बुरा निशानेबाज नही था, लेकिन अब तो पिछले
चार साल से कभी पिस्तौल हाथ मे नही ली।"

"ओह, तब तो मैं शर्त लगाकर यह कह सकता हू कि, हुज़ूर,
तीस कदम की दूरी से भी ताश के पत्ते को नहीं छेद सकेंगे – पिस्तौल
तो इस बात की माग करती है कि हर दिन उससे अभ्यास किया जाये।
अपने तजरबे से मैं यह जानता हूं। अपनी रेजिमेंट मे मुझे एक बहुत
अच्छा निशानेबाज माना जाता था। एक बार ऐसा हुआ कि पूरे एक
महीने तक मैं पिस्तौल हाथ मे नही ले पाया – मेरी पिस्तौलें मरम्मत

के लिये गयी हुई थी। जानते हैं, हुज़ूर, कि इसका क्या नतीजा निकला? इसके बाद जब मैंने पहली बार निशानेबाज़ी शुरू की, तो पच्चीस कदम की दूरी से ही मैं लगातार चार बार बोतल का निशाना भी न साध सका। बडी फडकती हुई बात कहने और चुटकिया लेनेवाला हमारा कप्तान वहा मौजूद था। वह बोला, 'मेरे भाई, बात साफ है। तुम्हे बोतल से इतना लगाव है कि उस पर गोली नही चला पाते।' नही, हुज़ूर, निशानेबाज़ी का अभ्यास तो लगातार करते रहना चाहिये, नही तो मामला चौपट हो जायेगा। अपनी ज़िन्दगी मे जिस सबसे अच्छे निशानेबाज़ से मेरा वास्ता पडा, वह दोपहर के खाने के पहले कम से कम तीन गोलिया हर रोज़ चलाता था। उसके लिये यह वैसा ही नियम था, जैसे भोजन के पहले वोदका का जाम।"

काउट और काउटेस इस बात से खुश थे कि मैं झेप-मुक्त होकर बातचीत करने लगा था।

"किस तरह की निशानेबाज़ी करता था वह?"

"किस तरह की? कभी-कभी ऐसा होता था, हुज़ूर, कि वह किसी मक्खी को दीवार पर बैठे देखता – आप हस रही है काउटेस? कसम खाकर कहता हू कि यह बिल्कुल सच बात है। वह मक्खी को देखता और नौकर को पुकारता, 'कूज्का, मेरी पिस्तौल लाओ!' कूज्का भरी हुई पिस्तौल लाता। वह गोली दागता और मक्खी का दीवार पर ही भुरकस हो जाता।"

"यह तो कमाल की बात है!" काउट ने कहा, "उसका नाम क्या था?"

"सील्वियो, हुज़ूर।"

"सील्वियो!" अपनी कुर्सी से उछलकर खडा होता हुआ काउट चिल्ला उठा, "आप सील्वियो को जानते थे?"

"जानता कैसे नही था, हुज़ूर। हम तो अच्छे दोस्त थे। हमारी रेजिमेंट मे उसे अपना साथी, बन्धु ही माना जाता था। अब पिछले पाच साल से मुझे उसके बारे मे कोई खबर नही मिली। तो हुज़ूर, मतलब यह हुआ कि आप भी उसे जानते थे?"

"जानता था, खूब अच्छी तरह से जानता था। उसने आपको कभी यह नही बताया था लेकिन नही, शायद ही उसने ऐसा

किया हो – उसने आपको एक बहुत ही अजीब किस्सा नहीं सुनाया था?

'बात-चीत के वक्त किसी छैले ने उसके मुंह पर तमाचा जड़ दिया था यही तो नहीं हुजूर?"

उसने आपको उस छैले का नाम बताया था?"

'नहीं हुजूर, नाम तो नहीं बताया ओह, हुजूर," मामले की तह में छिपी सच्चाई का अनुमान लगाते हुए मैं कहता गया, "माफी चाहता हूं मैं नहीं जानता था कहीं आप ही तो वह नहीं हैं?."

'हां, वह मैं ही हूं,' काउंट ने बड़ी खिन्नता से उत्तर दिया, "और गोली से छिदी हुई यह तस्वीर हमारी आखिरी मुलाकात की निशानी है "

"ओ, मेरे प्यारे," काउंटेस ने कहा, "भगवान के लिये यह किस्सा नहीं सुनाओ। उसे सुनते हुए मेरा दिल कांपने लगता है।"

"नहीं," काउंट ने काउंटेस की बात काटी, "मैं सब कुछ बताऊंगा। इन्हें यह मालूम है कि कैसे मैंने इनके दोस्त की बेइज्जती की थी। अब इन्हें यह भी मालूम हो जाना चाहिये कि सील्वियो ने किस तरह मुझसे इसका बदला लिया।"

काउंट ने एक आरामकुर्सी मेरी ओर बढ़ा दी और मैंने बड़ी उत्सुकता से यह कहानी सुनी।

"पांच साल पहले मैंने शादी की थी। पहला महीना, the honey-moon, यानी मधुमास मैंने यहां इस गांव में बिताया। मेरे जीवन के मधुरतम क्षण और एक बहुत ही कटु स्मृति इस घर के साथ जुड़ी हुई है।

"एक शाम को हम दोनों एकसाथ घुड़सवारी के लिये निकले। मेरी पत्नी का घोड़ा कुछ अड़ने और बिदकने लगा। यह डर गयी, इसने घोड़े की लगामें मुझे दे दी और पैदल ही घर को चल दी। मैं अपने घोड़े पर ही आगे-आगे बढ़ चला। अहाते में मुझे एक घोड़ागाड़ी खड़ी दिखाई दी। मुझे बताया गया कि मेरे अध्ययन-कक्ष में एक व्यक्ति बैठा है, जो अपना नाम नहीं बताना चाहता, किन्तु जिसने सिर्फ इतना ही कहा है कि उसे मुझसे कुछ काम है। मैं कमरे में गया और वहां अंधेरे में धूल से लथपथ और बढ़ी हुई दाढ़ीवाले एक व्यक्ति को

अपने सामने पाया। वह यहा, आतिशदान के करीब खडा था। उसके चेहरे-मोहरे को पहचानने की कोशिश करते हुए मैं उसके निकट गया। 'काउट, तुमने मुझे नही पहचाना?' उसने कापती-सी आवाज मे पूछा। 'सील्वियो!' मैं कह उठा और स्वीकार करता हू, मैंने अनुभव किया कि कैसे मेरे रोगटे खडे हो गये है। 'हा, मैं वही हू,' उसने जवाब दिया, 'मैं अपना हिसाब चुकाने आया हू, मुझे अपनी पिस्तौल की गोली से मुक्त करना है। तुम तैयार हो?' उसकी बगलवाली जेब मे पिस्तौल दिखाई दे रही थी। मैंने बारह डग भरे और वहा कोने मे जाकर खडा हो गया। मैंने उससे अनुरोध किया कि वह झटपट, मेरी पत्नी के लौटने से पहले ही गोली चला दे। किन्तु उसने जल्दी नही की, रोशनी लाने के लिये कहा। मोमबत्तिया जला दी गयी। मैंने दरवाजे को ताला लगा दिया, किसी के भी भीतर आने की कडी मनाही कर दी और फिर उससे गोली चलाने का अनुरोध किया। उसने पिस्तौल निकालकर निशाना साधा मैं हर क्षण गिन रहा था अपनी पत्नी के बारे मे सोच रहा था बहुत ही भयानक एक मिनट बीता! सील्वियो ने हाथ नीचे कर लिया। 'बडे दुख की बात है,' उसने कहा, 'कि पिस्तौल मे चेरियो की गुठलिया नही भरी हैं गोली बहुत भारी है। मुझे लग रहा है कि यह द्वन्द्व-युद्ध नही है, बल्कि मैं आपकी हत्या कर रहा हू। निहत्थे पर निशाना साधने की मुझे आदत नही। हम फिर से शुरू करते हैं, पर्चिया डाल लेते हैं कि कौन पहले गोली चलायेगा।' मेरा सिर चकरा रहा था... जहा तक मुझे याद है, मैं राजी नही हुआ आखिर हमने एक अन्य पिस्तौल मे गोली भरी और दो पर्चियो की गोलिया-सी बनायी। उसने उन्हें उसी टोपी मे डाल दिया जिसे मैंने कभी छेद डाला था। फिर से मुझे ही पहले गोली चलाने का अधिकार मिल गया। 'काउंट, तुम तकदीर के बडे सिकन्दर हो,' उसने ऐसी व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा जिसे मैं कभी नही भूल पाऊगा। मेरे लिये यह समझ पाना कठिन है कि उस समय मुझे क्या हो गया था और कैसे मैं यह सब करने को विवश हो गया था... किन्तु मैंने गोली चलाई और वह इस तस्वीर मे जा लगी।" (काउंट ने गोलियो से छिदे चित्र की ओर उगली से इशारा किया। उसका चेहरा तमतमाया हुआ था, काउटेस के चेहरे का रग

उसके दुपट्टे से भी अधिक सफेद पड़ गया था और मैं स्तम्भित-सा होकर चीखे बिना न रह सका।)

"मैंने गोली चलाई," काउंट ने अपनी बात जारी रखी, "और भला हो भगवान का, मेरा निशाना चूक गया। तब सील्वियो... (इस क्षण वह सचमुच बहुत भयानक प्रतीत हो रहा था) सील्वियो मेरी ओर निशाना साधने लगा। अचानक दरवाज़ा खुल गया, माशा भागती हुई भीतर आई और चीख मार कर मेरे गले से लिपट गयी। इसके आने से मैं फौरन सम्भल गया। 'मेरी प्यारी,' मैंने पत्नी से कहा, 'क्या तुम देख नही रही हो कि हम यो ही मज़ाक कर रहे हैं। देखो तो तुम कैसे सहम गयी हो! जाओ, पानी का एक गिलास पीकर वापस आ जाओ। मैं अपने पुराने दोस्त और साथी से तुम्हारा परिचय करवा दूगा।' माशा को मेरी बात पर विश्वास नही हुआ। 'यह बताइये कि मेरे पति सच कह रहे हैं न?' माशा ने रौद्र रूप धारण किये सील्वियो को सम्बोधित करते हुए पूछा, 'क्या यह सच है कि आप दोनो मज़ाक कर रहे हैं?'—'यह तो हमेशा मज़ाक करते हैं, काउटेस,' सील्वियो ने माशा को उत्तर दिया। 'एक बार मज़ाक मे ही इन्होने मेरे मुह पर तमाचा मारा था, मज़ाक करते हुए ही मेरी इस टोपी को छेद डाला था, मज़ाक मे ही अभी मुझ पर चलाई गयी गोली का निशाना चूक गया। अब मैं मज़ाक करना चाहता हू' इतना कहकर उसने मुझ पर निशाना साधना चाहा . पत्नी के सामने ही! माशा उसके कदमो पर जा गिरी। 'माशा, उठो, कुछ शर्म करो!' मैं पागलो की तरह चिल्ला उठा। 'और आप, महानुभाव, इस बेचारी औरत से खिलवाड करना बन्द करेगे या नही? गोली चलायेगे या नही?'—'नही चलाऊगा,' सील्वियो ने जवाब दिया। 'मेरे लिये इतना ही काफी है—मैंने तुम्हे घबराये और सहमे हुए देख लिया, तुम्हे अपने पर गोली चलाने को मजबूर कर दिया, मेरे लिये इतना ही बहुत है। याद रखोगे मुझे। अब तुम जानो और तुम्हारी आत्मा।' इतना कहकर वह बाहर जाने लगा, लेकिन दरवाज़े के पास रुका, उसने उस चित्र की ओर देखा जिसे मैंने छेद डाला था, सरसरी निशाना साधे बिना उस पर गोली चलाई और गायब हो गया। मेरी पत्नी बेहोश पड़ी थी, नौकरों-चाकरो को उसे रोकने की हिम्मत

नहीं हुई, वे सब भयभीत-से उसे देखते रहे। बाहर जाकर उसने अपने कोचवान को पुकारा और मेरे सम्भल पाने से पहले ही गायब हो गया।"

काउट ने इससे आगे कुछ नहीं कहा। इस तरह मुझे उस कहानी के अन्त का पता चला, जिसके आरम्भ ने कभी मेरे मन पर गहरी छाप छोडी थी। इसके नायक से मेरी फिर कभी भेट नहीं हुई। कहते हैं कि अलेक्सान्द्र इप्सिलान्ती* के विद्रोह के समय सील्वियो ने एक फौजी दस्ते की कमान सम्भाली और स्कुल्यानी के निकट हुए युद्ध मे खेत रहा।

बर्फ़ीली आंधी

करते हुए हवा से बातें, ऊबड-खाबड धरती पर
रौंद-रौंद हिम-परतों को
घोडे दौडे जाते हैं
नज़र घूमती एक तरफ़ को
गिरजाघर हम पाते हैं।

सहसा उठी बर्फ की आंधी
ढेरो बर्फ गिराती है,
सरसर पख हिलाता काला कौवा उडता जाता है
उस स्लेज के ऊपर, जो तेज़ी से दौडी जाती है।
काय-काय मे उसकी दुख है,
है सकेत अशुभ कोई
घोडे इसको अनुभव करते, और तेज़ होते जाते,
दूर अंधेरे को हैं उनकी आखे मानो चीर रहीं
भय से ऊपर उठे अयालो को हैं वे तो लहराते

ज़ुकोव्स्की**

---

* अलेक्सान्द्र इप्सिलान्ती – रूसी सेना के एक जनरल, जिन्होंने तुर्क कब्ज़ावरो से यूनान की मुक्ति के लिये लडनेवाले एक गुप्त क्रान्तिकारी सगठन का नेतृत्व किया। तुर्क सेना ने प्रूत नदी के तटवर्ती स्कुल्यानी स्थान पर २६ जून, १८२१ को इस पलटन को कुचल दिया था। – स०

** प्रसिद्ध रूसी कवि और अनुवादक वसीली जुकोव्स्की (१७८५–१८५२) की 'स्वेत्लाना' कविता में। – स०

हम सभी के न भूलनेवाले सन् १८११ के अन्त में गव्रीला गव्रीलोविच र. नाम के एक सज्जन व्यक्ति नेनारादोवो गाव की अपनी जागीर पर रहते थे। अपनी खुशमिजाजी और मेहमाननवाजी के लिये वे आस-पास सारे इलाके में मशहूर थे। उनके पड़ोसी खाने-पीने और पाच कोपेक की बाजी लगाकर उनकी पत्नी के साथ बोस्टन खेलने के लिये लगातार उनके घर आते रहते। कुछ उनकी सुघड़-सुडौल, पम्पई रग की सत्रह वर्षीया बेटी मारिया गव्रीलोव्ना को एक नजर देख लेने के लिये भी आते। वह धनी भावी पत्नी थी और बहुतों के दिल उसे अपने या अपने बेटो के लिये पा लेने को ललकते।

मारिया गव्रीलोव्ना फ्रासीसी उपन्यासो के रग मे रगकर बड़ी हुई थी और इसलिये स्वाभाविक था कि जल्द ही मुहब्बत के जाल मे फस गयी। एक मामूली और गरीब फौजी अफसर को, जो छुट्टी पर अपने गाव आया हुआ था, उसने अपना दिल दे दिया। जाहिर है कि उस नौजवान के दिल मे भी प्रेम की वैसी ही आग सुलग रही थी। उसकी प्रेम-पात्री के माता-पिता ने ज्योही एक-दूसरे के प्रति उनके आपसी झुकाव को देखा, त्योही बेटी से कह दिया कि वह उसका ध्यान तक दिमाग से निकाल दे और अब वे अपने घर आने पर उस नौजवान का अवकाश-प्राप्त छोटे न्यायाधीश से भी बुरी तरह स्वागत करते।

हमारे इन दोनो प्रेमियो के बीच पत्र-व्यवहार चलता और वे हर दिन सनोवरो के झुरमुट या पुराने गिरजे के करीब एकान्त मे मिलते। वहा वे जीवन के अन्तिम क्षण तक प्रेम करने की कसमे खाते, किस्मत का रोना रोते और तरह-तरह की योजनाये बनाते। इसी तरह से एक-दूसरे को चिट्ठिया लिखते और बातचीत करते हुए वे इस नतीजे पर पहुचे (जो सर्वथा स्वाभाविक था) – अगर हम एक-दूसरे के बिना जिन्दा नही रह सकते और कठोर माता-पिता की इच्छा हमारे सुखी जीवन के मार्ग मे बाधा बनती है, तो क्यो हम इसके बिना ही काम न चला ले? स्पष्ट है कि यह विचार फौजी नौजवान के दिमाग मे ही आया और मारिया गव्रीलोव्ना की रोमानी कल्पना को भी यह बहुत अच्छा लगा।

जाड़ा आने पर इन दोनो की मुलाकाते बन्द हो गयी और इसलिये पत्र-व्यवहार मे अधिक सजीवता आ गयी। व्लादीमिर निकोलायेविच

अपने हर पत्र मे उससे अनुरोध करता कि वह उसकी पत्नी बन जाये, चोरी-छिपे उससे शादी कर ले, कुछ समय के लिये वे दोनो छिपे रहें, इसके बाद उसके मा-बाप के कदमो पर जा गिरे, जिनका दिल आखिर प्रेमियो की ऐसी सच्ची निष्ठा तथा दुख से पिघल जायेगा और वे अवश्य ही उनसे यह कहेगे, "बच्चो, आओ, हमारे गले से लग जाओ।"

मारिया गव्रीलोव्ना बहुत समय तक डावाडोल रही, घर से भाग जाने की बहुत-सी योजनाओ से उसने इन्कार कर दिया। आखिर वह राज़ी हो गयी। योजना यह बनी कि नियत दिन पर शाम का भोजन न करे और सिर दर्द का बहाना करके अपने कमरे मे चली जाये। उसकी नौकरानी को भी षड्यन्त्र मे शामिल किया जाये, पिछले दरवाज़े से दोनो बाग मे चली जाये, जहा उन्हे घोडा-गाडी तैयार खडी मिलेगी और वे दोनो उसमे बैठकर नेनारादोवो गाव से पाच वेर्स्ता* की दूरी पर जाद्रिनो गाव के गिरजे मे पहुच जाये। व्लादीमिर वही पर उनका इन्तज़ार करेगा।

नियत दिन की पूर्ववेला मे मारिया गव्रीलोव्ना को सारी रात नीद नही आई – अपने कपडो-लत्तो को बाध कर तैयार करती रही और उसने दो पत्र लिखे। एक तो अपनी भावुक-सवेदनशील सहेली को और दूसरा अपने मा-बाप को। उसने बहुत ही मर्मस्पर्शी शब्दो मे उनसे विदा ली, अदम्य प्रेम-प्रवाह के वश मे होकर ऐसी हरकत करने के लिये माफी मागी और अन्त मे लिखा कि उसके जीवन का सबसे सुखद क्षण वह होगा, जब उसे अपने प्यारे माता-पिता के पैरो पर गिरने का सौभाग्य प्राप्त होगा। दोनो पत्रो को उसने तूला की वह मुहर लगाकर बन्द किया, जिसपर एक अच्छे आलेख के साथ दो दहकते हुए दिल अकित थे। इसके बाद वह बिस्तर पर जा गिरी और पौ फटने के समय उसे झपकी आ गयी। किन्तु भयानक सपनो के कारण रह-रहकर उसकी आख खुल जाती। उसे सपने मे दिखाई देता कि जब वह शादी के लिये रवाना होने को स्लेज मे जाकर बैठी, उसी क्षण उसके पिता ने उसे रोक लिया, बडी तेज़ी और निर्दयता से बर्फ पर घसीटते हुए ले गये और ले जाकर अधेरे, अतल तहखाने मे

* वेर्स्ता – एक किलोमीटर से कुछ अधिक। – अनु०

फेर दिया और वह बड़ी तेज़ी से अंधेरे में नीचे ही नीचे धसक
चली गयी तथा उसके दिल की गति मानो बन्द हो गयी। वा फि
उसे पीले-ज़र्द चेहरेवाला तथा खून से लथपथ व्लादीमिर घास पर प
नज़र आता। वह दम तोड़ता हुआ हृदय-विदारक स्वर में यह अनुन
विनय करता सुनाई देता कि उसके साथ जल्दी से शादी कर ले
एक के बाद एक इसी तरह के दूसरे, अटपटे और बेमानी सपने उ
सामने आते रहे। आखिर वह अन्य दिनों की तुलना में बड़ी अधि
पीला मुख और सिर में सचमुच ही दर्द लिये हुए बिस्तर से उ
माता-पिता से उसकी परेशानी की यह हालत छिपी न रह सकी
प्यार और चिन्ता से उनके लगातार यह पूछने पर कि "माशा, तु
क्या हुआ है? तुम बीमार तो नहीं हो?" उसका दिल टुकड़े-टु
हुआ जाता था। उसने उन्हें शान्त करना चाहा, अपने को खुश दि
करने का प्रयास किया, किन्तु सफल न हो सकी। शाम हो गई
इस ख्याल से कि वह अपने परिवारवालों के बीच आज आखिरी दि
बिता रही है, उसका हृदय द्रवित हुआ जाता था। वह मुश्किल से सा
ले पा रही थी और मन ही मन अपने माता-पिता, घर की सभी चीज
और पूरे घरेलू वातावरण से विदा ले रही थी।

शाम का भोजन परोसा गया, माशा का दिल ज़ोर से धड़
लगा। उसने कांपते होंठों से यह कहा कि उसका भोजन करने को म
नहीं है और वह माता-पिता से विदा लेने लगी। उन्होंने बेटी को चू
और हर दिन की भांति उसे आशीर्वाद दिया। माशा बड़ी मुश्किल
अपने आंसू रोक पायी। अपने कमरे में आकर वह कुर्सी पर ढह प
और फूट-फूटकर रोने लगी। नौकरानी ने उसे शान्त करने और उस
प्रफुल्लता लाने का प्रयास किया। पूरी तैयारी हो चुकी थी। आध घ
बाद माशा को अपने माता-पिता के घर, अपने कमरे और एक युव
के शान्त जीवन से सदा के लिये विदा ले लेनी थी बाहर ज़ोर
बर्फ़ीली आंधी चल रही थी, हवा चीखती-चिल्लाती थी, पट ज़
से हिलते और बजते थे। हर चीज़ मानो आतंक और अशकुन का सं
कर रही थी। शीघ्र ही घर में सब कुछ शान्त हो गया, सब सो गये
माशा ने शाल लपेटी, गर्म गाउन पहना, हाथ में अपनी मंजूषा
और पिछले दरवाज़े से बाहर आ गयी। दो पोटलियां उठाये हुए नौकरान

भी उसके पीछे-पीछे बाहर निकल आई। वे बाग मे गयी। बर्फीली आंधी शान्त नही हुई थी, तेज हवा सामने से थपेड़े मार रही थी मानो युवा अपराधिनी को बरबस रोक रही हो। ये दोनो बडी कठिनाई से बाग के सिरे तक पहुंची। सड़क पर स्लेज घोड़ा-गाडी इनकी राह देख रही थी। बुरी तरह से ठिठुरे हुए घोडे निश्चल नही खडे रह पा रहे थे। बमो के सामने इधर-उधर लपकता हुआ व्लादीमिर का कोचवान उन्हे किसी तरह से काबू मे रखने की कोशिश कर रहा था। कोचवान ने मारिया और उसकी नौकरानी को बैठने, पोटलियो तथा मजूषा को रखने मे उनकी मदद की, लगामे सम्भाली और घोडे मानो उड चले। मारिया को उसके भाग्य और कोचवान तेर्योश्का की होशियारी पर छोडकर अब हम अपने जवान प्रेमी की ओर मुड़ते हैं।

व्लादीमिर का पूरा दिन घोड़ा-गाडी मे इधर-उधर दौड-धूप करते ही बीता। सुबह वह जाद्रिनो के पादरी के पास गया – किसी तरह उसे शादी करवाने के लिये राजी किया और इसके बाद आस-पास के जमीदारो मे गवाहों की खोज करने गया। वह सब से पहले घुडसवार सेना के सेवानिवृत्त छोटे फौजी अफसर, जिसकी उम्र चालीस साल थी, द्राविन के यहा पहुचा। द्राविन खुशी से गवाह बनने को तैयार हो गया। उसने राय जाहिर की कि ऐसे साहसिक कार्य ने उसके दिल मे पुराने वक्तो और हुस्सारो के हगामो-शरारतो की याद ताजा कर दी है। उसने व्लादीमिर से दोपहर का भोजन करने के लिये रुक जाने का अनुरोध किया और उसे विश्वास दिलाया कि बाकी दो गवाहो की समस्या भी हल हो जायेगी। वास्तव मे ही भोजन समाप्त होते न होते बडी-बडी मूछोवाला श्मीत नाम का पटवारी, जो एडदार जूते पहने था, और उसके साथ ज़िले के पुलिस अफसर का सोलह वर्षीय बेटा भी यहा आ गये। यह नौजवान कुछ ही समय पहले घुडसवारो की रेजिमेंट मे भर्ती हुआ था। इन दोनो ने न केवल गवाह बनने के व्लादीमिर के प्रस्ताव को स्वीकार किया, बल्कि यह कसम भी खाई कि उसके लिये अपना जीवन तक न्योछावर कर देगे। व्लादीमिर ने बड़े जोश से उन्हें गले लगाया और तैयारी करने के लिये घर चला गया।

दिन ढले काफी देर हो चुकी थी। उसने अपने भरोसे के कोचवान तेर्योश्का को तफसील से सारी बात समझाकर अपनी तीन घोडोवाली

3-697

बर्फ-गाड़ी से मेहमानों को भेज दिया और अपने लिये एक घोड़े
छोटी बर्फ-गाड़ी जोतने को कहा। यह बंदोबस्त के बिना ही दर्जि
के लिये वहां दो घण्टे बाद मारिया गव्रीलोव्ना को भी पहुचना थ
रवाना हो गया। रास्ता उसका जाना-पहचाना था और वहां पहु
के लिये उसे केवल बीस मिनट दरकार थे।

किन्तु व्लादीमिर गांव से बाहर खेतो मे पहुचा ही था कि इ
जोर की हवा चली तेजी बर्फानी आंधी आई कि उसे कुछ भी नज
नही आता था। आन की आन में रास्ता बर्फ से ढक गया। इर्द-गि
का सभी कुछ अंधेरे की धुधली और पीली चादर में खो गया, जिस
से बर्फ के सफेद फाहे-से उड़ने आ रहे थे। धरती और आकाश एकाका
हो गये थे। व्लादीमिर ने अपने को खेत में पाया और उसने फिर
सड़क पर लौटने का व्यर्थ ही प्रयास किया। घोड़ा रास्ते से भटक ग
और वह कभी बर्फ के ढेर पर चढ़ जाता, कभी किसी गड्ढे में ध
जाता तथा बर्फ-गाड़ी बार-बार उलट-पलट जाती। व्लादीमिर ने य
कोशिश की कि वह ठीक दिशा को न खो दे। किन्तु उसे लगा कि आ
घण्टे से अधिक समय बीत चुका है और वह जाद्रिनो गांव के बाह
वृक्ष-झुरमुट तक नही पहुच पाया है। लगभग दस मिनट और बी
गये तथा वृक्ष-झुरमुट की अभी झलक भी नही मिली थी। व्लादीमि
गहरे गड्ढों से कटे-फटे मैदान में से बर्फ-गाड़ी बढ़ा रहा था। ब
का तूफान शान्त नही हो रहा था, आसमान साफ होने का नाम न
ले रहा था। घोड़ा थकने लगा और इस चीज के बावजूद कि व्लादीमि
हर क्षण कमर तक बर्फ में धस जाता था, पसीने से तर-ब-तर था

आखिर वह समझ गया कि ठीक दिशा में नही जा रहा है। व
रुककर सोचने, याद करने और स्थिति को समझने लगा और इ
परिणाम पर पहुचा कि उसे दायी ओर जाना चाहिये। उसने दाय
ओर गाड़ी बढ़ाई। उसका घोड़ा बड़ी मुश्किल से ही कदम उठा प
रहा था। एक घण्टा हो गया था उसे घर से रवाना हुए। जाद्रिन
को कही नज़दीक ही होना चाहिये था। किन्तु वह स्लेज बढ़ाता ज
रहा था, बढ़ाता जा रहा था और मैदान का कोई ओर-छोर ही नज़
नही आता था। बस, बर्फ के बड़े-बड़े ढेर और गड्ढे ही सामने दिखा
दे रहे थे। रह-रहकर उसकी बर्फ-गाड़ी उलट जाती और बार-बा

वह उसे सीधी करता। समय बीतता जा रहा था और ब्लादीमिर बहुत परेशान हो उठा था।

अन्त में एक ओर को कुछ काला-सा उभरने लगा। ब्लादीमिर ने उसी दिशा में घोड़ा मोड़ दिया। निकट आने पर उसे झुरमुट नज़र आया। शुक्र है भगवान का उसने अपने मन में सोचा, अब गिरजाघर दूर नहीं है। वह मन में यह आशा लिये हुए कि तत्काल जानी-पहचानी सड़क पर पहुंच जायेगा या झुरमुट के गिर्द चक्कर लगाकर सड़क पर पहुंचेगा – जाद्रिनो ठीक उसी के पीछे था। सड़क उसे जल्द ही मिल गयी और जाड़े में निपत्ते हुए वृक्षों के अंधेरे में घोड़े को आगे बढ़ाने लगा। हवा यहां इतनी अधिक तेज़ नहीं थी, सड़क समतल थी, घोड़े में भी फुर्ती आ गयी और ब्लादीमिर शान्त हो गया।

वह घोड़े को बढ़ाता जा रहा था, बढ़ाता जा रहा था, किन्तु जाद्रिनो कहीं दिखाई नहीं दे रहा था झुरमुट का अन्त नहीं हो रहा था। यह देखकर कि वह किसी अपरिचित जंगल में पहुंच गया है, ब्लादीमिर का दिल बैठ गया। हताशा उस पर हावी हो गयी। उसने घोड़े पर चाबुक बरसाया – बेचारा जानवर दुलकी चाल से दौड़ने लगा किन्तु जल्द ही उसकी गति धीमी होने लगी और बदकिस्मत ब्लादीमिर की सारी कोशिशों के बावजूद पन्द्रह मिनट बाद वह कदम-कदम चलने लगा।

धीरे-धीरे वृक्ष कम होने लगे और ब्लादीमिर जंगल से बाहर निकला – जाद्रिनो का कहीं नाम-निशान नहीं था। लगभग आधी रात हो गयी थी। ब्लादीमिर की आंखें डबडबा आईं। बेशक किसी तरफ़ भी चला जाये, यह सोचकर उसने घोड़ा आगे बढ़ा दिया। मौसम कुछ शान्त हो गया था, बादल छंट गये थे और सफ़ेद लहरदार क़ालीन से ढका हुआ समतल मैदान उसके सामने था। रात अब काफ़ी साफ़ हो गयी थी। कुछ ही दूरी पर उसे चार-पांच घरोंवाला एक छोटा-सा गांव दिखाई दिया। ब्लादीमिर ने उधर ही स्लेज बढ़ा दी। पहले घर के पास पहुंचकर वह बर्फ़-गाड़ी से नीचे कूदा, भागकर खिड़की के पास गया और उसे खटखटाने लगा। कुछ मिनट बाद खिड़की का पट खुला और एक बूढ़े की सफ़ेद दाढ़ी नज़र आई।

"क्या बात है?" – "जाद्रिनो दूर है क्या?" – "जाद्रिनो दूर

3*

है या नहीं?" – "हां, हां! दूर है क्या?" – "बहुत दूर नहीं, कोई दसेक वेर्स्ता होगा।" यह जवाब सुनकर व्लादीमिर ने अपना सिर थाम लिया और उस आदमी की तरह बुत बना-सा खड़ा रह गया, जिसे इसी वक्त मौत की सजा सुनाई गयी हो।

"तुम इस वक्त कहां से आ रहे हो?" बूढ़े ने पूछा। उसे इस का उत्तर देने को व्लादीमिर का मन नहीं हो रहा था। "बाबा, क्या तुम मुझे जाद्रिनो तक पहुंचाने के लिये घोड़ों का प्रबन्ध कर सकते हो?" उसने बूढ़े से पूछा। "हमारे पास कहां से आयेंगे घोड़े!" बूढ़े ने जवाब दिया। "कोई रास्ता दिखानेवाला भी मिल सकता है या नहीं? वह जितने चाहेगा, मैं उसे उतने ही पैसे दे दूंगा।" – "रुको," बूढ़े ने खिड़की का पल्ला नीचे करते हुए कहा, "अभी अपने बेटे को भेज देता हूं, वह तुम्हें पहुंचा देगा।" व्लादीमिर इन्तजार करने लगा। एक मिनट भी नहीं बीता होगा कि वह फिर से खिड़की को खटखटाने लगा। खिड़की खुली और दाढ़ी दिखाई दी। "क्या बात है?" – "कहां है तुम्हारा बेटा?" – "अभी बाहर आ जायेगा, जूते पहन रहा है। शायद तुम ठिठुर गये हो? भीतर आकर तन गर्मा लो।" – "नहीं, धन्यवाद, तुम जल्दी से बेटे को भेज दो।"

फाटक चरमराया – लाठी लिये हुए एक नौजवान बाहर निकला और कभी रास्ता दिखाता, तो कभी बर्फ के ढेरों में ढके रास्ते को ढूढ़ता हुआ आगे-आगे चलने लगा। "क्या वक्त हुआ होगा?" व्लादीमिर ने पूछा। "जल्द ही पौ फटनेवाली है," नौजवान किसान ने जवाब दिया। इसके बाद व्लादीमिर ने एक भी शब्द नहीं कहा।

ये लोग जब जाद्रिनो पहुचे, तो मुर्गे बाग दे रहे थे और उजाला हो चुका था। गिरजाघर को ताला लगा हुआ था। व्लादीमिर ने रास्ता दिखानेवाले नौजवान देहाती को पैसे दिये और पादरी के घर की ओर चल पड़ा। पादरी के घर के सामने उसकी तीन घोड़ोवाली बर्फ-गाड़ी नही थी। कौन जाने, अभी और क्या जानना-सुनना बदा था उसके भाग्य मे!

किन्तु अब हम नेनारादोवो गाव के भले जमीदार के घर की ओर चलते हैं और यह देखेंगे कि वहा क्या हो रहा है।

कुछ खास नही।

मारिया के बुजुर्ग माता-पिता जागे और मेहमानखाने में आ गये। गब्रीला गब्रीलोविच रात को पहनने की टोपी और गर्म जाकेट पहने थे और प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना रूई का अस्तर लगा गाउन। समोवार लाया गया और गब्रीला गब्रीलोविच ने यह जानने के लिए नौकरानी को मारिया गब्रीलोव्ना के पास भेजा कि उसकी तबीयत कैसी है तथा रात कैसे बीती। नौकरानी ने लौटकर बताया कि कुमारी जी को नींद अच्छी नहीं आई, किन्तु अब तबीयत कुछ बेहतर है और अभी मेहमान-खाने में आ जायेगी। सचमुच ऐसा ही हुआ, दरवाजा खुला और माता-पिता का अभिवादन करने के लिये मारिया गब्रीलोव्ना उनके निकट आई।

"तुम्हारा सिर-दर्द कैसा है?" गब्रीला गब्रीलोविच ने पूछा। "पहले से कम है, पापा," माशा ने जवाब दिया। "जरूर अंगीठी के पास बैठे रहने से ही तुम्हारे सिर में दर्द हुआ है," प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना ने कहा। "हो सकता है, अम्मा," माशा ने उत्तर दिया।

दिन तो अच्छे ढंग से बीत गया, लेकिन रात को माशा बीमार हो गयी। शहर से डाक्टर को बुलवाया गया। वह शाम को आया और उसने रोगिनी को सरसाम में बड़बड़ाते पाया। इसके बाद उसे खूब जोर का बुखार चढ़ा और बेचारी माशा दो हफ्ते तक मृत्यु-द्वार पर दस्तक देती रही।

घर से भाग जाने की माशा की योजना के बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं था। पिछली शाम को लिखे गये पत्र आग की नजर किये जा चुके थे। अपने मालिकों के गुस्से से डरनेवाली नौकरानी ने किसी से एक शब्द नहीं कहा। पादरी, घुड़सेना का सेवानिवृत्त छोटा अफसर, मूछोंवाला पटवारी और घुड़सवार सेना का नौजवान सैनिक भी किन्हीं कारणों से अपनी जबान को ताला लगाये हुए थे। नशे में धुत्त होने की हालत में भी तेर्योश्का कोचवान ने कभी कोई फालतू शब्द मुंह से नहीं निकाला। इस तरह षड्यन्त्र में भाग लेनेवाले आध दर्जन से भी अधिक लोगों ने इस रहस्य को छिपाये रखा। किन्तु मारिया गब्रीलोव्ना ने लगातार चलनेवाली सन्निपात की हालत में स्वयं ही अपना भंडाफोड़ कर दिया। मगर उसके शब्द इतने असम्बद्ध थे कि दिन-रात बेटी के सिरहाने बैठी रहनेवाली मां केवल इतना ही समझ

पाई कि उसकी बेटी व्लादीमिर निकोलायेविच को जी-जान से चाहती है और सम्भवत प्रेम ही उसकी बीमारी का कारण है। उसने अपने पति और कुछ पडोसियो से सलाह-मशविरा किया, आखिर सभी इस नतीजे पर पहुचे कि मारिया गव्रीलोव्ना के भाग्य में शायद यही लिखा है, कि किस्मत का लिखा होकर रहेगा, कि गरीबी कोई गुनाह नही है, कि धन-दौलत के साथ नही, बल्कि आदमी के साथ जिन्दगी बितानी होती है, आदि, आदि। जब हम अपनी सफ़ाई में कुछ नही कह पाते, तो इस तरह की धर्म-कर्म की बाते बहुत उपयोगी सिद्ध होती हैं।

इसी बीच मारिया गव्रीलोव्ना स्वस्थ होने लगी थी। व्लादीमिर बहुत दिनो से गव्रीला गव्रीलोविच के घर मे नही आया था। जिस उपेक्षा भाव से उसका यहा स्वागत होता था, वह उससे आतंकित-सा हो गया था। आखिर उसे बुलवाया गया और बेटी के साथ विवाह की सहमति के अप्रत्याशित सौभाग्य की सूचना दी गयी। किन्तु जब अपने निमत्रण के उत्तर मे माशा के माता-पिता को नीम-पागलो जैसा उसका पत्र मिला तो उनकी हैरानी का कोई ठिकाना न रहा! उसने लिखा था कि वह कभी इस घर में पाव नही रखेगा और यह अनुरोध किया था कि वे उस किस्मत के मारे को भूल जाये, जिसके लिये अब मृत्यु ही एकमात्र आशा थी। कुछ दिनो के बाद उन्हे पता चला कि व्लादीमिर सेना मे चला गया है। यह १८१२ की बात है।

स्वस्थ हो रही माशा को बहुत समय तक यह सब कुछ नही बताया गया। माशा ने भी व्लादीमिर का कभी नाम नही लिया। कुछ महीने बाद बोरोदिनो के निकट लड़ाई मे विशेष वीरता दिखाने और घायल होनेवालो की सूची मे उसका नाम पढकर माशा बेहोश हो गयी और घरवालो को यह चिन्ता हुई कि वही पहले की तरह बुखार उसे फिर से न धर दबाये। किन्तु भगवान की कृपा ही कहिये कि बेहोशी का कोई बुरा परिणाम नही हुआ।

माशा को एक अन्य दुखद आघात सहना पड़ा—उसके पिता गव्रीला गव्रीलोविच इस दुनिया से चल बसे और बेटी को ही अपनी सारी सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी बना गये। किन्तु उत्तराधिकार पाकर उसके मन की व्यथा दूर नहीं हुई। अपनी मा, बेचारी प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना के दुख को वह सच्चे मन से अनुभव करती थी, उससे कभी

खाई कि कभी उससे जुदा नही होगी। इन दोनो ने नेनारादोवो को छोड़ दिया, जिसके साथ बडी करुण स्मृतिया जुडी हुई थी और गाव मे अपनी जागीर पर जा बसी।

सुन्दर और धनी माशा के गिर्द विवाह के इच्छुको की भीड लगी रहती थी, किन्तु वह किसी को तनिक भी आशा नही बधवाती थी। मा कभी-कभी उसे समझाती कि वह अपना जीवन-साथी चुन ले, किन्तु मारिया गव्रीलोव्ना सिर हिलाकर इन्कार कर देती और सोच मे डूब जाती। व्लादीमिर इस दुनिया मे नही रहा था, फ्रासीसियो के मास्को मे दाखिल होने की पूर्ववेला मे वही उसका देहान्त हो गया था। माशा उसकी स्मृति को पुण्य मानती थी। कम से कम वह उन सभी चीजो को सहेजे थी जो व्लादीमिर की याद दिलाती थी – उसके द्वारा कभी पढी गयी पुस्तके, उसके रेखाचित्र, स्वर-लिपिया और वे कवितायें, जिन्हें उसने उसके लिये नकल किया था। पडोसी यह सब कुछ जानकर उसकी प्रेम-निष्ठा से आश्चर्यचकित होते थे और बडी उत्सुकता से उस नायक की प्रतीक्षा कर रहे थे जो इस सतवन्ती आर्तेमीज़ा* के ऐसे शोकपूर्ण लगाव पर विजय प्राप्त करेगा।

इसी दौरान जीत के साथ जग का अन्त हो गया था। हमारी फौजे विदेशो से लौट रही थीं। लोग उनके स्वागत को उमडे पडते थे। बैड बाजे दुश्मन से छीनी हुई धुने – Vive Henri - Quatre**, तिरोली वाल्ज़ और जोकोन्द ऑपेरा के प्रेमगीत*** – बजाते थे। लगभग तरुणावस्था मे मोर्चे पर गये अफसर युद्ध-क्षेत्र की हवा मे तगडे जवान होकर तथा पदक लगाये हुए लौट रहे थे। सैनिक बडी खुशमिजाजी से आपस मे बाते करते थे और अपनी बातचीत मे रह-रहकर

---

* आर्तेमीज़ा – सीता-सावित्री की भाति यूनानी पौराणिक साहित्य मे पवित्र नारी का प्रतीक। – स०

** फ्रासीसी नाटककार शार्ल कोल्ले (१७०६–१७८३) के 'हेनरी चतुर्थ का आखेट-गमन' (१७६४) सुखान्ती नाटक के गाने। – स०

*** निकोलो इज़ुआर (१७७५–१८१८) के हास्यपूर्ण ऑपेरा 'जोकोन्द, या जोखिमो कारनामो का इच्छुक' के गीत, जो १८१४ मे पेरिस मे लोकप्रिय था, जब रूसी सेनायें वहा तैनात थी। – स०

ह्रीट और जाकोंडे ऑपेरा के गीत गूंजते रहते थे। वह कैसा अद्भुत स
मे कभी भुलाये नहीं भुलाता! यश कीर्ति और हर्षोल्लास का समय
था! मातृभूमि शब्द सुनते ही रूसी लोगों के हृदय कैसे जोर से
धड़कने लगते थे! मिलने की घड़ी के खुशी के आंसू! राष्ट्रीय गौरव और
ज़ार-प्रेम की भावना को हम कैसे एकमय होकर घुला-मिला देते थे!
और कितना मधुर समय था यह ज़ार के लिये!

नारियों, रूसी नारियों का भी तब कोई जवाब नहीं था। उनकी
सामान्य उदासीनता उन दिनों हवा हो गयी थी। उनका उल्लास भी
उस समय सचमुच मदहोश करनेवाला होता था जब वे विजेताओं का
स्वागत करते हुए चिल्लाती थीं – हुर्रा! और

उछाल देती थीं अपनी टोपियां हवा में।*

उस समय के अफसरों में से भला कौन यह स्वीकार नहीं करेगा
कि अपने सर्वश्रेष्ठ और सबसे अधिक मूल्यवान पुरस्कार के लिये वह
रूसी नारी का आभारी है?

ऐसे अनूठे समय में मारिया गव्रीलोव्ना अपनी मां के साथ
गुबेर्नियां में रहती थी और वह यह नहीं देख पाई कि कैसे दोनों
राजधानियों ने सेनाओं के लौटने का सोत्साह स्वागत किया। किन्तु
उल्लास की यह भावना ज़िलों और गांवों में सम्भवतः और अधिक
तीव्र थी। ऐसी जगहों पर किसी फौजी अफसर का आ जाना तो मानो
विजय-अभियान होता था और उसके सामने असैनिक प्रेमी पर तो
बहुत भारी गुज़रती थी।

हम पीछे कह चुके हैं कि मारिया गव्रीलोव्ना की उदासीनता के
बावजूद वह पहले की भांति विवाह-इच्छुकों से घिरी रहती थी। किन्तु
जब वक्ष पर सन्त जार्ज का पदक लगाये तथा स्थानीय युवतियों के
शब्दों में "आश्चर्यक पीतवर्णवाला" हुस्सार सेना का घायल कर्नल
बुर्मीन उसके गढ़ में आया, तो बाकी सभी को मैदान छोड़कर भागना
पड़ा। कोई छब्बीस साल की उम्र थी उसकी। वह अपनी जागीर पर,

---

* १९वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रूसी नाटककार और कूटनीतिज्ञ अलेक्सान्द्र ग्रिबोयेदोव के सुखान्ती नाटक 'अक़्ल से मुसीबत' (१८२४) से। –सं०

जो मारिया गव्रीलोव्ना के गाव के निकट थी, छुट्टी बिताने आया था। मारिया गव्रीलोव्ना ने उसमे बड़ी दिलचस्पी ली। उसकी उपस्थिति मे उसकी सामान्य उदासी जाती रहती और उसमे सजीवता आ जाती। यह कहना उचित नही होगा कि वह किसी तरह की चचलता दिखाती थी, किन्तु कवि उसके हाव-भाव को देखकर यह कहे बिना नही रह सकता था –

Se amor non è, che dunque?..*

बुर्मीन वास्तव मे ही बहुत प्यारा जवान आदमी था। उसमे वास्तव मे ही वह सब कुछ था जो नारियो को अच्छा लगता है – सलीकेदार, हर बात की ओर ध्यान देनेवाला, किसी भी तरह की बनावट से मुक्त और व्यग्यपूर्ण मस्ती लिये हुए। मारिया गव्रीलोव्ना के साथ उसका व्यवहार सहज-स्वाभाविक और उन्मुक्त था। किन्तु वह चाहे कुछ भी कहती या करती, उसका मन और उसकी दृष्टि उसी की ओर खिचती रहती। वह शान्त और विनम्र-सा प्रतीत होता, किन्तु सुनने मे यह आया था कि कभी वह बहुत चचल और तेज रहा था। इससे मारिया गव्रीलोव्ना के मन पर कोई बुरा प्रभाव नही पड़ा था और उसने (जैसा कि सभी युवा महिलाओं ने किया होता) बड़ी खुशी से साहस और गर्ममिजाजी को जाहिर करनेवाली उसकी शरारतो को माफ कर दिया।

किन्तु सबसे अधिक (उसकी शालीनता, मधुर बातचीत, आकर्षक पीतवर्ण और पट्टी मे बधे हुए हाथ से भी बढकर) जवान हुस्सार की खामोशी ने मारिया गव्रीलोव्ना की जिज्ञासा और कुतूहल को उकसाया। उसे इस बात की चेतना हुए बिना न रह सकती थी कि वह बुर्मीन को अच्छी लगती है। दूसरी ओर, अपनी सूझबूझ और अनुभव से वह भी इस बात की तरफ ध्यान दिये बिना नही रह सकता था कि मारिया उसमे दिलचस्पी लेती है। तो फिर क्यो उसने अभी तक उसके सामने घुटने टेककर प्रेम-निवेदन नही किया था? कौन-सी चीज उसके आडे आ रही थी? भीरुता, जो सच्चे प्रेम की चिर-

---

* अगर नही यह प्रेम, कहो तो और क्या? (इतालवी)।

संगिनी है, गर्व की भावना या मंजे हुए प्रेम-खिलाड़ी का खिलवाड़? उसके लिये यह चीज एक रहस्य थी। अच्छी तरह से सोच-विचार करने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंची कि भीरुता ही इसका एकमात्र कारण थी और वह उसकी ओर अत्यधिक ध्यान देकर तथा अनुकूल परिस्थितियां पाकर स्नेह-प्रदर्शन द्वारा भी उसे प्रोत्साहित करने लगी। वह सर्वथा अप्रत्याशित स्थिति के लिये जमीन तैयार कर रही थी और बड़ी बेचैनी से प्रणय-स्वीकृति के रोमानी क्षणों की प्रतीक्षा करने लगी। रहस्य, वह किसी भी प्रकार का क्यों न हो, नारी-हृदय के लिये बहुत बोझल होता है। मारिया गव्रीलोव्ना की व्यूह-रचना को वांछित सफलता मिली – कम से कम बुर्मीन विचारों में ऐसे डूबा रहता और उसकी काली आंखें ऐसे चमकती हुई उसपर जम जातीं कि निर्णायक क्षण बिल्कुल निकट ही प्रतीत होता। पड़ोसी तो इनकी शादी की ऐसे चर्चा करते मानो वह तयशुदा बात हो और भले दिल की प्रास्कोव्या पेत्रोव्ना खुश होती कि उसकी बेटी को आखिर तो सुयोग्य वर मिल गया।

मारिया गव्रीलोव्ना की बूढ़ी मां एक दिन मेहमानखाने में बैठी हुई ताश के ग्राण्डपेशेंस खेल से अपना मन बहला रही थी कि बुर्मीन कमरे में दाखिल हुआ और उसने यह पूछा कि मारिया गव्रीलोव्ना कहां है। "वह बाग में है," बूढ़ी मां ने जवाब दिया, "वहीं चले जाइये और मैं यहां आप दोनों की राह देखूंगी।" बुर्मीन बाग की ओर चला गया, बूढ़ी मां ने सलीब का निशान बनाया और सोचा – शायद आज मामला तय हो जायेगा!

बुर्मीन को मारिया गव्रीलोव्ना तालाब के किनारे बेद-वृक्ष की छाया में बैठी मिली। सफ़ेद फ़्राक पहने और हाथ में किताब लिये हुए वह किसी उपन्यास की नायिका जैसी लग रही थी। अभिवादन करने और हाल-चाल पूछने के बाद मारिया गव्रीलोव्ना ने जान-बूझकर बातचीत आगे नहीं बढ़ाई और इस तरह उसने दोनों की वह आपसी बेचैनी बढ़ा दी, जिसका केवल आकस्मिक और दृढ़तापूर्ण प्रेम-निवेदन से ही अन्त हो सकता था। ऐसा ही हुआ भी – बुर्मीन ने अपनी स्थिति का बेतुकापन अनुभव करते हुए कहा कि बहुत दिनों से उसके सामने अपना दिल खोलना चाहता था और यह अनुरोध किया कि वह थोड़ी देर के लिये बहुत ध्यान देकर उसकी बात सुने। मारिया गव्रीलोव्ना

ने किताब बन्द कर दी और यह जाहिर करने के लिये कि उसकी बात सुनने को तैयार है, पलकें झुका ली।

"मैं आपको प्यार करता हूं," बुर्मीन ने कहा, "मैं आपको जी-जान से प्यार करता हू ." (मारिया गव्रीलोव्ना के गालों पर लाली दौड़ गयी और उसने अपना सिर और नीचे झुका लिया।) "यह मेरी असावधानी थी कि मैंने आपको हर दिन देखने और हर दिन आपकी बात सुनने की प्यारी आदत डाल ली " (मारिया गव्रीलोव्ना को St.-Preux* के प्रथम पत्र की याद आ गयी।) "किन्तु अब मैं अपनी किस्मत से नही लड सकता – आपकी याद, आपकी प्यारी और अनुपम छवि अब मेरे जीवन की यातना और सबसे बडी खुशी बनी रहेगी। किन्तु मुझे अभी एक बडी बोझिल जिम्मेदारी पूरी करनी है – आपके सामने एक भयानक रहस्य का उद्घाटन करना है और हम दोनो के बीच एक ऐसी दीवार खडी करनी है, जिसे लाधना सम्भव नही होगा " – "वह दीवार तो हमेशा ही बनी रही है," मारिया गव्रीलोव्ना ने झटपट बीच मे ही उसकी बात काट दी, "मैं कभी भी आपकी पत्नी नही बन सकती थी " – "मैं जानता हू," बुर्मीन ने उसे धीरे से जवाब दिया, "मुझे मालूम है कि आपने कभी प्यार किया था, किन्तु उस व्यक्ति की मृत्यु और आहों-आंसुओं के तीन वर्ष दयालु और प्यारी मारिया गव्रीलोव्ना, मुझे इस आखिरी खुशी, इस विचार के सुख से तो वंचित नही कीजिये कि आप मेरा सौभाग्य बन सकती थी, यदि आप चुप रहे, भगवान के लिये कुछ न बोले। आप मेरी यातना को बढा रही हैं। हा, मैं जानता हू, मैं अनुभव करता हू कि आप मेरी हो सकती थी, किन्तु मैं – मैं एक बड़ा बदकिस्मत इन्सान हू मैं शादीशुदा हू।"

मारिया गव्रीलोव्ना ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

"मैं शादीशुदा हू," बुर्मीन कहता गया, "चार साल हो गये मेरी शादी हुए और मुझे यह तक मालूम नही है कि मेरी बीवी कौन है, वह कहा है और उससे कभी मेरी मुलाकात भी होगी या नही।"

---

* रूसो के उपन्यास 'जूलिया या नई एलोइज़ा' के पात्र की चिट्ठी से आशय है। – सं०

यह बात कह रहे हैं आप ! [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कीजिये।'

सन् १८१२ के आरम्भ की बात है,' बुर्मीन ने अपनी बात जारी रखी। 'मैं विल्ना पहुंचने की जल्दी में था। [illegible] [illegible] [illegible] स्टेशन पर पहुंचा, एक दिन [illegible] [illegible] था मैं [illegible] [illegible] और मैंने आदेश दिया कि जल्दी से घोड़े बदल दिये जायें। किन्तु उसी समय बहुत जोर की बर्फानी आंधी आ गयी [illegible] [illegible] कोचवानों ने भी यही सलाह दी कि मैं कुछ देर को रुक जाऊं। मैं उनकी बात मान भी ली किन्तु एक अजबूझ-सी बेचैनी मुझ पर हावी हो गयी। मुझे ऐसे लगा मानो कोई मुझे जाने के लिये मजबूर कर रहा है। बर्फानी आंधी का जोर कम नहीं हो रहा था, मुझसे और सब्र नहीं हुआ मैंने फिर से घोड़े जोतने का हुक्म दिया और अंधड़-तूफान में ही रवाना हो गया। कोचवान ने अपनी सूझ लिये और नदी के किनारे-किनारे बर्फ-गाड़ी बढ़ा दी जिससे हमारा रास्ता कोई तीन वेर्स्ता कम हो जाता था। नदी-तट बर्फ से ढंका हुआ था। कोचवान उस मोड़ से चूक गया जहां सड़क पर पहुंचा जा सकता था और इस तरह हम एक अनजान-अपरिचित क्षेत्र में जा निकले। बर्फानी आंधी पहले की तरह अपना जोर बांधे थी। इसी समय मुझे रोशनी दिखाई दी और मैंने बर्फ-गाड़ी को उधर ही बढ़ाने का आदेश दिया। हम एक गांव में पहुंच गये, जहां लकड़ी के गिरजाघर में बत्ती जल रही थी। गिरजाघर का दरवाजा खुला था, बाड़ के करीब कई बर्फ-गाड़ियां खड़ी थीं और कुछ लोग बाहर-भीतर आ-जा रहे थे। 'इधर ! इधर आओ !' कुछ लोग एकसाथ चिल्लाये। मैंने कोचवान को उधर ही चलने का हुक्म दिया। 'अरे भई, कहां रह गये थे तुम?' किसी ने मुझसे कहा, 'दुलहन बेहोश पड़ी है, पादरी की समझ में नहीं आ रहा कि वह क्या करे, हम वापस लौटने की सोच रहे थे। जल्दी से उतरो न।' मैं चुपचाप स्लेज से नीचे कूदा और दो-तीन मोमबत्तियों के हल्के-से उजालेवाले गिरजाघर में दाखिल हुआ। एक लड़की गिरजाघर के अंधेरे कोने में बेंच पर बैठी थी और दूसरी उसकी कनपटी सहला रही थी। 'भला हो भगवान का,' इस दूसरी

ताबूतसाज

> क्या हमें हर दिन ताबूत नहीं दिखाई देते हैं,
> हमारी इस बूसट दुनिया के पके बाल?
>
> देर्जाविन*

ताबूतसाज अद्रियान प्रोखोरोव की घर-गिरस्ती का आखिरी सारा सामान मुर्दे ले जानेवाली गाड़ी पर लाद दिया गया और मरियल-से घोडो की जोडी ने बस्मान्नाया गली से निकीत्स्काया गली तक का, जहा ताबूतसाज़ अपने पूरे घरबार के साथ जा बसा था, चौथी बार चक्कर लगाया। उसने दुकान का ताला बन्द किया, दरवाज़े पर यह तख्ती लगायी कि घर विकाऊ है, भाडे पर भी चढाया जा सकता है और पैदल ही अपने नये घर की तरफ़ चल दिया। पीले रंग के इस छोटे-से घर के निकट पहुचने पर, जो एक अर्से से उसके दिल में जगह बनाये हुए था, और जिसे उसने खासी बडी रकम देकर खरीदा था, उसे इस बात की हैरानी हुई कि उसका दिल खुशी से तरंगित नही हो रहा है। अनजानी-अपरिचित दहलीज़ को लाघने पर जब उसने अपने नये घर मे सभी ओर गडबड देखी, तो पुराने और टूटे-फूटे घर को याद करके, जहा अठारह वर्ष तक उसने कड़ी व्यवस्था बनाये रखी थी, गहरी सास ली। उसने अपनी दोनो बेटियों और नौकरानी को बहुत धीरे-धीरे काम करने के लिये भला-बुरा कहा और खुद उनके काम मे हाथ बटाने लगा। जल्द ही सब कुछ ढंग से सज गया, देव-प्रतिमा, चीनी के बर्तनो की अलमारी, मेज, सोफा और पलग – इन सब के लिये पिछले कमरे के कोनो मे स्थान बना दिये गये और रसोईघर तथा मेहमानखाने में मालिक के हाथो की बनी चीज़े – सभी रगो और आकारों के ताबूत तथा मातमी टोपियो, लबादों और मशालो से भरी

---

* एक प्रमुख रूसी कवि गव्रीला देर्जाविन (१७४३-१८१६) की 'जल प्रपात' कविता में। – स०

हुई अलमारियां टिका दी गयीं। दरवाजे पर एक साइन बोर्ड लटका दिया गया था, जिस पर हाथ मे उल्टी मशाल लिये आमूर* का चित्र बना हुआ था और उसके नीचे यह लिखा था – "यहां सादे और रंगे हुए सभी तरह के ताबूत बेचे तथा बनाये जाते हैं, किराये पर दिये जाते हैं और पुराने ताबूतो की मरम्मत भी की जाती है"। ताबूतसाज की बेटियां अपने कमरे मे चली गयी। अद्रियान ने अपने घर का चक्कर लगाया, खिडकी के पास बैठ गया और समोवार गर्माने का आदेश दिया।

पढे-लिखे पाठक को यह ज्ञात है कि शेक्सपियर और वाल्टर स्कॉट – इन दोनो ने ही क़ब्र खोदनेवालो को खुशमिज़ाज और विनोदी व्यक्तियो के रूप मे चित्रित किया है** ताकि उनके काम और स्वभाव की तुलना द्वारा हमारे दिलो पर अधिक गहरी छाप अंकित कर सके। किन्तु सचाई का आदर करते हुए हम उनका अनुकरण नही कर सकते और यह मानने को विवश हैं कि हमारे ताबूतसाज का मिज़ाज उसके मनहूस धधे के बिल्कुल अनुरूप था। अद्रियान प्रोखोरोव आम तौर पर गुमसुम और अपने ही ख्यालो मे खोया रहता था। वह अपनी खामोशी तभी तोडता था जब निठल्ली बेटियो को खिडकी से राहगीरो को झांकते हुए देखकर डाटता या फिर जब उसे अपनी हस्त-रचनाओ के लिए उनसे कमकर पैसे लेने होते, जिन्हे बदकिस्मती (कभी-कभी खुशकिस्मती से) उन्हे खरीदने की जरूरत आ पडती। तो खिडकी के करीब बैठा और चाय का सातवा प्याला पीता हुआ अद्रियान सदा की तरह मनहूस ख्यालो मे डूबा हुआ था। वह उस मूसलधार बारिश के बारे मे सोच रहा था जिसने सेवा-निवृत्त ब्रिगेडियर के मातमी जुलूस को नगर-द्वार के निकट अपनी लपेट मे ले लिया था। नतीजा यह हुआ था कि बहुत-से लबादे सिकुड गये थे और मातमी टोपियो के किनारे टेढे-मेढे हो गये थे। वह जानता था कि अगले कुछ समय मे उसे अनिवार्य रूप से

---

* आमूर – कामदेव, किन्तु जब उसके हाथ मे उल्टी मशाल हो, तो वह यमदूत या मृत्यु का प्रतीक हो जाता है। – अनु०

** पुश्किन का अभिप्राय शेक्सपियर के 'हैमलेट' (१६००–१६०१) दुखान्ती नाटक और वाल्टर स्कॉट के 'लामेरमूर की दुलहन' उपन्यास में ताबूतसाजो के बिम्बो मे है। – म०

भारी रकम खर्च करनी पड़ेगी, क्योंकि मातमी कपड़ों में उसके पुराने स्टाक की हालत खासी खराब थी। उसे उम्मीद थी कि बूढ़ी सेठानी त्र्युखिना के मरने पर, जो लगभग एक साल से कब्र में टांगें लटकाये थी उसका सारा घाटा पूरा हो जायेगा। किन्तु त्र्युखिना रज़ग्ल्याई गली में अपनी आखिरी घड़ियां गिन रही थी और प्रोखोरोव को इस बात की शंका थी कि अपने वादे के बावजूद उसके वारिस उसे इतनी दूर से बुलवा भेजने के मामले में काहिली न कर जायें और अपने नजदीक के किसी ठेकेदार से ही मामला तय न कर लें।

अद्रियान प्रोखोरोव इसी तरह के विचारों में खोया हुआ था कि अचानक फ्रीमेसनों* की भांति दरवाजे पर किसी के अचानक तीन बार दस्तक देने से उसकी विचार-शृंखला टूटी। "कौन है?" ताबूतसाज ने पूछा। दरवाजा खुला और एक ऐसा व्यक्ति भीतर आया जिसे देखते ही एक जर्मन कारीगर के रूप में पहचाना जा सकता था। वह प्रफुल्ल मुद्रा में ताबूतसाज के निकट आया। "मेरे कृपालु पड़ोसी, मैं माफी चाहता हूं," उसने ऐसी अटपटी रूसी भाषा में कहा, जिसे सुनकर हम आज भी हंसे बिना नहीं रह सकते, "माफी चाहता हूं कि आपके काम-काज में खलल डाल दिया... लेकिन मैं आपके साथ जल्दी से जान-पहचान कर लेना चाहता था। मैं मोची हूं, मेरा नाम गोत्लिब शूल्त्स है और गली पार आपके सामनेवाले घर में रहता हूं। कल मैं अपने विवाह की रजत-जयंती मना रहा हूं और आपसे तथा आपकी बेटियों से अनुरोध करता हूं कि मेरे यहां मित्र के नाते खाना खायें।" निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। ताबूतसाज ने मोची से बैठने और चाय का प्याला पीने को कहा। गोत्लिब शूल्त्स की मिलनसार तबीयत की बदौलत जल्द ही दोनों घुल-मिलकर बातें करने लगे। "आपका काम-धंधा कैसा चल रहा है?" अद्रियान ने पूछा। "अजी, क्या कहा जाये," शूल्त्स ने उत्तर दिया, "कभी अच्छा और कभी बुरा। शिकवा-शिकायत नहीं कर सकता। वैसे, इतना जरूर है कि मेरा

---

* १८वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रहस्यवादी संगठन जिसका लक्ष्य मानव का नैतिक पुनरुत्थान था। दरवाजे पर तीन बार दस्तक इस के सदस्यों का एक गुप्त संकेत था। —सं०

में नजदीक रहनेवाले अधिकतर जर्मनों से उसकी अच्छी जान-पहचान थी और उनमें से बूढ़े तो कभी-कभी इतवार की शाम भी उसकी चौकी पर ही बिताते थे। अद्रियान ने झटपट यूर्को से परिचय कर लिया, क्योंकि वह ऐसा आदमी था जिसकी कभी और किसी भी समय ज़रूरत पड़ सकती थी। मेहमान जब खाने की मेज़ों पर पधारे, तो वे दोनों एक-दूसरे की बगल में बैठे। शूल्त्स दम्पति और उनकी सत्रह वर्षीया बेटी लोत्खेन मेहमानों के साथ भोजन करते हुए खाना परोसने और दूसरी बातों में बावर्चिन का लगातार हाथ बटा रहे थे। बियर तो खूब बह रही थी। यूर्को चार आदमियों के बराबर अकेला ही खा रहा था और अद्रियान उससे उन्नीस नहीं रह रहा था। उसकी बेटियां बड़े सलीके से बैठी थी। जर्मन भाषा में होनेवाली बातचीत लगातार बहुत ऊंची होती जा रही थी। मेज़बान ने अचानक अपनी ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया और कोलतार पुती बोतल का कार्क खोलते हुए रूसी भाषा में चिल्लाकर कहा, "अपनी दयालु लुईज़ा के स्वास्थ्य के लिये!" और शैम्पेन का फेन उड़ने लगा। मेज़बान ने अपनी चालीस साल की जीवन-संगिनी का चेहरा, जिस पर ताज़गी बनी हुई थी, प्यार से चूमा और मेहमानों ने शोर मचाते हुए दयालु लुईज़ा के स्वास्थ्य का जाम पी लिया। मेज़बान ने "प्यारे मेहमानों के स्वास्थ्य के लिये!" कहते हुए शैम्पेन की दूसरी बोतल खोली और मेहमानों ने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए फिर से अपने गिलास खाली कर दिये। इसके बाद तो स्वास्थ्य के जाम पीने का दौर चल पड़ा – हर मेहमान की सेहत का जाम पिया गया, मास्को तथा एक दर्जन जर्मन नगरों, सभी दस्तकारियों और हर दस्तकारी के लिये अलग-अलग तथा कारीगरों और उनके शागिर्दों के लिये जाम उठाये और चढ़ाये गये। अद्रियान खूब डटकर पी रहा था और इस हद तक रंग में आ गया कि उसने स्वयं भी एक विनोदपूर्ण जाम पीने का प्रस्ताव पेश किया। सहसा एक अतिथि, मोटे-से नानबाई ने जाम ऊपर उठाया और चिल्लाकर कहा, "उनकी सेहत का जाम, जिनके लिए हम काम करते हैं, unserer Kundleute!"* इस [illegible] भी सभी ने खुशी

* अपने ग्राहकों के लिये! (जर्मन)

से और एकमत होकर स्वागत किया। मेहमान एक-दूसरे के सामने सिर झुकाने लगे – दर्जी मोची के सामने, मोची दर्जी के सामने, नानबाई इन दोनों के सामने और सभी नानबाई के सामने इत्यादि। इस प्रकार के पारस्परिक अभिवादन के बीच यूर्को ने अपने पड़ोसी को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर कहा, "लो मेरे भाई, आओ तुम्हारे मृतकों के नाम पर भी जाम पियें।" सभी ठठाकर हंस पड़े किन्तु ताबूतसाज़ को लगा कि उसका अपमान किया गया है और उसके माथे पर बल पड़ गये। इस बात की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया, मेहमानों ने पीना जारी रखा और जब वे मेज़ पर से उठे तो रात की अन्तिम प्रार्थना की घण्टियां बज रही थीं।

अतिथि काफ़ी रात गये विदा हुए और अधिकतर नशे में बुरी तरह धुत थे। मोटा नानबाई और जिल्दसाज़, जिसका चेहरा "लाल चमड़े की जिल्द चढ़ा"* प्रतीत होता था, यूर्को की दोनों बाहों में बाहें डालकर उसे उसकी चौकी की ओर ले जा रहे थे और इस रूसी कहावत को सही सिद्ध करते प्रतीत होते थे – असली मज़ा तो ऋण की वसूली में ही है। ताबूतसाज़ बेहद पिये हुए और झल्लाया हुआ घर लौटा। "आखिर दूसरों के मुकाबले में मेरा धन्धा किसलिये बुरा है?" वह ऊंचे-ऊंचे सोच रहा था। "क्या ताबूतसाज़ और जल्लाद भाई हैं? किसलिये हंसते हैं ये काफ़िर? क्या ताबूतसाज़ रंग-बिरंगी पोशाक पहने हुए कोई मसखरा है? मैं तो इन्हें इस घर में आने की दावत पर बुलाना और खूब खिलाना-पिलाना चाहता था – मगर अब यह नहीं होने का! मैं उन्हीं को दावत में बुलाऊंगा जिनके लिये काम करता हूं – ईसाई धर्म को माननेवाले मृतकों को।" – "अरे मालिक, यह आप क्या कह रहे हैं?" नौकरानी ने कहा जो इस समय उसके जूते उतार रही थी। "सलीब का निशान बनाइये! घर में आने की दावत के लिये मुर्दों को बुलायेंगे! कैसी भयानक बात है यह!" – "कसम भगवान की, ज़रूर बुलाऊंगा," अद्रियान कहता गया, "और वह भी कल ही। मेरे हित-चिन्तकों, कल शाम को मेरे यहां दावत

---

* या० व० क्न्याज़निन के सुखान्त नाटक 'शेखीखोर' (१७८६) की कुछ परिवर्तित काव्य-पंक्ति। – सं०

से और एकमत होकर स्वागत किया। मेहमान एक-दूसरे के सामने सिर भुकाने लगे – दर्जी मोची के सामने, मोची दर्जी के सामने, नानबाई इन दोनों के सामने और सभी नानबाई के सामने इत्यादि। इस प्रकार के पारस्परिक अभिवादन के बीच यूर्को ने अपने पड़ोसी को सम्बोधित करते हुए चिल्लाकर कहा, "लो मेरे भाई, आओ तुम्हारे मृतकों के नाम पर भी जाम पियें।" सभी ठठाकर हंस पड़े किन्तु ताबूतसाज़ को लगा कि उसका अपमान किया गया है और उसके माथे पर बल पड़ गये। इस बात की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया, मेहमानों ने पीना जारी रखा और जब वे मेज़ पर से उठे तो रात की अन्तिम प्रार्थना की घण्टियां बज रही थीं।

अतिथि काफ़ी रात गये विदा हुए और अधिकतर नशे में बुरी तरह धुत थे। मोटा नानबाई और जिल्दसाज़, जिसका चेहरा 'लाल चमड़े की जिल्द सा''* प्रतीत होता था, यूर्को की दोनों बांहों में बांहें डालकर उसे उसकी चौकी की ओर ले जा रहे थे और इस रूसी कहावत को सही सिद्ध करते प्रतीत होते थे – असली मज़ा तो ऋण की वसूली में ही है। ताबूतसाज़ बेहद पिये हुए और भन्नाया हुआ घर लौटा। "आखिर दूसरों के मुकाबले में मेरा धन्धा किसलिये बुरा है?" वह ऊंचे-ऊंचे सोच रहा था। "क्या ताबूतसाज़ और जल्लाद भाई हैं? किसलिये हंसते हैं ये काफ़िर? क्या ताबूतसाज़ रंग-बिरंगी पोशाक पहने हुए कोई मसखरा है? मैं तो इन्हें इस घर में आने की दावत पर बुलाना और खूब खिलाना-पिलाना चाहता था – मगर अब यह नहीं होने का! मैं उन्हीं को दावत में बुलाऊंगा जिनके लिये काम करता हूं – ईसाई धर्म को माननेवाले मृतकों को।" – "अरे मालिक, यह आप क्या कह रहे हैं?" नौकरानी ने कहा जो इस समय उसके जूते उतार रही थी। "सलीब का निशान बनाइये! घर में आने की दावत के लिये मुर्दों को बुलायेंगे! कैसी भयानक बात है यह!" – "क़सम भगवान की, ज़रूर बुलाऊंगा," अद्रियान कहता गया, "और वह भी कल ही। मेरे हित-चिन्तको, कल शाम को मेरे यहां दावत

---

* या० ब० क्न्याज़निन के सुखान्त नाटक 'शेखीखोर' (१७८६) की कुछ परिवर्तित वाक्य-पंक्ति। – सं०

4*

पर आयें। भलमानस जो ठहरे वही सेवा में हाजिर कर दूँ।" इतना कहकर ताबूतसाज बिस्तर पर जा लेटा और जल्द ही खर्राटे लेने लगा।

अगले दिन मुंह अंधेरे ही अद्रियान को जगा दिया गया। सौदागरनी त्र्यूखिना इसी रात को चल बसी थी और उसके कारिन्दे ने एक घुड़सवार को यह खबर देने के लिये उसके पास भेजा था। ताबूतसाज ने हरकारे को दस कोपेक वोदका पीने को इनाम के तौर पर दिये, जल्दी से कपड़े पहने, किराये की बग्घी ली और राज्गुल्याई सड़क पर पहुंच गया। मृतका के दरवाजे पर पुलिसवाले खड़े थे और सौदागर लोग वहां ऐसे मंडरा रहे थे, जैसे लाश की गंध पाकर कौवे मंडराते हैं। मोम की तरह पीली बुढ़िया का शव मेज पर रखा था किन्तु शरीर अभी बिगड़ने नहीं लगा था। रिश्तेदार, पड़ोसी और नौकर-चाकर उसके करीब भीड़ लगाये थे। सभी खिड़कियां खुली थीं, मोमबत्तियां जल रही थीं और पादरी मृतक की आत्मा की शान्ति के लिये पाठ कर रहे थे। अद्रियान मृतक के भानजे के पास गया, जो फैशनदार फ्राक-कोट पहने जवान व्यापारी था और उसे यह बताया कि ताबूत, मोमबत्तियां, कफ़न और मातम की बाकी सारी चीज़ें भी अच्छी हालत में फौरन पहुंचा दी जायेंगी। वारिस ने बेध्यानी से उसे धन्यवाद दिया, यह कहा कि पैसों के बारे में वह किसी तरह की सौदेबाजी नहीं करेगा और उसी की ईमानदारी पर सारी बात छोड़ देगा। ताबूतसाज ने अपनी आदत के मुताबिक कसम खाकर यह कहा कि एक पैसा भी फालतू नहीं लेगा और इसके बाद अर्थपूर्ण ढंग से कारिन्दे से नजर मिलाकर सामान की तैयारी करने चला गया। वह दिन भर राज्गुल्याई से निकीत्स्की सड़क तक घोड़ागाड़ी पर चक्कर काटता रहा। शाम तक उसने सारा प्रबन्ध कर दिया और घोड़ागाड़ी छोड़कर पैदल घर लौटा। रात चांदनी थी। ताबूतसाज निकीत्स्की सड़क तक सही-सलामत पहुंच गया। गिरजे के पास उसके परिचित, हमारे यूर्को ने उसे ललकारा, किन्तु पहचानकर शुभरात्रि की कामना की। काफी रात बीत चुकी थी। ताबूतसाज अपने घर के निकट पहुंच गया था, जब अचानक उसे लगा कि कोई उसके फाटक के निकट आया और दरवाजा खोलकर अन्दर गायब हो गया है। "यह क्या किस्सा है?" अद्रियान ने सोचा। "किसको फिर से मेरी जरूरत हो

सकती है? कही कोई चोर तो भीतर नही चला गया? मेरी बुद्धू बेटियो के पास कोई प्रेमी तो नही आते?" ताबूतसाज ने यह भी सोचा कि अपने दोस्त यूर्को को मदद के लिये पुकारना चाहिये। इसी क्षण एक अन्य व्यक्ति फाटक के निकट आया, उसने भीतर जाना चाहा, किन्तु घर के मालिक को भागा आता देखकर रुक गया और उसने अपना तिकोना टोप उतार लिया। अद्रियान को उसका चेहरा परिचित-सा प्रतीत हुआ, किन्तु उतावली के कारण वह उसे बहुत ध्यान से नही देख पाया। "आप मेरे यहा आये है," अद्रियान ने हाफते हुए पूछा, "कृपया पधारिये, भीतर चलिये।" – "आप औपचारिकता के फेर मे नही पडे," आगन्तुक ने दबी-घुटी आवाज मे जवाब दिया, "मेहमानो को रास्ता दिखाते हुए आगे-आगे चलिये!" अद्रियान के पास औपचारिकता के फेर मे पडने का समय ही नही था। घर का फाटक खुला हुआ था, अद्रियान आगे-आगे और उसका अतिथि उसके पीछे-पीछे चल दिया। अद्रियान को ऐसे लगा मानो उसके कमरो मे लोग चल-फिर रहे हो। "यह क्या माजरा है!" उसने सोचा और जल्दी से कदम बढाता हुआ भीतर गया वहा उसकी टागे लडखडा गयी। कमरा प्रेतो से भरा हुआ था। खिडकी मे से छनती हुई चादनी उनके पीले और नीले चेहरो, सिकुडे-टेढे होठो, धुधली-अधमुदी आखो और उभरी हुई नाको को रोशन कर रही थी अद्रियान ने दहलते दिल से इन प्रेतो के रूप मे उन लोगो को पहचान लिया जो उसके योग-सहयोग से दफनाये गये थे और उसके साथ आनेवाला मेहमान तो वह ब्रिगेडियर था जो मूसलधार बारिश के वक्त दफनाया गया था। इन सभी स्त्री-पुरुषो ने ताबूतसाज को घेर लिया और सिर झुका-झुकाकर वे उसका अभिवादन करने लगे। किस्मत का मारा केवल एक ही, जो कुछ समय पहले मुफ्त दफनाया गया था मानो अपने चिथडे को छिपाता और शर्म से गडा जाता हुआ एक कोने मे चुपचाप खडा था। उसे छोडकर बाकी सभी बढिया कपड़े पहने थे – महिलाओ के सिरो पर रिबन वाली टोपिया थी, मृत अफसर वर्दिया डाटे थे, किन्तु उनकी दाढिया बढी हुई थी, व्यापारी-सेठ लोग समारोही अगरखों में खूब जच रहे थे। "देखो प्रोखोरोव," ब्रिगेडियर ने सभी आदरणीय अतिथियो की ओर से बोलते हुए कहा, "हम सभी तुम्हारे निमत्रण

पर अपनी कब्रो से उठकर आये हैं। वहां केवल वही रह गये हैं जिनमें बिल्कुल शक्ति शेष नहीं रह गयी, जो पूरी तरह गल-सड़ गये हैं, जो त्वचा के बिना केवल हड्डियों का पजर हैं। किन्तु इनमे से भी एक तुम्हारे यहा आने का मोह सवरण नही कर सका — इतना अधिक उसने तुम्हारे यहा आना चाहा " इसी समय एक छोटा-सा पजर औरों को कोहनियाता और भीड को चीरता हुआ अद्रियान के निकट आया। उसकी खोपडी तावूतसाज की ओर स्नेहपूर्वक मुस्करायी। उजले हरे और लाल रग के चिथडे और तार-तार हुए गाढे के टुकड़े उसपर ऐसे लटक रहे थे मानो डडे पर लटके हुए हों तथा घुटनो तक के बूटों में टागो की हड्डिया ऐसे बज रही थी जैसे ऊखल मे मूसल। "तुमने मुझे पहचाना नही, प्रोखोरोव," ककाल ने कहा। " गार्ड सेना के भूतपूर्व सार्जेण्ट उसी प्योत्र पेत्रोविच कुरील्किन को भूल गये हो जिसे तुमने १७९९ मे अपना पहला ताबूत बेचा था और सो भी चीड का, जिसे बलूत की लकडी का बताया था?" इतना कहकर उसने अद्रियान को अपनी वाहो मे भरने के लिये अपनी ककाली बाहें उसकी ओर फैला दी। किन्तु अद्रियान अपनी सारी शक्ति बटोरकर चिल्ला उठा और उसने उसे परे धकेल दिया। प्योत्र पेत्रोविच लडखडाया, गिरा और हड्डियो का ढेर बनकर रह गया। मुर्दो मे गुस्से की लहर-सी दौड गयी, सभी अपने साथी की इज्जत की रक्षा के लिये डट गये, अद्रियान को भला-बुरा कहने और डराने-धमकाने लगे। बेचारे मेजबान के होश-हवास गुम हो गये। इनकी चीख-चिल्लाहट से बहरा और इनके द्वारा लगभग कुचला हुआ मेजबान बिल्कुल घबरा गया, खुद गार्ड सेना के भूतपूर्व सार्जेण्ट की हड्डियो पर गिर गया और बेहोश हो गया।

सूरज की किरणें ताबूतसाज के बिस्तर को कभी की आलोकित कर रही थी। आखिर उसने आखे खोलीं और नौकरानी को अपने सामने समोवार गर्माते देखा। रात की घटनाओं को याद करके अद्रियान भय से काप उठा। उसे अपनी कल्पना में त्र्युखिना, ब्रिगेडियर और सार्जेंट कुरील्किन का धुधला-सा आभास हो रहा था। वह चुपचाप इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि नौकरानी उसके साथ बातचीत शुरू करे और उसे रात की घटनाओं का बाकी हाल बताये।

"बहुत देर तक सोये रहे आज तो आप, अद्रियान प्रोखोरोविच,"

मालिक को गाउन देते हुए नौकरानी अक्सीन्या ने कहा। "पडोसी दर्जी भी मिलने के लिये आ चुका है, हमारे हलके का पुलिसवाला भी यह बता गया है कि आज इन्स्पेक्टर का जन्मदिन है, मगर आप सो रहे थे और हमने यह ठीक नही समझा कि आपको जगाये।"

"भगवान को प्यारी हो गयी त्रूखिना के यहा से कोई आया था क्या?"

"भगवान को प्यारी हो गयी त्रूखिना? क्या वह मर गयी?"

"कैसी उल्लू हो तुम भी! उसके कफन-दफन की तैयारी मे क्या कल तुम्ही ने मेरा हाथ नही बटाया था?"

"क्या कह रहे हैं आप, मालिक? कही आपका दिमाग तो नही चल निकला या कल के नशे का खुमार अभी तक बाकी है? कल किसी को दफनाया ही कब गया था? आप दिन भर जर्मन के यहा दावत के मजे लूटते रहे, नशे मे धुत्त होकर घर लौटे, बिस्तर पर ढह पडे और अब तक सोते रहे। गिरजे मे प्रार्थना की घण्टिया भी कभी की बज चुकी।"

"अरे, सच!" ताबूतसाज ने खुश होकर कहा।

"बिल्कुल सच," नौकरानी ने जवाब दिया।

"अगर ऐसा ही है, तो झटपट चाय दो और मेरी बेटियो को भी बुला लो।"

डाक-चौकी का मुंशी

छोटा-सा कर्मचारी, भई वाह!
वह तो पूरा तानाशाह!

प्रिंस व्याज़ेम्स्की*

डाक-चौकी के मुंशियो को भला किसने नही कोसा होगा, किसकी उनसे तू-तू मैं-मैं नही हुई होगी? किसने गुस्से से आग-बबूला होकर

* १९वी शताब्दी के कवि प्योत्र व्याज़ेम्स्की की 'डाक-चौकी' कविता (१८२५) की कुछ परिवर्तित काव्य-पंक्तिया। ज़ारशाही रूस मे

यह किस्मत की मारी हुई शिकायत की कापी नहीं मांगी होगी, ताकि उसमें उनकी हठधर्मी, अशिष्टता और लापरवाही के बारे में बेकार ही एक शिकायत और लिख दे? कौन उन्हें दरिन्दों जैसा नहीं मानता, गये-बीते घटिया अफसरों जैसा या कम से कम "मुरोम के लुटेरों" के समान नहीं समझता? लेकिन हमें इन्साफ से काम लेना होगा, अपने को उनके स्थान पर रखकर देखना होगा, तब शायद हम उनके बारे में ऐसी कठोर राय जाहिर नहीं करेंगे। डाक-चौकी का मुंशी आखिर है क्या? एक बहुत ही छोटा कर्मचारी जिसके भाग्य में यातना ही यातना है और अगर वह लातों-घूसों की मार से बच जाता है (सो भी हमेशा नहीं), तो सिर्फ इसलिये कि सरकारी कर्मचारी है (मेरे पाठक, अपनी आत्मा से भार ले)। प्रिंस व्याजेम्स्की ने मजाक में उसे तानाशाह कहा है, वह भला कहां का तानाशाह है? क्या वास्तव में उसका काम जेल की चक्की पीसने के समान नहीं है? न दिन को चैन, न रात को आराम। ऊबभरी यात्रा के दौरान यात्री को जो दुख-दर्द सहने पड़ते हैं, उनका सारा गुस्सा डाक-चौकी के मुंशी पर निकलता है। मौसम खराब है, सड़क टूटी-फूटी है, कोचवान जिद्दी है, घोड़े अड़ियल हैं—इन सब के लिये दोषी है डाक-मुंशी। उसके मामूली-से घर के अहाते में दाखिल होने पर आगन्तुक एक दुश्मन की तरह उसकी तरफ देखता है। इस बिन बुलाये मेहमान से अगर उसे जल्दी ही निजात मिल जाये, तो बड़ी गनीमत है। लेकिन अगर घोड़े तैयार न मिलें? तो हे भगवान, कैसी-कैसी गालियां और कैसी-कैसी धमकियां सुननी पड़ती हैं उसे! बारिश और कीचड़-गन्दगी में उसे पराये अहातों में भागते फिरना पड़ता है, बुरी तरह झल्लाये हुए यात्री की चीख-चिल्लाहट और धक्कों-मुक्कों से क्षण भर को चैन पाने के लिये उसे तूफान और कड़ाके की सर्दी में ड्योढ़ी में जा छिपना पड़ता है। कोई जनरल आ जाता है, तो थर-थर कांपता हुआ डाक-मुंशी उसे तीन घोड़ोंवाली आखिरी दो घोड़ागाड़ियां दे देता है, जिनमें एक डाक की घोड़ागाड़ी भी होती है। जनरल तो धन्यवाद का एक शब्द कहे बिना चल देता है। पांच मिनट बाद घण्टी की टनटन सुनाई पड़ती है... और

सभी सरकारी कर्मचारियों को श्रेणियों में विभाजित किया गया था और ६. [illegible] का मुंशी सबसे नीची, चौदहवीं श्रेणी में आता था। —सं०

सरकारी हरकारा उसकी मेज़ पर आदेशपत्र पटक देता है आइये, इन सब बातो की गहराई मे जाये, तो गुस्से के बजाय हमारा हृदय सच्ची सहानुभूति से भर जायेगा। कुछ शब्द और भी—बीस वर्षों के दौरान मैं सभी दिशाओ मे रूस की यात्रा कर चुका हू, डाक-घोडागाडियो के लगभग सभी रास्ते जानता हू, कोचवानो की कई पीढियो से परिचित हू, शायद ही कोई ऐसा डाक-चौकी मुशी होगा जिसे मैं पहचानता न होऊ, शायद ही कोई ऐसा होगा जिससे मेरा वास्ता न पड़ा हो। निकट भविष्य मे मैं अपने यात्रा-अनुभवो को प्रकाशित करने की आशा करता हू। फिलहाल केवल इतना ही कहूगा कि आम तौर पर डाक-चौकी के मुशियो को बहुत गलत रग मे पेश किया गया है। इतने अधिक बदनाम ये डाक-मुशी कुल मिलाकर बडे शान्त स्वभाव के लोग होते हैं, दूसरो के काम आना उनके मिजाज मे है, दूसरो से घुलने-मिलने का उनमे झुकाव होता है, अपने बारे मे किसी प्रकार की गलतफ़हमी के बिना वे विनयशील होते हैं और निन्यानवे के फेर मे भी बहुत अधिक नही पडते। उनकी बातचीत से (जिसे कुछ आगन्तुक महानुभाव बकवास से अधिक कुछ नही मानते) बहुत कुछ जिज्ञासापूर्ण और शिक्षाप्रद प्राप्त किया जा सकता है। जहा तक मेरा सम्बन्ध है, तो मैं ऊचे दर्जे के किसी सरकारी कर्मचारी की तुलना मे उनकी बातचीत को कही अधिक बेहतर मानता हू।

इस बात का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि डाक-चौकी के मुशियो की सम्मानित श्रेणी मे भी मेरे कुछ मित्र हैं। वास्तव मे उनमे से एक की स्मृति को मैं बहुत मूल्यवान मानता हू। परिस्थितिया हमे निकट ले आयी और अपने कृपालु पाठको के साथ मैं अब उसी की चर्चा करना चाहता हू।

१८१६ के मई महीने की बात है कि मुझे गुबेर्निया के उस मार्ग पर यात्रा करनी पडी जो अब नही रहा। मैं छोटा-सा अफ़सर था, एक डाक-चौकी से दूसरी डाक-चौकी तक जाता था और दो घोडो से अधिक किराये पर लेने के लिये मेरी जेब मे पैसे नही होते थे। नतीजा यह कि डाक-मुशी भी मेरा कोई लिहाज नही करते थे और अक्सर मुझे जोर-जबर्दस्ती से वह लेना पडता था जिसे मैं अपना हक समझता था। तब मैं जवान और बहुत गर्ममिजाज था और उन

डाक-मुंशियो के घटियापन और नीचता से जल-भुन उठता जो मेरे लिये तैयार किये गये घोड़ों को ऊंचे अफ़सरो के हवाले कर देते। इसी तरह मैं बहुत अर्से तक इस बात का आदी नही हो पाया था कि राज्यपाल की मेज़ पर खाना परोसने के समय बड़े लोगो का ध्यान रखनेवाला बैरा मेरी अवहेलना कर देता था। अब तो दोनो बाते मुझे ठीक लगती है। आप ही सोचे, अगर सामान्य रूप से स्वीकृत इस नियम की जगह कि "नीची पदवीवाला ऊंची पदवीवाले के सामने झुके" यह नियम लागू हो जाये कि "कम समझदार समझदार के सामने सिर झुकाये" तो क्या होता? अच्छी खासी मुसीबत खड़ी हो जाती। नौकर-चाकर पहले किसकी सेवा करने दौड़ते? ख़ैर, मैं अपनी कहानी सुनाता हू।

बहुत गर्म दिन था चौकी से तीन वेर्स्ता इधर हल्की बूदा-बादी शुरू हुई और एक मिनट बाद इतने ज़ोर की बारिश होने लगी कि मैं बिल्कुल भीग गया। डाक-चौकी पर पहुचते ही मैंने झटपट कपड़े बदले और चाय लाने के लिये कहा। "अरी दून्या!" मुंशी ने आवाज़ दी, "समोवार गर्म करो और कुछ क्रीम ले आओ!" इन शब्दो के साथ ही बीच की दीवार के पीछे से कोई चौदह साल की लड़की सामने आयी और ड्योढ़ी की ओर भाग गयी। उसके सौन्दर्य से मैं दंग रह गया। "यह तुम्हारी बेटी है?" मैंने डाक-मुंशी से पूछा। "जी, मेरी बेटी है," उसने गर्व से प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, "बड़ी समझदार, बड़ी ही चुस्त-फुर्तीली है, बिल्कुल अपनी दिवगता मा जैसी।" वह रजिस्टर मे मेरा यात्रा-पत्र दर्ज करने लगा और मैं चित्रो को देखने लगा जिनसे उसका साधारण, किन्तु साफ़-सुथरा घर सजा हुआ था। उन चित्रो मे एक उड़ाऊ-खाऊ बेटे का क़िस्सा बयान किया गया था। पहले चित्र मे ड्रेसिंग-गाउन और रात की टोपी पहने बूढ़ा एक बेचैन किशोर को विदा कर रहा था जो बड़ी उतावली से बाप का आशीर्वाद और उसके हाथ से धन की थैली ले रहा था। दूसरे चित्र मे उस नौजवान की ऐयाशी को खूब उभारा गया था – वह मतलबी दोस्तो और वेश्या औरतो मे घिरा हुआ मेज़ पर बैठा था। तीसरे चित्र मे तबाह

गये इसी युवक को फटा चोगा पहने और सिर पर टेढ़ी टोपी रखे सूअर चराता और उन्ही की संगत मे भोजन करते दिखाया गया था।

उसके चेहरे पर गहरे सन्ताप और पश्चाताप की छाप थी। अन्तिम चित्र मे उसका पिता के पास लौटना चित्रित था – नेक बुजुर्ग वही ड्रेसिंग-गाउन और रात की टोपी पहने हुए बेटे के स्वागत को बाहर भागा आता है, ऐयाश बेटा बाप के पैरो पर गिरा हुआ है, चित्र की पृष्ठभूमि मे बावर्ची एक मोटे-ताजे बकरे को काट रहा है और बडा भाई उससे इस खुशी, इस जशन का कारण पूछ रहा है। हर चित्र के नीचे मैने जर्मन भाषा मे लिखी ढग की कविता भी पढी। यह सब कुछ मेरी स्मृति मे आज भी वैसे ही सजीव है, जैसे फूलोवाले गमले, पलग और चटक रग का पर्दा तथा मेरे इर्द-गिर्द की अन्य सभी चीजे। घर के स्वामी को भी ज्यो का त्यो अपनी आखो के सामने देखता हू – उम्र कोई पचास साल, प्रफुल्ल और ताजगी लिये, हरे रग का फ्राक-कोट पहने जिसपर बदरग फीतो के साथ तीन तमगे लटक रहे थे।

मैने अभी पिछली डाक-चौकी के कोचवान के पैसे चुकाये ही थे कि दून्या समोवार लिये हुए आ गयी। उस चचल किशोरी को यह भापते देर न लगी कि उसने मुझपर कैसा जादू कर दिया है। उसने अपनी बडी-बडी नीली आखो को नीचे झुका लिया। मैं उसके साथ बातचीत करने लगा और वह किसी भी तरह की झेप-झिझक के बिना दुनिया के रग-ढग से परिचित लडकी की तरह मुझसे बोलने-बतियाने लगी। मैने उसके पिता की ओर शराब का एक गिलास बढाया, दून्या को चाय का प्याला दिया और हम तीनो ऐसे घुल-मिलकर बाते करने लगे मानो बरसो से एक दूसरे को जानते हो।

घोडे कभी के जोत दिये गये थे, मगर डाक-मुशी और उसकी बेटी से विदा लेने को मेरा मन नही हो रहा था। आखिर मैने उनसे विदा ली, पिता ने मेरे लिये शुभयात्रा की कामना की और बेटी मुझे घोडागाडी तक पहुचाने को मेरे साथ हो ली। मै ड्योढी मे रुका और मैने उससे चुम्बन लेने की अनुमति मांगी। दून्या इसके लिये राजी हो गयी... चुम्बनो के बारे मे बहुत कुछ कह सकता हू मैं तबसे,

> जबसे मैने यह खिलवाड शुरू
> किया है,

किन्तु एक चुम्बन ने भी ऐसी अमिट और मधुर छाप मन पर नही छोडी।

कई साल बीत गये और परिस्थितियां मुझे फिर से उसी रास्ते, उन्हीं जगहों पर ले गयीं। मुझे बूढ़े डाक-मुंशी की बेटी की याद हो आयी और इस ख्याल से मेरा मन खिल उठा कि फिर उससे भेंट हो सकेगी। किन्तु यह विचार भी मन में आया कि बूढ़े मुंशी को शायद नौकरी से अलग कर दिया गया हो, दून्या की शादी हो चुकी हो। दोनों में से किसी एक की मृत्यु की बात भी मेरे दिमाग में कौंधी और मैं सभी तरह के बुरे-बुरे ख्याल लिये हुए डाक-चौकी के निकट पहुंचा।

घोड़ागाड़ी डाक-मुंशी के छोटे-से घर के सामने आकर रुक गयी। कमरे में दाखिल होते ही मैंने उड़ाऊ-खाऊ बेटे की कहानी बयान करनेवाले चित्रों को पहचान लिया। मेज और पलंग अपनी पहलेवाली जगहों पर ही थे, किन्तु खिड़कियों के दासों पर फूलों के गमले नहीं थे और इर्द-गिर्द गड़बड़ तथा उपेक्षा साफ दिखाई दे रही थी। डाक-मुंशी भेड़ की खाल ओढ़े हुए सो रहा था, मेरे आने से उसकी आंख खुल गयी और वह थोड़ा-सा उठा यह तो वही सम्सोन वीरिन था, किन्तु कितना बूढ़ा गया था वह! जब तक वह मेरा यात्रा-पत्र दर्ज करता रहा मैं उसके पके बालों, बहुत समय से बढ़ी दाढ़ीवाले चेहरे की गहरी झुर्रियों और उसकी झुकी हुई पीठ को देखता तथा इस बात से हैरान होता रहा कि तीन-चार सालों में प्रफुल्ल मर्द कैसे जीर्ण-शीर्ण बुढ़ऊ में बदल गया है। "मुझे पहचाना?" मैंने उससे पूछा। "हम तो पुराने परिचित हैं।" – "हो सकता है," उसने उदासी से उत्तर दिया, "यह रास्ता बड़ा चालू है, अनेक लोग मेरे यहां आ चुके हैं।" – "तुम्हारी दून्या तो ठीक-ठाक है?" मैंने अपनी बात जारी रखते हुए पूछा। बूढ़े के माथे पर बल पड़ गये। "भगवान जाने," उसने उत्तर दिया। "शायद उसकी शादी हो गयी?" मैंने जानना चाहा। बूढ़े ने ऐसे ढोंग किया मानो मेरा सवाल सुना ही न हो और फुसफुसाते हुए यात्रा-पत्र पढ़ता रहा। मैंने अपने सवाल पूछने बन्द कर दिये और चाय के लिये केतली गर्म करने को कहा। जिज्ञासा मुझे बेचैन करने लगी और मेरे मन में यह आशा पैदा हुई कि शराब पीने के बाद मेरे पुराने परिचित की ज़बान खुल जायेगी।

मेरा अनुमान सही निकला। बूढ़े ने शराब का गिलास ले लिया

और मैंने देखा कि उसकी उदासी के बादल छंट गये हैं। शराब का दूसरा गिलास पीने के बाद वह बतियाने लगा। उसे मेरी याद आ गयी या फिर उसने यह ढोंग किया कि उसे मेरा स्मरण हो आया है और उसने मुझे वह किस्सा सुनाया जो उस समय मेरे दिल-दिमाग पर छा गया और जिसने मेरे मर्म को छू लिया।

"तो आप मेरी दून्या को जानते थे?" उसने कहना आरम्भ किया, "कौन नही जानता था उसे? ओह, दून्या, दून्या! क्या लडकी थी वह भी! जो कोई भी यहा आता, उसकी तारीफ करता, कोई भी उसे भला-बुरा न कहता। कुलीन नारियो मे से कोई उसे दुपट्टा भेट कर जाती, तो कोई झुमके। इधर से गुजरनेवाले बडे लोग जान-बूझकर दोपहर या रात का भोजन करने के लिये यहा रुक जाते, मगर वास्तव मे उनका उद्देश्य यही होता कि अधिक देर तक उसे देखते रहे। ऐसा भी होता था कि कोई महानुभाव चाहे कितना ही झल्लाया हुआ क्यो न आता, उसके सामने शान्त हो जाता और मेरे साथ अच्छे ढग से बातचीत करता। आप विश्वास करेगे श्रीमान – सरकारी और सैनिक हरकारे आध-आध घण्टे तक उससे बतियाते रहते थे। सारा घर भी वही सम्भालती थी – झाडना-बुहारना, खाना पकाना, सभी कुछ कर लेती थी वह। मुझ बूढे उल्लू की तो उसे देखते-देखते नज़र ही नही भरती थी, मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नही था। क्या जी-जान से प्यार नही करता था मैं अपनी बिटिया को, क्या बहुत सहेज कर नही रखता था मैं उसे, कोई कष्ट होने देता था क्या उसे? लेकिन नही, मुसीबत से बचा नही जा सकता, किस्मत मे जो लिखा है, वह होकर रहता है।" अब इसके बाद वह सविस्तार अपनी दर्द-कहानी सुनाने लगा। तीन साल पहले जाडे की एक शाम को जब डाक-चौकी का मुशी अपने नये रजिस्टर मे लकीरे खीच रहा था और उसकी बेटी बीच की दीवार के पीछे अपने लिये फ्राक सी रही थी, तो तीन घोडो की एक गाडी – त्रोइका – आकर दरवाज़े पर रुकी। चेर्केसी ढग की टोपी और बडा फौजी कोट पहने तथा गुलूबन्द लपेटे हुए एक व्यक्ति कमरे मे दाखिल हुआ और उसने घोडे मागे। उस वक्त सभी घोडे गये हुए थे। यह खबर सुनते ही यात्री ने अपनी आवाज़ और कोड़ा भी ऊचा किया। किन्तु दून्या, जो इस

तरह के तूफान की भांति हो चुकी थी, [illegible] की [illegible] से [illegible]
झपटकर सामने आयी और वह [illegible] से पूछने लगी [illegible]
कुछ खाना खायेंगे नहीं क्या? दून्या के सामने आने का जो असर [illegible]
चाहिये था वही हुआ। अफसर का गुस्सा [illegible] गया, वह [illegible]
का इन्तजार करने को राजी हो गया और उसने खाने का आदेश
दिया। फर की [illegible] टोपी उतारकर और [illegible]
उतार देने पर [illegible] नौजवान [illegible] हुस्सार अफसर [illegible]
आ गया। [illegible] मुंशी के पास [illegible] इत्मीनान से बैठ गया उसने और उसकी
बेटी से हंस हंसकर बोलने-बतियाने लगा। उसके लिये भोजन परोस
दिया गया। इसी बीच घोड़े भी आ गये और मुंशी ने आदेश दिया कि
दाना-पानी दिये बिना उन्हें उसकी घोड़ा-गाड़ी में जोत दिया जाये।
किन्तु घर से लौटने पर उसने नौजवान अफसर को बेंच पर बेहोश-सा
पड़ा पाया। वह बेहोश हो रहा था, उसके सिर में बहुत दर्द था और
उसके लिये यात्रा जारी रखना सम्भव नहीं था ... तो क्या किया जाये!
मुंशी ने अपना पलंग उसे दे दिया और यह तय हुआ कि अगर बीमार
की तबीयत बेहतर नहीं हो जायेगी, तो अगली सुबह को स... नगर
से डाक्टर को बुलवाया जाये।

अगले दिन हुस्सार की तबीयत और ज्यादा खराब हो गयी। उसका नौकर घोड़े पर सवार होकर डाक्टर को लाने के लिये शहर चला गया। दून्या ने सिरके से तर किया हुआ रूमाल उसके सिर पर रखा और अपनी सिलाई लेकर उसके पलंग के पास बैठ गयी। डाक-चौकी के मुंशी की उपस्थिति में रोगी हाय-वाय करता, मुह से लगभग एक भी शब्द न निकालता, फिर भी वह कॉफी के दो प्याले पी गया और आहें भरते हुए उसने अपने लिये दोपहर के भोजन का भी आदेश दिया। दून्या उसके पास ही बैठी रहती थी। वह बार-बार पीने के लिये कुछ देने को कहता और दून्या खुद बनाये हुए लेमोनाड का गिलास उसे देती। रोगी अपने होंठ तर करता और हर बार गिलास लौटाते हुए कृतज्ञता प्रकट करने के लिये अपने क्षीण हाथ से उसका हाथ दबाता। दोपहर के भोजन के समय तक डाक्टर भी आ गया। उसने रोगी की नब्ज देखी, उसके साथ जर्मन भाषा में बातचीत की और रूसी में यह बताया कि उसे केवल आराम की जरूरत है और दो दिन बाद

देव-मण्डप से बाहर निकल रहा था, गिरजे की देख-भाल करनेवा
मोमबत्तियां बुझा रहा था, दो बूढ़ी औरतें अभी तक एक कोने
प्रार्थना कर रही थीं, किन्तु दून्या गिरजे में नहीं थी। अभागे पिता
आखिर मन मारकर गिरजे के चौकीदार से यह पूछा कि दून्या प्रार्थ
में आयी थी या नहीं। उसने जवाब दिया कि नहीं आयी थी। डा
मुंशी न जीता, न मरता-सा वापस घर चल दिया। सिर्फ यही आ
उसके दिल में रह गयी – हो सकता है कि जवानी की मस्ती में आ
दून्या ने अगली डाक-चौकी तक, जहां उसकी धर्म-माता रहती थी
जाने की ठान ली हो। बहुत ही यातनापूर्ण विह्वलता से वह उस त्रोइ
बर्फ-गाड़ी के लौटने की राह देखने लगा, जिसपर उसने अपनी बे
को जाने दिया था। कोचवान नहीं लौटा। आखिर रात हो जाने प
वह नशे में धुत्त अकेला लौटा और उसने यह भयानक खबर सुनायी
अगली डाक-चौकी से दून्या हुस्सार के साथ चली गयी।

अपने दुर्भाग्य की इस चोट को बूढ़ा सहन न कर सका, उ
समय उसने वह चारपाई थाम ली जिसपर वह जवान ढोंगी पि
दिन पड़ा रहा था। सारी परिस्थितियों पर विचार करते हुए डा
मुंशी समझ गया कि उस जवान ने बीमारी का नाटक किया था
बेचारे को जोर के बुखार ने धर दबाया, उसे स . नगर में इला
के लिये ले जाया गया और किसी अन्य को वक्ती तौर पर उस
जगह नियुक्त कर दिया गया। हुस्सार के इलाज के लिये आनेवा
डाक्टर ने ही उसकी चिकित्सा की। उसने डाक-मुंशी को विश्वा
दिलाया कि नौजवान अफसर बिल्कुल स्वस्थ था, कि उसके बुरे इरा
के बारे में उसने तभी भाप लिया था, किन्तु उसके कोड़े से डर
हुआ खामोश रहा था। जर्मन डाक्टर ने सच कहा था या अपनी दू
दर्शिता की डींग हांकनी चाही थी, बेचारे रोगी को इससे कोई सन्तो
नहीं हुआ। अपनी बीमारी से थोड़ा अच्छा होते ही डाक-मुंशी ने स.
नगर के डाक-अधिकारी से दो महीने की छुट्टी ली और किसी से
अपने इरादे की चर्चा किये बिना पैदल ही अपनी बेटी की खोज
चल दिया। यात्रा-पत्र से उसे मालूम था कि कप्तान मीन्स
स्मोलेन्स्क से आया था और पीटर्सबर्ग गया था। कप्तान को
जानेवाले कोचवान ने बताया कि दून्या रास्ते भर रोती रही, यद्य

बूढ़ा देर तक बुत बना खड़ा रहा। आखिर उसे आस्तीन के कफ में कागजों की एक गड्डी-सी दिखाई दी। उसने उसे निकालकर खोला और उसमें पांच-पांच तथा दस-दस रूबल के कई मुड़े-मुड़ाये नोट पाये। उसकी आंखों में फिर से आंसू आ गये—विक्षोभ के आंसू। उसने नोटों को मसलकर उनका गोला-सा बनाया, उसे जमीन पर फेंका, जूते की एड़ी से रौंदा और आगे चल दिया कुछ कदम जाकर वह रुका, उसने थोड़ी देर विचार किया और मुड़ा किन्तु नोट गायब हो चुके थे। लक-दक कपड़े पहने एक नौजवान उसे अपनी ओर आते देखकर बग्घी की तरफ लपका, जल्दी से उसमें बैठ गया और उसने चिल्लाकर कोचवान से कहा, "चलो! " डाक-मुंशी ने उसका पीछा नहीं किया। उसने अपनी डाक-चौकी पर लौटने का फैसला कर लिया, किन्तु ऐसा करने से पहले अपनी बेचारी दून्या को एक बार देख लेना चाहा। दो दिन बाद वह पुन मीन्स्की के यहा लौटा। किन्तु फ़ौजी अर्दली ने बड़ी कठोरता से उससे कहा कि मालिक किसी से नहीं मिलते, धकियाकर उसे ड्योढ़ी से बाहर निकाला और फटाक से दरवाजा बन्द कर दिया। डाक-मुंशी खड़ा रहा, खड़ा रहा—और फिर वापस चला गया।

बूढ़ा उसी शाम को गिरजे की प्रार्थना के बाद लितेयनाया सड़क पर जा रहा था। अचानक उसके सामने से एक बढ़िया बग्घी गुज़री और उसने उसमें बैठे मीन्स्की को पहचान लिया। बग्घी एक तिमंजिले मकान के दरवाजे के सामने रुकी और हुस्सार भागकर ओसारे में चला गया। डाक-मुंशी को एक बात सूझी। वह मुड़ा और कोचवान के पास जाकर उसने पूछा, "किसकी बग्घी है यह भाई? मीन्स्की की तो नही?"—"उन्ही की है," कोचवान ने जवाब दिया, "मगर तुम्हे इससे मतलब?"—"बात यह है कि तुम्हारे साहब ने दून्या के पास पहुचा देने के लिये एक रुक्का मुझे दिया था, लेकिन मुझे याद नही रहा कि दून्या कहा रहती है।"—"यहीं रहती है, दूसरी मंज़िल पर। देर कर दी तुमने मेरे भाई, रुक्का लेकर आने में। अब तो साहब खुद उसके पास हैं।"—"इससे कोई फर्क नही पडता," दिल में अस्पष्ट-सी धडकन अनुभव करते हुए बूढे ने कोचवान की बात काटी। "यह बताने के लिये धन्यवाद, मै अपना कर्त्तव्य पूरा कर आता हूं।" इतना कहकर वह जीने पर चढ चला।

दरवाज़ा बन्द था। उसने घण्टी बजायी और उसके लिये बहुत बोझिल प्रतीक्षा के कुछ क्षण बीते। चाबी को ताले मे डालने की आवाज हुई और दरवाज़ा खुला। "अव्दोत्या सम्सोनोव्ना क्या यही रहती हैं?" उसने पूछा। "हा," जवान नौकरानी ने जवाब दिया। "तुम्हे उनसे क्या काम है?" डाक-मुशी ने कोई उत्तर नही दिया और भीतर बढ चला। "भीतर नही जाइये, नही जाइये!" नौकरानी पीछे से चिल्लायी, "अव्दोत्या सम्सोनोव्ना के यहा इस समय मेहमान है।" किन्तु डाक-मुशी उसकी बात पर कान दिये बिना आगे चलता गया। पहले दो कमरो मे अन्धेरा था, तीसरे मे रोशनी थी। खुले दरवाजे के पास आकर वह रुक गया। बहुत ही सजे-धजे कमरे मे मीन्स्की सोच मे डूबा हुआ बैठा था। आधुनिकतम फैशन की पुतली-सी बनी दून्या उसकी आरामकुर्सी के हत्थे पर ऐसे बैठी थी जैसे कोई नारी-घुडसवार अंग्रेज़ी जीन पर बैठी हो। वह मुग्ध भाव से मीन्स्की को देखती हुई उसके काले घुघराले बालो को अपनी हीरो से चमकती उगलियो के गिर्द लपेट रही थी। बेचारा डाक-चौकी का मुशी! उसे अपनी बेटी कभी भी इतनी सुन्दर नही लगी थी, वह बरबस उसे देखता ही रह गया। "कौन है वहा?" दून्या ने सिर ऊपर उठाये बिना पूछा। बूढा बाप चुप रहा। कोई उत्तर न मिलने पर दून्या ने सिर ऊपर उठाया और वह चीख मारकर कालीन पर गिर गयी। मीन्स्की घबराकर उसे उठाने के लिये लपका, अचानक डाक-मुशी को दरवाजे के पास खडा देखकर उसने दून्या को वही छोड दिया और गुस्से से कापता हुआ उसके पास गया, "क्या चाहिये तुम्हे?" उसने दात पीसते हुए पूछा, "चोरों की तरह हर जगह मेरा पीछा क्यो करते रहते हो? या तुम मेरी जान लेने के फेर मे पडे हो? दफा हो जाओ यहा से!" और उसने अपने मजबूत हाथ से बूढे का कालर पकडकर उसे जीने की ओर धकेल दिया।

बूढा वापस आया। उसके दोस्त ने सुझाव दिया कि वह मीन्स्की के खिलाफ शिकायत करे, किन्तु डाक-मुशी ने कुछ देर सोचकर हाथ झटका और इस ख्याल को रद्द कर दिया। दो दिन बाद वह पीटर्सबर्ग से अपनी डाक-चौकी को वापस चल पडा और फिर से वही पुराना काम करने लगा। "तो अब तीसरा साल चल

५*

रहा है इस बात को," उसने अन्त में कहा, "मैं दुन्या के बिना रह रहा हूं और कोई खैर-खबर नहीं है मुझे उसके बारे में। वह जिन्दा है या मर गयी भगवान ही जाने। सब कुछ होता है इस दुनिया में। किसी आने-जाने वाले छैल-छबीले के फेर में पड़ जानेवाली वह न तो पहली है और न आखिरी जिसके साथ मौज मनाकर फिर उसे एक तरफ फेंक दिया जाता है। पीटर्सबर्ग में ऐसी बहुत-सी मूर्ख युवतियां हैं जो आज अतलस और रेशम में सजी हुई हैं, मगर कल फटेहाल शराबियों के भिखमंगों के साथ सड़कें बुहारती दिखाई देती हैं। जैसे ही कभी यह ध्यान आता है कि दुन्या की भी ऐसी दुर्गति हो सकती है, तो अनचाहे ही मेरा मन उसकी मौत की कामना करने लगता है।"

तो यह थी दर्द-कहानी मेरे मित्र, मेरे बूढ़े डाक-मुंशी की, जिसे सुनाते हुए अनेक बार उसका गला रुंध गया था। अपने आंसुओं को वह वैसे ही अनूठे अन्दाज में कोट के पल्लू से पोंछता था जैसे दमीत्रियेव की सुन्दर कविता में उद्यमी तेरेन्तिच* करता है। उसके आंसू कुछ हद तक शराब के प्रभाव का भी परिणाम थे, जिसके वह कहानी सुनाते हुए पांच गिलास पी गया था। कुछ भी क्यों न हो, उसके आंसुओं ने मेरे मर्म को अत्यधिक छू लिया था। उससे अलग होने पर मैं बहुत समय तक बूढ़े डाक-मुंशी को नहीं भूल सका, बेचारी दुन्या के बारे में भी बहुत समय तक मेरे मन में विचार बने रहे।

कुछ ही समय पहले "न" बस्ती में से गुजरते हुए मुझे अपने मित्र का ध्यान हो आया। मालूम करने पर पता चला कि जिस डाक-चौकी का वह मुंशी था, उसे कभी का बन्द किया जा चुका है। मेरे इस प्रश्न का कि "बूढ़ा डाक-मुंशी जिन्दा है या नहीं?" किसी से सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला। मैंने अपने सुपरिचित स्थान को देखने के लिये जाने का निर्णय किया, किराये की बग्घी ली और "न" गांव की ओर चल दिया।

यह पतझर के दिनों की बात है। धूसर बादल आकाश को ढके हुए थे, फ़सल-कटे खेतों से ठण्डी हवा आ रही थी और रास्ते में आनेवाले वृक्षों के लाल तथा पीले पत्ते अपने साथ उड़ाकर ला रही थी। मैं सूर्यास्त के समय गांव में पहुंचा और डाक-चौकीवाले घर के सामने

* १८वीं शताब्दी के रूसी कवि इवान दमीत्रियेव की एक कविता में वर्णित बन्धक-दास तेरेन्तिच की ओर संकेत है। —स०

रुका। उस ड्योढ़ी में (जहां कभी वेचारी दून्या ने मुझे चूमा था) एक मोटी-सी औरत सामने आयी और मेरे सवाल के जवाब मे उसने बताया कि बूढ़े डाक-मुंशी को मरे हुए एक साल हो गया, कि उसके घर मे अब एक बियर बनानेवाला रहने लगा है और वह उसी बियर बनानेवाले की बीवी है। मुझे अपनी व्यर्थ की यात्रा और व्यर्थ खर्च किये गये सात रूबलो के लिये अफसोस हुआ। "किस कारण मृत्यु हुई उसकी?" मैंने बियर बनानेवाले की बीवी से पूछा। "शराब मे डूब गया था, भैया।" उसने जवाब दिया। "उसे दफनाया कहा गया है?" – "गाव के छोर पर, उसकी बीवी की बगल मे।" – "क्या कोई मुझे वहा तक पहुचा सकता है?" – "क्यो नही पहुचा सकता! ए वान्का, बिल्ली का पिंड छोड। इन साहब को कब्रिस्तान ले जाकर डाक-मुंशी की कब्र दिखा दो।"

ये शब्द सुनते ही फटे-पुराने कपडे पहने लाल बालोवाला काना लडका भागता हुआ मेरे पास आया और मुझे गाव के छोर की ओर ले चला।

"क्या तुम डाक-मुंशी को जानते थे?" मैंने रास्ते मे उससे पूछा।

"जानता कैसे नही था! उन्होंने मुझे सीटी बनानी सिखायी थी। कभी-कभी ऐसा होता था कि वे शराबखाने से बाहर आते (भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे!) और हम उनके पीछे-पीछे शोर मचाने लगते, "दादा, दादा! अखरोट दो!" और वे हमे सारे अखरोट दे डालते। अक्सर वे हमारे साथ ही खेलते रहते।"

"राहगीर उन्हे याद करते है या नही?"

"राहगीर तो अब यहा आते ही बहुत कम है। कोई अदालती अफसर आ जाये, तो बात दूसरी है और वह मुर्दो के बारे मे पूछताछ नही करता। हा, गर्मियो मे एक कुलीन महिला आयी थी उसने बूढे डाक-मुंशी के बारे मे पूछताछ की और उनकी कब्र पर गयी थी।"

"कैसी थी वह महिला?" मैंने जिज्ञासावश पूछा।

"बहुत ही सुन्दर थी," लडके ने जवाब दिया, "वह छ घोडो-वाली बग्घी मे यहा आयी, उसके साथ तीन बच्चे आया और एक छोटा-सा काला कुत्ता भी था। जैसे ही उसे यह बताया गया कि डाक-चौकीवाला बूढा इस दुनिया मे नही रहा, वह रो पडी और बच्चो मे बोली, 'यहा चैन से बैठे रहना, मैं कब्रिस्तान हो आती हू।' मैंने

उसके साथ चलना चाहा, किन्तु वह बोली, 'मैं खुद रास्ता जानती हूं।' और उसने मुझे चांदी का पाच कोपेक का सिक्का दिया – इतनी अच्छी थी वह! "

हम क़ब्रिस्तान मे पहुच गये, एकदम उजाड़-सुनसान जगह, जिसके गिर्द बाड नही थी, सभी जगह लकड़ी की सलीबे लगी हुई थी और छाया देनेवाला एक भी वृक्ष नही था। जिन्दगी मे कभी ऐसा मनहूस कब्रिस्तान मैंने नही देखा।

"यह है डाक-चौकीवाले बूढे की क़ब्र," लड़के ने बालू के ढूह पर उछलकर कहा, जिसमे ताबे की देव-प्रतिमावाली काली सलीब धसी थी।

"वह महिला यहा आयी थी?" मैंने पूछा।

"हा, आयी थी," वान्का ने जवाब दिया। "मैं उसे दूर से देखता रहा था। वह यहा आकर गिर गयी और देर तक ऐसे ही पड़ी रही। इसके बाद वह गाव मे गयी, उसने पादरी को बुलवाया, उसे पैसे दिये और मुझे चादी का पाच कोपेक का सिक्का दिया – बहुत अच्छी थी वह महिला।"

मैंने भी लडके को पाच कोपेक का सिक्का दिया और अब मुझे न तो यहा तक की यात्रा करने और न ही उन सात रूबलों का अफ़सोस था जो मैंने ख़र्च किये थे।

प्रेम-मिलन

मेरी प्यारी, कुछ भी पहने
पर तुम सुन्दर लगती हो।

बोग्दानोविच*

इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव की जागीर हमारे देश के एक दूरस्थ गुबेर्निया में थी। अपनी जवानी के दिनों में वह गार्ड सेना में था,

* १८वीं शताब्दी के रूसी कवि इप्पोलीत बोग्दानोविच की 'दुशेन्का' नामी कविता से। – सं०

घृणा उसके स्वभाव का एक विशेष लक्षण थी। अपने पड़ोसी के अंग्रे-
ज़ियत के जुनून के बारे में वह उत्तेजित रह ही नहीं पाता था और
उसकी आलोचना का कोई भी मौका हाथ से न जाने देता। किसी
मेहमान को वह अपनी जागीर दिखाता और अपने प्रबन्ध की प्रशंसा
के उत्तर में वह व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से कहता, "जी! मैं पड़ोसी ग्रिगोरी
इवानोविच की भांति हवाई किले नहीं बनाता। अंग्रेजी रंग-ढंग के फेर
में पड़कर कौन भला अपने को बरबाद करे! हमें तो पेट भरने
को मिल जाये इतना ही बहुत है!" उत्साही पड़ोसियों द्वारा ऐसे
और इसी तरह के दूसरे व्यंग्य-बाण कुछ बढ़ा-चढ़ाकर और नमक-मिर्च
के साथ ग्रिगोरी इवानोविच तक पहुंचाये जाते। अंग्रेजियत का दीवाना
हमारे पत्रकारों की तरह अपनी ऐसी आलोचना से बहुत उग्र और
आग-बबूला होकर अपने इस आलोचक को भालू और दकियानूसी कहता।

इन दोनों ज़मींदारों के बीच जब ऐसी तनातनी बन रही थी,
उसी समय बेरेस्तोव का बेटा उसके पास गांव में आया। उसने ... विश्व
विद्यालय में शिक्षा पायी थी और फौज में जाना चाहता था, मगर उसके
पिता इसके लिये राजी नहीं थे। दूसरी ओर, नौजवान बेटा अपने को
गैरफौजी नौकरी के बिल्कुल अयोग्य अनुभव करता था। बाप-बेटा
अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे और जवान अलेक्सेई फ़िलहाल रईसों
का निठल्ला जीवन बिताने लगा और इस ख्याल से कि जाने कब
उनकी ज़रूरत पड़ जाये उसने मूछें बढ़ा ली।*

अलेक्सेई तो वास्तव में ही बड़ा खूबसूरत जवान था। सचमुच
ही यह बड़े अफसोस की बात होती कि उसकी सुघड़-सुडौल काठी पर
फौजी वर्दी कभी अपनी अनूठी छटा न दिखाती और घोड़े की सवारी
करने के बजाय दफ्तरी कागज़ों में मत्थापच्ची करते हुए ही वह अपनी
पीठ झुका लेता। शिकार के वक्त रास्ते की किसी भी बाधा की परवाह
किये बिना जब वह सबसे आगे-आगे सरपट घोड़ा दौड़ाता, तो पड़ोसी
यह देखकर एकमत से कहते कि वह कभी ढंग का दफ्तरी अफसर नहीं
बन पायेगा। युवतियां उसे प्रशंसा से देखतीं, कोई-कोई मुग्ध भी हो

---

* उस ज़माने में सरकारी कर्मचारियों के लिये दाढ़ी-मूछ रखने की कड़ी मनाही थी। किन्तु सैनिकों के लिये मूछें रखना अनिवार्य था। —सं०

जाती, किन्तु अनेकमेई उनमें कोई दिलचस्पी जाहिर न करता। वे उसकी ऐसी उदासीनता का यह अर्थ लगाती कि वह किसी के प्रेम-जाल मे फसा हुआ है। इतना ही नही, उसके एक पत्र के पतेवाला यह स्वरा भी उनके हाथो मे घूम गया था – मास्को, अलेक्सी मठ के सामने, ठठेरे सवेल्येव का मकान, अकुलीना पेत्रोव्ना कूरोच्किना के नाम। कृपया यह पत्र अ० न० र० को पहुचा दे।

मेरे पाठक जो कभी गाव मे नही रहे, इस बात की कल्पना भी नही कर सकते कि गुबेर्निया की ये युवतिया कैसी कमाल की होती है! स्वच्छ हवा और अपने बागो के सेव के पेड़ो की छाया मे पली ये युवतिया पुस्तको से ही दीन-दुनिया का ज्ञान प्राप्त करती है। एकान्त स्वच्छन्दता और अध्ययन उनमें कच्ची उम्र मे ही ऐसी भावनाओ, उद्वेगो और भावावेशो को जन्म दे देते है जिनसे हमारी नगर की सुन्दरिया अनजान रहती है। ऐसी युवतियो के लिये घण्टियो की टनटन अनूठी बात होती है, पड़ोस के नगर की यात्रा उनके जीवन की बड़ी महत्वपूर्ण घटना बन जाती है और किसी मेहमान का आगमन बहुत समय के लिये तथा कभी-कभी तो जीवन भर के लिये अमिट छाप छोड जाता है। जाहिर है कि इनके कुछ अटपटेपन पर कोई हस सकता है, किन्तु सतही ज्ञान रखनेवाले निरीक्षको के मजाको से उनके गहन गुणो पर पर्दा नही पड सकता, जिनमे से मुख्य है – चारित्रिक विशिष्टता, व्यक्तित्व की मौलिकता (individualité), जिसके बिना, जॉन पाल* के मतानुसार, मानवीय महत्ता भी नही हो सकती। राज-धानियो की नारियो को सम्भवत अधिक अच्छी शिक्षा मिलती है, किन्तु ऊचे समाज का रग-ढग शीघ्र ही उनकी चारित्रिक विलक्षणता का अन्त कर देता है और उनकी आत्माओ मे टोपियों जैसी एकरूपता आ जाती है। उनके बारे मे ऐसा कहकर न तो हम अपना कोई फैसला सुना रहे हैं और न उनकी भर्त्सना ही कर रहे हैं, फिर भी जैसे कि एक पुराने टिप्पणीकार ने लिखा है – nota nostra manet.**

---

* रोमानी धारा के जर्मन लेखक जोहन पाउल रीख्तर (१७६३–१८२५) का उपनाम। – स०

** हमारी टिप्पणी अपनी जगह पर बिल्कुल ठीक है (लातीनी)।

इस बात की कल्पना करना कुछ कठिन नहीं होगा कि हमारी युवतियों के बीच अलेक्सेई ने कैसा प्रभाव पैदा किया होगा। उनके सामने आनेवाला वह पहला इतना उदास और निराशा में डूबा हुआ युवक था, वही पहला ऐसा था जो मुर्झाई हुई खुशियों और मुरझाये हुए यौवन की बातें करता था। इतना ही नहीं, वह खोपड़ी के चित्रवाली काली अगूठी पहनता था। उस गुबेर्निया के लिये यह सब कुछ एकदम नया था। युवतियां उसके लिये पागल हुई जा रही थी।

किन्तु अंग्रेजी रंग-ढंग के दीवाने की बेटी लीज़ा (या बेत्सी, जैसे कि उसके पिता ग्रिगोरी इवानोविच उसे बुलाते थे) सबसे ज्यादा अलेक्सेई के फेर मे पडी हुई थी। दोनो के पिता एक दूसरे के यहा कभी आते-जाते नही थे, लीज़ा ने अलेक्सेई को अभी तक देखा नहीं था, जबकि जवान पडोसिने सिर्फ उसी की बाते करती रहती थी। लीज़ा सत्रह साल की थी। उसकी काली आखे उसके सावले और बहुत ही प्यारे चेहरे को विशेष सजीवता प्रदान करती थीं। वह अपने पिता की इकलौती और इसीलिये लाड़-प्यार से बिगडी हुई बेटी थी। उसकी चचलता और हर क्षण उसके द्वारा की जानेवाली शरारतों से पिता को बडी खुशी होती, मगर जिनसे नियमनिष्ठ मिस जैक्सन बुरी तरह परेशान हो उठती। यह अविवाहिता, चालीस वर्षीया शिक्षिका अपने चेहरे को चिकनाती-चमकाती, भौंहो को रगती, साल मे दो बार 'पामेला'* पढती, दो हज़ार रूबल वार्षिक वेतन पाती और इस "बर्बर रूस" मे ऊब के मारे उसकी जान निकलती।

लीज़ा की नौकरानी थी नास्त्या। वह लीज़ा से कुछ बडी थी, मगर अपनी मालकिन की तरह ही चचल। लीज़ा उसको बहुत प्यार करती थी, उसे अपने दिल के सभी राज़ बताती थी और उसके साथ मिलकर अपनी शरारतो के सभी मसूबे बनाती थी। सक्षेप मे यह कि प्रिलूचिनो गाव मे नास्त्या किसी भी दुखान्ती फ़ासीसी उपन्यास की विश्वासपात्र सहेली से कही अधिक महत्त्व रखती थी।

---

* अंग्रेज़ उपन्यासकार रिचर्डसन के 'पामेला' (१७४१) उपन्यास से अभिप्राय है। —स०

और [illegible] किसी [illegible] करती है [illegible]

और [illegible]

तो बताओ, क्या सचमुच ही वह प्यारा है?"

बहुत कम से [illegible] कहा जा सकता है कि बहुत ही सुन्दर। सुन्दर सुगठित शरीर, ऊँचा कद, दोनों गालों पर गुलाब खिले हुए।"

सच? मगर मेरा तो ऐसा ख्याल था कि उसका चेहरा पीला होगा। तो? कैसा लगा वह तुम्हें? उदास-सा, विचारों में डूबा हुआ?"

क्या कह रही है आप? ऐसा मस्तमौजी तो मैंने पहले कभी देखा ही नहीं। जाने उसे क्या सूझी, हमारे साथ छुपाछुपी खेलने लगा।"

"तुम लोगों के साथ छुपाछुपी खेलने लगा! यह असम्भव है!"

"बिल्कुल सम्भव है! इतना ही नहीं, वह तो और भी आगे बढ़ गया। जिस किसी को पकड़ लेता, उसे चूमे बिना न छोड़ता!"

"मर्जी तुम्हारी, नास्त्या, लेकिन तुम झूठ बोल रही हो।"

"मर्जी आपकी, मैं झूठ नहीं बोल रही हूं। मैंने खुद बड़ी मुश्किल से उससे पिण्ड छुड़ाया। इसी तरह उसने पूरा दिन हमारे साथ बिताया।"

"मगर सुनने में तो यह आया है कि वह किसी के प्रेम में दीवाना है और किसी दूसरी लड़की की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता?"

"मालूम नहीं, लेकिन मुझे तो उसने खूब नज़र गड़ाकर देखा, कारिन्दे की बेटी तान्या को भी, कोल्बिन की पाशा को भी। हां, यह कहना पाप होगा कि उसने किसी की अवहेलना की, ऐसा शैतान है।"

"बड़े अचम्भे की बात है यह तो! घर में उसके बारे में लोगों की क्या राय है?"

"लोगों का कहना है कि बहुत ही अच्छा रईसज़ादा है वह, बड़ा दयालु और बहुत ही खुशमिज़ाज। सिर्फ एक ही बुराई है उसमें — लड़कियों के पीछे भागने का बड़ा चसका है उसे। लेकिन मेरे ख्याल

है? इस तरह वह दोनों ओर से ऊंचे छायादार वृक्षों से ढक
र चली जा रही थी कि अचानक एक बढिया शिकारी कुत्ता
भूकने लगा। लीज़ा डरकर चिल्ला उठी। इसी समय ऊंची
सुनाई दी, "Tout beau, Sbogar, ici!.."* और झाडियों
से जवान शिकारी सामने आया। "मेरी प्यारी, डरो नही,"
लीज़ा से कहा, "मेरा कुत्ता काटता नही।" लीज़ा ने भय से
पा ली और तत्काल परिस्थिति से लाभ उठाया। "हुजूर,
लगत," उसने कुछ भय और कुछ लाज का नाटक करते हुए
"देखत तो कैसो डरावनो, फेर मो पर झपटत।" इसी बीच
ई (पाठक ने उसे पहचान लिया होगा) जवान किसान लडकी
टक देख रहा था। "अगर डरती हो, तो मैं तुम्हारे साथ-साथ
सकता हू," उसने लीज़ा से कहा, "तुम मुझे अपने साथ चलने
जाज़त देती हो?" – "कौन मना कर सकत?" लीज़ा ने उत्तर
, "सडक सभी की होत, जो चाहे चलत।" – "किस गाव की
तुम?" – "प्रिलुचिनो की। वासीली लुहार की बेटी, खुम्भिया
न जात" (लीज़ा ने डोरी से लटकती छाल की टोकरी को
या)। "और साहब तुम, तुगीलोवो के होवत?" – "बिल्कुल
," अलेक्सेई ने जवाब दिया, "छोटे साहब का अर्दली हू मैं।"
क्सेई ने बराबरी के नाते बात करनी चाही। किन्तु लीज़ा ने उसकी
देखा और हस पडी। "झूठ बोलत," उसने कहा, "ऐसी बुद्धू
समझत। खूब देखत, तुम खुद साहब होत।" – "तुम ऐसा क्यो
झती हो?" – "सब बातन से।" – "फिर भी?" – "क्या साहब
र नौकर मे फर्क न कर सकत? पहनत-ओढत हमार माफिक नही,
लत-बतियावत हमार माफिक नही, कुत्ते को भी हमार माफिक नही
ारत।" लीज़ा अलेक्सेई को अधिकाधिक अच्छी लग रही थी।
ाव की प्यारी-सुन्दर लडकियो के मामले मे औपचारिकता न बरतने
आदी अलेक्सेई ने उसे बाहो मे भरना चाहा। किन्तु लीज़ा उछलकर
समे दूर हट गयी और अपने चेहरे पर ऐसी रुखाई तथा कडाई ले
गयी कि यद्यपि अलेक्सेई को इसमे तनिक हसी आ गयी, तथापि

---

* स्बोगार, भौकना बन्द करो, इधर आओ। (फ्रासीसी)।

बातनीन की और आस्तीन से मुंह ढंकते हुए हंसी। नास्त्या को उन्हें यह भूमिका खूब जची। हां, एक ही मुश्किल का सामना करना पड़ा— उसने नंगे पांव अहाते में चलने की कोशिश की, किन्तु दूब उसके कोमल पैरों में चुभी और बालू तथा कंकड़-पत्थर तो बर्दाश्त से बाहर लगे। नास्त्या ने इस चीज में भी उसकी मदद की—उसने लीज़ा के पैरों की माप ली, भागकर त्रोफ़ीम गडरिये के पास खेत में गयी और उससे उसी नाप की छाल की चप्पलें बनाने को कहा। लीज़ा अगले दिन मुंह-अंधेरे जागी। घर के बाकी लोग अभी सो रहे थे। घर के फाटक पर नास्त्या चरवाहे की राह देख रही थी। सिंगी बज उठी और गांव के पशु ज़मींदार की हवेली के पास से गुज़रने लगे। त्रोफ़ीम ने नास्त्या के सामने आकर छाल की रंग-बिरंगी छोटी-छोटी चप्पलों की जोड़ी उसे दे दी और बदले में पचास कोपेक इनाम पाया। लीज़ा ने चुपके से देहातिन का भेस बनाया, मिस जैक्सन के बारे में फुस-फुसाकर नास्त्या को हिदायतें दीं, पिछवाड़े के ओसारे से बाहर निकली और सब्ज़ियों के बगीचे को लांघते हुए खेत की ओर भाग चली।

पूरब में उषा का प्रकाश फैल रहा था और बादलों की सुनहरी पांतें सूर्य की ऐसे ही प्रतीक्षा कर रही थीं जैसे दरबारी ज़ार के स्वागत को उसकी राह देखते हैं। निर्मल आकाश, सुबह की ताज़गी, शबनम, सुखद पवन और पक्षियों के कलरव ने लीज़ा के हृदय को यौवन के आह्लाद से ओतप्रोत कर दिया। इस बात से डरते हुए कि कहीं जान-पहचान के किसी व्यक्ति से भेंट न हो जाये, वह चल नहीं रही थी, उड़ी जा रही थी। पिता की जागीर की सीमा पर खड़े झुरमुट के निकट पहुंचकर लीज़ा धीरे-धीरे चलने लगी। यहीं उसे अलेक्सेई की बाट जोहनी थी। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, यद्यपि वह स्वयं इसका कारण नहीं जानती थी। किन्तु जवानी के दिनों की हमारी शरारतों के साथ अनुभव होनेवाला यही भय तो उनका मुख्य आकर्षण है। लीज़ा ने झुरमुट के धुंधलके में प्रवेश किया। वृक्षों के झुरमुट की गहराई में से दबे-घुटे शोर ने लड़की का स्वागत किया। उसका उन्माद दब गया। धीरे-धीरे वह मधुर कल्पना के वशीभूत हो गयी। वह कुछ ... रही थी ... किन्तु कौन यह सही-सही कह सकता है कि वसन्त ... सुबह में कोई छः बजे के करीब सत्रह वर्षीया युवती कुंज में क्या

ोचती है? इस तरह वह दोनों ओर से ऊंचे छायादार वृक्षों से ढके
स्ते पर चली जा रही थी कि अचानक एक बढ़िया शिकारी कुत्ता
स पर भूकने लगा। लीज़ा डरकर चिल्ला उठी। इसी समय ऊंची
आवाज़ सुनाई दी, "Tout beau, Sbogar, ici! "* और झाड़ियों
पीछे से जवान शिकारी सामने आया। "मेरी प्यारी, डरो नहीं
मने लीज़ा से कहा, "मेरा कुत्ता काटता नहीं।" लीज़ा ने भय से
ुक्ति पा ली और तत्काल परिस्थिति से लाभ उठाया। "हुजूर
रे को लगत," उसने कुछ भय और कुछ लाज का नाटक करते हुए
हा, "देखन तो कैसो डरावनो, फेर मो पर झपटत।" इसी बीच
लेक्सेई (पाठक ने उसे पहचान लिया होगा) जवान किसान लड़की
ो एकटक देख रहा था। "अगर डरती हो, तो मैं तुम्हारे साथ-साथ
ल सकता हूं," उसने लीज़ा से कहा, "तुम मुझे अपने साथ चलने
ी इजाज़त देती हो?" – "कौन मना कर सकत?" लीज़ा ने उत्तर
दिया, "सड़क सभी की होत, जो चाहे चलत।" – "किस गांव की
ो तुम?" – "प्रिलूचिनो की। वासीली लुहार की बेटी, खुम्भियां
टोरन जात" (लीज़ा ने डोरी से लटकती छाल की टोकरी को
हिलाया)। "और साहब तुम, तुगीलोवो के होवत?" – "बिल्कुल
ठीक," अलेक्सेई ने जवाब दिया, "छोटे साहब का अर्दली हूं मैं।"
अलेक्सेई ने बराबरी के नाते बात करनी चाही। किन्तु लीज़ा ने उसकी
ओर देखा और हंस पड़ी। "झूठ बोलत," उसने कहा, "ऐसी बुद्धू
मति समझत। खूब देखत, तुम खुद साहब होत।" – "तुम ऐसा क्यों
समझती हो?" – "सब बातन से।" – "फिर भी?" – "क्या साहब
और नौकर में फ़र्क़ न कर सकत? पहनत-ओढ़त हमार माफिक नहीं,
बोलत-बतियावत हमार माफिक नहीं, कुत्ते को भी हमार माफिक नहीं
पुकारत।" लीज़ा अलेक्सेई को अधिकाधिक अच्छी लग रही थी।
गांव की प्यारी-सुन्दर लड़कियों के मामले में औपचारिकता न बरतने
के आदी अलेक्सेई ने उसे बांहों में भरना चाहा। किन्तु लीज़ा उछलकर
उससे दूर हट गयी और अपने चेहरे पर ऐसी रुखाई तथा कड़ाई ले
आयी कि यद्यपि अलेक्सेई को इससे तनिक हंसी आ गयी, तथापि

---

* स्बोगार, भौंकना बन्द करो, इधर आओ (फ़्रांसीसी)।

उसे अपना कदम आगे बढ़ाने की जुर्रत नहीं हुई। "अगर साहब आप चाहत कि हमारे बीच दोस्ती बनी रहत," उसने बड़ी शान दिखाते हुए कहा, "तो यों अपनी गुध-बुध न बिसारत।"–"किसने तुम्हें ऐसी अक्लमन्दी की बातें करना सिखाया है?" अलेक्सेई ने ठहाकर हंसते हुए पूछा "मेरी परिचिता, तुम्हारी छोटी मालकिन की नौकरानी नास्त्या ने तो नहीं? तो कैसे-कैसे रास्तों से शिक्षा का प्रचार हो रहा है!" लीज़ा ने अनुभव किया कि उसके वाक्य उसकी भूमिका की सीमा से बाहर निकल गये हैं और इसलिये उसने फौरन अपनी भूल सुधारी। "तुम क्या सोचत," वह बोली, "क्या हम मालिक की ड्योढ़ी पर कभी न जावत? वहां सभी कुछ देखत, सभी कुछ सुनत। परन्," वह कहती गयी, "तुम्हार साथ बतियात रहत, तो खुम्मियां न बटोर पावत। तो साहब, तुम उधर जावत, हम इधर जावत। छिमा मागत।" लीज़ा ने जाना चाहा, किन्तु अलेक्सेई ने उसका हाथ पकड़ लिया। "तुम्हारा नाम क्या है, मेरी प्यारी?"–"अकुलीना," लीज़ा ने अलेक्सेई के हाथ से अपनी उंगलियां छुड़ाने की कोशिश करते हुए जवाब दिया, "छोड़ भी देत साहब, घर जावन को वख्त होए गयो।"–"तो मेरी मित्र अकुलीना, मैं ज़रूर तुम्हारे पिता, लुहार वासीली के यहां जाऊंगा।"–"यह क्या कहत?" लीज़ा ने चिल्लाकर आपत्ति की, "ईसू के नाम पर ऐसा मत करियो। घरवाले जान जावत कि साहब के साथ कुंज में अकेली बोलत-बतियात रही, तो मेरी सामत आ जावत। बापू, वासीली लुहार, मार-मार जान ले लेवत।"–"लेकिन मैं तो तुमसे ज़रूर फिर मिलना चाहता हूं।"–"किसी और दिन यहां खुम्मियां बटोरन आवत।"–"कब आओगी?"–"कल भी आ सकत।" –"प्यारी अकुलीना, मैंने तुम्हें चूम लिया होता, मगर हिम्मत नहीं होती। तो कल इसी समय आओगी न?"–"हां, आवत, आवत।" –"छल तो नहीं करोगी?"–"छल नहीं करत।"–"कसम खाओ!" –"कसम खावत, पावन सलीब की कसम खावत।"

दोनों युवा लोग अलग हुए, लीज़ा जंगल से बाहर निकली, उसने खेत को पार किया, दबे पांव बाग में पहुंची और सीधे खलिहान की ओर भाग गयी जहां नास्त्या उसकी राह देख रही थी। वहां उसने कपड़े बदले, बेख्याली से अपनी बेचैन राज़दान के उत्तर दिये और मेहमानखाने

मे गयी। मेज़ पर नाश्ता लगा हुआ था और चेहरे पर पाउडर की परत चढाये तथा अपनी पतली कमर को कसे हुए अग्रेज शिक्षिका डबल रोटी के पतले-पतले टुकडे काट रही थी। लीज़ा के पिता ने सुबह की सैर के लिये उसकी प्रशसा की। "सेहत के लिये तडके उठने से ज्यादा फायदेमन्द और कुछ नही," पिता ने राय ज़ाहिर की। उन्होने दीर्घायु के बारे मे अग्रेजी पत्र-पत्रिकाओ के हवाले देते हुए कहा कि सौ साल से अधिक समय तक जीनेवाले सभी लोग ऐसे थे जो कभी वोदका नही पीते थे और जाडो तथा गर्मियो मे तडके ही उठते थे। लीज़ा पिता की बातो पर कान नही दे रही थी। वह युवा शिकारी के साथ अकुलीना के प्रात मिलन और उसके साथ हुई सारी बातचीत मन ही मन दोहरा रही थी और उसकी आत्मा उसे यातना देने लगी। व्यर्थ ही वह अपने मन को यह कहकर तसल्ली देती थी कि उनकी बातचीत शालीनता के चौखटे से बाहर नही निकली, कि उसकी इस शरारत का कोई बुरा नतीजा नही होगा, मगर उसकी आत्मा की आवाज़ उसकी समझ-बूझ पर हावी हो जाती थी। अगली सुबह को मिलने के लिये दिया गया वचन उसे अधिकाधिक परेशान कर रहा था – उसने लगभग यह तय कर लिया कि बडी गम्भीरता से ली हुई अपनी शपथ को पूरा नही करेगी। किन्तु उसकी व्यर्थ प्रतीक्षा करने के बाद अलेक्सेई लुहार वासीली की बेटी, असली, मोटी-भद्दी और चेचकरू अकुलीना को ढूढने के लिये गाव मे चला जायेगा और इस तरह उसकी चचलतापूर्ण शरारत को भाप जायेगा। इस विचार से लीज़ा का दिल बैठ गया और उसने अगले दिन फिर से अकुलीना के रूप मे कुज मे जाने का निर्णय किया।

दूसरी ओर अलेक्सेई बडे उछाह मे था, वह दिन भर अपनी नवपरिचिता के बारे मे सोचता रहा, रात को भी उस सावली-सलोनी की छवि उसके सपनो मे घूमती रही। पौ फटी ही थी कि वह कपडे पहनकर तैयार हो गया। बन्दूक भरने का समय नष्ट किये बिना ही वह अपने वफादार कुत्ते स्बोगार को साथ लिये हुए मिलन-स्थान की ओर भाग चला। उसके लिये बहुत ही बोझल प्रतीक्षा का आधा घण्टा बीता। आखिर उसे झाडियो के बीच नीले सराफान की झलक मिली और वह मोहिनी अकुलीना से मिलने के लिये लपका। वह उसके

कृतज्ञतापूर्ण उत्साह के उत्तर में मुस्करायी। किन्तु अलेक्सेई को उ
चेहरे पर तत्क्षण उदासी तथा चिन्ता के लक्षण दिखाई दिये। उ
इसका कारण जानना चाहा। लीज़ा ने यह स्वीकार किया कि
अपनी हरकत को चंचलतापूर्ण मानती है, ऐसा करने के लिये पछत
है, कि आज अपने वादे को पूरा करना चाहती थी, कि उन
आज का मिलन अन्तिम होगा, कि वह इस परिचय का, जिसका क
अच्छा परिणाम नही होगा, अन्त कर देना चाहती है। जाहिर है
यह सब कुछ देहाती भाषा मे कहा गया था, किन्तु एक साधारण लड
के ऐसे असाधारण विचारो और भावो ने उसे आश्चर्यचकित कर दिय
उसने अकुलीना का ऐसा इरादा बदलवाने के लिये अपनी पूरी वा
पटुता का उपयोग किया, उसे यकीन दिलाया कि उसके मन में को
पाप-कपट नही, वचन दिया कि वह उसे कभी पश्चाताप का अवस
नही देगा, उसकी हर बात मानेगा, उसने उसकी मिन्नत-समाज
की कि वह बेशक एक दिन छोडकर या हफ्ते में दो बार ही एका
मे उससे मिलने की खुशी से उसे वंचित न करे। वह सच्ची अनुराग
भाषा मे यह सब कह रहा था और इस क्षण वास्तव में ही पूरी तर
से प्रेम मे डूबा हुआ था। लीज़ा चुपचाप उसकी बाते सुन रही थी
"तो मो को ऐसो वचन देवत," आखिर उसने कहा, "कि तुम कभ
मो को गाव मे ढूढन नही जात, वा मोरे बाबत किसी से पूछन
फिरत। ऐसो वचन भी देवो कि जो मिलन हम नियत करत, वा के
अतिरिक्त मिलन न करन चाहत।" अलेक्सेई ने पवित्र सलीब की
कसम खानी चाही, किन्तु उसने मुस्कराकर उसे मना कर दिया
"कसम काहे खावत," वह बोली, "वचन देवत, इतना बहुत होवत।"
इसके बाद वे दोनो जगल मे एकसाथ घूमते हुए मैत्रीपूर्ण ढग से तब
तक बातचीत करते रहे, जब तक लीज़ा ने उससे यह नही कहा कि
उसके जाने का वक्त हो गया। वे एक दूसरे से विदा हुए। अकेला
रह जाने पर अलेक्सेई यह नही समझ पा रहा था कि किस तरह एक
साधारण किसान लड़की ने दो भेंटो मे ही उसे सचमुच अपने वश
में कर लिया है। अकुलीना के साथ उसके सम्बन्धों में नवीनता का
सुख था और यद्यपि इस अजीब किसान लड़की द्वारा पहले से लगा दी
गयी शर्ते उसके लिये बडी बोझिल थी, तथापि अपना वचन तोड़ने का

विचार तक उसके दिमाग में नहीं आया। बात यह है कि भयानक ढंग की अंगूठी पहनने, रहस्यपूर्ण पत्र-व्यवहार करने और टूटे दिल की निराशा का दिखावा करने के बावजूद अलेक्सेई भला और भावुक युवक था, निर्मल-निश्छल दिल रखता था जो निष्कपट आनन्द से रस-विभोर हो सकता था।

अगर मैं अपने मन की बात सुनता, तो निश्चय ही इन दोनों युवा लोगों के मिलनों, एक दूसरे के प्रति उनके बढ़ते झुकाव और आपसी विश्वास, उनके मनबहलावों और बातचीत का वर्णन करता। किन्तु जानता हूं कि मेरे अधिकतर पाठकों ने मेरी ऐसी खुशी का रस न लिया होता। कुल मिलाकर, ऐसे ब्योरे नीरस होंगे और इसलिये मैं संक्षेप में इतना कहकर ही उन्हें छोड़ देता हूं कि दो महीने बीतते न बीतते हमारा अलेक्सेई तो पूरी तरह प्रेम-दीवाना हो गया, लीज़ा पर भी प्रेम का रंग कुछ कम नहीं चढ़ा था, यद्यपि वह उसे अधिक प्रकट नहीं होने देती थी। वे दोनों अपने वर्तमान से सुखी थे और भविष्य की कम चिन्ता करते थे।

वे दोनों अटूट प्रेम-बन्धनों में कस गये हैं, यह विचार अक्सर उनके दिमाग में कौंध जाता, किन्तु उन्होंने कभी एक दूसरे के सामने इसकी चर्चा नहीं की। कारण स्पष्ट था – अलेक्सेई अपनी प्यारी अकुलीना के प्रति चाहे कितना ही अनुराग अनुभव क्यों न करता था, तो भी अपने और एक गरीब किसान लड़की के बीच विद्यमान दूरी को भूलने में असमर्थ था। दूसरी ओर लीज़ा जानती थी कि इन दोनों के पिता एक दूसरे से कितनी अधिक घृणा करते हैं और इसलिये उसे उनके बीच आपसी सुलह की कोई आशा नहीं थी। इसके अलावा उसके हृदय की गहराई में कहीं एक चचल और रोमानी भावना भी छिपी हुई थी कि वह तुगीलोवो के जमींदार को प्रिलूचिनो के लुहार की बेटी के पैरों पर झुका देखे। अचानक एक महत्त्वपूर्ण घटना हो गयी, और उनके आपसी सम्बन्धों में मोड़ आते-आते रह गया।

एक साफ-सुहानी और ठण्डी सुबह को (जैसी कि हमारी रूसी पतझर में बहुत होती हैं) इवान पेत्रोविच बेरेस्तोव घोड़े पर सवार होकर सैर को निकला। कहीं जरूरत न पड़ जाये, यह बात ध्यान में रखते हुए उसने छ शिकारी कुत्ते, सईस और खटखटे बजानेवाले कुछ

6*

दास-छोकरों को भी अपने साथ ले लिया। इसी समय ग्रिगोरी इवानोविच मूरोम्स्की ने भी सुहाने मौसम के रंग में आकर अपनी दुमकटी घोड़ी पर जीन कसने का आदेश दिया और उसे दुलकी चाल में दौड़ाता हुआ अपनी अंग्रेज़ी ढंग की जागीर को लांघ चला। जंगल के निकट पहुंचने पर उसे अपना पड़ोसी दिखाई दिया जो लोमड़ी की खाल का अस्तर लगी लम्बी जाकेट पहने बड़े गर्व से घोड़े पर बैठा उस खरगोश का इन्तज़ार कर रहा था जिसे दास-लड़के चीख़-चिल्लाकर और खटखटे बजाकर झाड़ियों से बाहर निकाल रहे थे। यदि ग्रिगोरी इवानोविच इस भेंट की पूर्वकल्पना कर सकता, तो उसने अपनी घोड़ी को दूसरी दिशा में मोड़ दिया होता। किन्तु वह बिल्कुल अप्रत्याशित ही बेरेस्तोव के सामने जा निकला और उसने अचानक अपने को पिस्तौल की गोली के निशाने की दूरी पर पाया। अब तो कोई चारा न था – सुशिक्षित यूरोपीय की भांति वह अपने शत्रु के पास गया और उसने ढंग से उसका अभिवादन किया। बेरेस्तोव ने भी जंजीर से बंधे उस भालू की भांति, जिसे उसका मालिक महानुभावों को सिर झुकाने का आदेश देता है, बड़ी शिष्टता से उत्तर दिया। इसी समय खरगोश जंगल से निकलकर खेत में भाग चला। बेरेस्तोव और सईस गला फाड़कर चिल्लाये, उन्होंने कुत्तों को उसके पीछे छोड़ दिया और अपने घोड़ों को उसके पीछे सरपट दौड़ाने लगे। मूरोम्स्की की घोड़ी, जो कभी शिकार पर नहीं गयी थी, बुरी तरह डर गयी और ताबड़तोड़ भागने लगी। अपने को बढ़िया घुड़सवार माननेवाले मूरोम्स्की ने उसकी रासें ढीली छोड़ दीं और मन ही मन इस बात से खुश हुआ कि उसे अप्रिय बातचीत से निजात मिल गयी। किन्तु घोड़ी उस गड्ढे तक सरपट दौड़ने के बाद, जिसकी ओर उसका पहले ध्यान नहीं गया था, अचानक एक ओर को मुड़ गयी और मूरोम्स्की नीचे जा गिरा। पाले की मारी सख्त ज़मीन पर वह बुरी तरह गिरा और वहीं पड़ा हुआ अपनी दुमकटी घोड़ी को कोसता रहा, जो मानो उसी समय होश में आकर रुकी जब उसने अपने को सवार के बिना अनुभव किया। इवान पेत्रोविच सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके पास आया और यह पूछा कि उसे कहीं चोट तो नहीं लगी। इसी बीच सईस अपराधी घोड़ी की लगाम थामे हुए उसे वहां ले आया। उसने मूरोम्स्की को घोड़े पर सवार होने

मे मदद दी और बेरेस्तोव ने उसे अपने यहा चलने को आमन्त्रित किया। मूरोम्स्की इन्कार नही कर पाया, क्योकि वह उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव कर रहा था। इस तरह बेरेस्तोव खरगोश का शिकार करके और अपने विरोधी को घायल तथा लगभग युद्ध-बन्दी बनाये हुए विजेता की भाति घर लौटा।

नाश्ता करते हुए दोनों पड़ोसी काफी दोस्ताना ढग से बातचीत करते रहे। मूरोम्स्की ने बेरेस्तोव के सामने यह स्वीकार कर लिया कि चोट के कारण वह घोडी पर चढकर घर जाने मे असमर्थ है और इसलिये उसने उससे घोडागाडी जुतवा देने का अनुरोध किया। बेरेस्तोव उसे अपने घर के दरवाजे तक विदा करने आया और मूरोम्स्की उससे इस बात का वचन लिये बिना घर को रवाना नही हुआ कि अगले दिन वह अपने बेटे अलेक्सेई इवानोविच के साथ प्रिलूचिनो मे आयेगा और मित्र की तरह दोपहर का भोजन करेगा। इस तरह दुमकटी डरपोक घोडी की बदौलत पुरानी और गहरी जडवाली दुश्मनी लगभग खत्म हो गयी।

लीज़ा भागती हुई बाहर आयी। "यह क्या मामला है, पापा?" उसने हैरान होते हुए पूछा। "आप लगडा क्यो रहे हैं? आपकी घोडी कहा है? यह घोडागाडी किसकी ले आये?" – "तुम इस सब का तो अनुमान नहीं लगा सकोगी, my dear!"* ग्रिगोरी इवानोविच ने उसे उत्तर दिया और जो कुछ हुआ था, सब कह सुनाया। लीज़ा को अपने कानों पर विश्वास नही हो रहा था। इससे पहले कि लीज़ा सम्भल पाती, उसने यह भी कह दिया कि अगले दिन बेरेस्तोव बाप-बेटा उनके घर पर दोपहर का भोजन करेगे। "यह आप क्या कह रहे हैं!" लीज़ा ने कहा और उसका चेहरा पीला पड गया। "बेरेस्तोव बाप-बेटा कल हमारे यहा दोपहर का भोजन करेगे! नही, पापा, आप चाहे कुछ भी क्यो न कहे, मैं तो किसी हालत मे भी उनके सामने नही आऊगी!" – "तुम क्या पागल हो गयी हो?" पिता ने आपत्ति की। "कब से तुम ऐसी लजीली-शर्मीली हो गयी हो या रोमानी नायिका की भाति उनके प्रति खानदानी नफरत महसूस करती हो?

---

* मेरी प्यारी (अग्रेज़ी)।

बस, यह बेवकूफी की बात खत्म करो।" – "नहीं, पापा, मैं कि
भी हालत में किसी भी कीमत पर बेरेस्तोवों के सामने नहीं आऊंगी।"
ग्रिगोरी इवानोविच ने कंधे झटक दिये तथा उसके साथ और बह
नहीं की, क्योंकि पिता को मालूम था कि विवाद करने में कोई फा
नहीं होगा और इतनी बढ़िया सैर के बाद आराम करने को अ
कमरे में चला गया।

लीजावेता ग्रिगोर्येव्ना ने अपने कमरे में जाकर नास्त्या को बुल
भेजा। दोनों देर तक अगले दिन आनेवाले मेहमानों के बारे में बातची
करती रहीं। एक सुसंस्कृत और कुलीन युवती के रूप में अपनी अकुलीन
को पहचान लेने पर अलेक्सेई क्या सोचेगा? उसके आचार-विचार
उसके रंग-ढंग और समझ-बूझ के बारे में उसकी क्या राय बनेगी?
दूसरी ओर लीजा यह देखने को भी बहुत उत्सुक थी कि ऐसी अप्रत्याशि
भेंट से उसके मन पर क्या छाप पड़ेगी। अचानक उसके दिमाग में
एक विचार कौंध गया। उसने उसी समय नास्त्या को वह विचार
बताया। दोनों को एक बढ़िया सूझ के रूप में इस विचार से बेहद
खुशी हुई और उन्होंने तय किया कि जरूर ही इसे अमली शक्ल देंगी।

अगले दिन नाश्ते के समय ग्रिगोरी इवानोविच ने अपनी बेटी से
पूछा कि क्या वह बेरेस्तोव पिता-पुत्र के सामने न आने का अपना
इरादा उसी तरह बनाये हुए है। "पापा," लीजा ने उत्तर दिया,
"यदि आप ऐसा ही चाहते हैं, तो मैं उनकी खातिरदारी के लिये
सामने आ जाऊंगी, लेकिन एक शर्त पर। मैं उनके सामने किसी भी
रूप में क्यों न आऊं, चाहे कुछ भी क्यों न करूं, आप मुझे कुछ भी
भला-बुरा नहीं कहेंगे, हैरानी या नराजगी का कोई भाव व्यक्त नहीं
करेंगे।" – "फिर कोई शरारत सूझी लगती है तुम्हें!" ग्रिगोरी
इवानोविच ने हंसते हुए कहा। "अच्छी बात है, अच्छी बात है, जो
चाहो वही करो, मेरी काली आंखोंवाली शरारती बिटिया।" इतना
कहकर उसने बेटी का माथा चूमा और लीजा तैयारी करने के लिये
भाग गयी।

दिन के ठीक दो बजे घर की बनी घोड़ागाड़ी, जिसमें छः घोड़े
जुते हुए थे, अहाते में दाखिल हुई और बहुत ही हरी घासवाले चक्र
के पास आकर रुकी। मूरोम्स्की के दो बावर्दी नौकरों की सहायता से

बूढा बेरेस्तोव ओमारे की सीढियो पर चढा। उसके पीछे-पीछे ही घोडे पर सवार उसका बेटा भी पहुच गया और दोनों ने एक साथ भोजन-कक्ष मे प्रवेश किया, जहा पहले से ही मेज़ लगा दी गयी थी। मूरोम्स्की ने बहुत ही स्नेह से अपने पडोसियो का आदर-सत्कार किया, भोजन के पहले बाग और जन्तुशाला देखने का सुझाव दिया तथा खूब अच्छी तरह से साफ़ की गयी एव बजरी बिछी पगडडियो से उन्हे अपने साथ ले चला। बूढ़े बेरेस्तोव को मन ही मन इस बात का अफसोस हो रहा था कि इस व्यर्थ की सनक के फेर मे पडकर इतना श्रम और समय नष्ट किया गया है, किन्तु वह शिष्टतावश चुप रहा। बेटे को न तो दात से कौड़ी पकडनेवाले अपने ज़मीदार बाप का असन्तोष पसन्द था और न ही आत्मतुष्ट तथा अग्रेज़ी ढग के दीवाने का उत्साह। वह तो बडी बेसब्री से गृह-स्वामी की बेटी के आने का इन्तज़ार कर रहा था जिसके बारे मे बहुत कुछ सुन चुका था। यद्यपि उसके दिल मे, जैसा कि हम जानते है, कोई और बसी हुई थी, तथापि सुन्दर युवती तो हमेशा ही उसकी कल्पना को गुदगुदा सकती थी।

तीनो लौटकर मेहमानखाने मे बैठ गये – दोनो बुजुर्ग अपने पुराने वक्तो तथा सेना के ज़माने के किस्से-कहानियों को याद करने लगे और अलेक्सेई यह सोचने लगा कि लीज़ा की उपस्थिति मे वह क्या भूमिका अदा करे। उसने यह निर्णय किया कि उत्साह के बिना वह बिल्कुल खोया-खोया सा बैठा रहेगा और उसने अपने को इसी के लिये तैयार कर लिया। दरवाज़ा खुला और उसने ऐसी उदासीनता तथा लापरवाही से अपना सिर घुमाया कि बहुत ही नाज़-नखरे वाली सुन्दरी का दिल भी धडक उठे। किन्तु उसकी बदकिस्मती थी कि लीज़ा की जगह बूढ़ी मिस जैक्सन भीतर आयी – पाउडर थोपे, चोली से कमर कसे, शिष्टता से नज़र झुकाये। चुनाचे अलेक्सेई ने जो शानदार मोर्चेबन्दी की थी, वह बेकार हो गयी। वह अपने को फिर से तैयार नही कर पाया था कि दरवाज़ा पुन खुला और इस बार लीज़ा भीतर आयी। सभी उठकर खडे हो गये। पिता ने अतिथियो से उसका परिचय करवाना चाहा, किन्तु सहसा बीच मे ही रुक गया और उसने अपनी हसी पर काबू पाने के लिये होठ भीच लिये लीज़ा, उसकी सावली-सलोनी लीज़ा कानो तक पाउडर थोपे थी, मिस जैक्सन से भी ज्यादा अपनी

भौंहें भी रंगे थी, उसके अपने बालों में अधिक घुंघराले बाल लुई चौदहवें की विग की भांति महक रहे थे, à l'imbecile* आस्तीनें Madame de Pompadour** के स्कर्ट की मुन्दरी की भांति फूली और दायें-बायें लटक रही थी, कमर फीतों से ऐसे कसी थी कि अंग्रेजी के "एक्स" अक्षर जैसी लगती थी और उसकी मां के अभी तक गिरवी न रखे गये सभी हीरे उसकी उंगलियों और गर्दन पर तथा कानों में चमक रहे थे। अलेक्सेई इस चमकती-दमकती, हास्यास्पद कुलीन युवती के रूप में अपनी अकुलीना को नहीं पहचान पाया। अलेक्सेई के पिता ने लीज़ा का हाथ चूमा और पिता के बाद उसने भी भारी मन से ऐसा ही किया। जब उसने अपने होंठों को उसकी गोरी उंगलियों से छुआया, तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वे सिहर उठी थीं। इसी समय उस छोटे-से पांव पर भी उसकी नजर पड़ी जिसे जान-बूझकर बेहद फ़ैशनदार और शोख़ जूते के प्रदर्शन के लिये आगे बढ़ाया गया था। इसने उसे उसकी बाकी वेश-भूषा के कारण पैदा हुई अरुचि पर काबू पाने में मदद दी। जहां तक पाउडर और भौंहों को रंगने का सवाल था, तो यह कहना चाहिए कि अपने हृदय की सरलता के कारण अलेक्सेई ने पहली नजर में उनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया और बाद को भी उन्हें भांप नहीं पाया। ग्रिगोरी इवानोविच को अपना दिया हुआ वचन याद था और इसलिये अपने आश्चर्य को छिपाये रखने का प्रयास किया। किन्तु बेटी की शरारत ने पिता के दिल को ऐसे गुदगुदा दिया था कि बड़ी मुश्किल से ही वह अपने को वश में रख पा रहा था। रही नकचढ़ी मिस जैक्सन, तो उसे हंसने की सूझ ही नहीं सकती थी। उसने अनुमान लगा लिया था कि रंग और पाउडर उसकी अलमारी से उड़ाये गये हैं और इसलिये उसके चेहरे की बनावटी सफ़ेदी के बीच से गुस्से की लाली उभर आयी थी। मिस जैक्सन ने इस शरारती लड़की को बेहद गुस्से की नज़रों से देखा, जिसने सफ़ाई पेश करने का काम किसी दूसरे वक्त पर टालते हुए

---

* मूर्खों जैसी, फ़्रांस में कभी ऐसी आस्तीनों का फ़ैशन था (फ़्रांसीसी)।

** मदाम द पोम्पादूर फ्रांसीसी सम्राट लुई १५वें की प्रेयसी और विशेष स्नेह-पात्र थी (फ्रांसीसी)।

यह जाहिर किया मानो उनकी तरफ उसका ध्यान ही न गया हो।

सभी खाने की मेज पर बैठे। अलेक्सेई खोये-खोये और विचारों में डूबे हुए व्यक्ति की भूमिका निभाता रहा। लीजा बनती रही, दांतों के बीच से गुनगुनाते हुए केवल फ्रांसीसी में ही बोलती रही। मुरोम्स्की अपनी बेटी के ऐसा करने के उद्देश्य को न समझ पाते हुए बार-बार उसकी ओर देखता था और उसे यह सब कुछ बहुत मनोरंजक प्रतीत हो रहा था। मिस जैक्सन गुस्से से भुनभुनाती हुई खामोश थी। केवल इवान पेत्रोविच अपने को मानो घर में अनुभव कर रहा था, उसने डटकर दो के बराबर भोजन किया, छककर शराब पी, अपने मजाकों पर खुद हंसा, अधिकाधिक मैत्रीपूर्ण ढंग से बातें करता और ठहाके लगाता रहा।

आखिर भोजन समाप्त होने पर सब उठे। मेहमान चले गये, ग्रिगोरी इवानोविच खुलकर हंसा और बेटी से पूछताछ करने लगा। "उनका इस तरह उल्लू बनाने की तुम्हें क्या सूझी?" पिता ने बेटी से पूछा। "वैसे एक बात कहूं, पाउडर तुम पर फबता है। नारियों के साज-सिंगार के रहस्यों की गहराई में मैं नहीं जाऊंगा, किन्तु तुम्हारी जगह मैं खुद भी पाउडर लगाने लगता। जाहिर है कि इतना अधिक नहीं, हल्का-सा।" अपनी इस तरकीब की सफलता से लीजा बहुत ही खुश थी। उसने पिता के गले में बांहें डाल दीं, यह वचन दिया कि उनकी सलाह पर विचार करेगी और बेहद झल्लायी हुई मिस जैक्सन को मनाने के लिये भाग गयी, जो बड़ी मुश्किल से ही दरवाजा खोलने और उसके द्वारा दी जानेवाली सफाई सुनने को तैयार हुई। लीजा ने बताया कि अपरिचितों के सामने अपनी काली-कलूटी शक्ल लेकर आते हुए उसे शर्म महसूस हुई और यह कि वह उससे अनुमति लेने की हिम्मत नहीं कर पायी। उसे विश्वास था कि दयालु और प्यारी मिस जैक्सन उसे क्षमा कर देगी आदि, आदि। यह विश्वास हो जाने पर कि लीजा ने उसकी खिल्ली उड़ाने के लिये ऐसा नाटक नहीं किया था, मिस जैक्सन शान्त हो गयी और सुलह की निशानी के तौर पर उसने लीजा को अंग्रेजी पाउडर-क्रीम की एक शीशी भेंट की, जिसे लीजा ने हार्दिक कृतज्ञता जताते हुए स्वीकार किया।

पाठक ने यह अनुमान लगा लिया होगा कि अगले दिन लीजा

सुबह वे मधुर-मिलन के लिये जल्दी से कुंज में पहुंची। "साहब तुम कल हमार मालिक के घर गयां?" उसने भेंट होते ही अलेक्सेई से कहा, "हमार छोटी मालकिन कैसी लगत रही?" अलेक्सेई ने जवाब में कहा कि उसने उसकी तरफ ध्यान नहीं दिया। "बुरी बात होवत," लीज़ा ने राय ज़ाहिर की। "वह किसलिये?" अलेक्सेई ने जानना चाहा। "यही कारण, हम तुम से पूछन चाहत, क्या लोग-बाग सच कहत."—"क्या कहते है लोग-बाग?" "सब कहत रहत कि छोटी मालकिन और हमारी शकल आपस में मिलत-जुलत?"—"कैसी बेहूदा बात है यह! तुम्हारे सामने तो वह बिल्कुल भुतनी-सी लगती है।"—"ओह, साहब, ऐसा बोलत पाप लगत। हमार छोटी मालकिन ऐसी गोरी-गोरी, ऐसी बांकी-छैली होत! हम क्या बराबरी कर सकत मालकिन की!" अलेक्सेई ने कसम खाकर कहा कि वह सभी गोरी-चिट्टी कुलीनाओं से बढ़-चढ़कर है और उसे पूरी तरह शान्त करने के लिये उसकी मालकिन का ऐसा खाका खींचने लगा कि लीज़ा खूब ठठाकर हंसी। "फिर," उसने गहरी उसास छोड़ते हुए कहा, "मालकिन पर बेसक हंसी आवत, तो भी हम उसके सामने मूढ़-गवार होत।"—"अरे!" अलेक्सेई ने कहा, "यह भी कोई दुखी होने की बात है! चाहो तो मैं तुम्हें अभी पढ़ाना शुरू कर सकता हूं।"—"हां," लीज़ा बोली, "कोसिस क्यों न करके देखत?"—"तो मेरी प्यारी, लाओ, हम अभी यह शुरू कर दें।" वे दोनों बैठ गये। अलेक्सेई ने अपनी जेब से पेंसिल और नोटबुक निकाल ली। अकुलीना ने ऐसी आश्चर्यजनक तेजी से वर्णमाला सीख ली कि अलेक्सेई उसकी समझदारी पर हैरान हुए बिना न रह सका। अगली सुबह को लीज़ा ने लिखने की कोशिश करने की इच्छा प्रकट की। शुरू में तो पेंसिल ने उसकी बात नहीं मानी, किन्तु कुछ मिनट बाद वह ढंग से अक्षर लिखने लगी। "यह तो कमाल है!" अलेक्सेई ने कहा। "हमारी पढ़ाई तो लेंकास्टर की विधि* से भी अधिक तेजी से चल रही है।" वास्तव में ही तीसरे पाठ के समय अकुलीना अक्षर जोड़-जोड़कर 'बोयार की बेटी नताल्या'**

* शिक्षा की उन दिनों रूस में अत्यधिक लोकप्रिय अंग्रेज़ शिक्षाशास्त्री लेंकास्टर (१७७१–१८३८) की विधि की ओर संकेत है।—सं०

** रूसी लेखक न० करामज़िन की उपन्यासिका।—सं०

तरह घनिष्ठता बढ़ाती जाये जिसे उसने उस दिन स्मरणीय दिन के बाद नहीं देखा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे एक दूसरे को बहुत पसन्द नहीं आये थे। कम से कम अलेक्सेई तो फिर कभी प्रिलूचिनो नहीं आया था और इवान पेत्रोविच जब कभी उनके यहां आने की कृपा करता था, तो लीज़ा हमेशा अपने कमरे में चली जाती थी। किन्तु ग्रिगोरी इवानोविच ने अपने मन में सोचा कि अगर अलेक्सेई हर दिन मेरे यहां आने लगे, तो बेटी के मन में उसके लिये जगह बन जायेगी। ऐसा ही होता है, समय सब कुछ ठीक कर देता है।

अपने इरादे की कामयाबी के बारे में इवान पेत्रोविच को कम परेशानी थी। उसी शाम उसने बेटे को अपने कमरे में बुलाया, पाइप सुलगा ली और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, "क्या बात है, अल्योशा, तुम बहुत समय से फ़ौज में जाने की बात नहीं करते हो? या फिर हुस्सारों की वर्दी अब तुम्हें अपनी ओर नहीं खींचती?"–"नहीं, ऐसी बात नहीं है, पिता जी," अलेक्सेई ने बड़े आदर से उत्तर दिया, "मैंने देखा कि आपको हुस्सारों की पलटन में मेरा जाना पसन्द नहीं है। ऐसी हालत में आपकी इच्छा को ध्यान में रखना मेरा कर्त्तव्य है।"–"यह बहुत अच्छी बात है," इवान पेत्रोविच ने उत्तर दिया, "देख रहा हूं कि तुम बड़े आज्ञाकारी बेटे हो। मुझे इससे बड़ा सन्तोष हुआ। मैं भी तुम्हें किसी तरह से मजबूर नहीं करना चाहता, अभी सरकारी नौकरी करने के लिये विवश नहीं करूंगा। हां, फ़िलहाल, तुम्हारी शादी ज़रूर कर देना चाहता हूं।"

"किसके साथ, पिता जी?" अलेक्सेई ने हैरान होकर पूछा।

"*लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना मूरोम्स्काया के साथ,*" इवान पेत्रोविच ने जवाब दिया। "लड़की खासी अच्छी है, ठीक है न?"

"पिता जी, मैं तो फ़िलहाल शादी करने की सोच ही नहीं रहा हूं।"

"तुम नहीं सोचते हो, इसीलिये मैंने सोचा है और फ़ैसला कर लिया है।"

"आप जैसा चाहें, लेकिन लीज़ा मूरोम्स्काया मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

"बाद में पसन्द करने लगोगे। आदी हो जाओगे, प्यार भी हो जायेगा।"

"मुझे ऐसा नही लगता कि मैं उसे सुखी बना सकूगा।"

"तुम्हे जरूरत नही उसके सुख की चिन्ता मे घुलने की। तो? तो ऐसे ही तुम आदर करते हो अपने पिता की इच्छा का? बहुत खूब!"

"आप चाहे कुछ भी क्यों न कहे, मैं शादी करना नही चाहता और नही करूगा।"

"तुम शादी करोगे, नही तो तुम्हे मेरा अभिशाप लगेगा। भगवान साक्षी है, अपनी जागीर को मैं बेच डालूगा, सारा पैसा उडा डालूगा और एक कौड़ी भी तुम्हे नही दूगा! सोच-विचार करने के लिये तुम्हे तीन दिन देता हूं और इस बीच तुम मेरी नज़रो से दूर ही रहना।"

अलेक्सेई जानता था कि अगर पिता के दिमाग मे कोई बात घुस जाती है, तो उसे, तारास स्कोतीनिन* के शब्दो मे "कील ठोककर बाहर नही निकाला जा सकता।" किन्तु अलेक्सेई मे भी अपने बाप का खून था, उसे भी उसकी जिद्द से टालना आसान नही था। वह अपने कमरे मे जाकर पिता के अधिकार की सीमा, लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना, उसे भिखारी बना देने की पिता की गम्भीर धमकी और अकुलीना के बारे मे सोचने लगा। पहली बार उसने साफ़ तौर पर यह देखा कि वह उसे बहुत प्यार करता है। किसान लडकी से शादी करने और अपनी मेहनत की कमाई पर जीने का रोमानी विचार उसके मस्तिष्क मे आया। अपने ऐसे निर्णायक कदम के बारे मे वह जितना अधिक सोचता था, उसे वह उतना ही अधिक समझदारी का प्रतीत होता था। पिछले कुछ समय से वर्षा के कारण उनका प्रेम-मिलन नही होता था। उसने बहुत साफ़-साफ़ लिखावट और हृदय के दहकते उद्गारो के साथ अकुलीना को यह लिखा कि कैसे उनके सुख पर भयानक बिजली गिरनेवाली है और साथ ही विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। इस पत्र को वह फ़ौरन पत्र-पेटी यानी कोटर मे रख आया और पूरी तरह सन्तोष अनुभव करते हुए बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन वह पक्का इरादे बनाये हुए तडके ही मूरोम्स्की के यहा पहुचा ताकि खुलकर बात कर ले। उसे आशा थी कि वह हृदय की उदारता की दुहाई देकर लीज़ावेता के पिता को अपने पक्ष मे कर

* फ़ोनवीज़िन की 'घोंघावसन्त' सुखान्ती नाटक का एक ज़मीदार पात्र, मूर्ख और खरदिमाग। —स०

तरह घनिष्ठता बढ़ायी जाये जिसे उसने उस चिर स्मरणीय दिन के बाद नही देखा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे एक दूसरे को बहुत पसन्द नही आये थे। कम से कम अलेक्सेई तो फिर कभी प्रिलूचिनो नही आया था और इवान पेत्रोविच जब कभी उनके यहा आने की कृपा करता था, तो लीज़ा हमेशा अपने कमरे में चली जाती थी। किन्तु ग्रिगोरी इवानोविच ने अपने मन में सोचा कि अगर अलेक्सेई हर दिन मेरे यहा आने लगे, तो बेत्सी के मन में उसके लिये जगह बन जायेगी। ऐसा ही होता है, समय सब कुछ ठीक कर देता है।

अपने इरादे की कामयाबी के बारे में इवान पेत्रोविच को कम परेशानी थी। उसी शाम उसने बेटे को अपने कमरे में बुलाया, पाइप सुलगा ली और कुछ देर चुप रहने के बाद बोला, "क्या बात है, अल्योशा, तुम बहुत समय से फ़ौज मे जाने की बात नही करते हो? या फिर हुस्सारो की वर्दी अब तुम्हे अपनी ओर नही खीचती?."–"नही, ऐसी बात नही है, पिता जी," अलेक्सेई ने बडे आदर से उत्तर दिया, "मैंने देखा कि आपको हुस्सारो की पलटन में मेरा जाना पसन्द नही है। ऐसी हालत मे आपकी इच्छा को ध्यान में रखना मेरा कर्त्तव्य है।"–"यह बहुत अच्छी बात है," इवान पेत्रोविच ने उत्तर दिया, "देख रहा हू कि तुम बडे आज्ञाकारी बेटे हो। मुझे इससे बडा सन्तोष हुआ। मैं भी तुम्हे किसी तरह से मजबूर नही करना चाहता, अभी सरकारी नौकरी करने के लिये विवश नही करूगा। हा, फ़िलहाल, तुम्हारी शादी जरूर कर देना चाहता हू।"

"किसके साथ, पिता जी?" अलेक्सेई ने हैरान होकर पूछा।

"लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना मूरोम्स्काया के साथ," इवान पेत्रोविच ने जवाब दिया। "लडकी काफी अच्छी है, ठीक है न?"

"पिता जी, मैं तो फ़िलहाल शादी करने की सोच ही नही रहा हू।"

"तुम नही सोचते हो, इसीलिये मैंने सोचा है और फ़ैसला कर लिया है।"

"आप जैसा चाहें, लेकिन लीज़ा मूरोम्स्काया मुझे बिल्कुल पसन्द नही है।"

"बाद मे पसन्द करने लगोगे। आदी हो जाओगे, प्यार भी हो जायेगा।"

"मुझे ऐसा नही लगता कि मैं उसे सुखी बना सकूगा।"

"तुम्हे जरूरत नही उसके सुख की चिन्ता मे घुलने की। तो? तो ऐसे ही तुम आदर करते हो अपने पिता की इच्छा का? बहुत खूब!"

"आप चाहे कुछ भी क्यों न कहे, मैं शादी करना नही चाहता और नही करूगा।"

"तुम शादी करोगे, नही तो तुम्हे मेरा अभिशाप लगेगा। भगवान साक्षी है, अपनी जागीर को मैं बेच डालूगा, सारा पैसा उडा डालूगा और एक कौडी भी तुम्हे नही दूगा! सोच-विचार करने के लिये तुम्हे तीन दिन देता हू और इस बीच तुम मेरी नज़रो से दूर ही रहना।"

अलेक्सेई जानता था कि अगर पिता के दिमाग मे कोई बात घुस जाती है, तो उसे, तारास स्कोतीनिन* के शब्दो मे "कील ठोककर बाहर नही निकाला जा सकता।" किन्तु अलेक्सेई मे भी अपने बाप का खून था, उसे भी उसकी ज़िद्द से टालना आसान नही था। वह अपने कमरे मे जाकर पिता के अधिकार की सीमा, लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना, उसे भिखारी बना देने की पिता की गम्भीर धमकी और अकुलीना के बारे में सोचने लगा। पहली बार उसने साफ तौर पर यह देखा कि वह उसे बहुत प्यार करता है। किसान लडकी से शादी करने और अपनी मेहनत की कमाई पर जीने का रोमानी विचार उसके मस्तिष्क में आया। अपने ऐसे निर्णायक कदम के बारे मे वह जितना अधिक सोचता था, उसे वह उतना ही अधिक समझदारी का प्रतीत होता था। पिछले कुछ समय से वर्षा के कारण उनका प्रेम-मिलन नही होता था। उसने बहुत साफ-साफ लिखावट और हृदय के दहकते उद्गारो के साथ अकुलीना को यह लिखा कि कैसे उनके सुख पर भयानक बिजली गिरनेवाली है और साथ ही विवाह का प्रस्ताव भी कर दिया। इस पत्र को वह फौरन पत्र-पेटी यानी कोटर मे रख आया और पूरी तरह सन्तोष अनुभव करते हुए बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन वह पक्का इरादे बनाये हुए तडके ही मूरोम्स्की के यहा पहुचा ताकि खुलकर बात कर ले। उसे आशा थी कि वह हृदय की उदारता की दुहाई देकर लीज़ावेता के पिता को अपने पक्ष मे कर

* फोनवीज़िन की 'घोंघाबसन्त' सुखान्ती नाटक का एक ज़मीदार पात्र, मूर्ख और खरदिमाग़। —स०

गेगा। "ग्रिगोरी इवानोविच घर पर है?" त्रिगुनिनों की हवेली के सामने अपने घोड़े को रोककर उसने नौकर से पूछा। "नहीं, हुज़ूर," नौकर ने जवाब दिया, "ग्रिगोरी इवानोविच तो आज सुबह ही बाहर चले गये थे।" – "कितने अफ़सोस की बात है!" अलेक्सेई ने सोचा। "लीज़ावेता ग्रिगोर्येव्ना तो घर पर होंगी?" – "जी, हुज़ूर!" अलेक्सेई घोड़े से कूदा, घोड़े की लगामें उसने नौकर के हाथ में पकड़ा दीं और अपने आने की सूचना दिलवाये बिना ही अन्दर चला गया।

"अभी सब कुछ तय हो जायेगा," उसने मेहमानखाने के निकट पहुंचते हुए अपने मन में सोचा, "खुद लीज़ावेता से ही बात कर लूंगा।" यह कमरे में दाखिल हुआ और बुत बना खड़ा रह गया! लीज़ा नहीं अकुलीना, उसकी प्यारी, सांवली-सलोनी अकुलीना सराफ़ान नहीं, बल्कि सुबह का हल्का-सा सफ़ेद फ़्राक पहने खिड़की के सामने बैठी हुई उसका पत्र पढ़ रही थी। वह इतनी खोई हुई थी कि उसने अलेक्सेई के पैरों की आहट तक नहीं सुनी। अलेक्सेई अपने हर्षोद्गार की अभिव्यक्ति दिये बिना न रह सका। लीज़ा चौंककर सिहरी, उसने अपना सिर ऊपर उठाया, चीख़ उठी और उसने भाग जाना चाहा। अलेक्सेई ने लपककर उसे रोक लिया। "अकुलीना, अकुलीना!" लीज़ा ने अपने को उससे मुक्त करने की कोशिश की "Mais laissez-moi dona, monsieur; mais êtes-vous fou?"* अपने को छुड़ाने का यत्न करते हुए वह लगातार दोहराती जाती थी। "अकुलीना! मेरी प्यारी अकुलीना!" अलेक्सेई उसके हाथों को चूमते हुए बार-बार कह रहा था। यह सारा तमाशा देखनेवाली मिस जैक्सन यह समझने में असमर्थ थी कि इस सबका क्या अर्थ लगाये। इसी समय दरवाज़ा खुला और ग्रिगोरी इवानोविच ने भीतर प्रवेश किया।

"अरे, वाह!" पिता ने कहा, "लगता है कि तुम दोनों ने सब कुछ तय ही कर लिया है"

आशा है कि पाठकगण इस किस्से के अन्त का वर्णन करने के फ़ालतू काम से मुझे मुक्त कर देंगे।

(इ० प० बेल्किन की कहानियां समाप्त।)

* मुझे छोड़ दीजिये श्रीमान, आप क्या पागल हो गये हैं?

हुक्म की बेगम

हुक्म की बेगम का
अर्थ है रहस्यपूर्ण शत्रुता।

भविष्य बूझने की नवीनतम पुस्तक से।

(१)

ठण्डे, बुरे मौसम मे
जमा होकर अक्सर
भगवान उन्हें क्षमा करे
खेले जुआ डटकर –
पचास से सौ तक
दाव पर लगाते,
जीतते, वे हारते
हिसाब लिखते जाते,
यो ठण्डे, बुरे मौसम मे
ऐसे अच्छे काम मे
वक्त वे बिताते।

एक बार गार्डों की घुडसेना के अफसर नारूमोव के यहा जुआ खेला जा रहा था। पता भी नही चला कि जाडे की लम्बी रात कब बीत गयी – सुबह के पाच बजे ये लोग भोजन करने बैठे। जीतनेवाले तो खूब मजे से खाने पर हाथ साफ कर रहे थे और दूसरे अपनी खाली प्लेटो के सामने खोये-खोये से बैठे थे। लेकिन जैसे ही शेम्पेन सामने आई, बातचीत सजीव हो उठी और सभी ने उसमे भाग लिया।

तुम्हारा कैसा हालचाल रहा, सूरिन?" मेजबान ने पू

सदा की भांति हार गया। मानना ही होगा कि किस्मत

मार खाये बैठी है – मैं छोटे-छोटे दांव लगाकर खेलता हूं, कभी उत्ते
नहीं होता दिमाग को इधर-उधर भटकने नहीं देता, लेकिन
भी हमेशा हारता ही रहता हूं!

क्या कभी तुम्हारे मन में लालच नहीं आया? क्या कभी
दांव लगाने को तुम्हारा मन नहीं हुआ? तुम्हारी यह दृढ़ता
लिये आश्चर्यजनक है।"

"यह हेर्मन्न भी खूब है न?" जवान इंजीनियर की ओर
करते हुए एक मेहमान ने कहा। "इसने कभी पत्ते हाथ में नहीं लि
कभी दांव नहीं लगाया, लेकिन सुबह के पांच बजे तक हमारे
बैठा हुआ हमारे खेल को देखता रहता है।"

"खेल में मुझे बहुत मजा आता है," हेर्मन्न ने कहा, "ले
मैं ऐसी स्थिति में नहीं हूं कि कुछ फालतू पाने की उम्मीद में उसे
कुर्बान कर दूं जो एकदम जरूरी है।"

"हेर्मन्न जर्मन है, सावधान है, बस, इतनी ही बात है!" तोम्
ने राय जाहिर की। लेकिन मेरे लिये अगर कोई पहेली है, तो मे
दादी काउंटेस आन्ना फेदोतोव्ना।"

"वह कैसे? वह क्यों?" मेहमानों ने चिल्लाते हुए जिज्ञा
व्यक्त की।

"किसी तरह भी यह नहीं समझ पाता," तोम्स्की ने अप
बात जारी रखी, "कि मेरी दादी जुआ क्यों नहीं खेलती!"

"इसमें हैरानी की कौन-सी बात है कि अस्सी साल की बुढ़ि
जुआ नहीं खेलती!" नारूमोव ने कहा।

"तो क्या आप उसके बारे में कुछ नहीं जानते?"

"नहीं! सचमुच, कुछ भी नहीं!"

"ओह, तो सुनिये".

"यह जानना जरूरी है कि मेरी दादी साठ साल पहले पेरिस गय
थी और वहां उसकी बड़ी धूम रही थी। La Vénus moscovite

---

* मास्को की सौन्दर्य-देवी (फ़ासीसी)।

को एक नजर देख लेने के लिये लोग उसके पीछे-पीछे भागा करते थे। रिशेल्ये उसका दीवाना था और दादी यह यकीन दिलाती है कि उसकी निष्ठुरता के कारण वह अपने को गोली मारते-मारते रह गया था।

"उस ज़माने मे महिलाये फारो खेला करती थी। एक दिन दरबार मे जुआ खेलते हुए वह ड्यूक दे' ओरलिआन को बहुत बडी रकम हार गयी जिसे उसने बाद मे चुका देने का वचन दिया। घर लौटने पर चेहरे को सुन्दर बनाने के लिये लगाये जानेवाले रेशमी बिन्दु और स्कर्ट को फैलानेवाले धातु के घेरे उतारते हुए उसने दादा को बताया कि कितनी रकम हार गयी है और आदेश दिया कि वे उसे चुका दे।

"जहा तक मुझे याद है, मेरे दिवगत दादा एक तरह से मेरी दादी के कारिन्दा ही थे। वे दादी से आग की तरह डरते थे। किन्तु इतनी बडी रकम हार जाने की बात सुनकर वे आपे से बाहर हो गये सभी बिल लाकर उन्होने दादी को दिखाये और यह साबित किया कि छ महीनो मे उन्होने पाच लाख का खर्च किया है, कि पेरिस के आस-पास मास्को या सरातोव की भाति उनकी कोई जागीर नही है और रकम अदा करने से साफ इन्कार कर दिया। दादी ने उनके मुह पर एक तमाचा मारा और अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करने के लिये दादा को अपने पास नही सोने दिया।

"अगले दिन दादी ने यह उम्मीद करते हुए कि घरेलू दण्ड का आवश्यक प्रभाव हुआ होगा, पति को बुलवा भेजा किन्तु दादा अपनी बात पर अड़े हुए थे। जीवन मे पहली बार दादी ने मामले पर सोच-विचार किया, सब कुछ स्पष्ट करना चाहा, सोचा कि बडी नम्रता से यह बताते हुए पति को लज्जित करेगी कि कर्ज़ कर्ज़ मे फर्क होता है और प्रिंस तथा बग्घी बनानेवाला – ये दोनो एक जैसे ही नही होते। लेकिन सब बेकार! दादा ने विद्रोह कर दिया था। नही, और बात खत्म! दादी की समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे।

"दादी की अच्छी जान-पहचानवालो मे एक बहुत ही कमाल का आदमी था। आपने काउट सेट-जेर्मेन* का नाम तो सुना होगा, जिसके

---

* १८वी शताब्दी के अन्त का फ़ासीसी कीमियागर और जो-खिमबाज़। – स०

७*

बारे में बड़ी-बड़ी अद्भुत बातें कही जाती हैं। आपको यह भी म
होगा कि उसने अपने को अमर यहूदी, जीवन-अमृत और दार्श
पत्थर का आविष्कारक आदि, आदि बताया था। लोग उ
पाखंडी कहकर उसका मजाक उड़ाते थे और कासानोवा ने* अ
टिप्पणियों में उसे जासूस कहा है। ऐसी रहस्यपूर्ण ख्याति के बा
सेंट-जेर्मेन बहुत ही सम्मानित व्यक्तित्व रखता था और सोसा
में बड़ा ही कृपालु तथा विनयी-शिष्ट व्यक्ति माना जाता था। द
अभी तक उसकी प्रेम-दीवानी है और अगर कोई अनादर से उ
चर्चा करता है, तो वह बिगड़ उठती है। दादी जानती थी कि से
जेर्मेन काफ़ी अमीर आदमी है। उसने उसी से मदद लेनी की सोच
उसके नाम एक रुक्का लिख भेजा जिसमें अनुरोध किया कि वह फ़ौ
उसके पास चला आये।

"सनकी बूढ़ा उसी वक्त आ गया और दादी को उसने ब
ही दुखी पाया। दादी ने अपने पति की क्रूरता को काले से काले रंग
पेश किया और आखिर यह कहा कि वह उसकी मैत्री और कृपालु
पर ही पूरी आस लगाये हुए है।

"सेट-जेर्मेन सोच में पड़ गया।

"'यह रकम तो मैं आपको दे सकता हूं,' वह बोला, 'लेकि
जानता हूं कि जब तक आप यह रकम मुझे लौटा नहीं देंगी, आप
चैन नहीं आयेगा। मैं आपके लिये नई परेशानियां पैदा नहीं कर
चाहता। एक और रास्ता है – आप यह रकम वापस जीत सकती हैं।'
'किन्तु कृपालु काउंट,' दादी ने जवाब दिया, 'मैं तो यह कह र
हूं कि हमारे पास पैसे ही नहीं हैं।' – 'पैसों की कोई ज़रूरत नहीं
सेट-जेर्मेन ने दादी की बात काटी, 'आप पूरी तरह मेरी बात सुन
की कृपा करें।' इतना कहकर उसने दादी को वह राज़ बताया, जि
जानने के लिये हममें से हर कोई बड़ी खुशी से भारी क़ीमत अ
कर देता ..."

जवान जुआरी अब बहुत ही ध्यान से बात सुनने लगे

---

* प्रसिद्ध इतालवी जोखिमबाज़ (१७२५–१७९८), जिसने बड़े
दिलचस्प संस्मरण लिखे हैं। – सं०

तोम्स्की ने पाइप सुलगाया, कश खीचा और अपनी बात आगे बढायी।

"दादी उसी शाम को वेर्साली, au jeu de la Reine* मे पहुंची। ड्यूक द ओंलिआन पत्ते बाट रहा था। दादी ने कर्ज की रकम न लाने के लिये जरा माफी मागी, अपनी सफाई मे छोटा-सा किस्सा सुनाया और ड्यूक के सामने जुआ खेलने बैठ गयी। दादी ने तीन पत्ते चुने, एक के बाद दूसरा पत्ता चला, तीनो पत्ते जीतनेवाले निकले और दादी ने अपना सारा ऋण बराबर कर दिया।"

"सयोग की बात थी!" एक मेहमान ने कहा।

"मनगढन्त किस्सा है!" हेर्मन्न ने राय जहिर की।

"शायद निशानी वाले पत्ते थे?" तीसरा कह उठा।

"मैं ऐसा नही सोचता हू," तोम्स्की ने बडी शान से जवाब दिया।

"भई वाह!" नारूमोव बोला, "तुम्हारी ऐसी दादी है जो लगातार जीतनेवाले तीन पत्तो का अनुमान लगा सकती है और तुमने अभी तक उससे यह राज़ नही जाना?"

"मामला इतना सीधा-सादा नही है!" तोम्स्की ने जवाब दिया, "मेरे पिता जी समेत दादी के चार बेटे थे। चारो ही खूब जुआ खेलते थे और दादी ने उनमे से किसी को भी अपना राज नही बताया, गो यह उनके लिये और खुद मेरे लिये भी कुछ बुरा न होता। लेकिन मेरे चाचा, काउट इवान इल्यीच ने मुझे यह किस्सा सुनाया और कसम खाकर इसके बारे में यकीन दिलाया। दूसरी दुनिया मे पहुच चुका चाप्लीत्स्की, वही चाप्लीत्स्की जो लाखो-करोडो उडाकर बडी मुहताजी मे मरा, अपनी जवानी मे एक बार तीन लाख रूबल हार गया – याद आ रहा है जोरिच** के पास। वह बहुत ही परेशान था। दादी जवान लोगों की ऐसी शरारतो, ऐसी हरकतो के मामले मे बडी कठोर थी, लेकिन न जाने क्यो, उसे चाप्लीत्स्की पर रहम आ गया। उसने उसे तीन पत्ते बताये, यह कहा कि एक के बाद एक को चले और साथ ही उससे यह वचन ले लिया कि वह फिर कभी जुआ नही खेलेगा।

---

* महारानी के यहा ताश का खेल (फ्रासीसी)।

** येकातेरीना द्वितीय का एक कृपापात्र, जुए का दीवाना (१७४५–१७९९)।–स०

चाप्लीत्स्की अपने सुपरिचित प्रतिद्वन्द्वी के पास गया और वे खेलने बैठे। उसने पहले पत्ते पर पचास हजार का दांव लगाया और जीत गया, दूसरे पत्ते पर इस दांव को दुगुना कर दिया, तीसरे पर चौगुना – इस तरह हारी हुई सारी रकम लौटाने के अलावा वह कुछ और भी जीत गया

"लेकिन अब सोना चाहिये – सुबह के पौने छः बज गये हैं।"

वास्तव में ही उजाला होने लगा था। जवान लोगों ने जाम खाली किये और अपने-अपने घरों को चल दिये।

(२)

— Il paraît que monsieur est décidement pour les suivantes.
— Que voulez-vous, madame? Elles sont plus fraîches*

सोसाइटी की बातचीत

बूढ़ी काउटेस ... अपने शृंगार-कक्ष मे दर्पण के सामने बैठी थी। तीन नौकरानिया उसे घेरे हुए थी। एक सुर्खी की शीशी लिये थी, दूसरी के हाथ मे हेयर पिनो का डिब्बा था और तीसरी अगारो के रग की फीतोवाली ऊची टोपी। काउटेस की सुन्दरता का रंग कभी का फीका पड चुका था, इसलिये वह सुन्दरता का ज़रा भी दावा नहीं कर सकती थी, किन्तु जवानी के दिनो की सभी आदतो को उसने ज्यो का त्यो बनाये रखा था, अठारहवी सदी के आठवे दशक के फैशनो को कड़ाई से निभाती थी और साठ साल पहले की तरह बहुत यत्न से और बडा समय लगाकर साज-सिंगार करती थी। खिडकी के पास उसकी सरक्षिता युवती कसीदाकारी के फ्रेम के सामने बैठी थी।

---

* लगता है कि आप तो निश्चित रूप से नौकरानियो को तरजीह देते हैं।
क्या किया जाये? उनमे अधिक ताजगी होती है (फ़ासीसी)।

"नमस्ते, grand'maman,* कमरे मे दाखिल होनेवाले जवान अफसर ने कहा। "Bonjour, mademoiselle Lise.** Grand'-maman, मै आपके पास एक अनुरोध लेकर आया हू।"

"क्या बात है, Paul?"***

"आपके साथ अपने एक दोस्त का परिचय करवाने और शुक्रवार के बॉल-नृत्य मे उसे अपने साथ यहां लाने के लिये आपकी अनुमति चाहता हू।"

"उसे सीधे बॉल-नृत्य में ही ले आना और तभी मेरे साथ उसका परिचय करवा देना। कल तुम के यहा गये थे?"

"बेशक गया था! वहा बहुत मजा रहा – सुबह के पाच बजे तक नाचते रहे। येलेत्स्काया तो खूब ही जच रही थी!"

"ओह, मेरे प्यारे! उसमे भला जचनेवाली क्या खास बात हो सकती है? काश, उसकी दादी, प्रिसेस दार्या पेत्रोव्ना को तुमने उसकी जवानी के दिनो मे देखा होता! अब तो बहुत बुढा गयी होगी प्रिसेस दार्या पेत्रोव्ना?"

"बुढा गयी होगी?" तोम्स्की ने बेख्याली से जवाब दिया, "उसे तो मरे हुए सात साल हो चुके हैं।"

खिडकी के पास बैठी युवती ने सिर ऊपर उठाया और तोम्स्की को इशारा किया। तोम्स्की को याद आया कि बूढी काउटेस से उसकी हमउम्रो की मौत को छिपाया जाता है और यह भूल करने के लिये उसने अपना होठ काटा। किन्तु काउटेस ने अपने लिये यह नई खबर सुनकर कोई खास परेशानी जाहिर नही की।

"मर चुकी है!" काउटेस ने कहा, "और मुझे मालूम ही नहीं था! हम दोनो को सम्राज्ञी की सेवा मे उपस्थित रहने के लिये एक-साथ ही नियुक्त किया गया था और जब हम सम्राज्ञी के सामने गयी, तो "

और काउटेस ने सौवी बार पोते को अपना यही किस्सा सुनाया।

---

* दादी (फ्रासीसी)।

** नमस्ते, लीजा (फ्रासीसी)।

*** पोल (फ्रासीसी)।

और दूसरे से एक नौकर भागा आया।

"मुझे जब बुलाया जाना है, तो तुम लोग उसी वक्त क्यों नहीं आते?" काउंटेस ने उनसे कहा। "लीजावेता इवानोव्ना को बताओ कि मैं उसकी राह देख रही हूं।"

लीजावेता इवानोव्ना चोगे जैसी पोशाक और टोपी पहने हुए भीतर आई।

"आखिर तो आ गयीं तुम!" काउंटेस ने कहा। खूब बनाव सिंगार किया है! यह किसलिये भला? किसको मोहित करना चाहती हो? मौसम कैसा है? – लगता है हवा है।"

"नहीं, सरकार! बिल्कुल हवा नहीं है!" नौकर ने जवाब दिया।

"तुम लोग हमेशा वही कह देते हैं जो तुम्हारे मुंह में आ जाता है! खिड़की का ऊपरवाला शीशा खोलो तो। ठीक वही मामला है – हवा है, और सो भी ठण्डी! बग्घी खुलवा दीजिये! लीजा, हम नहीं जायेंगी – बनने-ठनने की कोई जरूरत नहीं थी।"

"यह है मेरी जिन्दगी!" लीजावेता इवानोव्ना ने सोचा।

वास्तव में ही लीजावेता इवानोव्ना बड़ी बदकिस्मत प्राणी थी। दांते ने कहा है कि परायी रोटी कड़वी होती है और पराये घर की पैड़ियों पर चढ़ना मुश्किल होता है। दूसरे पर निर्भरता की कटुता को यदि जानी-मानी बुढ़िया की आश्रिता, गरीब लड़की नहीं जानेगी, तो कौन जानेगा? यह सच है कि काउंटेस दिल की बुरी नहीं थी, लेकिन सोसाइटी द्वारा बिगाड़ी गयी सभी औरतों की तरह मनमानी करती थी, कंजूस और निर्मम स्वार्थ में डूबी हुई थी, जैसे कि वे सभी बूढ़े लोग होते हैं जो अपने जमाने में सारी कोमल भावनायें लुटाकर वर्तमान के प्रति उदासीन हो जाते हैं। वह ऊंचे समाज की सारी चहल-पहल में हिस्सा लेती थी, बॉल-नृत्यों में जाती थी, जहां पुराने ढंग से रंगी-चुनी और पुराने फैशन के कपड़े पहने हुए नाच के हाल की भद्दी और जरूरी सजावट बनी बैठी रहती थी, एक प्रचलित रस्म के अनुरूप नवागत अतिथि उसके पास आते, बहुत झुककर उसका अभिवादन करते और बाद में कोई भी उसमें दिलचस्पी न लेता। सारे शहर को ही वह अपने यहां आमन्त्रित करती, कड़ाई से आचार-व्यवहार को निभा- ? और किसी को भी चेहरे से न जानती-पहचानती। उसकी हवेली

और बाहर बने क्वार्टरो मे रहने वाले अनेक नौकर-चाकर, जिनकी चर्बी बढती जाती थी और बाल सफेद होते जाते थे, जैसा चाहते थे, वैसा करते थे और मरणासन्न बुढिया को अधिक से अधिक लूटने के मामले मे एक-दूसरे से होड लेते थे। लीज़ावेता इवानोव्ना घरेलू यातनाये-यन्त्रणाये सहती थी। वह चाय का प्याला बनाती तो फालतू चीनी खर्च करने के लिये उसे डाटा-डपटा जाता; वह उपन्यास पढकर सुनाती, तो लेखक की सभी गलतियो के लिये उसे ही दोषी ठहराया जाता, काउंटेस के सैर-सपाटे के समय वह उसके साथ रहती और मौसम तथा सड़क की खराबी के लिये भी जवाबदेह होती। उसका वेतन नियत था जो उसे कभी पूरा नही मिलता था, लेकिन उससे यह माग की जाती थी कि वह सभी की तरह पहने-ओढ़े यानी बहुत कम लोगो की तरह। ऊचे समाज मे उसकी भूमिका बहुत ही दयनीय होती थी। उसे सभी जानते थे, मगर कोई भी उसकी तरफ ध्यान नही देता था, बॉल-नृत्यो मे वह केवल तभी नाचती थी जब vis-á-vis* न मिलती और महिलाये हर बार ही, जब उन्हे अपने साज-सिंगार मे कुछ ठीक-ठाक करना होता, उसका हाथ थामकर उसे अपने साथ शृगार-कक्ष मे ले जाती। वह स्वाभिमानी थी, अपनी स्थिति के बारे मे पूरी तरह सजग थी और इसलिये अपने इर्द-गिर्द नज़र डालती हुई बडी बेसब्री से ऐसे व्यक्ति को ढूढती रहती जो उसे इस हालत से उबार सके। किन्तु अपने लाभ के फेर मे पडे हुए दम्भी जवान लोग उसकी ओर कोई ध्यान नही देते थे, यद्यपि लीज़ावेता इवानोव्ना उन गुस्ताख और निठुर युवतियो की तुलना मे कही अधिक प्यारी थी, जिनके गिर्द वे मडराते रहते थे। कितनी बार बडे ही ठाठदार, मगर ऊब भरे मेहमानखाने से दबे पाव निकलकर वह अपने मामूली-से कमरे मे जाकर रोने लगती, जहा कागज की दीवारी छीट से मढी हुई लकडी की ओटे थीं, अलमारी थी, छोटा-सा दर्पण और रगा हुआ पलग था और जहा तावे के शमा-दान मे एक ही बत्ती धीमी-धीमी जलती रहती थी!

एक बार — यह इस उपन्यासिका के आरम्भ मे वर्णित रात के दो दिन बाद और उस दृश्य के, जिसका हमने अभी उल्लेख किया है,

---

* नृत्य-सगिनी (फ्रासीसी)।

एक सप्ताह गुजरने हुआ – लीजावेता इवानोव्ना ने खिड़की के पास बैठे और कसीदाकारी करते हुए संयोग से बाहर सड़क पर नज़र डाली और एक जवान फौजी इंजीनियर को निश्चल अपनी खिड़की पर नज़र टिकाये खड़ा देखा। लीजा ने सिर झुका लिया और फिर से कढ़ाई करने लगी। पांच मिनट बाद उसने फिर से ऊपर देखा – जवान अफसर उसी जगह पर खड़ा हुआ था। राह चलते अफसरों के साथ आंखें लड़ाने की आदत न होने के कारण उसने सड़क की ओर देखना बन्द कर दिया और सिर ऊपर उठाये बिना लगभग दो घण्टों तक अपने काम में लगी रही। दोपहर के भोजन का समय हो गया। वह उठी, कसीदाकारी का सामान समेटने लगी और अनचाहे ही सड़क की ओर देख लेने पर उसे फिर से वही अफसर वहां खड़ा दिखाई दिया। उसे यह काफी अजीब-सा लगा। दिन के भोजन के बाद कुछ परेशान-सी महसूस करते हुए वह खिड़की के पास गई, किन्तु अफसर वहां नहीं था – और वह उसके बारे में भूल गयी।

दो दिन बाद, काउंटेस के साथ बग्घी में बैठने के लिये बाहर आने पर उसने उसे फिर से देखा। वह ऊदबिलाव की खाल के कालर से अपना चेहरा ढके हुए दरवाज़े के पास ही खड़ा था और टोप के नीचे से उसकी काली आंखें चमक रही थीं। कारण न जानते हुए लीज़ावेता इवानोव्ना डर गयी और ऐसी धड़कन अनुभव करते हुए, जिसे स्पष्ट करना सम्भव नहीं था, बग्घी में बैठ गयी।

घर लौटते ही वह खिड़की की तरफ भागी गई – अफ़सर उस पर आंखें जमाये पहले वाली जगह पर खड़ा था। जिज्ञासा से व्यथित और ऐसी भावना से विह्वल, जो उसके लिये सर्वथा नई थी, वह खिड़की से पीछे हट गयी।

इस समय से एक भी ऐसा दिन नहीं बीतता था कि यह जवान अफसर नियत समय पर इनके घर की खिड़की के नीचे प्रकट न हो। इन दोनों के बीच एक अनजाना सम्बन्ध-सूत्र स्थापित हो गया। अपनी जगह पर बैठकर काम करते हुए वह उसका निकट आना अनुभव कर लेती, सिर ऊपर उठाती और हर दिन अधिकाधिक देर तक उसकी ओर देखती रहती। ऐसा लगता कि जवान अफसर इसके लिये उसके प्रति कृतज्ञता अनुभव करता था। जवानी की पैनी दृष्टि से वह यह

देखे बिना न रहती कि जब उनकी नज़रे मिलती, तो जवान के पीले गालो पर झटपट सुर्खी दौड जाती। एक हफ्ते बाद वह उसकी ओर देखकर मुस्करा दी ..

तोम्स्की ने अपने मित्र का परिचय करवाने के लिये जब काउटेस से अनुमति चाही थी, तो इस बेचारी लडकी का दिल धडक उठा था। किन्तु यह मालूम होने पर कि नारूमोव इजीनियर नही, गार्डों की घुडसेना का अफसर है, उसे इस बात का अफसोस हुआ कि अनुचित प्रश्न पूछकर उसने चचल तोम्स्की के सामने अपना राज़ खोल दिया था।

हेर्मन्न रूस मे ही रह जानेवाले एक जर्मन का बेटा था, जो उसके लिये बहुत छोटी-सी पूजी छोड गया था। अपनी आत्म-निर्भरता को सुदृढ करने की आवश्यकता के बारे म पक्का विश्वास होने के कारण हेर्मन्न अपनी पूजी का सूद तक भी नही लेता था, केवल वेतन पर गुज़ारा करता था और अपने दिल की कोई छोटी-सी सनक-तरग भी पूरी नही करता था। वैसे वह अपने ही मे बन्द और महत्त्वाकाक्षी था और उसके साथियो को उसकी अत्यधिक मितव्ययता की खिल्ली उडाने का बहुत ही कम मौका मिलता था। वह बहुत ही भावावेशी और प्रबल कल्पना-शक्ति का धनी था, किन्तु उसकी दृढता ने उसे जवानी की सामान्य भूलो-भ्रातियो से बचा लिया। उदाहरण के लिये, यद्यपि उसकी आत्मा मे जुए का शौक घर किये बैठा था, वह कभी पत्ते हाथ मे नही लेता था, क्योकि यह हिसाब लगाता था कि उसकी सम्पत्ति उसे इस बात की अनुमति नही देती थी (उसी के शब्दो मे) " कि वह कुछ फालतू पाने की उम्मीद मे उसे भी कुर्बान कर दे जो एकदम जरूरी है" – और फिर भी वह सारी-सारी रात जुए की मेजो के पास बैठा हुआ खेल के उतार-चढावो को बडी उत्तेजना मे देखता रहता।

तीन पत्तो के किस्से ने उसकी कल्पना को अत्यधिक प्रभावित किया और सारी रात वह उसके दिमाग मे नही निकला। "कैसा रहे," अगली शाम को पीटर्सबर्ग मे घूमते हुए वह सोचता रहा, "कैसा रहे, अगर बूढी काउटेस मेरे सामने अपना राज़ खोल दे! या फिर निश्चित रूप से जीतनेवाले तीन पत्ते ही मुझे बता दे! मैं अपनी किस्मत क्यो न आज़माकर देखू? . उससे जान-पहचान करू, उसका कृपा-पात्र बन जाऊ – शायद उसका प्रेमी हो जाऊ – लेकिन इस सब के लिये तो वक्त

चाहिये – और उसकी उमर है सत्तासी बरस – वह एक हफ्ते बाद, दो दिन बाद भी मर सकती है! और फिर वह सब किस्सा भी? क्या उसपर यकीन किया जा सकता है? नहीं! मितव्ययिता, संयम और परिश्रमशीलता – यही मेरे तीन पत्ते हैं, यही मेरी पूंजी को तिगुना, सतगुना कर सकते हैं और मुझे चैन तथा स्वतंत्रता प्रदान कर सकते हैं।'

इसी तरह से सोच विचार करते हुए वह पीटर्सबर्ग की एक मुख्य सड़क पर प्राचीन वास्तुकला वाले एक घर के सामने जा निकला। सड़क बग्घियों से भरी पड़ी थी और जगमगाते दरवाजे के सामने एक के बाद एक बग्घी आकर रुक रही थी। बग्घियों में से हर क्षण किसी जवान सुन्दरी का मांसल पाव या खनकती एड़ी वाला घुटनों तक का जूता, या किसी राजदूत की धारीदार लम्बी जुराब और पैनी जूता बाहर आता। फर-कोट और बरसातियां अपनी झलक दिखाती हुई ठाठदार दरबान के पास से गुजरतीं। हेर्मन्न वहां रुक गया।

"यह किसका घर है?" उसने नुक्कड़ वाले पुलिसमैन से पूछा।

"काउंटेस का," पुलिसमैन ने जवाब दिया।

हेर्मन्न का दिल धड़क उठा। अनूठा किस्सा फिर से उसकी कल्पना में सजीव हो गया। वह इस घर की स्वामिनी और उसकी अद्भुत क्षमताओं के बारे में सोचता हुआ इसके आस-पास आने-जाने लगा। अपने साधारण-से निवासस्थान पर वह काफी रात गये लौटा, देर तक सो नहीं सका और जब नींद उस पर हावी हो गयी, तो सपने में उसे पत्ते, हरे मेजपोश से ढकी मेज, नोटों की गड्डियां और सोने की मुद्राओं के ढेर नजर आये। वह एक के बाद एक पत्ता चलता था, दृढ़ता से दांव दुगुने करता जाता था, लगातार जीतता था, सोने की मुद्राओं के ढेरों को अपनी तरफ खिसका लेता था और जेबों में नोट ठूंसता जाता था। काफी देर से सुबह उठने पर उसने अपनी काल्पनिक दौलत के खो जाने के कारण गहरी सांस ली, फिर से शहर का चक्कर लगाने चल दिया और पुन: अपने को काउंटेस के घर के सामने पाया। कोई रहस्यमयी शक्ति मानो उसे उस घर की ओर खींच ले जाती थी। वह रुका और खिड़कियों की तरफ देखने लगा। एक खिड़की के पीछे उसे काले बालोंवाला सिर दिखाई दिया जो सम्भवत: किसी किताब

था काम पर भुका हुआ था। सिर ऊपर को उठा। हेर्मन्न को साफ़गी लिये हुए चेहरा और काली आखे नजर आई। इस क्षण ने उसके भाग्य का निर्णय कर दिया।

(२)

Vous m'écrives, mon ange, des lettres de quatre pages plus vite que je ne puis les lire *

पत्र-व्यवहार

लीजावेता इवानोव्ना ने चोगा और टोपी उतारे ही थे कि काउटेस ने उसे बुलवा भेजा और फिर से बग्घी तैयार करवाने का आदेश दिया। वे बग्घी मे बैठने के लिये गयी। जब दो नौकर बूढ़ी काउटेस को उठाकर बग्घी के दरवाजे मे घुसेड रहे थे, लीजावेता इवानोव्ना को बग्घी के पहिये के बिल्कुल निकट ही अपना इजीनियर दिखाई दिया, इजीनियर ने उसका हाथ पकड लिया, डर के मारे लीज़ा की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी, जवान अफसर गायब हो गया और एक पत्र लीज़ा के हाथ मे रह गया। लीज़ा ने उसे अपने दस्ताने मे छिपा लिया और रास्ते भर उसे किसी बात की कोई सुध-बुध ही न रही। बग्घी मे जाते हुए काउटेस को लगातार कुछ न कुछ पूछते जाने की आदत थी हमारे निकट से अभी कौन गुज़रा था? – इस पुल का क्या नाम है? – वहा साइनबोर्ड पर क्या लिखा है? लीजावेता इवानोव्ना ने हर बार ही अटकल-पच्चू और असगत जवाब दिये। इससे काउटेस की झल्लाहट बढती गयी।

"तुम्हे क्या हो गया है, री? तुम्हारा दिमाग तो नही चल निकला? तुम या तो मेरी बात सुनती नही हो या समझती नही हो?

---

* मेरे फरिश्ते, मैं जितनी जल्दी उन्हे पढ पाता हू, तुम चार-चार पृष्ठो की चिट्ठिया मुझे उससे कही ज्यादा जल्दी लिखती हो (फ़ासीसी)।

[illegible] की कृपा से ही न तो [illegible] हूं और न ही [illegible]
अनुवाद किया है।

लीज़ावेता इवानोव्ना उसे शुरू ही नहीं रही थी। पर [illegible] वह अपने कामों में व्यस्त रही। उसने इससे पहले [illegible] खुशकिस्मत नहीं था। लीज़ावेता इवानोव्ना ने उसे पढ़ा। पत्र में [illegible] की स्वीकृति थी, उसमें कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति थी, [illegible] आदरपूर्ण था तथा शब्दशः किसी जर्मन उपन्यास से नकल किया [illegible] था। पर चूंकि लीज़ावेता इवानोव्ना जर्मन भाषा नहीं जानती थी इसलिये उसे इस पत्र से बड़ी खुशी हुई।

किन्तु साथ ही इस पत्र से वह बड़ी बेचैन भी हो उठी। जिन्दगी में पहली बार एक जवान मर्द के साथ उसके गुप्त और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो रहे थे। उसके ऐसे साहस से वह दहल उठी। अपनी [illegible] विधि की असावधानी के लिये उसने अपनी भर्त्सना की और यह न समझ पा रही थी कि वह क्या करे – खिड़की के पास बैठना छोड़ [illegible] और लापरवाही दिखाकर आगे के लिये जवान अफसर के जोश पर पानी डाल दे? उसे उसका पत्र लौटा दे? रुखाई और दृढ़ता से उसे जवाब दे दे? वह किसी के साथ भी सलाह-मशविरा नहीं कर सकती थी। उसकी न तो सहेलियां थी और न ही कोई सरपरस्त। लीज़ावेता इवानोव्ना ने उत्तर देने का निर्णय किया।

वह लिखने की मेज पर बैठ गयी, उसने कागज-कलम सामने रखे और सोच में डूब गयी। उसने कई बार अपना पत्र शुरू किया और उसे फाड़ डाला – कभी तो वह उसे बहुत कोमल और कभी बहुत कठोर प्रतीत हुआ। आखिर वह ऐसी कुछ पंक्तियां लिखने में सफल हो गयी जिनसे उसे सन्तोष हुआ। "मुझे विश्वास है," उसने लिखा, "कि आपका इरादा नेक है, कि आप अच्छी तरह से सोचे-समझे बिना कोई क़दम उठाकर मेरे दिल को ठेस नहीं लगाना चाहते हैं, लेकिन हमारी जान-पहचान की इस तरह से शुरुआत नहीं होनी चाहिये। आपका पत्र लौटा रही हू और आशा करती हू कि भविष्य में आप मुझे अकारण अनादर की शिकायत करने का मौका नहीं देंगे।"

अगले दिन हेर्मन्न को आते देखकर लीज़ा कसीदाकारी छोड़कर [illegible], साथ के बड़े कमरे में गयी, उसने खिड़की का ऊपरी भाग खोला

और जवान अफसर की चुस्ती-फुर्ती पर भरोसा करते हुए पत्र नीचे फेंक दिया। हेर्मन्न भागकर आया, उसने पत्र उठा लिया और मिठाइयों की दुकान में जाकर उसे खोला। उसे उसमें अपना और लीज़ावेता इवानोव्ना का पत्र मिला। उसे ऐसी ही आशा थी और वह अपनी इस साज़िशी कार्रवाई में बेहद खोया हुआ घर लौटा।

इसके तीन दिन बाद फैशन की दुकान से चंचल आंखोंवाली एक लड़की लीज़ावेता इवानोव्ना के पास एक रुक्का लेकर आई।

लीज़ावेता इवानोव्ना ने मन में यह घबराहट अनुभव करते हुए कि उसमें बिल चुकाने की मांग की गयी होगी, लिफ़ाफ़ा खोला और सहसा हेर्मन्न की लिखावट पहचान ली।

"मेरी प्यारी, तुमसे भूल हो गयी है, यह रुक्का मेरे नाम नहीं है।"

"नहीं, आप ही के नाम है!" साहसी लड़की ने शरारतभरी मुस्कान को छिपाये बिना जवाब दिया। "इसे पढ़ने की कृपा कीजिये!"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने रुक्के पर जल्दी में नज़र डाल ली। हेर्मन्न ने मिलन की मांग की थी।

"ज़रूर भूल हुई है!" मिलन की मांग के उतावलेपन और हेर्मन्न द्वारा उपयोग में लाये गये तरीके से भयभीत होकर लीज़ावेता इवानोव्ना ने कहा। "सम्भवतः यह मेरे नाम नहीं लिखा गया है!" और उसने पत्र के छोटे-छोटे टुकड़े कर डाले।

"अगर आपके नाम नहीं था, तो आपने इसे फाड़ा क्यों?" लड़की ने प्रश्न किया, "मैं इसे उसी को लौटा देती जिसने भेजा था।"

"कृपया प्यारी, भविष्य में मेरे पास पत्र नहीं लाइयेगा," लड़की की टिप्पणी पर भड़कते हुए लीज़ावेता इवानोव्ना ने कहा। "इसके अलावा जिसने तुम्हें भेजा है, उससे यह कह देना कि उसे शर्म आनी चाहिये"

किन्तु हेर्मन्न हतोत्साहित नहीं हुआ। लीज़ावेता इवानोव्ना को किसी न किसी ढंग से हर दिन ही उसका पत्र मिलता। अब ये पत्र जर्मन से अनूदित नहीं होते थे। हेर्मन्न भावनाओं से ओत-प्रोत होकर लिखता और अपनी ही भाषा का उपयोग करता उनमें उसकी दृढ़ इच्छा और बेलगाम कल्पना की उड़ान की गड़बड़ भी अभिव्यक्त होती। लीज़ावेता इवानोव्ना अब उन्हें लौटाने की बात भी नहीं सोचती, वह उनके रस

से दूर हुए बल्कि उनके उत्तर देने लगी और उनके पत्र हर दिन अधिक लम्बे और भावपूर्ण होते गये। आखिर उसने खिड़की से नीचे उसके हाथ फेंका—

"आज ... राजदूत के यहाँ बाल-नृत्य है। काउंटेस वहाँ जायेंगी। हम दो बजे तक वहाँ रहेंगी। मुझसे एकान्त में मिलने का आपके लिए यह अच्छा मौका है। काउंटेस के जाते ही उनके नौकर-चाकर भी निकल ही भागेंगे। ड्योढ़ी में सिर्फ दरबान ही रह जायेगा और वह भी आम तौर पर अपने कोठे में चला जाता है। साढ़े ग्यारह बजे आइये। सीधे सीढ़ियाँ चढ़ जाइये। अगर प्रवेश-कक्ष में कोई मिल जाये, तो पूछिये कि काउंटेस घर पर है या नहीं। यह जवाब मिलने पर कि नहीं है, आपके सामने कोई चारा नहीं रह जायेगा। आपको लौटना पड़ेगा। अधिक सम्भावना तो इसी बात की है कि आपको कोई नहीं मिलेगा। नौकरानियाँ एक ही कमरे में बैठी रहती हैं। प्रवेश-कक्ष से बायें को मुड़ जाइये और काउंटेस के शयन-कक्ष में पहुँच जाने तक सीधे ही चलते जाइये। शयन-कक्ष में पर्दे के पीछे आपको छोटे-छोटे दो दरवाजे दिखाई देंगे, दायाँ दरवाजा अध्ययन-कक्ष की ओर ले जाता है, जहाँ काउंटेस कभी नहीं जातीं, बायाँ दरवाजा बरामदे की ओर खुलता है और वहीं एक सँकरा-सा घुमावदार जीना है—इससे ऊपर मेरे कमरे में पहुँचा जा सकता है।"

नियत समय की प्रतीक्षा करते हुए हेर्मन्न बाघ की तरह बेचैनी अनुभव कर रहा था। रात के दस बजने पर वह काउंटेस के घर के सामने जाकर खड़ा भी हो गया था। मौसम बहुत ही बुरा था—हवा चीख-चिंघाड़ रही थी, कच्ची-गीली बर्फ के बड़े-बड़े फाहे-से गिर रहे थे, सड़क के लैम्प मद्धिम-सी रोशनी छिटका रहे थे और सड़कें सुनसान थीं। कभी-कभी किराये की बग्घी वाला कोचवान अपनी मरियल-सी घोड़ी को इस आशा से इधर-उधर हाँकता दिखाई दे जाता कि शायद देर से घर को लौटनेवाली कोई सवारी मिल जाये। हेर्मन्न सिर्फ फ्राक-कोट पहने था और न तो हवा और न बर्फ का ही असर महसूस कर रहा था। आखिर काउंटेस की बग्घी दरवाजे के सामने आकर खड़ी हो गयी। हेर्मन्न ने झुकी पीठ वाली बुढ़िया को, जो सेबल का फर-कोट पहने थी, सहारा देकर नौकरों द्वारा बाहर लाते और उसके पीछे-पीछे

हल्का-सा ओवरकोट पहने और बालो मे फूल खोसे उसकी युवा सगिनी को उसके पीछे-पीछे आते देखा। बग्घी के दरवाज़े बन्द कर दिये गये। नर्म बर्फ पर बग्घी मुश्किल से आगे बढी। दरबान ने घर का दरवाज़ा बन्द कर दिया। खिडकियो से रोशनी गायब हो गयी। हेर्मन्न सूने हो गये घर के सामने आने-जाने लगा। लैम्प के पास जाकर उसने घडी पर नज़र डाली – ग्यारह बजकर बीस मिनट हुए थे। घडी की सूई — दृष्टि टिकाये हुए सडक की बत्ती के नीचे ही खडा रहकर वह शेष नटो के बीतने का इन्तज़ार करने लगा। ठीक साढे ग्यारह बजे र्न्न काउटेस के घर का दरवाज़ा लाघकर रोशनी से जगमगाती ग्रोढी मे दाखिल हुआ। दरबान नही था। हेर्मन्न भागते हुए सीढिया ढ गया, उसने प्रवेश-कक्ष का दरवाज़ा खोला और वहा पुराने ढग ी, जहा-तहा चिकने धब्बे लगी आरामकुर्सियो पर एक नौकर को म्प के नीचे सोते पाया। हल्के और दृढ कदम रखते हुए हेर्मन्न उसके स से निकल गया। हाल और मेहमानखाने मे अधेरा था। प्रवेश-क्ष की बहुत ही हल्की-सी रोशनी इसमे आ रही थी। हेर्मन्न ने शयन-क्ष मे प्रवेश किया। देव-प्रतिमाओ के कोने के सामने सोने का लैम्प ल रहा था। बेल-बूटेदार बदरग कपडे से मढी आरामकुर्सिया और ोये भरे तकियोवाले सोफे, जिन पर से जहा-तहा सुनहरा रग उतर चुका था, चीनी कागज़ी छीट से मजी दीवारो के साथ-साथ मातमी-ी तरतीब में रखे हुए थे। दीवार पर m-me Lebrun* द्वारा पेरिस मे बनाये गये दो छविचित्र टगे हुए थे। एक चित्र तो कोई चालीसेक साल के लाल-लाल गालो और गदराये बदन वाले पुरुष का था जो हल्के हरे रग की वर्दी पहने था और उसकी छाती पर सितारा दिख रहा था। दूसरा चित्र था शुक नासिका वाली जवान सुन्दरी का जिसके बाल कनपटियो पर सवरे हुए थे और गुलाब का फूल पाउडर लगे बालो की शोभा बढा रहा था। सभी कोनो मे चीनी मिट्टी की बनी चरवाहिनो की मूर्तिया, प्रसिद्ध Leroy द्वारा बनायी गयी मेज़-घडिया सजावटी मजूषिकाये, मेलने के चक्र, पखे और महिलाओ के मनबहलाव के ऐसे खिलौने रखे हुए थे जिनका पिछली शताब्दी के अन्त मे

---

* फ्रांसीसी चित्रकार महिला, छविचित्रकार (१७५५–१८४२)।–स०

ग*

मोंटगोलफियर के गुब्बारे * तथा मेस्मेर के चुम्बकत्व ** सहित आविष्
किया गया था। हेर्मन्न पर्दों के पीछे गया। उनके पीछे लोहे का छो
सा पलग था, दायीं ओर अध्ययन-कक्ष का दरवाजा था तथा ब
ओर बरामदे की तरफ ले जानेवाला दरवाजा। हेर्मन्न ने बायीं ओ
का दरवाजा खोला और उसे वह सकरा तथा घुमावदार जीना दि
दिया जिसे चढ़कर बेचारी लीज़ावेता इवानोव्ना के कमरे में पहुंचा
सकता था लेकिन वह लौटा और अंधेरे अध्ययन-कक्ष में चला ग

वक्त बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था। सभी ओर खामोशी छ
थी। मेहमानखाने में घडी ने बारह बजाये, एक के बाद एक सभी कम
की घडिया टनटना उठीं और फिर से सब कुछ शान्त हो गया। हेर्म
ठण्डी अंगीठी का सहारा लिये खड़ा था। वह शान्त था, उसका ह
उस व्यक्ति के दिल की तरह समगति से धड़क रहा था जो कोई ख
नाक, लेकिन जरूरी काम करने का फ़ैसला कर लेता है। घड़ियों ने
रात का एक और फिर दो बजाये और हेर्मन्न को दूरी से बग्घी के
आने की आवाज सुनाई दी। अनचाहे ही उसका मन उद्विग्न हो उठा।
बग्घी घर के सामने आकर रुक गयी। उसे बग्घी से नीचे उतरने की
आवाज सुनाई दी। घर में हलचल मच गयी। लोग भागने हुए आये
आवाजें गूंज उठीं और घर रोशन हो उठा। अधेड़ उम्र की तीन नौकरा
नियां भागी हुई सोने के कमरे में आयीं और थकान से बेहाल काउंटेस
कमरे में दाखिल होकर ऊंची टेकवाली आरामकुर्सी में ढह पड़ी। हेर्मन्न
पर्दे के पीछे से झांक रहा था। लीज़ावेता इवानोव्ना उसके पास से
गुजरी। हेर्मन्न को सुनाई दिया कि कैसे वह जल्दी-जल्दी अपने कमरे
की ओर जानेवाले जीने पर चढ़ी। उसकी आत्मा ने मानो उसे धिक्कारा और
जल्द ही यह आवाज शान्त हो गई। वह जैसे पत्थर की तरह कठोर हो गया।

काउंटेस दर्पण के सामने अपने कपड़े उतारने लगी। नौकरानियों ने
पिनें निकालकर गुलाबों से सजी उसकी टोपी और पके तथा छोटे
छोटे कटे बालोंवाले सिर से पाउडर लगा विग उतारा। पिनें बारि

* फ़्रांसीसी आविष्कारक मोंटगोलफियर बन्धुओं ने जून १७८३ में
गर्म धुएं से भरा हुआ कागज़ी गुब्बारा पहली बार उड़ाया। —सं०

** पता आस्ट्रिया के डाक्टर फ़ान्त्स मेस्मेर (१७३४–१८१५) के
इस सिद्धान्त से अभिप्राय है कि हर व्यक्ति में "जीवयुक्त चुम्बकत्व"
होता है जो लोगों को प्रभावित कर सकता है। —सं०

की तरह उसके आस-पास गिर रही थी। रुपहली कढाई वाला पीला फ्राक उसके सूजे पैरो पर जा गिरा। हेर्मन्न उसके शृगार के घृणित रहस्यो को देख रहा था। आखिर काउटेस सोने के गाउन और टोपी मे रह गयी। उसके बुढापे के अधिक अनुरूप इस पोशाक मे वह कम भयानक और कम भद्दी प्रतीत हो रही थी।

सभी बूढे लोगो की तरह काउटेस भी अनिद्रा रोग से पीडित थी। कपडे उतारने के बाद वह खिडकी के पास ऊची टेक वाली आराम-कुर्सी पर बैठ गयी और उसने नौकरानियो को जाने का आदेश दिया। जलती मोमबत्तियोवाले शमादान भी बाहर ले जाये गये और कमरे मे फिर से केवल देव-प्रतिमाओ के सामने जल रहे दीप का प्रकाश रह गया। एकदम पीली-ज़र्द काउटेस अपने अधरो को हिलाती और दाये-बाये डोलती हुई बैठी थी। उसकी धुधली-धुधली आखे मानो सर्वथा भावहीन थी। उसे देखते हुए ऐसा सोचा जा सकता था कि इस भयानक बुढिया का दाये-बाये डोलना उसकी अपनी इच्छा का नही, बल्कि किसी प्रेरक प्रक्रिया के प्रभाव का परिणाम है।

इस मृतप्राय चेहरे पर सहसा अवर्णनीय परिवर्तन हो गया। होठो ने हिलना-डुलना बन्द कर दिया, आखो मे चमक आ गयी – एक अपरिचित पुरुष काउटेस के सामने खडा था।

"डरिये नही, भगवान के लिये डरिये नही!" हेर्मन्न ने स्पष्ट और धीमी आवाज मे कहा। "आपको किसी तरह की हानि पहुचाने का मेरा कतई इरादा नही। मैं आपसे केवल एक कृपा का अनुरोध करने आया हू।"

बुढिया चुपचाप उसकी ओर देख रही थी और ऐसे लगता था मानो उसने उसकी बात ही न सुनी हो। हेर्मन्न ने कल्पना की कि वह बहरी है और उसके कान पर भुककर उसने फिर से अपने वही शब्द दोहराये। बुढिया पहले की तरह ही खामोश रही।

"आप मेरी जिन्दगी को बहुत सुखी बना सकती हैं," वह कहता गया, "और आपको इसके लिये कुछ भी तो नही करना पडेगा मुझे मालूम है कि आप ऐसे तीन पत्ते बता सकती है जिन्हे लगातार एक के बाद एक खेला जा सकता है..."

हेर्मन्न चुप हो गया। उसे लगा मानो काउटेस समझ गयी है कि

उनसे किस बात की कोशिश की जा रही है, यह अभी उनकी [illegible] स्पष्ट दुर्गति भी दिखाई दी।

"यह तो मजाक था," उसने आखिर जवाब दिया, "कसम खाकर कहती हूं! यह मजाक था!"

"यह मजाक की बात नहीं है," हेर्मन्न ने झल्लाते हुए आपत्ति की। "चाप्लीत्स्की को याद कीजिये जिसे आपने हारी हुई रकम वसूल करने में मदद दी थी।"

काउंटेस स्पष्टतः बेचैनी महसूस कर रही थी। उसके चेहरे से यह पता चल रहा था कि उसके भीतर कोई भारी उथल-पुथल हो रही है, किन्तु उसमें शीघ्र ही पहले जैसी उदासीनता-निर्जीवता आ गयी।

"क्या आप मुझे पूरे भरोसे के तीन पत्ते बता सकती हैं?" हेर्मन्न ने अपनी बात जारी रखी।

काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न कहता गया –

"किसके लिये छिपाये रखना चाहती हैं आप अपना राज? नाती-पोतों के लिये? वे तो वैसे ही बड़े मालदार हैं, पैसा क्या कीमत रखता है, उन्हें यह मालूम नहीं। आपके तीन पत्ते धन उड़ाने-लुटाने वालों की कोई मदद नहीं कर सकते। अपने बाप से मिली विरासत को ही जो नहीं सहेज सकता, वह एड़ी-चोटी का जोर लगाने पर भी कौड़ी-कौड़ी को मुहताज होकर मरेगा। मैं उड़ाऊ-लुटाऊ नहीं हूं, पैसे की कीमत जानता हूं। आपके बताये हुए तीन पत्ते मेरे लिये बेकार नहीं जायेंगे। तो बताइये न!"

हेर्मन्न रुका और धड़कते दिल से उसके जवाब का इन्तजार करने लगा। काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न घुटनों के बल हो गया।

"अगर आपके हृदय ने कभी प्रेम-भावना को जाना है, अगर आपको उसके उल्लास का स्मरण है, अगर आप नवजात शिशु का रोना सुनकर एक बार भी मुस्करायी हैं, अगर आपके दिल में कभी कोई मानवीय धड़कन-स्पन्दन हुआ है, तो एक पत्नी, प्रेयसी और मां की भावनाओं के नाम पर आपकी मिन्नत करता हूं, जीवन में जो कुछ पवित्र-पावन है, उसके नाम पर अनुरोध करता हूं कि मेरी प्रार्थना को नहीं ठुकराइये! – मेरे सामने अपना रहस्य खोल दीजिये! आपको उसे छिपाये रखकर क्या लेना है? हो सकता है कि उसका

किसी भयानक पाप के साथ सूत्र जुड़ा हुआ हो, वह शाश्वत सुख से वंचित हो, शैतान के साथ उसने कोई साठ-गाठ कर रखी हो सोचिये तो आप बूढ़ी हैं, बहुत दिन नही जीना है आपको, – आपके पापो को मैं अपनी आत्मा पर लेने को तैयार हू। सिर्फ अपना राज मुझे बता दीजिये। सोचिये तो, एक व्यक्ति का सुख-सौभाग्य आपके हाथो मे है, केवल मैं ही नही, मेरे बेटे-बेटिया, पोते-पोतिया और परपोते-परपोतिया भी आपकी स्मृति का यशोगान करेगे और उसे पावन मानेगे "

बुढ़िया ने जवाब मे एक भी शब्द नही कहा।

हेर्मन्न उठकर खड़ा हो गया।

"बूढ़ी डायन!" वह दात पीसते हुए चिल्ला उठा, "मैं तुझे जवाब देने को मजबूर कर दूगा "

इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाल ली।

पिस्तौल देखकर काउटेस ने दूसरी बार बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने सिर पीछे को झटका और हाथ ऐसे ऊपर उठा लिया मानो अपने को गोली के निशाने से बचाना चाहती हो इसके बाद उसने आरामकुर्सी की टेक पर अपनी पीठ टिका दी और निश्चल हो गयी।

"यह खिलवाड बन्द कीजिये," उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर हेर्मन्न ने कहा। "आखिरी बार पूछ रहा हू – अपने तीन पत्ते मुझे बताना चाहती हैं या नही? हा या नही?"

काउटेस ने कोई जवाब नही दिया। हेर्मन्न ने देखा कि वह मर चुकी है।

(४)

7 Mai 18..
Homme sans moeurs et sans religion!*

पत्र-व्यवहार

लीज़ावेता इवानोव्ना अभी तक अपने कमरे मे बॉल-नृत्य की पोशाक पहने और गहन विचारो मे डूबी हुई बैठी थी। घर लौटने पर उसने

* ७ मई, १८ । ऐसा व्यक्ति, जिसके न तो कोई नैतिक सिद्धान्त हैं और जिसके लिये न कुछ पावन है! (फ्रासीसी)।

उससे किस बात की अपेक्षा की जा रही है, यह उसके उत्तर से सि-
द्ध हुई सी दिखाई दी।

"वह तो मजाक था," उसने आखिर जवाब दिया, "कसम खाकर कहती हूं! वह मजाक था!"

"यह मजाक की बात नहीं है," हेर्मन्न ने झल्लाते हुए आपत्ति की। "चाप्लीत्स्की को याद कीजिये जिसे आपने हारी हुई रकम वापस जीतने में मदद दी थी।"

काउंटेस स्पष्टतः बेचैनी महसूस कर रही थी। उसके चेहरे से यह पता चल रहा था कि उसके भीतर कोई भारी उथल-पुथल हो रही है, किन्तु उसमें शीघ्र ही पहले जैसी उदासीनता-निर्जीवता आ गयी।

"आप मुझे पूरे भरोसे के तीन पत्ते बता सकती हैं?" हेर्मन्न ने अपनी बात जारी रखी।

काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न कहता गया—

'किसके लिये छिपाये रखना चाहती हैं आप अपना राज? नातियों-पोतों के लिये? वे तो वैसे ही बड़े मालदार हैं, पैसा क्या चीज है, उन्हें यह मालूम नहीं। आपके तीन पत्ते धन उड़ाने-लुटाने वालों की कोई मदद नहीं कर सकते। अपने बाप से मिली विरासत को ही जो नहीं सहेज सकता, वह एड़ी-चोटी का जोर लगाने पर भी कौड़ी-कौड़ी को मुहताज होकर मरेगा। मैं उडाऊ-लुटाऊ नहीं हूं, पैसे की कीमत जानता हूं। आपके बताये हुए तीन पत्ते मेरे लिये बेकार नहीं जायेंगे। तो बताइये न! "

हेर्मन्न रुका और धड़कते दिल से उसके जवाब का इन्तजार करने लगा। काउंटेस खामोश रही। हेर्मन्न घुटनों के बल हो गया।

"अगर आपके हृदय ने कभी प्रेम-भावना को जाना है, अगर आपको उसके उल्लास का स्मरण है, अगर आप नवजात शिशु का रोना सुनकर एक बार भी मुस्करायी हैं, अगर आपके दिल में कभी कोई मानवीय धड़कन-स्पन्दन हुआ है, तो एक पत्नी, प्रेयसी और मां की भावनाओं के नाम पर आपकी मिन्नत करता हूं, जीवन में जो कुछ पवित्र-पावन है, उसके नाम पर अनुरोध करता हूं कि मेरी प्रार्थना को नहीं ठुकराइये! —मेरे सामने अपना रहस्य खोल दीजिये! आपको उसे छिपाये रखकर क्या लेना है? हो सकता है कि उसका

किसी भयानक पाप के साथ सूत्र जुडा हुआ हो, वह शाश्वत सुख से वचित हो, शैतान के साथ उसने कोई साठ-गाठ कर रखी हो सोचिये तो आप बूढी हैं, बहुत दिन नही जीना है आपको, – आपके पापो को मैं अपनी आत्मा पर लेने को तैयार हू। सिर्फ अपना राज़ मुझे बता दीजिये। सोचिये तो, एक व्यक्ति का सुख-सौभाग्य आपके हाथो मे है, केवल मैं ही नही, मेरे बेटे-बेटिया, पोते-पोतिया और परपोते-परपोतिया भी आपकी स्मृति का यशोगान करेगे और उसे पावन मानेगे "

बुढिया ने जवाब मे एक भी शब्द नही कहा।

हेर्मन्न उठकर खडा हो गया।

"बूढी डायन!" वह दात पीसते हुए चिल्ला उठा, "मैं तुझे जवाब देने को मजबूर कर दूगा ."

इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाल ली।

पिस्तौल देखकर काउटेस ने दूसरी बार बडी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट की। उसने सिर पीछे को झटका और हाथ ऐसे ऊपर उठा लिया मानो अपने को गोली के निशाने से बचाना चाहती हो इसके बाद उसने आरामकुर्सी की टेक पर अपनी पीठ टिका दी और निश्चल हो गयी।

"यह खिलवाड बन्द कीजिये," उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर हेर्मन्न ने कहा। "आखिरी बार पूछ रहा हू – अपने तीन पत्ते मुझे बताना चाहती हैं या नही? हा या नही?"

काउटेस ने कोई जवाब नही दिया। हेर्मन्न ने देखा कि वह मर चुकी है।

(४)

7 Mai 18

Homme sans moeurs et sans religion!*

पत्र-व्यवहार

लीज़ावेता इवानोव्ना अभी तक अपने कमरे मे बॉल-नृत्य की पोशाक पहने और गहन विचारों मे डूबी हुई बैठी थी। घर लौटने पर उसने

---

* ७ मई, १८. । ऐसा व्यक्ति, जिसके न तो कोई नैतिक सिद्धान्त है और जिसके लिये न कुछ पावन है! (फ्रासीसी)।

"उसका नाम हेर्मन्न है।"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने कोई उत्तर नही दिया लेकिन उसके हाथ-पाव बर्फ की तरह ठण्डे हो गये

"यह हेर्मन्न," तोम्स्की कहता गया, "सचमुच ही रोमाटिक आदमी है – उसका चेहरा-मोहरा नेपोलियन जैसा है और उसकी आत्मा है मेफिस्टोफेलिस की। मेरे ख्याल मे उसकी आत्मा पर कम से कम तीन पापो का बोझ है। आपका चेहरा कैसा पीला पड गया है! "

"मेरे सिर मे दर्द है उस हेर्मन्न – या क्या नाम है उसका? – उसने आपसे क्या कहा है? "

"हेर्मन्न अपने दोस्त से बहुत नाखुश है वह कहता है कि उसकी जगह उसने बिल्कुल दूसरा ही ढग अपनाया होता मैं तो ऐसा मानता हू कि खुद हेर्मन्न भी आप पर मुग्ध है। कम से कम इतना तो है ही कि अपने मित्र के प्रेमोद्गारो को सुनते हुए वह उदासीन नही रह पाता।"

"लेकिन उसने मुझे देखा कहा है?"

"शायद गिरजाघर मे – या सैर करते हुए! भगवान ही जाने! शायद उस समय आपके कमरे मे, जब आप सो रही थी – उससे किसी भी बात की उम्मीद की जा सकती है "

इसी वक्त तीन महिलाओ ने इनके पास आकर "Oubli ou regret?* प्रश्न किया और इस तरह उस बातचीत मे खलल डाल दिया जो लीज़ावेता इवानोव्ना के लिये यातनापूर्ण जिज्ञासा से ओतप्रोत हो गयी थी।

तोम्स्की ने जिस महिला को चुना, वह स्वय प्रिसेस ही थी। नाच के हॉल का एक चक्कर लगाने और प्रिसेस की कुर्सी के सामने एक बार नृत्य-चक्र पूरा करने के दौरान उनके बीच सुलह हो गयी और अपनी जगह लौटने पर तोम्स्की को न तो हेर्मन्न और न लीज़ावेता इवानोव्ना मे ही कोई दिलचस्पी रही थी। वह अधूरी रह गयी बातचीत को अवश्य ही फिर से आगे बढाना चाहती थी, मगर माज़ुर्का नाच खत्म हो गया और उसके फौरन बाद ही बूढी काउटेस घर को चल दी।

---

* विस्मृति या खेद (फ्रासीसी)।

तोम्स्की के शब्द माजुरका नाच के समय होनेवाली हल्की-फुल्की गपशप के सिवा कुछ नही थे, किन्तु वे रोमांटिक युवती की आत्मा में गहरे उतर गये। तोम्स्की ने जो चित्र प्रस्तुत किया था, वह खुद उसके द्वारा बनाये गये चित्र से बहुत मिलता-जुलता था और नवीनतम उपन्यासों की बदौलत यही ओछा चेहरा उसकी कल्पना को भयभीत भी करता था और मोहित भी। वह दस्तानो के बिना अपने हाथ बांधे और उघाडी छाती पर सिर झुकाये, जो अभी तक फूलों से सजा था, बैठी थी अचानक दरवाजा खुला और हेर्मन्न दाखिल हुआ। वह सिहर उठी

"आप कहा थे?" उसने सहमी-सी फुसफुसाहट में पूछा।

"बूढी काउंटेस के सोने के कमरे में," हेर्मन्न ने जवाब दिया। "मैं वही से आ रहा हू। काउंटेस मर गयी।"

"हे भगवान! यह आप क्या कह रहे हैं?.."

"और लगता है," हेर्मन्न कहता गया, "मैं ही कारण हू उसकी मौत का।"

लीज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी ओर देखा और तोम्स्की के ये शब्द उसके दिमाग मे गूज गये – उसकी आत्मा पर कम से कम तीन पापो का बोझ है! हेर्मन्न उसके निकट ही खिडकी के दासे पर बैठ गया और उसने सारा किस्सा कह सुनाया।

लीज़ावेता इवानोव्ना ने कापते दिल से उसकी पूरी बात सुनी। तो ये तीव्र भावनाओं-उद्गारो से भरे पत्र, मिलन की मांग करनेवाले जोरदार अनुरोध, दृढता और साहसपूर्वक उसका पीछा – यह सब प्यार नही था! पैसा – उसकी आत्मा पैसे की दीवानी थी! यह वह नही थी जो उसकी इच्छाओं को पूरा कर सकती थी, उसे सुखी बना सकती थी! बेचारी युवती इस लुटेरे-बदमाश, अपनी बूढी अभिभाविका की हत्या करनेवाले की अन्धी सहायिका के सिवा कोई नही थी! देर से होनेवाले और यातनापूर्ण पश्चाताप के कारण वह फूट-फूटकर रो रही थी। हेर्मन्न उसे चुपचाप देख रहा था – उसका दिल भी कसक रहा था, लेकिन न तो बेचारी लडकी के आसू और न उसके दुख का अनूठा सौन्दर्य ही उसकी कठोर आत्मा को विह्वल कर रहा था। इस [illegible] से कि बुढिया चल बसी, उसकी [illegible] होती थी।

सिर्फ इसी ख्याल से उसकी आत्मा बुरी तरह दुखी थी कि अब उस राज़ का कभी पता नही चलेगा जिससे उसने धनी होने की आशा की थी।

"आप राक्षस हैं!" लीज़ावेता इवानोव्ना ने आखिर उससे कहा।

"मैंने उसकी मौत नही चाही थी," हेर्मन्न ने उत्तर दिया, "पिस्तौल मे गोलिया नही थी।"

दोनो खामोश हो गये।

सुबह होने लगी। लीज़ावेता इवानोव्ना ने खत्म होती हुई मोमबत्ती को बुझा दिया – कमरे मे हल्का-सा उजाला हो गया। लीज़ावेता इवानोव्ना ने रोने के कारण लाल हुई अपनी आखो को पोछा और उन्हे ऊपर उठाकर हेर्मन्न की तरफ देखा – वह छाती पर अपने हाथ बाधे और दहशत पैदा करनेवाले अन्दाज़ मे नाक-भौंह सिकोडे हुए खिडकी के दासे पर बैठा था। इस मुद्रा मे वह अद्भुत रूप से नेपोलियन के छवि-चित्र की याद दिलाता था। इस समानता से लीज़ावेता इवानोव्ना भी दग रह गयी।

"आप घर से बाहर कैसे जायेगे?" आखिर उसने पूछा। "मैंने तो यह सोचा था कि गुप्त ज़ीने से आपको बाहर ले जाऊगी, मगर इसके लिये काउटेस के सोने के कमरे मे से गुज़रना होगा और मुझे वहा जाते डर लगता है।"

"मुझे बता दीजिये कि इस गुप्त ज़ीने तक कैसे पहुचा जा सकता है और मैं खुद ही वहा से बाहर चला जाऊगा।"

लीज़ावेता इवानोव्ना उठी, उसने अलमारी मे से चाबी निकालकर हेर्मन्न को दी और विस्तारपूर्वक उसे सब कुछ समझाया। हेर्मन्न ने लीज़ावेता इवानोव्ना का ठण्डा और उत्साहहीन हाथ दबाया, झुका हुआ सिर चूमा और कमरे से बाहर चला गया।

घुमावदार सीढी से नीचे उतरकर वह फिर से काउटेस के सोने के कमरे मे दाखिल हुआ। मृत बुढिया बुत बनी-सी बैठी थी, उसके चेहरे पर गहन शान्ति थी। हेर्मन्न उसके सामने रुककर उसे देर तक देखता रहा मानो भयानक सचाई के बारे मे पूरी तरह विश्वास कर लेना चाहता हो। आखिर वह अध्ययन-कक्ष मे गया, कागज़ की दीवारी छीट के पीछे टटोलकर उसने दरवाज़ा ढूढा और अजीब भावनाओ से विह्वल होता हुआ अधेरे ज़ीने से नीचे उतरने लगा। वह सोच रहा था कि शायद

शायद साठ बरस पहले कढ़ा हुआ अंगरखा पहने, 'à l'oiseau royal'* के ढंग से बाल संवारे अपनी तिकोनी टोपी को छाती से चिपकाये कोई सौभाग्यशाली प्रेमी इसी वक्त इसी जीने से चढ़कर इस इसी शयन-कक्ष में आता होगा और कभी का कब्र में गल-सड़ चुका होगा, जबकि उसकी बूढ़ी प्रेयसी के दिल की धड़कन आज बन्द हुई है।

जीने से नीचे पहुंचने पर हेर्मन्न को दरवाजा मिला, जिसे उसने उसी चाबी से खोला और अपने को सड़क पर ले जानेवाले सीधे गलियारे में पाया।

(५)

> इस रात को दिवंगता बैरोनेस फ़ोन व. मेरे सामने आ गई। वह सफ़ेद पोशाक पहने थी और उसने मुझसे कहा, "नमस्ते, श्रीमान कौंसिलर!"
>
> स्वेडेनबोर्ग**

उस मुसीबत की मारी रात के तीन दिन बाद हेर्मन्न सुबह के नौ बजे गिरजे में गया, जहां मृत काउंटेस की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना की जानेवाली थी। पश्चाताप की भावना वह अनुभव नहीं कर सकता था, लेकिन लगातार सुनाई देनेवाली आत्मा की इस आवाज को भी – तुमने बुढ़िया की जान ली है! – वह पूरी तरह से दबाने में असमर्थ था। उसमें सच्ची आस्था बहुत कम थी, पूर्वाग्रह बहुत ज्यादा थे। वह ऐसा मानता था कि परलोक सिधार जानेवाली काउंटेस उसके जीवन पर बुरा प्रभाव डाल सकती थी और इसलिये उससे क्षमा मांगने के लिये उसने उसकी अन्त्येष्टि पर जाने का फ़ैसला किया।

गिरजाघर लोगों से भरा हुआ था। हेर्मन्न बड़ी मुश्किल से लोगों के बीच से रास्ता बनाकर आगे बढ़ा। ताबूत बहुत ही बढ़िया मुर्दागाड़ी

---

* "शाही परिन्दे" (फ़्रांसीसी)।

** स्वीडन का रहस्यवादी दार्शनिक (१६८८–१७७२)।– सं०.

और चित जा गिरा। उसे उठाया गया। इसी वक्त लीज़ावेता इवानोव्ना को बेहोशी की हालत मे ड्योढ़ी में लाया गया। इस घटना ने कुछ मिनट के लिये इस शोकपूर्ण सस्कार की गम्भीरता को भंग कर दिया। उपस्थित लोगो मे दबी-घुटी-सी खुसर-फुसर सुनाई दी और एक दुबले-पतले दरबारी अफसर ने, जो काउटेस का निकट सम्बन्धी था, अपनी बगल मे खडे अंग्रेज़ को फुसफुसाकर बताया कि जवान अफसर काउटेस का अवैध बेटा है और अंग्रेज़ ने जवाब मे रुखाई से–'ओह?' कहा।

हेर्मन्न दिन भर बहुत ही खिन्न रहा। किसी एकान्त-से मदिरालय में भोजन करते हुए उसने अपनी आन्तरिक परेशानी पर काबू पाने के लिये सामान्य से कही अधिक शराब पी। किन्तु शराब ने उसकी कल्पना को और अधिक तीव्रता प्रदान कर दी। घर लौटकर वह कपडे उतारे बिना अपने बिस्तर पर जा गिरा और गहरी नींद सो गया।

काफी रात गये उसकी आंख खुली, उसके कमरे मे चादनी छिटकी हुई थी। उसने घडी पर नजर डाली–रात के पौने तीन बजे थे। उसे अब और नीद नही आ रही थी। वह पलग पर बैठकर बूढ़ी काउटेस के अन्त्येष्टि सस्कार के बारे मे सोचने लगा।

इसी समय किसी ने खिडकी मे से भीतर झाककर देख और फौरन पीछे हट गया। हेर्मन्न ने इस बात की ओर कोई ध्यान नही दिया। एक मिनट बाद उसे ड्योढ़ी का दरवाज़ा खोलने की भनक मिली। हेर्मन्न ने सोचा कि सदा की भाति शराब के नशे में धुत उसका अर्दली अपनी रात की आवारागर्दी से वापस लौटा है। किन्तु उसे अपरिचित पद-चाप सुनाई दी–कोई अपने स्लीपरो को धीरे-धीरे घसीटते हुए चल रहा था। दरवाज़ा खुला, सफेद पोशाक पहने एक नारी भीतर आई। हेर्मन्न ने उसे अपनी बूढ़ी धाय समझा और हैरान हुआ कि इतनी रात गये वह किसलिये आई है। मगर सफेद पोशाक पहने औरत सरककर अचानक उसके सामने आ गयी–और हेर्मन्न ने काउटेस को पहचान लिया।

'मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध तुम्हारे पास आई हूं,' उसने दृढ़ आवाज़ में कहा, "लेकिन मुझे तुम्हारा अनुरोध पूरा करने को कहा गया है। तिक्की, सत्ती और इक्का तुम्हारे जीतनेवाले पत्ते है, लेकिन शर्त यह है कि तुम एक दिन में एक से अधिक पत्ता नहीं चलना और बाद में

बाज़ी बहुत देर तक चली। मेज़ पर तीस से अधिक पत्ते थे। चेकालिन्स्की हर दाव के बाद रुकता, ताकि खिलाड़ियों को अपनी स्थिति समझने का समय मिल जाये, हारी हुई रकमें लिखता, बड़ी शिष्टता से खेलनेवालों की मांगों को सुनता और इससे भी अधिक शिष्टता से किसी बेध्यान खिलाड़ी द्वारा मोड़ दिये गये पत्ते के कोने को ठीक कर देता। आखिर बाज़ी खत्म हुई। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे और अगली बाज़ी बांटने के लिये तैयार हुआ।

"मैं भी एक पत्ते पर दाव लगाना चाहूंगा," मेज़ के गिर्द बैठे हुए एक मोटे आदमी के पीछे से हाथ बढ़ाते हुए हेर्मन्न ने कहा। चेकालिन्स्की मुस्कराया और नम्रतापूर्ण सहमति के रूप में उसने सिर झुका दिया। नारूमोव ने हंसते हुए उसे इस बात की बधाई दी कि आखिर तो उसने अपना इतने लम्बे अर्से का व्रत तोड़ लिया और उसके लिये शुभारम्भ की कामना की।

"तो मैं दाव लगा रहा हूं!" हेर्मन्न ने अपने पत्ते पर खड़िया से रकम लिखकर कहा।

"कितना दाव लगाया है जनाब?" मेज़बान-खज़ाची ने आंख सिकोड़ते हुए पूछा, "माफ़ी चाहता हूं, लगता है कि मुझे साफ़ नज़र नहीं आ रहा है।"

"सैंतालीस हज़ार," हेर्मन्न ने जवाब दिया।

ये शब्द सुनते ही सबके सिर फ़ौरन हेर्मन्न की ओर घूम गये और आंखें उस पर जम गयीं। *"इसका दिमाग़ चल निकला है!" नारूमोव* ने सोचा।

"मैं यह कहने की अनुमति चाहता हूं," चेकालिन्स्की ने सदा की भांति मुस्कराते हुए कहा, "आप बहुत बड़ा दाव लगा रहे हैं। यहां किसी ने भी दो सौ पचहत्तर से अधिक बड़ी रकम दाव पर नहीं लगाई।"

"आप यह बताइये कि खेलेंगे या नहीं?" हेर्मन्न ने आपत्ति की।

चेकालिन्स्की ने विनयपूर्ण सहमति के रूप में सिर झुकाया।

"मैं केवल यह निवेदन करना चाहता हूं," उसने कहा, "कि मित्रों का विश्वास-पात्र होने के नाते मैं दाव की रकम सामने रख दी जाने पर ही खेलता हूं। अपनी ओर से मैं तो आपके वचन पर ही भरोसा

करने को तैयार हूं, लेकिन खेल और हिसाब को सही ढग से चलाने के लिये आपसे दाव की रकम पत्ते पर रख देने की प्रार्थना करता हूं।"

हेर्मन्न ने जेब से एक बैंकनोट निकाला और उसे चेकालिन्स्की को दे दिया, जिसने उस पर सरसरी-सी नजर डालकर उसे हेर्मन्न के पत्ते पर रख दिया।

वह पत्ते बाटने लगा। दायी ओर नहला आया और बाईं ओर तिक्की।

"मेरा पत्ता जीत गया!" हेर्मन्न ने अपना पत्ता दिखाते हुए कहा।

खिलाड़ी खुसर-फुसर करने लगे। चेकालिन्स्की के माथे पर बल पड गये, किन्तु तत्काल ही उसके चेहरे पर मुस्कान लौट आयी।

"रकम चुका दू?" उसने हेर्मन्न से पूछा।

"कृपा होगी।"

चेकालिन्स्की ने जेब से कुछ बैंकनोट निकाले और फौरन हिसाब चुकता कर दिया। हेर्मन्न ने अपनी रकम समेटी और मेज से हट गया। नारूमोव तो सम्भल भी नही पाया। हेर्मन्न लैमनेड का एक गिलास पीकर अपने घर को चला गया।

अगले दिन की शाम को वह फिर चेकालिन्स्की के यहा पहुचा। गृह-स्वामी पत्ते बाट रहा था। हेर्मन्न मेज के निकट गया, लोगों ने फौरन उसके लिये जगह खाली कर दी। चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक सिर झुकाया।

हेर्मन्न ने नई बाजी शुरू होने का इन्तजार किया, एक पत्ते पर अपने सैतालीस हजार और पिछले दिन जीते गये सैतालीस हजार भी रख दिये।

चेकालिन्स्की पत्ते बाटने लगा। दायी ओर गुलाम तथा बायी ओर सत्ती आई।

हेर्मन्न ने सत्ती दिखाई।

सभी आश्चर्य से चिल्ला उठे। चेकालिन्स्की स्पष्टतः परेशान हो उठा। उसने चौरानवे हजार गिनकर हेर्मन्न के हवाले कर दिये।

हेर्मन्न ने बड़ी शान्ति से यह रकम ली और उसी क्षण चलता बना।

अगली शाम को हेर्मन्न फिर से खेल की मेज पर आया। सभी उसकी राह देख रहे थे। जनरलों और कौंसिलरों ने ऐसा असाधारण खेल देखने के लिये अपनी ह्विस्ट बन्द कर दी। जवान अफसर अपने

सोफों से उठकर आ गये, सभी बैरे मेहमानखाने मे जमा हो गये। सभी हेर्मन्न को घेरे हुए थे। दूसरे खिलाडियो ने अपने दाव नही लगाये, सभी यह देखने को उत्सुक थे कि इस खेल का क्या अन्त होगा। चेकालिन्स्की के साथ बाजी खेलने को तैयार हेर्मन्न अकेला मेज के पास खडा था। चेकालिन्स्की के चेहरे का रग उडा हुआ था, लेकिन वह सदा की भाति मुस्करा रहा था। दोनो ने ताश की एक-एक नई गड्डी निकाली। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे, हेर्मन्न ने पत्ते काटे, अपना पत्ता सामने रखा और उसपर बैंकनोटो का ढेर लगा दिया। एक तरह से यह द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। सभी ओर गहरी खामोशी छाई हुई थी।

चेकालिन्स्की पत्ते बाटने लगा, उसके हाथ काप रहे थे। दाये बेगम आई और बायें इक्का।

"इक्का जीत गया!" हेर्मन्न ने कहा और अपना पत्ता खोल दिया।

"आपकी बेगम पिट गयी," चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक जवाब दिया।

हेर्मन्न चौका – वास्तव मे ही इक्के की जगह हुक्म की बेगम सामने पड़ी थी। उसे अपनी आखो पर विश्वास नही हो रहा था, वह यह नही समझ पा रहा था कि कैसे उससे ऐसी भूल हुई।

इसी क्षण उसे ऐसे प्रतीत हुआ कि हुक्म की बेगम अपनी आखे सिकोड़ रही है और व्यग्यपूर्वक मुस्करा रही है। असाधारण समानता से वह दग रह गया .

"बुढ़िया!" वह भयभीत होकर चिल्ला उठा।

चेकालिन्स्की ने जीती हुई रकम अपनी ओर खीच ली। हेर्मन्न बुत बना खडा था। उसके मेज से दूर हट जाने पर सभी खिलाडी ऊचे-ऊचे कहने लगे, "क्या कमाल का खेल था!" चेकालिन्स्की फिर से पत्ते फेंटने लगा, खेल सदा की भाति चलता रहा।

सारांश

हेर्मन्न पागल हो गया। वह ओबुखोव अस्पताल के वार्ड न० १७ मे है, किसी के प्रश्नो का कभी कोई उत्तर नही देता और असाधारण तेज़ी से यही बडबडाता रहता है – "तिक्की, सत्ती, इक्का! तिक्की, सत्ती, बेगम! .."

९*

लीज़ावेता इवानोव्ना की किसी बहुत ही शालीन युवा व्यक्ति से शादी हो गयी। वह किसी सरकारी दफ़्तर में काम करता है और खासा सम्पत्तिशाली है। वह बूढ़ी काउंटेस के भूतपूर्व कारिन्दे का बेटा है। लीज़ावेता इवानोव्ना एक गरीब रिश्तेदारिन का पालन-पोषण कर रही है।

तोम्स्की कप्तान हो गया है और प्रिंसेस पोलीना से शादी करने जा रहा है।

कप्तान की बेटी

जवानी मे अपनी
इज्जत की लाज रखो।
कहावत

पहला अध्याय

गार्ड-सेना का सार्जेट

–गार्डों की सेना मे वह तो हो जाता कप्तान।
–नही जरूरत, लेकिन सैनिक बने जवान।
–सैनिक के जीवन की उसको
हो अच्छी पहचान
–और पिता है उसका कौन?

क्न्याजनिन*

मेरे पिता अन्द्रेई पेत्रोविच ग्रिनेव अपनी जवानी के दिनो मे काउट मीनिख** के अधीन सेना मे काम करते रहे थे और सन् १७   मे मानद मेजर के रूप मे सेवानिवृत्त हुए। तब से वे सिम्बीर्स्क गुबेर्निया के अपने गाव मे रहते थे और यही उन्होंने इस क्षेत्र के एक निर्धन कुलीन की बेटी अव्दोत्या वसील्येव्ना यू० से शादी कर ली। मेरे नौ भाई-बहन हुए, किन्तु सभी बचपन मे चल बसे।

मैं अभी मा के पेट मे ही था कि मुझे हमारे नजदीकी रिश्तेदार प्रिंस ब० की मेहरबानी से, जो गार्ड सेना मे मेजर थे, सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट मे सार्जेट की हैसियत से दर्ज कर लिया गया। यदि आशा के विरुद्ध मा बेटे के बजाय बेटी को जन्म देती, तो पिता ने सैन्य-सेवा के लिये हाजिर न होनेवाले सार्जेट की मृत्यु की उचित स्थान पर सूचना दे दी होती और इस तरह मामला खत्म हो गया होता। मेरी पढाई समाप्त होने तक मुझे छुट्टी पर माना गया। उस जमाने मे हमारी शिक्षा-दीक्षा आज की तरह नही होती थी। मैं पाच साल का था,

---

* या० ब० क्न्याजनिन के सुखान्त नाटक 'शेखीखोर' (१७८६) से।–स०

** सेनापति और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता (१६८३–१७६७) जो येकातेरीना द्वितीय के शासन-परिवर्तन के समय पीटर तृतीय के प्रति निष्ठावान रहा।–स०

अपनी समझदारी और सदाचार का परिचय देनेवाले सावेलिच नामक सईस को मेरा शिक्षक बना दिया गया। उसकी देख-रेख में बारह साल का होने पर मैंने रूसी भाषा के लिखने-पढ़ने का ज्ञान प्राप्त कर लिया और शिकारी कुत्तों के लक्षणों को बहुत अच्छी तरह जान-समझ गया। इसी समय मेरे पिता जी ने बोप्रे नाम के एक फ़्रांसीसी महानुभाव को मुझे पढ़ाने के लिये नियुक्त किया, जो साल भर के लिये शराब और जैतून के तेल का भण्डार अपने साथ लेकर मास्को से हमारे यहां आया। सावेलिच को उसका आगमन बहुत ही अखरा। 'भगवान की कृपा से' वह बड़बड़ाता, 'लगता है कि लड़का अभी तक ढंग से नहलाया-धुलाया जाता रहा है, उसके बाल भी संवारे जाते रहे हैं और उसे खिलाया-पिलाया भी जाता रहा है। फ़ालतू पैसा खर्च करने और इस महानुभाव को नियुक्त करने में भला क्या तुक है मानो अपने लोग ही न रहे हों।'

बोप्रे अपने देश में हज्जाम था, बाद में वह प्रशा की फ़ौज में सैनिक रहा और इसके पश्चात pour être outchitel* रूस आ गया। वह शिक्षक शब्द का महत्त्व अच्छी तरह से नहीं समझता था। वह भला, किन्तु चंचल और अत्यधिक व्यसनी आदमी था। औरतों के पीछे भागना उसकी सबसे बड़ी दुर्बलता थी, इस तरह की हरकतों के लिये अक्सर उसकी ठुकाई-पिटाई हो जाती थी और वह कई-कई दिन तक हाय-वाय करता रहता था। इसके अलावा (उसी के शब्दों में) "बोतल से भी उसकी दुश्मनी नहीं थी" यानी शराब में कुछ अधिक ही गोते लगाता था। किन्तु हमारे घर में चूंकि शराब सिर्फ़ दोपहर के खाने के वक़्त, और सो भी केवल एक-एक जाम ही दी जाती थी, और शिक्षक की इसके लिये भी अवहेलना कर दी जाती थी, इसलिये मेरा शिक्षक बोप्रे बहुत जल्द ही रूसी पेय यानी वोदका का आदी हो गया और उसे पाचन के लिये अधिक अच्छी मानते हुए अपने देश की शराबों की तुलना में तरजीह देने लगा। हम दोनों की फ़ौरन पटरी बैठ गयी और यद्यपि अनुबन्ध के अनुसार उसे मुझे फ़्रांसीसी और जर्मन भाषा, तथा अन्य सभी विद्याएं सिखानी थीं, किन्तु उसने यही बेहतर

* शिक्षक बनने के लिये (फ़्रांसीसी)।

समझा कि मुझसे जल्दी-जल्दी रूसी मे बोलना-बतियाना सीख जाये। इसके बाद हम अपनी-अपनी दुनिया मे मस्त रहते थे। हमारे बीच गहरी छनती थी। मेरा कोई दूसरा शिक्षक हो, मैं यह नही चाहता था। किन्तु भाग्य ने शीघ्र ही हमे अलग कर दिया। यह कैसे हुआ, मैं बताता हू।

एक रोज़ मोटी और चेचकरू धोबिन पालाश्का और कानी ग्वालिन अकूल्का आपस मे सलाह करके एकसाथ ही मेरी मां के पैरो पर जा गिरी, उन्होंने अपनी पापपूर्ण दुर्बलता को स्वीकार किया और रो-रोकर मेरे शिक्षक के विरुद्ध इस बात की शिकायत की कि उसने उनकी अनुभव-हीनता से लाभ उठाया है। मेरी मा ऐसी बातो के मामले मे बडी सख्त थीं और उन्होंने पिता जी से शिकायत कर दी। पिता जी ने झटपट कार्रवाई की। उन्होंने लम्पट फ्रासीसी को उसी वक्त अपने पास बुलवा भेजा। उन्हें बताया गया कि शिक्षक मुझे पढा रहा है। पिता जी मेरे कमरे मे आ गये। शिक्षक इस समय भोले-भाले बच्चे की तरह पलग पर सो रहा था। मैं अपने काम मे व्यस्त था। यहा यह बताना भी जरूरी है कि मेरे लिये मास्को से भूगोल का मानचित्र मगवाया गया था। किसी प्रकार के उपयोग के बिना वह दीवार पर लटका हुआ था और अपनी चौड़ाई तथा बढ़िया कागज़ के कारण एक अर्से से मुझे अपनी ओर खीचता रहा था। मैंने उसकी पतग बनाने का फैसला किया और चूकि बोप्रे सो रहा था, इसलिये इस काम मे जुट गया। मैं जिस समय केप आफ़ गुड होप के साथ स्पज की पूछ लगा रहा था, पिता जी उसी समय कमरे में आये। भूगोल के मेरे इस अभ्यास को देखकर पिता जी ने मेरा कान उमेठा, फिर लपककर बोप्रे के पास गये, किसी तरह की शिष्टता के बिना झकझोरकर उसे जगाया और भला-बुरा कहने लगे। बोप्रे ने घबराकर उठना चाहा, मगर ऐसा नही कर सका – किस्मत का मारा फ्रासीसी नशे मे गडगच्च था। सब गुनाहो की एक ही सज़ा काफ़ी होती है। पिता जी ने कालर पकडकर उसे पलग से उठाया, दरवाज़े से बाहर धक्का दिया और उसी दिन अपने यहा से उसकी छुट्टी कर दी। सावेलिच को इससे इतनी ख़ुशी हुई कि बयान से बाहर। इस तरह मेरी शिक्षा-दीक्षा का अन्त हो गया।

कबूतरों के पीछे दौडते और हमारी जागीर के छोकरो के साथ

मेढक-कूद का खेल खेलते हुए मैं एक गवार की तरह बड़ा हुआ। इसी तरह मैं सोलह साल का हो गया। अब मेरे भाग्य ने पलटा खाया।

पतझर के एक दिन मा मेहमानखाने में शहदवाला मुरब्बा बना रही थी और उबलते हुए झाग को देख-देखकर मेरे मुह में पानी आ रहा था। पिता जी खिडकी के करीब बैठे हुए राज-दरबार की वह रिपोर्ट-पुस्तक पढ रहे थे, जो हर वर्ष उनके पास आती थी। इस पुस्तक का उन पर हमेशा बहुत प्रभाव पडता था, वे उसे बडी दिलचस्पी से बार-बार पढते थे और पढते हुए सदा ही बहुत उत्तेजना अनुभव करते थे। पिता जी की रुचियो-अरुचियो और आदतो से परिचित मा इस मुसीबत की मारी रिपोर्ट-पुस्तक को, जितना सम्भव होता, कही दूर छिपा देने की कोशिश करती और इस तरह वह कई बार महीनो तक पिता जी को दिखाई न देती। किन्तु जब सयोग से वह उन्हे फिर मिल जाती, तो वे घण्टो तक उसे लिये बैठे रहते। इस तरह पिता जी राज-दरबार की इस रिपोर्ट-पुस्तक को पढ रहे थे, जब-तब कधो को झटकते थे और धीरे से यह दोहराते थे – "लेफ्टिनेट-जनरल! मेरी कम्पनी मे तो वह सार्जेट था! दो उच्चतम रूसी पदको से सम्मानित! बहुत समय हो गया क्या कि जब हम " पिता जी ने आखिर यह रिपोर्ट-पुस्तक सोफे पर फेक दी और विचारो मे खो गये, जो इस बात का सकेत था कि अब कोई न कोई मुसीबत आयेगी।

अचानक उन्होने मा को सम्बोधित करते हुए पूछा –

"अव्दोत्या वसील्येव्ना, पेत्रूशा कितने साल का हो गया है?"

"सत्रहवा साल चल रहा है उसे," मा ने जवाब दिया, "पेत्रूशा उसी साल जन्मा था जब मौसी नास्तास्या गेरासिमोव्ना की एक आख जाती रही थी और जब "

"बस, ठीक है," पिता जी ने मा को बीच मे ही टोक दिया, "उसे फौज मे भेजने का वक्त हो गया। बहुत दिनो तक दौड लिया वह नौकरानियो के घरो और कबूतरखानो के इर्द-गिर्द।"

जल्द ही मै दूर चला जाऊगा, इस विचार से मा को ऐसा धक्का-सा लगा कि उनके हाथ से चम्मच छूटकर पतीले मे गिर गया और गालो पर आसू की बूदे ढुलक आई। दूसरी ओर, मेरी खुशी का कोई ठिकाना नही था। फौज मे जाने का विचार आजादी के विचार,

पीटर्सबर्ग की ज़िन्दगी के मज़े के विचार में घुल-मिल गया। मैंने गार्ड सेना के अफ़सर के रूप में अपनी कल्पना की और मेरे मतानुसार इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं हो सकती थी।

पिता जी न तो अपना इरादा बदलना और न ही यह पसन्द करते थे कि उसे असली शक्ल देने का काम टाल दिया जाये। चुनांचे मेरे जाने का दिन निश्चित कर दिया गया। उससे एक दिन पहले पिता जी ने कहा कि मेरे भावी बड़े अफ़सर को पत्र लिखना चाहते हैं और उन्होंने मुझसे कलम-दवात तथा कागज़ लाने को कहा।

"अन्द्रेई पेत्रोविच," मां बोली, "मेरी ओर से प्रिंस ब० को प्रणाम लिखना मत भूलना। लिखना कि वे पेत्रूशा पर अपना कृपा-भाव बनाये रखें।"

"यह क्या बेकार की बात है!" पिता जी ने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए जवाब दिया। "किसलिये भला मैं प्रिंस ब० को पत्र लिखूंगा?"

"तुम्हीं ने तो कहा था कि पेत्रूशा के अफ़सर को पत्र लिखने जा रहे हो।"

"कहा था, तो क्या हुआ?"

"लेकिन पेत्रूशा का बड़ा अफ़सर तो प्रिंस ब० ही है। पेत्रूशा का नाम तो सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट में ही दर्ज है।"

"दर्ज है! दर्ज है, तो मुझे इससे क्या मतलब? पेत्रूशा पीटर्सबर्ग नहीं जायेगा। पीटर्सबर्ग में फ़ौज में रहते हुए भला यह क्या सीखेगा? उल्टी-सीधी बातें और पैसा उड़ाना? नहीं, यही अच्छा है कि वह सही तौर पर फ़ौज में रहे, फ़ौजी की मुश्किल ज़िन्दगी का सामना करे, बारूद की गंध सूंघे, फ़ौजी बने, ढीला-ढाला नहीं। गार्ड्स की रेजिमेंट में नाम दर्ज है इसका! पासपोर्ट कहां है? मुझे ला दो।"

मां ने मेरा पासपोर्ट ढूंढा जो मेरे नामकरण के समय की कमीज़ के साथ उन्होंने अपनी मंजूषा में रखा हुआ था और कांपते हाथों से उसे पिता जी को दे दिया। पिता जी ने उसे बड़े ध्यान से पढ़ा, मेज़ पर अपने सामने रख लिया और पत्र लिखने लगे।

मेरी जिज्ञासा मुझे बेहद परेशान किये दे रही थी – अगर पीटर्सबर्ग नहीं, तो कहां भेजा जा रहा है मुझे? पिता जी की कलम पर ही, जो काफ़ी धीरे-धीरे चल रही थी, मेरी नज़र टिकी हुई थी। आखिर

उन्होंने पत्र समाप्त किया, एक लिफाफे में पासपोर्ट और सब डालकर उसे मुहरबन्द किया, चश्मा उतारा और मुझे अपने पास बुलाकर कहा, "यह पत्र मेरे पुराने साथी और दोस्त अन्द्रेई कार्लोविच र० के नाम है। तुम उसके मातहत फौज में काम करने के लिये ओरेनबुर्ग जाओगे।"

इस तरह मेरी बहुत ही मधुर आशाओं पर पानी फिर गया! पीटर्सबर्ग की मौज-मस्ती से भरी हुई जिन्दगी के बजाय वहीं बहुत दूर की सुनसान-वीरान जगह पर ऊब-उदासी मेरी राह देख रही थी। एक मिनट पहले तक जिस फौजी नौकरी के बारे में मैं इतने हर्षोल्लास से सोच रहा था, वह अब मुझे बहुत बोझल दुर्भाग्य प्रतीत हो रही थी। किन्तु पिता जी से बहस करना व्यर्थ था। अगली सुबह को लम्बे सफर की छतवाली घोड़ा-गाड़ी दरवाजे के सामने आकर खड़ी हो गयी, मेरा सूटकेस, चीनी के बर्तनों की पेटी, घर के लाड़-प्यार की आखिरी निशानी के रूप में मीठी पाव रोटियों और कचौड़ियों आदि की पोटली उसमें रख दी गयी। मेरे माता-पिता ने मुझे आशीर्वाद दिया। पिता जी ने कहा, "तो विदा प्योतर। जिसकी अधीनता की कसम खाओगे, वफादारी से उसकी सेवा करना, अपने अफसरों की बात मानना, उनका स्नेह पाने का प्रयास नहीं करना, खुद आगे बढ़कर अपनी सेवा पेश नहीं करना और जब ऐसा करने को कहा जाये, तो मुह नहीं मोड़ना, यह कहावत याद रखना – नई पोशाक को सहेजो और जवानी में अपनी इज्जत की लाज रखो।" मा ने आसू बहाते हुए मुझसे अनुरोध किया कि मैं अपनी सेहत का ध्यान रखू और सावेलिच को मेरी देख-भाल करने को कहा। मुझे खरगोश की खाल का कोट और उसके ऊपर लोमड़ी का फर-ओवरकोट पहना दिया गया। मैं सावेलिच के साथ घोड़ा-गाड़ी में बैठ गया और आसू बहाता हुआ अपने सफर पर रवाना हो गया।

उसी रात को मैं सिम्बीर्स्क पहुच गया, जहा जरूरी चीजें खरीदने के लिये हमें एक दिन ठहरना था। चीजें खरीदने का काम सावेलिच को सौंप दिया गया था। मैं होटल में ठहरा। सावेलिच सुबह से ही दुकानों के चक्कर लगाने चला गया। खिड़की से गन्दे कूचे को देखते-देखते ऊ [illegible] होने पर मैं कमरों के गिर्द चक्कर काटने लगा। बिलियर्ड रूम में गया। वहा मुझे लम्बे कद और लम्बी काली मूछोंवाला कोई पैंतीस

साल का एक महानुभाव ड्रेसिंग-गाउन पहने दिखाई दिया। उसके हाथ में बिलियर्ड खेलने का डंडा और मुंह में पाइप था। वह खेल की बाज़ियों का हिसाब रखनेवाले के साथ खेल रहा था जिसे जीतने पर वोदका का एक जाम पीने को मिलता था और हारने पर चौपाये की तरह मेज़ के नीचे रेंगना पड़ता था। मैं उनका खेल देखने लगा। वह जितनी अधिक देर तक चलता गया, प्वाइंट गिननेवाले का चौपाये की तरह मेज़ के नीचे रेंगना भी उतना ही बढ़ता गया और आखिर वह मेज़ के नीचे ही रह गया। महानुभाव ने मानो मुर्दे का मातम करते हुए कुछ ज़ोरदार शब्द कहे और फिर मुझसे बाज़ी खेलने को कहा। मैं खेलना नहीं जानता था, इसलिये इन्कार कर दिया। उसे सम्भवत यह अजीब-सा लगा। उसने मानो बड़े अफ़सोस से मेरी ओर देखा, लेकिन जल्द ही हम बातचीत करने लगे। मुझे पता चला कि उसका नाम इवान इवानोविच ज़ूरिन है, कि वह हुस्सार-रेजिमेंट का कप्तान है, सिम्बीर्स्क में फ़ौजियों की भर्ती के लिये आया है और इसी होटल में ठहरा हुआ है। ज़ूरिन ने मुझे अपने साथ दोपहर का भोजन करने को आमन्त्रित किया और कहा कि जो कुछ रूखा-सूखा हो, फ़ौजियों की तरह से दोनों उसे मिलकर खा लेंगे। मैं खुशी से राज़ी हो गया। हम मेज़ पर बैठ गये। ज़ूरिन बहुत ज़्यादा पीता था और यह कहकर मेरा जाम भी भरता जाता था कि अपने को सैन्य-सेवा के लिये तैयार करना ज़रूरी है। वह मुझे फ़ौज के क़िस्से-चुटकले सुनाता रहा जिनके कारण मैं हंसी से लोट-पोट होता रहा और हम पक्के दोस्त बनकर मेज़ पर से उठे। इसके बाद उसने मुझे बिलियर्ड का खेल सिखाने का सुझाव दिया।

"हम फ़ौजियों के लिये तो यह एकदम ज़रूरी है। मान लो कि कूच के वक्त तुम किसी छोटी-सी जगह पर पहुंच जाते हो, भला क्या करोगे वहां? हर वक्त यहूदियों की ही पिटाई तो नहीं करते रहोगे। चाहे-अनचाहे किसी सराय या होटल में जाकर बिलियर्ड खेलने लगोगे। इसके लिये ज़रूरी है कि तुम्हें खेलना आये।" उसने मुझे पूरी तरह इस बात का क़ायल किया दिया और मैं बड़ी लगन से खेल सीखने लगा। ज़ूरिन खूब ऊंचे-ऊंचे मेरा हौसला बढ़ाता और इतनी जल्दी-जल्दी कामया-बी हासिल करने पर हैरान होता रहा तथा कुछ पाठों के बाद उसने मुझसे बहुत ही छोटी-सी रकम दांव पर लगाकर खेलने को कहा। सो भी पैसे

[illegible] कल [illegible] हार गये थे। मुझे पैसों की बेहद जरूरत है।

तुम्हारी सेवा को प्रस्तुत
इवान जूरिन।"

देने के लिये कोई चारा नहीं था। मैंने मुंह पर उदासीनता का भाव ओढ़ लिया और सावेलिच को सम्बोधित किया जिसके पास "मेरे सारे पैसे और कपड़े-लत्ते के साथ जो मेरा सारा हिसाब-किताब रहता था"* कि वह लड़के को एक सौ रूबल दे दे।

"क्यों? किसलिये?" सावेलिच ने हैरान होकर पूछा। "मुझे उनके देने हैं।" मैंने यथासम्भव शान्ति से उत्तर दिया। "देने हैं!" सावेलिच ने अधिकाधिक हैरान होते हुए मेरे शब्दों को दोहराया। "कब तुम कर्ज़ी भी हो गये, छोटे मालिक? जरूर मामला कुछ गड़बड़ है। जो चाहे करो, लेकिन पैसे मैं नहीं दूंगा।"

मैंने सोचा कि अगर इसी निर्णायक क्षण में इस जिद्दी बुड्ढे पर हावी नहीं हो जाऊंगा, तो बाद में मेरे लिये इसकी सरपरस्ती से निजात पाना मुश्किल हो जायेगा और मैंने बड़े गर्व से उसकी ओर देखकर कहा, "मैं तुम्हारा मालिक हूं और तुम मेरे नौकर हो। पैसे मेरे हैं। मैं उन्हें हार गया, क्योंकि मैंने ऐसा चाहा। तुम्हें यही सलाह देता हूं कि ज्यादा अक्लमन्दी न दिखाओ और तुम्हें जो कहा जाता है, वही करो।"

मेरे शब्दों से सावेलिच ऐसा आश्चर्यचकित हुआ कि उसने हाथ झटके और बुत बना खड़ा रह गया। "तुम बुत बने क्यों खड़े हो!" मैं गुस्से से चिल्लाया। सावेलिच रो पड़ा। "मेरे प्यारे, प्योतर अन्द्रेइच," उसने कांपती आवाज में कहा, "इतना दुख नहीं दो कि मेरी जान निकल जाये। मेरी आंखों की रोशनी! मुझ बूढ़े की बात मानो – इस बदमाश को यह लिख भेजो कि तुमने मज़ाक किया था, कि हमारे पास तो इतनी रकम है ही नहीं। एक सौ रूबल! हे मेरे भगवान! लिख दो कि माता-पिता ने तुम्हें सिर्फ अखरोटों से खेलने की इजाज़त दी है..." – "बस,

---

* देनीस फोनवीज़िन (१७४५–१७९२) की 'मेरे नौकरों को सन्देश' कविता से। – स०

कभार मूं-मूं कर लेता था। मैं उससे सुलह करने को बेचैन था और नहीं जानता था कि बात कहां से शुरू करूं। आखिर मैंने उससे कहा–

"सुनो सावेलिच! बस, काफी नाराज हो लिये, आओ सुलह कर लें, मैं दोषी हूं, खुद देख रहा हूं कि दोषी हूं। मैंने कल शैतानी की और तुम्हारे साथ बेकार गुस्ताखी से पेश आया। वचन देता हूं कि आगे अधिक बुद्धिमत्ता से काम लूंगा और तुम्हारी बात पर कान दूंगा। तो अब गुस्सा थूक दो, आओ, सुलह कर लें।"

"ओह, छोटे मालिक, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने गहरी सांस लेकर उत्तर दिया, "मुझे तो खुद अपने पर गुस्सा आ रहा है, मैं ही पूरी तरह दोषी हू। किसलिये मैंने तुम्हे होटल मे अकेले छोड़ दिया! क्या किया जाये? दिमाग में यह ख्याल घुस गया कि गिरजाघर के पादरी की बीवी से, जो मेरी रिश्तेदार है, मिल आऊं। बस गया कि जैसे जेल मे जा बैठा। बस, मुसीबत आ गयी! .. मालिक-मालकिन को मैं कैसे मुह दिखाऊंगा? जैसे ही उन्हें यह पता चलेगा कि बेटा पीता और जुआ खेलता है, तो वे क्या कहेंगे?"

बेचारे सावेलिच को तसल्ली देने के लिये मैंने वचन दिया कि भविष्य मे उसकी सहमति के बिना मैं एक पैसा भी खर्च नहीं करूंगा। वह धीरे-धीरे शान्त हो गया, यद्यपि अभी भी बीच-बीच में सिर हिलाकर बडबडाता जाता था, "एक सौ रूबल! कोई मामूली-सी बात थोडे ही है!"

मैं अपनी मंजिल के करीब पहुच रहा था। मेरे सभी ओर सुनसान-वीरान मैदान फैला हुआ था जिसमें जहां-तहां टीले और गड्ढे थे। सभी कुछ बर्फ मे ढका हुआ था। सूरज डूब रहा था। हमारी घोड़ा-गाड़ी सकरी राह या अधिक सही तौर पर कहा जाये तो किसानों की गाडियो द्वारा छोडे गये निशानो पर चल रही थी। अचानक कोचवान एक तरफ को देखने लगा और आखिर टोपी उतारकर उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा–

"साहब, क्या हम लौट न चलें?"

"किसलिये?"

"मौसम भरोसे का नहीं–हवा चलने लगी है, देखो तो वह ताजा गिरी हुई बर्फ को कैसे उड़ा रही है।"

"तो इसमे क्या मुसीबत है!"

"वहा देख रहे हो, क्या है?" (कोचवान ने चाबुक से पूरब की ओर सकेत किया।)

"सफेद स्तेपी और साफ आसमान के सिवा मुझे तो कुछ भी नजर नही आ रहा।"

"वह, वह, छोटा-सा बादल।"

वास्तव मे ही मुझे गगन के छोर पर छोटा-सा सफेद बादल दिखाई दिया जिसे मैंने शुरू मे दूर का टीला समझा था। कोचवान ने मुझे स्पष्ट किया कि यह बादल तूफान का सूचक है।

मैंने इन इलाको मे आनेवाले तूफानो के बारे मे सुना था और जानता था कि गाडियो की पातो की पाते बर्फ मे दब जाती है। कोचवान के विचार से सहमत सावेलिच ने भी लौटने की सलाह दी। किन्तु मुझे हवा बहुत तेज प्रतीत नही हुई। मुझे आशा थी कि अगली घोड़ा-चौकी तक ठीक समय पर पहुच जायेगे और इसलिये मैंने घोडे तेज करने को कहा।

कोचवान घोडो को सरपट दौडाने लगा, किन्तु वह लगातार पूरब की ओर देखता जाता था। घोडे हिल-मिलकर दौड रहे थे। इसी बीच हवा अधिकाधिक तेज होती जा रही थी। छोटी-सी बदली बडे सफेद बादल मे बदल गयी, बादल उमड-घुमडकर ऊपर उठा और धीरे-धीरे आकाश पर छा गया। हिमकण गिरने लगे और सहसा उन्होंने बर्फ के बड़े-बडे फाहो का रूप धारण कर लिया। हवा चीखने लगी – तूफान आ गया था। आन की आन मे काला आकाश हिम-सागर से घुल-मिल गया। सब कुछ आखो से ओझल हो गया। "तो साहब," कोचवान चिल्ला उठा, "मुसीबत – तूफान आ गया!"

मैंने घोडा-गाडी मे से बाहर झाककर देखा – सभी ओर अधेरा और तूफान था। हवा किसी प्राणी की भाति भयावह ढग से चीख रही थी। बर्फ ने मुझे और सावेलिच को ढक दिया। घोडे कदम-कदम चल रहे थे और जल्द ही रुककर खड़े हो गये। "तुम रुक क्यो गये?" मैंने झल्लाकर कोचवान से पूछा। "चलते जाने मे क्या तुक है?" उसने अपनी सीट से नीचे उतरते हुए उत्तर दिया, "जाने अब ही कहा पहुच गये हैं, रास्ते का कुछ पता नही और सभी ओर घुप्प

10*

झोंका है।" मैं उसे कोसने लगा, किन्तु सावेलिच ने उसका पक्ष लिया - "इसकी बात माननी चाहिये थी," उसने चिढ़कर कहा, "सराय में लौट चलते, चाय पीते, सुबह तक आराम करते, तूफान शान्त हो जाता और हम आगे चल देते। आखिर हमें जल्दी भी क्या है? क्या किसी शादी में पहुंचना है!" सावेलिच की बात बिल्कुल सही थी। हमारे सामने कोई चारा नहीं था। बर्फ बहुत जोर से गिरती जा रही थी। घोड़ा-गाड़ी के आस-पास बर्फ का टीला बन गया था। घोड़े सिर झुकाये खड़े थे और जब-तब सिहर उठते थे। कोचवान गाड़ी के इर्द-गिर्द चक्कर काट रहा था, कोई काम न होने के कारण घोड़ों के साज को ठीक-ठाक कर रहा था। सावेलिच बड़बड़ा रहा था। मैं इस आशा से सभी ओर नजर घुमाकर देख रहा था कि कहीं कोई घर या रास्ता दिखाई दे जाये, मगर चक्कर काटती बर्फ के सिवा मुझे और कुछ नजर नहीं आया। अचानक कोई काली सी चीज दिखाई दी। "ए कोचवान!" मैंने चिल्लाकर कहा, "देखो तो, वहां वह काला-सा क्या है?" कोचवान बहुत गौर से देखने लगा "भगवान जाने, मालिक," उसने अपनी सीट पर बैठते हुए कहा, "न तो कोई गाड़ी है और न कोई पेड़ और वह हिलता-डुलता भी लग रहा है। जरूर कोई भेड़िया या आदमी होना चाहिये।"

मैंने इस अज्ञात चीज की ओर, जो उसी समय हमारी ओर आने लगी, गाड़ी बढ़ाने का आदेश दिया। दो मिनट बाद हम एक व्यक्ति के निकट पहुंच गये। "ए भले मानस!" कोचवान ने ऊंची आवाज में उसे सम्बोधित किया, "यहां का रास्ता जानते हो?"

"रास्ता तो यही है, मैं ठोस पट्टी पर खड़ा हूं," राहगीर ने उत्तर दिया, "मगर इससे लाभ क्या है?"

"सुनो, भले आदमी," मैंने उससे कहा, "क्या तुम इस इलाके को जानते हो? मुझे किसी ऐसी जगह पर पहुंचा सकते हो जहां रात बितायी जा सके?"

"यह इलाका मेरा खूब जाना-पहचाना है," राहगीर ने जवाब दिया, "भगवान की कृपा से पैदल और घोड़े पर मैं यहां बहुत बार आ-जा चुका हूं। लेकिन देखो, मौसम तो कैसा है। रास्ते से भटका जा सकता है। यहीं रुककर इन्तजार करना ज्यादा अच्छा होगा,

तूफान रुक जाये और आसमान साफ हो जाये—तब हम सितारो की मदद से रास्ता ढूढ लेगे।"

इस व्यक्ति के ऐसे शान्त अन्दाज से मेरी दिलजमई हुई। मैंने अपने को भगवान की दया पर छोडते हुए स्तेपी मे ही रात बिताने का निर्णय कर लिया कि सहसा राहगीर फुर्ती से बाक्स पर जा बैठा और कोचवान से बोला—

"भगवान की कृपा से ठहरने की जगह पास ही मे है, गाडी को दायी ओर बढाते चलो।"

"दायें को क्यो बढाऊ गाडी?" कोचवान ने नाराज़गी से कहा। "कहा रास्ता दिखाई दे रहा है तुम्हे? यही सोचते हो कि घोडे पराये हैं, गाडी परायी है और इसलिये दौडाते चलो।" मुझे कोचवान की बात ठीक प्रतीत हुई।

"सचमुच तुम ऐसा क्यो सोचते हो कि कोई घर पास मे ही है?" मैंने पूछा।

"इसलिये कि हवा उधर से आ रही है," राहगीर ने जवाब दिया, "उसमे धुए की गन्ध है। इसका यही मतलब है कि गाव निकट ही है।"

उसकी तीक्ष्ण बुद्धि और सूझ-बूझ मे मैं हैरान रह गया। मैंने कोचवान को गाडी बढाने का आदेश दिया। घोडे गहरी बर्फ मे धसते-धसते चलने लगे। गाडी धीरे-धीरे बढ रही थी, वह कभी बर्फ के टीले पर चढ जाती, तो कभी किसी गड्ढे मे धस जाती और कभी एक, तो कभी दूसरी दिशा मे धचका खाती। यह तूफानी सागर मे सफर करने जैसा लगता था। सावेलिच रह-रहकर मेरी बगल से टकराता और हाय-वाय करता। मैंने परदा नीचे गिरा दिया, फर का कोट ओढ लिया और बर्फीली आधी की लयबद्ध लोरी तथा गाडी के हिलने-डोलने मे ऊघ गया।

मैंने एक सपना देखा जिसे कभी नही भूल पाया और अपने जीवन की अजीब परिस्थितियों के साथ जब उसकी तुलना करके देखता हू, तो उसमे कुछ भविष्यवाणी-सी पाता हू। पाठक मुझे क्षमा करे, क्योकि सम्भवत वह अनुभव से यह जानता है कि पूर्वाग्रहो के प्रति अधिकतम तिरस्कार की भावना के बावजूद इन्सान मे अधविश्वास के अधीन

हो जाने की कैसी जन्मजात प्रवृत्ति विद्यमान है।

मैं मन और भावनाओं की ऐसी स्थिति में था, जब यथार्थ सपनों के अधीन होकर कच्ची नींद के अस्पष्ट बिम्बों में उनसे घुल-मिल जाता है। मुझे लगा कि बर्फ का तूफान अभी अपना पूरा जोर दिखा रहा है और हम इस बर्फीले रेगिस्तान में रास्ते से भटक रहे हैं.. अचानक मुझे फाटक दिखाई दिया और मैं अपनी हवेली के अहाते में दाखिल हुआ। मुझे जिस पहले विचार ने चिन्तित किया, वह यह था कि मेरे मजबूरन घर लौटने पर पिता जी नाराज न हो उठें और इसे जान-बूझकर अपनी आज्ञा का उल्लंघन न मानें। मन में इसी प्रकार की चिन्ता लिये हुए मैं गाडी से कूदकर बाहर आया और बहुत ही गहरे दुख में डूबी हुई मां को दरवाजे पर खडी पाया। "श्री," उन्होंने मुझे चुप रहने को कहा, "तुम्हारे पिता जी अपनी अन्तिम सांसें ले रहे हैं और तुमसे विदा लेना चाहते हैं।" मैं भयभीत-सा होकर मां के पीछे-पीछे सोने के कमरे में गया। देखता क्या हूं कि कमरे में बहुत मद्धिम रोशनी है और लोग मातमी-सी सूरतें बनाये हुए पलंग के करीब खडे हैं। मैं दबे कदमों पलंग के करीब गया – मां ने पलंग के सामनेवाला थोडा-सा पर्दा हटाया और बोली, "अन्द्रेई पेत्रोविच, पेत्रूशा आ गया है, तुम्हारी बीमारी की खबर पाकर वह लौट आया है, उसे आशीर्वाद दो।" मैं घुटनों के बल हो गया और मैंने रोगी पर अपनी नजर टिका दी। क्या देखता हूं? मेरे पिता जी की जगह काली दाढ़ीवाला एक देहाती बिस्तर पर लेटा हुआ है और खुशमिजाजी से मेरी ओर देख रहा है। मैंने कुछ न समझ पाते हुए मां की तरफ देखा और कहा, "यह क्या मामला है? यह तो पिता जी नहीं हैं। इस देहाती से भला मैं आशीर्वाद क्यों मांगू?" – "फिर भी ऐसा ही करो पेत्रूशा," मां ने उत्तर दिया, "यह तुम्हारा धर्म-पिता है। उसका हाथ चूमो और आशीर्वाद लो ..." मैं इसके लिये राजी नहीं हुआ। तब वह देहाती उछलकर बिस्तर से उठ खडा हुआ और अपनी पीठ के पीछे से कुल्हाडा निकालकर सभी ओर घुमाने लगा ... [illegible] ... जाना चाहा ... मगर ऐसा नहीं कर पाया। कमरा [illegible] हुआ था, लाशों से टकराकर मैं खून के डबरों में फिसल [illegible] ... के देहाती ने मुझे प्यार से पुकारते हुए कहा, "डरो

नही, मेरी छत्र-छाया मे आ जाओ..." भय और आश्चर्य मुझ पर हावी हो गये... इसी क्षण मेरी आख खुल गयी। घोडे खडे थे, मावेलिच मेरा हाथ हिलाते हुए कह रहा था, "छोटे मालिक, बाहर आ जाओ, हम पहुंच गये।"

"कहा पहुच गये?" मैंने आखे मलते हुए पूछा।

"सराय मे। भगवान ने मदद की, हम सीधे बाड के पास पहुच गये। बाहर आ जाओ, छोटे मालिक, और जल्दी से भीतर चलकर अपने को गर्माओ।"

मैं घोडा-गाडी से बाहर निकला। बर्फीली आधी अब भी चल रही थी, यद्यपि उसका ज़ोर कम हो गया था। ऐसा घुप्प अधेरा था कि हाथ को हाथ नही सूझता था। कोट के पल्ले के नीचे लालटेन छिपाये हुए सराय का मालिक दरवाज़े के पास हममे मिला और मुझे तग, किन्तु साफ-सुथरे कमरे मे ले गया। उसमे केवल जलती मशाली की हल्की रोशनी थी। दीवार पर बन्दूक और कज्ज़ाको की ऊची टोपी लटक रही थी।

सराय का मालिक याइक नदी के इलाके का कज़्ज़ाक था, लगभग साठ साल का प्रतीत होता था, किन्तु उसमे ताज़गी और प्रफुल्लता बनी हुई थी। मावेलिच चीनी के बर्तनो की पेटी लिये हुए मेरे पीछे-पीछे आया, उसने चाय बनाने के लिये आग की व्यवस्था करने को कहा। मुझे पहले कभी भी चाय की इतनी अधिक आवश्यकता नही अनुभव हुई थी। सराय का मालिक आग की व्यवस्था करने चला गया।

"हमारा पथ-प्रदर्शक कहा है?" मैंने मावेलिच से पूछा।

"यहां हू, हुज़ूर," मुझे ऊपर की ओर से आवाज़ सुनाई दी।

मैंने अगावघर के ऊपर नज़र डाली और वहा मुझे काली दाढी और चमकती हुई दो आखे दिखाई दी।

"क्यो मेरे भाई, ठिठुर गये?"

"ऐसे घिसे-फटे कोट मे ठिठुरूगा कैसे नही! भेड की खाल का कोट भी था, मगर अपने पाप को क्या छिपाऊ? कल गिरवी रख दिया—पाला कुछ अधिक ज़ोर का नही महसूस हो रहा था।"

किन्तु बाद को मैं यह भाप गया कि याइक कज्जाको की फौज * की चर्चा चल रही थी जिन्हें १७७२ के विद्रोह के बाद उन्ही दिनो वश मे किया गया था। सावेलिच बडी अप्रसन्नता प्रकट करते हुए यह बातचीत सुन रहा था। वह कभी तो सराय के मालिक और कभी पथ-प्रदर्शक को सन्देह की दृष्टि से देखता। सराय या स्थानीय रूप से 'उमेत' कहलानेवाली यह जगह एक तरफ को हटकर, गाव-पुरवे से बिल्कुल दूर, स्तेपी मे थी और चोरो के अड्डे से बहुत मिलती-जुलती थी। किन्तु हमारे लिये और कोई रास्ता नही था। सफर जारी रखने की बात ही नही सोची जा सकती थी। सावेलिच की बेचैनी से मुझे बडा मजा आ रहा था। इसी बीच मैंने सोने की तैयारी कर ली और बेच पर लेट गया। सावेलिच ने अलावघर के ऊपर सोने का निर्णय किया और सराय का मालिक फर्श पर लेट गया। कुछ देर बाद सभी खर्राटे भरने लगे और मैं गहरी नीद सो गया।

सुबह को काफी देर से आख खुली और मैंने देखा कि बर्फ का तूफान थम गया है। सूरज चमक रहा था। असीम स्तेपी मे आखो को चौधाती हुई बर्फ की चादर फैली थी। गाडी मे घोडे जोते जा चुके थे। मैंने सराय के मालिक को पैसे दिये जिसने इतने कम पैसे लिये कि सावेलिच ने भी उससे बहस नहीं की और आदत के मुताबिक मोल-भाव नही किया। पिछले दिन के सन्देह अब पूरी तरह उसके दिमाग से गायब हो गये थे। मैंने रास्ता दिखलानेवाले को बुलाया, मदद करने के लिये उसे धन्यवाद दिया और सावेलिच से कहा कि उसे वोदका के लिये पचास कोपेक दे दे। सावेलिच ने नाक-भौंह सिकोडी। "वोदका के लिये पचास कोपेक!"

*याइक नदी के तट पर अवस्थित कस्बे मे कज्जाक सेनाओ ने १२ जनवरी १७७२ को विद्रोह किया था जिसे गर्मी मे दबा दिया गया था। 'पुगाचोव के विद्रोह के इतिहास' मे पुश्किन ने दबा दिये गये कज्जाको की मन स्थिति का यो वर्णन किया है—"'अभी क्या है—आगे देखना!' क्षमा किये गये विद्रोही कहते थे, 'हम मास्को को हिला डालेगे न ' स्तेपियो और दूर-दराज के गावो मे गुप्त बैठके होती थी। सब कुछ से ऐसा मालूम होता था कि नया विद्रोह होने को है। सरदार की कमी थी। सरदार मिल गया।"—स०

उसने कहा, "यह किसलिये? क्या इसीलिये कि उसे घोड़ागाड़ी में बिठाकर सराय तक भी लाये? तुम चाहे कुछ भी क्यों न कहो मालिक, हमारे पास फालतू पचास कोपेक नहीं हैं। सभी को अगर वोदका के लिये पैसे देंगे, तो जल्द ही खुद हमें भूखे रहना पड़ेगा।" सावेलिच के साथ मैं बहस नहीं कर सकता था। मेरे दिये वचन के अनुसार पैसे पूरी तरह उसके अधिकार में थे। फिर भी मुझे इस बात का खेद हो रहा था कि उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में असमर्थ हूं जिसने यदि मुसीबत से नहीं, तो बहुत ही जटिल स्थिति से मुझे बचा लिया था। "अच्छी बात है," मैंने बड़ी शान्ति से कहा, "अगर पचास कोपेक नहीं देना चाहते, तो मेरे कपड़ों में से उसे कुछ निकाल दो। वह बहुत ही हल्के-फुल्के कपड़े पहने है। उसे खरगोश की खाल का मेरा कोट दे दो।"

"सुनो, मेरे प्यारे, प्योतर अन्द्रेइच!" सावेलिच बोला। "खरगोश की खाल के तुम्हारे कोट को यह क्या करेगा? यह कुत्ते का पिल्ला अगले ही शराबखाने में इसकी शराब पी जायेगा।"

"बुड्ढे, तुम्हें इसकी फिक्र करने की जरूरत नहीं," आवारा ने कहा, "कि पी डालूंगा या नहीं। ये हुजूर मुझे अपना फर-कोट देना चाहते हैं, यह उनकी मर्जी है और तुम्हारा नौकर का काम बहस करना नहीं, हुक्म मानना है।"

"तुम्हें खुदा का डर-खौफ नहीं है, लुटेरे!" सावेलिच ने झल्लाकर उसे जवाब दिया। "तुम देख रहे हो कि मालिक अभी नादान है, कुछ समझता-बूझता नहीं और तुम उसकी सादगी से लाभ उठाकर उसे लूट लेना चाहते हो। क्या करोगे तुम रईसी फर-कोट का? अपने इन मनहूस कन्धों पर तुम उसे खींच-खांचकर भी नहीं चढ़ा पाओगे।"

"कृपया बहस नहीं करो," मैंने अपने इस बुजुर्ग से कहा, "इसी समय फर-कोट यहां ले आओ।"

"हे भगवान!" सावेलिच ने लम्बी सांस छोड़ी। "खरगोश की खाल का कोट लगभग बिल्कुल नया है! किसी और को दिया जाता, तो कोई बात भी बनती, आवारा शराबी को दिया जा रहा है!"

फिर भी खरगोश की खाल का कोट आ गया। देहाती उसी समय उसे पहनकर देखने लगा। वास्तव में ही यह कोट, जो मेरे लिये भी

छोटा हो गया था, उसके बदन पर भी कुछ तग रहा। किन्तु उसने उसकी सीवनें उधेडकर उसे किसी तरह से पहन लिया। धागो के उधेड़े जाने की आवाज सुनकर सावेलिच चीखते-चीखते रह गया। मेरे उपहार से आवारा तो गद्गद हो गया। उसने मुझे घोडा-गाडी तक पहुचाया और सिर झुकाकर कहा –

"बहुत धन्यवाद, हुजूर! भगवान आपको आपकी नेकी का फल दे। आपकी इस मेहरबानी को कभी नही भूलूगा।" वह अपने रास्ते चल दिया और मैं सावेलिच की खीझ की ओर कोई ध्यान दिये बिना अपने सफर पर आगे चल पडा तथा बहुत जल्द ही पिछले दिन की बर्फीली आधी, रास्ता दिखानेवाले व्यक्ति और खरगोश की खाल के कोट के बारे मे भूल गया।

ओरेनबुर्ग पहुचते ही मैं जनरल के सामने हाजिर हुआ। लम्बे कद के इस व्यक्ति की बुढापे के कारण पीठ झुक चुकी थी और उसके लम्बे-लम्बे बाल एकदम सफेद थे। उसकी पुरानी, बदरग वर्दी देखकर आन्ना इओआन्नोव्ना के समय के फौजी की याद हो आयी। जनरल के बात करने के अन्दाज मे जर्मन लहजे की बडी अनुभूति होती थी। मैंने उसे पिता जी का पत्र दिया। पिता जी का नाम सुनकर उसने झटपट मेरी ओर देखा।

"हे पगवान!" उसने कहा। "ऐसा लकता जैसा कुछ ही वक्त पहले अन्द्रेई पेत्रोविच खुद तुम्हारे समान था और अब कैसा बाका जवान फेटा है उसका! आह, बक्त, वक्त!" उसने पत्र खोला और जर्मन लहजेवाली रूसी भाषा मे अपनी टीका-टिप्पणिया करते हुए उसे धीमे-धीमे पढने लगा। "'आदरणीय महानुभाव अन्द्रेई कार्लोविच, आशा करता हू कि आप श्रीमान ' यह सब कैसी औपचारिकता है? थू, सरम आनी चाहिये उसे! माना – अनुसासन बहुत जरूरी है, मगर पुराने कोमराड को कौन ऐसे खत लिखता है? .. 'श्रीमान भूले नही होगे .' हू . 'और जब दिवगत फेल्डमार्शल मीनिख... कूच... और कारोलीन्का को भी'. ओह सैतान! उसे हमारी पुरानी सैतानियां भी याद है? 'अब काम की बात . आपके पास अपने बदमाश को भेज रहा हू'... हू... 'साही के दस्तानो मे रखे इसे'... साही के दस्तानो मे – क्या मतलब इसका? सायद कोई रूसी कहावत...

इसका मतलब है [illegible] आदमी के दस्तानों में रखो।' 'मुझे मुझे
अन्द्रेई [illegible] करते हुए इन शब्दों को दोहराया।
'इसका मतलब है' मैंने यहाँ तक मासूमियत से कहा, 'प्यार से
व्यवहार करना, बहुत सख्ती न बरतना, ज्यादा से ज्यादा छूट
अधिक कड़ाई न दिखाना, अधिक छूट देना, आदमी के दस्तानों में रखो।'
'हूँ, समझा ... और उसे छूट न दे ... नहीं बात है, यहाँ
के दस्तानों में रखने का यह मतलब नहीं जो तुमने बताया ... 'उसका
पासपोर्ट भी भेज रहा हूँ ... कहाँ है पासपोर्ट? यह रहा ... सेमेनोव्स्की
रेजिमेंट में उसे भेज देना। अच्छी बात है, अच्छी बात है, सब
कुछ कर दिया जायेगा ... 'अपने पद की ओर ध्यान दिये बिना
पुराने साथी और दोस्त के नाते ... तुम मुझे गले लगाने की अनुमति
दोगे ... ओह, आखिर तो मतलब की बात की ... आदि आदि
"तो प्यारे," उसने पत्र पढ़ने और मेरा पासपोर्ट एक ओर रखने के
बाद मुझसे कहा, "सब कुछ हो जायेगा—तुम्हें ... रेजिमेंट में अफसर
बना दिया जायेगा। बेकार वक्त बरबाद न हो, इसलिये कल ही
बेलोगोर्स्क के दुर्ग में चले जाओ। वहाँ तुम बहुत भले और ईमानदार
आदमी, कप्तान मिरोनोव के अधीन काम करोगे, असली फ़ौजी सर-
विस देखोगे, अनुशासन सीख जाओगे। यहाँ ओरेनबुर्ग में तुम्हारे करने-
धरने को कुछ नहीं। जवान आदमी के लिये काहिली बुरी चीज है।
और आज दोपहर का भोजन मेरे साथ करने की कृपा करो।"

"बद से बदतर!" मैंने मन ही मन सोचा, "क्या फ़ायदा हुआ
मुझे इससे कि मैं जब माँ के गर्भ में था, तभी गार्ड-सेना में सार्जेंट
के रूप में मेरा नाम दर्ज करवा दिया गया था! कहाँ जा पहुँचा हूँ
मैं? रेजिमेंट में और सो भी किर्गिज-कजाख स्तेपी के सुनसान
दुर्ग में!" मैंने अन्द्रेई कार्लोविच के साथ दोपहर का भोजन किया।
हम दोनों के अलावा उसका पुराना सहायक फ़ौजी अफसर भी खाने
की मेज पर मौजूद था। खाने-पीने के मामले में अत्यधिक कड़ी जर्मन
मितव्ययता बरती गयी थी। मेरे ख्याल में अपनी छड़े की मेज पर
कभी-कभी एक फालतू मेहमान की हाजिरी के डर से ही मुझे फ़ौरन
दुर्ग की तरफ खदेड़ दिया गया था। अगले दिन जनरल से विदा लेकर
मैं अपने नियुक्ति-स्थान की ओर रवाना हो गया।

तीसरा अध्याय

दुर्ग

छोटी-सी गढ़िया में रहते, हम तो समय बिताते हैं,
हर दिन जीभर पानी पीते, हम तो रोटी खाते हैं,
लेकिन दुश्मन ने यदि चाहा, आये मौज मनाये
यहां कचौड़ी और समोसों की वह दावत खाये
तो हम भरें तोप में गोले,
उसको मज़ा चखायें, उसका मन बहलायें।

सैनिक गीत

पुराने ज़माने के लोग, मेरे हुज़ूर।

घोंघाबसन्त

बेलोगोर्स्क का दुर्ग ओरेनबुर्ग से चालीस वेर्स्ता दूर था। रास्ता याइक नदी के खड़े तट के साथ-साथ जाता था। नदी अभी जमी नहीं थी और उसकी सीसे के रंग जैसी लहरें सफ़ेद बर्फ़ से ढके तटों के बीच उदास झलक दिखा रही थीं। तटों के दोनों ओर किर्गीज़ स्तेपी फैली हुई थी। मैं ख़्यालों में डूब गया जो अधिकतर उदासीभरे थे। दुर्ग का जीवन मेरे लिये बहुत कम आकर्षण रखता था। मैंने अपने भावी अधिकारी, कप्तान मिरोनोव की कल्पना करने का प्रयास किया। मेरी कल्पना में एक कठोर और चिड़चिड़े बूढ़े के रूप में उसका चित्र उभरा जो अपनी नौकरी के सिवा और कुछ नहीं जानता था तथा हर छोटी-मोटी बात के लिये मुझे हिरासत में लेने तथा सिर्फ़ रोटी और पानी पर रखने का आदेश देने को तैयार था। इसी बीच झुटपुटा होने लगा। हमारी घोड़ा-गाड़ी काफ़ी तेज़ रफ़्तार से जा रही थी। "अभी बहुत दूर है क्या दुर्ग?" मैंने अपने कोचवान से पूछा। "नहीं, बहुत दूर नहीं है," उसने जवाब दिया। "वह तो दिखाई भी दे रहा है।" मैंने दहशत पैदा करनेवाले दुर्ग-प्राचीर, बुर्ज और मीनारें देख

[illegible] की [illegible] से [illegible] और बुर्ज दीवारें, किन्तु लट्ठों की बाड़ से घिरे हुए [illegible] के अतिरिक्त मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। एक ओर बर्फ से अधढकी घास की तीन चार ढेरें थे और दूसरी ओर अस्तव्यस्त-सी टेढ़ी चक्की थी जिसके [illegible] पंख नीचे लटके हुए थे। "दुर्ग कहाँ है?" मैंने अचरज से पूछा।

"यह रहा" कोचवान ने बस्ती की ओर इशारा करते हुए उत्तर दिया और इसी समय हमारी गाड़ी ने उसमें प्रवेश किया। फाटक के पास मुझे लोहे की एक पुरानी तोप रखी दिखाई दी, गलियाँ तंग और टेढ़ी-मेढ़ी थीं। लकड़ी के घर नीचे-नीचे और अधिकतर फूस की छतों वाले थे। मैंने कमांडेंट के यहाँ चलने का आदेश दिया और एक मिनट बाद हमारी गाड़ी लकड़ी के गिरजे की बगल में ऊँची जगह पर बने लकड़ी के घर के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

किसी ने मेरा स्वागत-सत्कार नहीं किया। मैंने ड्योढ़ी से अन्दर प्रवेश-कक्ष का दरवाजा खोला। मेज पर बैठा हुआ एक अपंग बूढ़ा हरे रंग की फौजी वर्दी की फटी कोहनी पर नीला पैबन्द लगा रहा था। मैंने उससे कहा कि वह मेरे आने की सूचना दे दे। "भीतर चले जाओ, भैया," अपंग ने उत्तर दिया, "वे घर पर ही हैं।" मैं पुराने ढंग से सजे हुए एक साफ-सुथरे कमरे में दाखिल हुआ। कोने में रखी हुई अलमारी में चीनी के बर्तन थे, दीवार पर शीशे और चौखटे में जड़ा हुआ अफसर का डिप्लोमा तथा उसके निकट ही किस्त्रीन* और ओचाकोव** पर रूसियों की चढ़ाई तथा 'दुलहन का चुनाव' एवं 'बिल्ले का दफन' की भद्दी-सी तस्वीरें भी लटकी हुई थीं। रूईदार जाकेट पहने और सिर पर रूमाल बांधे एक बुढ़िया खिड़की के करीब बैठी थी। वह ऊन का गोला बना रही थी जिसके लच्छे को अफसर की वर्दी में एक काना बूढ़ा अपने हाथों पर फैलाये हुए था। "क्या बात है, भैया?" अपना काम जारी रखते हुए उसने पूछा। मैंने जवाब दिया कि सैन्य-सेवा के लिये आया हूँ और अपने आने की सूचना देने को कप्तान महोदय

---

* प्रशा का दुर्ग जिस पर रूसी सेना ने १७५८ में अधिकार किया।

** [illegible]। किला जिसे रूसी फौज ने १७३७ मे कब्जे में लिया।—

के सामने हाजिर हुआ हू। इतना कहकर मैंने काने अफसर को दुर्गपति समझते हुए उसे सम्बोधित करना चाहा, किन्तु बुढिया ने पहले से तैयार किये गये मेरे शब्दो को बीच मे ही टोकते हुए कहा, "इवान कुस्मिच घर पर नही हैं। पादरी गेरासिम के यहा गये हैं। और, कोई बात नहीं, मैं उनकी पत्नी हू। तुम्हारा स्वागत है। बैठो, भैया।" उसने नौकरानी को पुकारा और सार्जेंट को बुलाने का आदेश दिया। बूढा अपनी एक आख से मुझे जिज्ञासापूर्वक देख रहा था। "मैं यह पूछने की धृष्ठता कर सकता हू," उसने कहा, "कि आप किस रेजिमेन्ट मे थे?" मैंने उसकी जिज्ञासा को शान्त कर दिया। "यह पूछने की भी धृष्ठता कर सकता हू कि गार्ड-सेना से दुर्ग मे क्यो आ गये?" मैंने उत्तर दिया कि बडे अफसरो की ऐसी ही इच्छा थी। "सम्भवत कोई ऐसी हरकत करने के लिये, जो गार्ड-सेना के अफसर को शोभा नही देती," चुप न होनेवाले मेरे इस प्रश्नकर्त्ता ने अपनी बात जारी रखी। "बस, काफी बेकार की बाते कर चुके," कप्तान की बीवी ने उससे कहा, "देखते नही हो कि नौजवान सफर की वजह से थका-हारा हुआ है, उसे परेशान नही करो (हाथो को सीधे रखो)। और तुम भैया," उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा, "इस बात के लिये दुखी नही होओ कि तुम्हे हमारे इस सुनसान इलाके मे भेज दिया गया है। न तो तुम पहले हो और न अन्तिम। यहा रहोगे तो इस जगह को चाहने भी लगोगे। अलेक्सेई इवानोविच श्वाबरिन को किसी की हत्या करने के कारण यहा आये हुए चार साल से अधिक समय हो गया है। भगवान जाने, उसने ऐसा क्यो किया। हुआ यह कि एक लेफ्टिनेट के साथ वह नगर से बाहर चला गया, दोनो अपने साथ तलवारे ले गये और उन्हे एक-दूसरे के बदन मे घोपने लगे। अलेक्सेई इवानोविच ने उस लेफ्टिनेट को बीध डाला और वह भी दो साक्षियो की उपस्थिति मे! किया क्या जाये! किसी से भी ऐसे हो सकता है।"

इसी समय जवान और सुघड-सुगठित सार्जेंट भीतर आया।

"मक्सीमिच!" कप्तान की बीवी ने उससे कहा। "श्रीमान अफसर को कोई साफ-सुथरा फ्लैट दे दो।"

"जो हुक्म, वसिलीसा येगोरोव्ना," सार्जेंट ने जवाब दिया। "हुजूर को इवान पोलेजायेव के यहा ही क्यो न ठहरा दिया जाये?"

"अरे नही, मक्सीमिच," कप्तान की बीवी बोली, "पोलेजायेव के यहां तो वैसे ही घिचपिच है, फिर वह मेरा दूर का रिश्तेदार भी है और उसे यह ध्यान रहता है कि हम उसके अफसर हैं। श्रीमान अफसर को आपका नाम और पितृनाम क्या है? प्योतर अन्द्रेइच?. प्योतर अन्द्रेइच को सेम्योन कूज़ोव के मकान मे ले जाओ। उस शैतान ने मेरे तरकारी के बगीचे में अपना घोडा छोड दिया था। तो मक्सीमिच, और सब कुछ तो ठीक-ठाक है न?"

"भगवान की कृपा से सब ठीक है," कज्जाक ने जवाब दिया। "सिर्फ गर्म पानी के टब के लिये कार्पोरल प्रोखोरोव की उस्तीन्या निकूलीना के साथ गुसलखाने मे झडप हो गयी।"

"इवान इग्नातिच!" कप्तान की बीवी ने काने बूढे से कहा। "प्रोखोरोव और उस्तीन्या के झगडे की छानबीन कर लो कि उनमें से कौन दोषी है और कौन नही। और दोनो को सजा दो। तो मक्सीमिच, जाओ, भगवान तुम्हारा भला करे। प्योतर अन्द्रेइच, मक्सीमिच आपको आपके घर पर पहुचा आयेगा।"

मैं सिर झुकाकर बाहर आ गया। सार्जेंट मुझे दुर्ग के छोर तथा ऊंचे नदी-तट पर स्थित घर मे ले गया। आधे घर मे सेम्योन कूज़ोव का परिवार रह रहा था और बाकी आधा मुझे दे दिया गया। उसमे एक खासा साफ-सुथरा कमरा था, जिसे विभाजन-दीवार बनाकर दो हिस्सों में बाट दिया गया था। सावेलिच वहा रहने-सहने की व्यवस्था करने लगा और मैं छोटी-सी खिड़की से बाहर देखने लगा। मेरे सामने उदास-सी स्तेपी फैली हुई थी। एक ओर को लकडी के कुछ घर नजर आ रहे थे और गली मे कुछ मुर्गिया घूम रही थी। हाथ में कठौता लिये एक बुढिया सुअरों को बुला रही थी जो हेल-मेल से खू-खू करते हुए उसकी ओर जा रहे थे। तो मेरी किस्मत में ऐसी जगह पर अपनी जवानी बिताना लिखा था! उदासी मुझ पर हावी हो गयी। मैं खिड़की से परे हट गया और सावेलिच के समझाने-बुझाने और लगातार यह दुहराने के बावजूद—"हे भगवान! कुछ भी खाना नही चाहता! अगर बेटा बीमार हो गया तो मालकिन क्या कहेगी?"—मैं रात का भोजन किये बिना ही बिस्तर पर चला गया।

अगली सुबह को मैं कपड़े पहनने ही लगा था कि दरवाजा खुला

और नाटे क़द का एक जवान अफ़सर मेरे कमरे मे दाखिल हुआ। उसका सावला चेहरा सुन्दर नही, मगर बहुत ही सजीव था। "माफ कीजिये," उसने मुझसे फ़ासीसी मे कहा, "कि औपचारिकता के बिना आपसे जान-पहचान करने आ गया हूं। आपके आने की मुझे कल खबर मिली और मेरी इस इच्छा ने कि आखिर तो किसी इन्सान का मुह देख पाऊगा, मुझे ऐसे वश मे कर लिया कि मुझसे रहा न गया। यहा कुछ समय तक और रहने के बाद आप यह सब समझ जायेगे।" मैने अनुमान लगा लिया कि यह द्वन्द्व-युद्ध के लिये गार्ड-सेना से यहा भेजा गया अफ़सर है। हमने झटपट परिचय कर लिया।

श्वाबरिन खासा समझदार व्यक्ति था। उसकी बातचीत काफी लच्छेदार और दिलचस्प थी। उसने बड़ी चुटकिया ले लेकर दुर्गपति के परिवार, यहा के दूसरे लोगो और क्षेत्र का वर्णन किया जहा किस्मत मुझे खीच लाई थी। उसकी बाते सुनते हुए मैं खुलकर हस रहा था। इसी समय वही अपग मेरे पास आया जो दुर्गपति के प्रवेश-कक्ष मे बैठा हुआ वर्दी की मरम्मत कर रहा था और उसने वसिलीसा येगोरोव्ना की ओर से मुझे उनके यहा भोजन करने को आमन्त्रित किया। श्वाबरिन खुशी से मेरे साथ हो लिया।

दुर्गपति के घर के निकट हमे मैदान मे लम्बी चोटियोवाले तथा तिकोणी टोपिया पहने कोई बीसेक बूढे अपग सैनिक फौजी कवायद के लिये कतार मे खडे दिखाई दिये। रात की टोपी और ड्रेसिंग गाउन पहने ऊचे कद के प्रफुल्ल बूढे दुर्गपति उनके सामने खडे थे। हमे देखकर वे हमारे पास आये, उन्होने मुझसे स्नेहपूर्ण कुछ शब्द कहे और फिर से कवायद करवाने लगा। हम यह कवायद देखने के लिये रुक गये, किन्तु दुर्गपति ने अनुरोध किया कि हम वसिलीसा येगोरोव्ना के पास जाये और कहा कि वे स्वय भी जल्द ही वहा आ जायेगे। "यहा आपके देखने के लिये कुछ नही है," उन्होने इतना और जोड दिया।

वसिलीसा येगोरोव्ना ने बडी सहजता और प्रसन्नता से हमारा स्वागत किया और मुझसे ऐसे मिली मानो एक अर्से से मुझे जानती हो। अपाहिज फौजी और पालाशा नौकरानी मेज पर खाने-पीने की व्यवस्था कर रहे थे। "मेरा इवान कुज़्मिच तो आज कवायद मे कुछ ज़्यादा ही खो गया है!" दुर्गपति की बीवी ने कहा। "पालाशा, साहब को

भोजन करने के लिये बुला लाओ। और माशा कहाँ है?" इसी क्षण गोल चेहरे, गुलाबी गालों और सुनहरे बालोंवाली कोई अठारह वर्ष की युवती कमरे में दाखिल हुई। घबराहट के कारण लाल हुए कानों के पीछे उसके बाल बड़े अच्छे ढंग से संवारे हुए थे। पहली नज़र में वह मुझे बहुत अच्छी नहीं लगी। मैंने मन में पूर्वाग्रह की गांठ रखते हुए उसे देखा था – श्वाब्रिन ने कप्तान की बेटी, इसी माशा को पूरी तरह एक बुद्धू लड़की के रूप में मेरे सामने चित्रित किया था। माशा यानी मरीया इवानोव्ना कोने में बैठकर सिलाई करने लगी। इसी बीच बन्दगोभी का शोरबा परोस दिया गया। पति को अभी तक गायब पाकर वसिलीसा येगोरोव्ना ने पालाशा को फिर से उन्हें बुलाने भेजा। 'साहब से कहना कि मेहमान उनकी राह देख रहे हैं, शोरबा ठण्डा हो जायेगा। भगवान की कृपा से कवायद कहीं भाग नहीं जायेगी, बाद में चीख-चिल्ला लेंगे फौजियों पर।" कुछ ही देर बाद काने बूढ़े फौजी के साथ कप्तान कमरे में आये। 'यह क्या बात है, मेरे प्यारे?" पत्नी ने उनसे कहा। "भोजन कभी का परोसा जा चुका है मगर तुम आने का नाम नहीं लेते।' – "सुनो तो वसिलीसा येगोरोव्ना," इवान कुज़्मिच ने उत्तर दिया, "मैं अपना फौजी काम कर रहा था, सैनिकों को शिक्षा दे रहा था।" – "बस, बस, रहने दो।" पत्नी ने आपत्ति की। "यह तो सिर्फ कहने की बात है कि तुम सैनिकों को शिक्षा देते हो। न तो वे कभी कुछ सीखेंगे और न तुम खुद ही यह काम अच्छी तरह से जानते हो। घर बैठकर भगवान का नाम जपते, तो ज्यादा अच्छा होता। प्यारे मेहमानो, मेज़ पर पधारने की कृपा करें।"

हम भोजन करने बैठे। वसिलीसा येगोरोव्ना क्षण भर को भी चुप नहीं हुई, मुझ पर प्रश्नों की झड़ी लगाये रही – मेरे माता-पिता कौन हैं, जीवित हैं या नहीं, कहां रहते हैं और उनकी कितनी सम्पत्ति है? यह सुनकर कि मेरे पिता जी के तीन सौ भूदास हैं, वे कह उठीं, "सच! कितने अमीर लोग हैं इस दुनिया में! इधर, हमारे यहां तो ले-देकर यही एक पालाशा नौकरानी है और भगवान की दया से कुछ बुरी जिन्दगी नहीं है हमारी। बस, एक ही चिन्ता है – माशा शादी-ब्याह के लायक हो गयी है, लेकिन दहेज के नाम पर क्या है उसके पास? फूटी कौड़ी भी नहीं। कोई भला आदमी मिल जाये,

ो अच्छी बात है। नही तो बैठी रहेगी उम्र भर कुआरी ही।" मैंने
मरीया इवानोव्ना की ओर देखा – शर्म से वह बिल्कुल लाल हो गयी
थी और इतना ही नही, आंसू की एकाध बूद भी उसकी प्लेट मे टपक
पड़ी थी। मुझे उस पर तरस आया और मैंने झटपट बातचीत का विषय
बदल दिया। "मैंने सुना है," किसी प्रसग के बिना ही मैं कह उठा,
"कि आपके दुर्ग पर बश्कीरी लोग हमला करनेवाले हैं।" – "भैया,
किससे सुना है तुमने यह?" इवान कुज्मिच ने पूछा। "ओरेनबुर्ग मे
सुनने को मिला था," मैंने जवाब दिया। "बेकार की बात है!"
दुर्गपति ने कहा। "हमारे यहा एक अर्से से ऐसा कुछ सुनने मे नही
आ रहा। बश्कीरी लोग डरे हुए हैं और किर्गीज़ियो का भी हमने दिमाग
ठीक किया हुआ है। वे हमसे नही उलझेंगे और अगर उलझेंगे तो उनकी
ऐसी तबीयत साफ की जायेगी कि दस बरस तक चू नही करेंगे।" – "इस
तरह के खतरो का शिकार हो सकनेवाले दुर्ग मे रहते हुए आपको डर
नही लगता?" मैंने दुर्गपति की पत्नी को सम्बोधित करते हुए पूछा।
"आदत हो गयी है, भैया," उन्होंने उत्तर दिया। "बीस साल हो गये
जब हमे यहा भेजा गया था और भगवान ही जानता है कि तब इन
कमबख्त काफिरो से मैं कितनी डरती थी! कभी-कभी ऐसा भी होता
था कि जैसे ही बन-बिलाव की उनकी टोपिया दिखाई देती, उनकी
चीख-चिल्लाहट सुनाई पड़ती, सच मानना, मेरा दिल उसी वक्त बैठ
जाता! मगर अब ऐसी आदत पड गयी है कि अगर कोई आकर यह
कहता है कि ये शैतान लोग किसी बुरे इरादे से दुर्ग के आस-पास
घूम रहे हैं, तो मैं अपनी जगह से टस से मस भी नही होती।"

"वसिलीसा येगोरोव्ना बड़ी साहसी महिला हैं," श्वाब्रिन ने
बड़ी शान से कहा। "इवान कुज्मिच मेरी इस बात की गवाही दे
सकते हैं।"

"अरे हां," इवान कुज्मिच बोले, "डरनेवाली औरतो मे से
नही है यह।"

"और मरीया इवानोव्ना?" मैंने पूछा, "क्या वह भी आपकी
तरह ही साहसी है?"

"कौन, माशा?" मां ने उत्तर दिया, "माशा साहसी नही
डरपोक है। अभी तक गोली चलने की आवाज नही सुन सकती –

तो अच्छी बात है। नहीं तो बैठी रहेगी उम्र भर कुआरी ही।" मैंने मरीया इवानोव्ना की ओर देखा – शर्म से वह बिल्कुल लाल हो गयी थी और इतना ही नहीं, आसू की एकाध बूद भी उसकी प्लेट मे टपक पडी थी। मुझे उस पर तरस आया और मैंने झटपट बातचीत का विषय बदल दिया। "मैंने सुना है," किसी प्रसग के बिना ही मैं कह उठा, "कि आपके दुर्ग पर बश्कीरी लोग हमला करनेवाले है।" – "भैया, किससे सुना है तुमने यह?" इवान कुज्मिच ने पूछा। "ओरेनबुर्ग मे सुनने को मिला था," मैंने जवाब दिया। "बेकार की बात है!" दुर्गपति ने कहा। "हमारे यहा एक अर्से से ऐसा कुछ सुनने मे नही आ रहा। बश्कीरी लोग डरे हुए हैं और किर्गीज़ियो का भी हमने दिमाग ठीक किया हुआ है। वे हमसे नही उलझेगे और अगर उलझेगे तो उनकी ऐसी तबीयत साफ की जायेगी कि दस बरस तक चू नही करेगे।" – "इस तरह के खतरो का शिकार हो सकनेवाले दुर्ग मे रहते हुए आपको डर नही लगता?" मैंने दुर्गपति की पत्नी को सम्बोधित करते हुए पूछा। "आदत हो गयी है, भैया," उन्होने उत्तर दिया। "बीस साल हो गये जब हमें यहा भेजा गया था और भगवान ही जानता है कि तब इन कमबख्त काफिरो से मैं कितनी डरती थी! कभी-कभी ऐसा भी होता था कि जैसे ही बन-बिलाव की उनकी टोपिया दिखाई देतीं, उनकी चीख-चिल्लाहट सुनाई पडती, सच मानना, मेरा दिल उसी वक्त बैठ जाता! मगर अब ऐसी आदत पड गयी है कि अगर कोई आकर यह कहता है कि ये शैतान लोग किसी बुरे इरादे से दुर्ग के आस-पास घूम रहे हैं, तो मैं अपनी जगह से टस से मस भी नही होती।"

"वसिलीसा येगोरोव्ना बडी साहसी महिला हैं," श्वाबरिन ने बडी शान से कहा। "इवान कुज्मिच मेरी इस बात की गवाही दे सकते हैं।"

"अरे हा," इवान कुज्मिच बोले, "डरनेवाली औरतो मे से नहीं है यह।"

"और मरीया इवानोव्ना?" मैंने पूछा, "क्या वह भी आपकी तरह ही साहसी है?"

"कौन, माशा?" मा ने उत्तर दिया, "माशा साहसी नही, डरपोक है। अभी तक गोली चलने की आवाज़ नही सुन सकती –

11*

सुनते ही सिर से पांव तक कांप उठती है। दो साल पहले इवान कुज्मिच को क्या सूझी कि मेरे जन्मदिन पर तोप से सलामी दिलवा दी। मेरी यह बिटिया तो डर के मारे मरते-मरते बची। तब से हम कमबख्त तोप को कभी नहीं चलवाते।"

हम लोग खाने की मेज पर से उठे। कप्तान और उनकी पत्नी सोने चले गये। मैं श्वाब्रिन के साथ हो लिया और उसी की संगत में मैंने सारी शाम बितायी।

चौथा अध्याय

द्वन्द्व-युद्ध

कृपा करो, सम्मुख आ जाओ अपना खड्ग उठायें।
निश्चय मेरा खड्ग तुम्हारे आर-पार हो जाये!

क्न्याझनिन

कुछ सप्ताह बीते और बेलोगोर्स्क के दुर्ग में मेरा जीवन न केवल बर्दाश्त करने के लायक, बल्कि सुखद भी हो गया। दुर्गपति के यहां मुझे एक तरह से घर का आदमी ही समझा जाता था। पति-पत्नी, दोनों ही बहुत सम्माननीय व्यक्ति थे। सैनिक का बेटा होते हुए अफ़सर बन जानेवाले इवान कुज्मिच अनपढ़ तथा सीधे-सादे, किन्तु बहुत ही ईमानदार और दयालु व्यक्ति थे। उनकी पत्नी उन्हें अपने इशारों पर नचाती थी जो उनकी नम्र तबीयत के बिल्कुल अनुरूप था। वसिलीसा येगोरोव्ना नौकरी के काम-काज को गिरस्ती के काम-धन्धे की तरह ही मानती थी और दुर्ग का अपने घर की भांति ही संचालन करती थी। मरीया इवानोव्ना ने जल्द ही मुझसे घबराना-कतराना बन्द कर दिया। हमारे बीच अच्छी जान-पहचान हो गयी। मैंने उसे समझदार और संवेदनशील लड़की पाया। मुझे पता भी नहीं चला और इस भले परिवार, यहां तक कि काने लेफ्टिनेंट इवान इग्नातिच से भी मुझे लगाव हो गया, जिसके बारे में श्वाब्रिन ने यह कपोल-कल्पना की थी कि वसिलीसा येगोरोव्ना के साथ उसके अनुचित सम्बन्ध हैं, जबकि

इसमे लेशमात्र भी सचाई नही थी। किन्तु श्वाबरिन की बला से।

मुझे अफसर बना दिया गया था। मेरी ड्यूटी कोई खास थकानेवाली नही थी। भगवान ही जिसका मालिक था, इस तरह के इस दुर्ग मे तो न कवायद होती थी, न सैनिक शिक्षण और न ही पहरा-रखवाली। दुर्गपति अपनी इच्छा से ही कभी-कभी अपने सैनिकों को क्वायद करवाते थे, किन्तु अभी तक इतनी सफलता नही प्राप्त कर सके थे कि उन सबको दायें और बाये पहलू की पक्की जानकारी हो जाती, यद्यपि उनमे से अधिकाश दाये या बाये मुडने का आदेश मिलने पर इसलिये अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते थे कि उनसे गलती न हो जाये। श्वाबरिन के पास कुछ फ्रासीसी भाषा की पुस्तके थी। मैं उन्हे पढने लगा और मुझमे साहित्यिक रुचि जागृत होने लगी। सुबह के वक्त मैं पढता, अनुवाद करता और कभी-कभी कविता रचता। दिन का खाना लगभग हमेशा दुर्गपति के यहा ही खाता और आम तौर पर दिन का शेष भाग भी वही बिताता। किसी-किसी शाम को पादरी गेरासिम भी अपनी पत्नी अकुलीना पम्फीलोव्ना के साथ, जो इस इलाके मे खबरों-अफवाहो का भण्डार थी, यहा आते। जाहिर है कि श्वाबरिन के साथ मेरी लगभग हर दिन ही मुलाकात होती थी, लेकिन जैसे-जैसे वक्त बीतता जाता था, उसकी बातचीत मेरे लिये अधिकाधिक अप्रिय होती जाती थी। दुर्गपति के परिवार के बारे मे उसके हर दिन के मजाक मुझे अच्छे नही लगते थे, खास तौर पर मरीया इवानोव्ना के सम्बन्ध मे उसके तीखे-चुभने व्यग्य। दुर्ग मे ऐसे अन्य लोग नही थे जिनसे मिला-जुला जा सकता और मुझे इसकी चाह भी नही थी।

भविष्यवाणियो के बावजूद बश्कीरियो ने कोई हगामा नही किया। हमारे दुर्ग के सभी ओर शान्ति का बोलबाला था। किन्तु अप्रत्याशित आपसी झगडे से यह शान्ति भग हो गयी।

मैं पहले कह चुका हू कि कुछ साहित्य-सृजन करने लगा था। उस समय को देखते हुए मेरे प्रयोग कुछ बुरे नही थे और कुछ वर्ष बाद अलेक्सान्द्र पेत्रोविच सुमारोकोव* ने उनकी बडी प्रशसा भी की।

---

* १८वी शताब्दी (१७१८–१७७७) के एक नाटककार, कवि और रूसी क्लासिकी साहित्य के एक प्रतिनिधि। — स०

एक दिन मैंने एक ऐसा गीत रचा जिससे मुझे काफ़ी सन्तोष हुआ। यह भी सर्वविदित है कि सर्जक कभी-कभी सलाह लेने की आड़ में हमदर्द श्रोता को ढूंढ़ा करते हैं। सो अपने गीत की साफ़ नक़ल तैयार करके मैं श्वाबरिन के पास ले गया। दुर्ग में वही एक ऐसा व्यक्ति था जो कविता का मूल्यांकन कर सकता था। छोटी-सी भूमिका बांधने के बाद मैंने जेब से अपनी नोटबुक निकाली और उसे यह रचना सुनाई—

> चाहे यत्न करता हूँ मैं जो
> अपने मन से प्यार भुलाऊँ
> प्यारी माशा से कतराकर
> मुक्त हृदय को अपने पाऊँ।
>
> जिन आँखों ने मुग्ध किया है
> सम्मुख रहतीं मेरे हर क्षण
> लूट लिया है चैन हृदय का
> विह्वल विकल किया मेरा मन।
>
> मर्म-वेदना तुमने जानी
> माशा, मुझ पर दया करो तुम,
> मुझ पर जादू करनेवाली
> मेरी पीड़ा व्यथा हरो तुम।

"कहो, कैसा लगा तुम्हे मेरा यह गीत ?" मैंने अधिकार के रूप में प्रशसा की आशा करते हुए श्वाबरिन से पूछा। किन्तु मेरा दुर्भाग्य कहिये कि सामान्यत बडे शिष्ट श्वाबरिन ने दो टूक कह दिया कि मेरा गीत किसी काम का नहीं।

"भला क्यो ?" अपनी खीझ को छिपाते हुए मैंने पूछा। "इसलिये," उसने जवाब दिया, "कि ऐसी रचनाए मेरे अध्यापक वसीली किरीलिच त्रेद्याकोव्स्की* को शोभा देती हैं और वे मुझे उनके प्रेम-छन्दो की अत्यधिक याद दिलाती हैं।"

इतना कहकर उसने मेरी नोटबुक ले ली और बडी निर्दयता से हर छन्द और शब्द की आलोचना करने और बहुत ही चुभते ढग से

---

* १८ वीं शताब्दी के कवि और अनुवादक, रूसी छन्दशास्त्र के जोरदार समर्थक, जिनकी कविताओं की उनके समकालीन अक्सर अकारण ही खिल्ली उड़ाते थे। —स०

मेरा मज़ाक उड़ाने लगा। मुझसे यह बर्दाश्त नहीं हुआ, मैंने उसके हाथ से नोटबुक छीन ली और कहा कि भविष्य में कभी भी उसे अपनी रचना नहीं दिखाऊंगा। इवाबरिन मेरी इस धमकी पर भी हंस दिया।

"देखेंगे," उसने कहा, "तुम अपना यह वचन निभाओगे या नहीं – कवियों को श्रोता की वैसे ही अपेक्षा होती है जैसे इवान कुज्मिच को भोजन के पहले वोदका की सुराही की। और यह माशा कौन है जिसके सामने तुमने अपनी कोमल भावनायें और प्रेम-वेदना प्रकट की है? कहीं मरीया इवानोव्ना तो नहीं?"

"तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं," मैंने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए उत्तर दिया, "कोई भी क्यों न हो यह माशा। मुझे न तो तुम्हारी राय की ज़रूरत है और न तुम्हारे अनुमानों की।"

"ओहो! बड़े आत्माभिमानी कवि और विनयशील प्रेमी हो!" मुझे लगातार अधिकाधिक चिढ़ाते हुए श्वाबरिन कहता गया। "तुम मेरी दोस्ताना सलाह पर कान दो – अगर कामयाबी चाहते हो, तो मेरे मशविरे पर अमल करो और गीतों-कविताओं के फेर में नहीं पड़ो।"

"इसका क्या मतलब है जनाब? ज़रा समझाइये तो।"

"बड़ी ख़ुशी से। इसका मतलब है, अगर तुम यह चाहते हो कि झुटपुटा हो जाने पर माशा तुम्हारे पास आया करे, तो प्रेम-कविता के बजाय उसे झुमकों की जोड़ी भेंट करो।"

मेरा ख़ून खौल उठा।

"उसके बारे में तुम ऐसा क्यों कहते हो?" बड़ी मुश्किल से अपने गुस्से पर काबू पाते हुए मैंने पूछा।

"इसलिये," उसने बहुत ही क्रूर व्यंग्य करते हुए उत्तर दिया, "कि अपने अनुभव से उसके आचार-विचार और आदतों को जानता हूं।"

"तुम झूठ बोलते हो, कमीने!" मैं ग़ुस्से से पागल होकर चिल्ला उठा, "बहुत ही बेहयाई से झूठ बोलते हो।"

श्वाबरिन के चेहरे का रंग उड़ गया।

"तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी," उसने मेरा हाथ दबाते हुए कहा। "बदला लेकर मुझे अपना कलेजा ठण्डा करना होगा।"

"जब चाहो।" मैंने ख़ुश होते हुए जवाब दिया। इस वक्त मैं

उसके टुकड़े-टुकड़े कर देने को तैयार था।

मैं लेफ्टिनेंट इवान इग्नातिच की ओर रवाना हो गया और उन्हें हाथ में सुई लिये पाया – कमांडेंट की बीवी के कहने पर जाड़े के लिये कुकुरमुत्ते सुखाने को वह उन्हें धागों में पिरो रहा था।

'अरे, प्योतर अन्द्रेइच!' मुझे देखकर उसने कहा, "पधारिये, पधारिये! कैसे आना हुआ? यह बताने की कृपा कीजिये कि किस काम के सिलसिले में आये हैं?'

मैंने बहुत संक्षेप में उसे बताया कि अलेक्सेई इवानोविच के साथ मेरा झगड़ा हो गया है और चाहता हूं कि इवान इग्नातिच द्वन्द्व-युद्ध के समय मेरी ओर से मध्यस्थ रहें। इवान इग्नातिच ने अपनी एक आंख को फैलाये हुए बहुत ध्यान से मेरी बात सुनी।

"आप यह कहना चाहते हैं," उसने मुझसे कहा, "कि आप अलेक्सेई इवानोविच के बदन में तलवार घोंपना और मुझे उसका साक्षी बनाना चाहते हैं? मैं पूछने की जुर्रत कर सकता हूं, यही बात है न?"

"बिल्कुल यही।"

"सुनिये तो प्योतर अन्द्रेइच! यह क्या सूझी है आपको! अलेक्सेई इवानोविच के साथ आपकी तू-तू मैं-मैं हो गयी? तो क्या मुसीबत है! गाली-गलौज से किसी का क्या बिगड़ता है? उसने आपको गाली दी, आप उसे कोस लीजिये। वह आपकी थूथनी पर घूंसा मारता है, आप उसके कान पर। बस ऐसे ही हिसाब बराबर करके अलग हो जाइये। हम जरूर आपकी सुलह करवा देंगे। यह बताने की कृपा करें कि क्या अपने नजदीकी आदमी के तन में तलवार घोंपना कोई अच्छी बात है? वैसे यह तो कुछ बुरा नहीं होगा कि आप उसके, अलेक्सेई इवानोविच के तन में तलवार घोंप दें। कोई बात नहीं, खुद मुझे भी वह पसन्द नहीं है। लेकिन अगर उसने आपको बींध डाला तो? तब क्या होगा? यह बताने की कृपा करें कि तब कौन उल्लू बनेगा?"

समझदार लेफ्टिनेंट के तर्क-वितर्क से मैं डगमगाया नहीं। मेरा इरादा ज्यों का त्यों बना रहा।

"जैसा ठीक समझें, वैसा करें," इवान इग्नातिच ने कहा। मुझे गवाह बनकर क्या लेना है? किसलिये? लोग आपस में लड़ते-

भिड़ते हैं, कौन-सी अनोखी बात है यह? भगवान की दया से मैं म्योडो और तुर्कों से लड़ चुका हूं—सब कुछ देख चुका हूं।"

मैंने इवान इग्नातिच को मध्यस्थ का कर्तव्य समझाने की पूरी कोशिश की, मगर वह उसे किसी भी तरह से समझ नहीं पाया।

"आपकी मर्जी है," उसने कहा। "अगर मुझे इस मामले में दखल देना ही है, तो अपनी ड्यूटी बजाते हुए इवान कुजिमच को यह खबर देनी चाहिये कि दुर्ग में एक बुरी बात होनेवाली है जो सरकार के हितों के विरुद्ध है। श्रीमान दुर्गपति को क्या इसे रोकने के लिये कदम नहीं उठाने चाहिये?"

मैं डर गया और इवान इग्नातिच की मिन्नत-समाजत करने लगा कि वह दुर्गपति से कुछ न कहे। बड़ी मुश्किल से मैंने उसे मनाया। उसने मुझे ऐसा न करने का वचन दिया और मैं वहां से चलता बना।

सदा की भांति यह शाम भी मैंने दुर्गपति के यहां बितायी। मैंने अपने को खुश और मस्ती में जाहिर करने की कोशिश की, ताकि किसी के दिल में कोई शक-शुबहा न पैदा हो और मुझसे खोद-खोदकर सवाल न पूछे जायें। किन्तु मैं अपने पर वैसा संयम नहीं कर सका, जैसे मेरी जैसी स्थिति में होनेवाले लोग कर पाते हैं और जिसकी वे लगभग हमेशा डींग हांकते हैं। इस शाम को मैं कोमल भावनाओं और भावुकता की धारा में बह रहा था। अन्य दिनों की अपेक्षा मरीया इवानोव्ना मुझे कहीं अधिक अच्छी लग रही थी। यह विचार कि शायद आज उसे आखिरी बार देख रहा हूं, मेरी दृष्टि में उसे मर्मस्पर्शी बना रहा था। श्वाबरिन भी यहां आ गया। मैंने उसे एक ओर को ले जाकर इवान इग्नातिच के साथ हुई अपनी बातचीत बतायी। "क्या जरूरत है हमें मध्यस्थों की?" उसने रुखाई से कहा, "उनके बिना ही काम चला लेंगे।" हमने तय किया कि दुर्ग के निकट भूसे की टालों के पीछे अगले दिन सुबह के सात बजे द्वन्द्व-युद्ध करेंगे। सम्भवतः हम इतने मैत्रीपूर्ण ढंग से बातचीत कर रहे थे कि इवान इग्नातिच ने खुशी की तरंग में हमारा भंडाफोड़ कर दिया।

"बहुत पहले से ऐसा होना चाहिये था," उसने प्रसन्न मुद्रा में मुझसे कहा, "अच्छी लड़ाई से बुरी शान्ति बेहतर है, आदर की दृष्टि से स्वस्थ होना ज्यादा अच्छा है।"

"क्या, क्या कहा तुमने, इवान इग्नातिच?" दुर्गपति की बीवी ने पूछा जो दूर कोने में बैठी हुई ताश के पत्तों से नजूम लगा रही थी, और ये शब्द सुन नही पाई थी।

मेरे चेहरे पर नाराजगी का भाव देख और अपना वादा याद करके इवान इग्नातिच परेशान हो उठा। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या उत्तर दे। श्वाबरिन ने उसकी मदद की।

"इवान इग्नातिच हमारे बीच सुलह का अनुमोदन कर रहा है," उसने कहा।

"किसके साथ तुम्हारा झगडा हो गया था, भैया?"

"प्योतर अन्द्रेइच के साथ हमारा खासा जोरदार झगडा हो गया था।"

"वह किसलिये?"

"बहुत ही मामूली-सी बात के लिये – गीत को लेकर, वसिलीसा येगोरोव्ना।"

"झगडे के लिये भी क्या चीज चुनी है! गीत! कैसे हुआ यह?"

"ऐसे हुआ कि प्योतर अन्द्रेइच ने कुछ ही समय पहले एक गीत रचा और आज उसे मेरे सामने गाने लगा। उधर मैंने अपना मनपसन्द गीत गाना शुरू कर दिया –

ओ बेटी कप्तान की, सुनो बात पर कान दो
नही घूमने जाओ आधी रात को

इसी बात पर झगडा हो गया। प्योतर अन्द्रेइच बिगड उठा मगर बाद मे उसने यह सोचा कि जो जैसे चाहे, वैसे ही गा सकता है। ऐसे मामला खत्म हो गया।"

श्वाबरिन की ऐसी बेहयाई से मैं लगभग आग-बबूला हो गया, लेकिन उसके इन भोंडे कटाक्षों को मेरे सिवा और कोई नही समझा। कम से कम इतना तो था ही कि उनकी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। गीत से कवियों की चर्चा चल पडी और दुर्गपति ने यह राय जाहिर की कि वे सभी दुराचारी और बडे पियक्कड होते है तथा मैत्रीपूर्ण ढंग से मुझे यह सलाह दी कि मैं कविताये रचने के फेर मे न पडू क्योंकि यह

चीज़ फ़ौजी नौकरी के साथ मेल नही खाती और इसका कोई अच्छा नतीजा नही निकलेगा।

श्वाबरिन की उपस्थिति मेरे लिये असह्य थी। कुछ ही देर बाद मैंने दुर्गपति और उनके परिवार से विदा ली, घर लौटकर अपनी तलवार को अच्छी तरह से देखा, उसकी नोक को जाचा-परखा और सावेलिच को सुबह के छ बजने के फ़ौरन बाद जगा देने को कहकर बिस्तर पर चला गया।

अगले दिन मैं नियत समय पर भूसे की टालो के पीछे जाकर अपने प्रतिद्वन्द्वी की प्रतीक्षा करने लगा। शीघ्र ही वह भी आ गया। "यहा हम पकड़े जा सकते हैं," उसने मुझसे कहा, "इसलिये जल्दी करनी चाहिये।" हमने फौजी कमीजे उतार दी, केवल नीचे के कुरतों मे रह गये और अपनी तलवारे निकाल ली। इसी क्षण टाल के पीछे से अचानक इवान इग्नातिच और पाच अपाहिज फौजी प्रकट हुए। इवान इग्नातिच ने दुर्गपति के सामने चलने को कहा। हमने बहुत दुखी मन से उसका कहना माना, सैनिको ने हमे घेर लिया और हम इवान इग्नातिच के पीछे-पीछे, जो विजेता की तरह बडी अनूठी शान से कदम बढा रहा था, दुर्ग की ओर चल दिये।

हमने दुर्गपति के घर मे प्रवेश किया, इवान इग्नातिच ने दरवाज़ा खोला और उत्साहपूर्वक घोषणा की, "ले आया हू।" वसिलीसा येगोरोव्ना हमारे सामने थी। "ओह, मेरे प्यारो! यह सब क्या है? क्यो? किसलिये? हमारे दुर्ग मे हत्या की जाये? इवान कुज़्मिच, इन्हे इसी समय गिरफ्तार करने का हुक्म दो! प्योतर अन्द्रेइच! अलेक्सेई इवानोविच! अपनी तलवारे इधर दे दो, दे दो इधर! पालाशा, इन तलवारो को कोठरी मे रख आओ। प्योतर अन्द्रेइच! तुमसे मैंने यह आशा नही की थी। तुम्हे शर्म नही आती? अलेक्सेई इवानोविच की बात दूसरी है, उसे तो हत्या करने के लिये गार्ड-सेना से अलग किया गया, वह भगवान को नही मानता, मगर तुम्हें, तुम्हे क्या हो गया? तुम भी उसी रास्ते पर चलना चाहते हो?"

इवान कुज़्मिच अपनी पत्नी के साथ पूरी तरह सहमत थे और बार-बार यही कहते जाते थे, "सुनते हो न, वसिलीसा येगोरोव्ना बिल्कुल ठीक कह रही हैं। सेना की नियमावली के अनुसार द्वन्द्व-युद्धो

की औपचारिक रूप से मनाही है।" इसी बीच पालाशा हमारी तलवारें लेकर उन्हें कोठरी में रख आई। मैं हँसे बिना नहीं रह सका। श्वाब्रिन अपनी शान बनाये रहा। "आपके प्रति अपनी पूरी आदर-भावना के बावजूद," उसने वसिलीसा येगोरोव्ना को सम्बोधित करते हुए रुखाई से कहा, "मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि व्यर्थ ही आप हम लोगों के बारे में निर्णय करने का कष्ट कर रही हैं। यह काम इवान कुज़्मिच का है, उन्हीं को करने दीजिये।" – "ओह, मेरे भैया!" दुर्गपति की पत्नी ने उसकी बात काटी, "क्या पति-पत्नी एक तन और एक ही जान नहीं होते? इवान कुज़्मिच! तुम बैठे-बैठे क्या देख रहे हो? इसी वक़्त इन्हें अलग-अलग कोनों में रोटी और पानी के राशन पर बिठा दो, ताकि इनके दिमागों से बेवक़ूफ़ी का भूत निकल जाये। हाँ, और पादरी गेरासिम से कहो कि इन पर पूजा-पाठ का दण्ड लगा दें, ताकि ये भगवान से क्षमा माँगें और लोगों के सामने प्रायश्चित करें।"

इवान कुज़्मिच समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें। मरीया इवानोव्ना के चेहरे का तो बिल्कुल रंग उड़ा हुआ था। तूफ़ान धीरे-धीरे शान्त हो गया। वसिलीसा येगोरोव्ना का गुस्सा ठण्डा पड़ गया और उन्होंने हम दोनों को गले मिलने और चूमने के लिये विवश किया। पालाशा ने हमें हमारी तलवारें वापस ला दीं। दुर्गपति के घर में हम दोनों स्पष्टतः सुलह किये हुए बाहर निकले। इवान इग्नातिच हमारे साथ था। "शर्म आनी चाहिये, आपको," मैंने झल्लाकर उससे कहा, "दुर्गपति के पास जाकर हमारे बारे में मुख़बिरी की, जबकि मुझसे ऐसा न करने का वादा कर चुके थे?" – "भगवान जानता है, मैंने इवान कुज़्मिच को यह नहीं बताया," उसने उत्तर दिया, "वसिलीसा येगोरोव्ना ने मुझसे यह सब उगलवा लिया। उन्होंने ही दुर्गपति की जानकारी के बिना यह सारी व्यवस्था-कर दी। वैसे, भला हो भगवान का कि यह मामला ऐसे ख़त्म हो गया।" इतना कहकर वह घर वापस चला गया और मैं तथा श्वाब्रिन ही रह गये। "हमारा किस्सा ऐसे ही ख़त्म नहीं हो सकता," मैंने उससे कहा। "बेशक," श्वाब्रिन ने जवाब दिया, "अपनी गुस्ताख़ी के लिये आपको अपने ख़ून से क़ीमत चुकानी पड़ेगी। किन्तु हम पर सम्भवतः नज़र रखी जायेगी। हमें कुछ

दिनो तक ढोंग करना पड़ेगा। नमस्ते!" और हम ऐसे अलग हो गये मानो कोई बात ही न हुई हो।

दुर्गपति के घर लौटकर मैं सदा की भाति मरीया इवानोव्ना के पास बैठ गया। इवान कुज्मिच घर पर नही थे। वसिलीसा येगोरोव्ना घर-गिरस्ती के काम मे व्यस्त थी। हम दोनो बहुत धीमे-धीमे बातचीत कर रहे थे। मरीया इवानोव्ना कोमल शब्दो मे उस परेशानी के लिये मेरी भर्त्सना कर रही थी जो श्वाबरिन के साथ मेरे झगडे के कारण हुई थी।

"मेरी तो जान ही निकल गयी," वह बोली, "जब हमे यह बताया गया कि आप दोनो तलवारो से लडने का इरादा रखते है। मर्द कैसे अजीब होते हैं! एक शब्द के लिये, जिसे वे निश्चय ही एक सप्ताह बाद भूल जायेगे, एक-दूसरे का गला काटने और न केवल अपने जीवन और आत्मा की ही बलि देने को तैयार हो जाते हैं, बल्कि उन लोगो के सुख-कल्याण की भी, जो किन्तु मुझे विश्वास है कि झगडा आपने आरम्भ नही किया होगा। अवश्य अलेक्सेई इवानोविच ही दोषी होगा।"

"आप ऐसा क्यो सोचती हैं, मरीया इवानोव्ना?"

"यो ही वह हमेशा मजाक उडाता रहता है! अलेक्सेई इवानोविच मुझे अच्छा नही लगता। फूटी आखो नही सुहाता। फिर भी यह अजीब बात है कि मैं उसे अच्छी न लगू, ऐसा मैं नही चाहूगी। मेरे दिल को इससे दुख होगा।"

"मरीया इवानोव्ना, क्या ख्याल है आपका, आप उसे अच्छी लगती हैं या नही?"

मरीया इवानोव्ना हकलायी और उसके चेहरे पर लाली दौड गयी।

"मुझे लगता है," उसने कहा, "मैं सोचती हू कि अच्छी लगती हू।"

"क्यो आपको ऐसा लगता है?"

"क्योकि उसने मेरे साथ अपनी सगाई करनी चाही थी।"

"सगाई करनी चाही थी! उसने आपके साथ? कब?"

"पिछले साल। आपके आने के दो महीने पहले।"

और आपने इसे किसलिये इनकार किया?"

"जैसा कि देख रहे हैं, अलेक्सेई इवानोविच बेशक समझदार आदमी है, अच्छे खानदान से सम्बन्ध रखता है, धनवान है। किन्तु जैसे ही यह ख्याल आता है कि गिरजे में सबके सामने उसे चूमना पड़ेगा... नहीं, किसी हालत में ऐसा नहीं करना चाहूँगी! दुनिया की किसी भी दौलत के लिये नहीं!"

मरिया इवानोव्ना के शब्दों से मेरी आँखें खुल गयीं, बहुत-सी बातें स्पष्ट हो गयीं। श्वाब्रिन उसके बारे में हमेशा जो गन्दी बातें कहता था, मैं अब उसका कारण समझ गया था। सम्भवतः एक-दूसरे के प्रति हमारे झुकाव की ओर उसका ध्यान गया था और उसने हमारे बीच खाई पैदा करने की कोशिश की थी। हमारे झगड़े का कारण बननेवाले शब्द मुझे अब और भी घटिया लगे, जब भद्दे तथा अशोभनीय मजाकों के साथ-साथ मुझे उनमें जान-बूझकर की जानेवाली बदनामी भी साफ दिखाई दी। मेरे मन में दूसरों पर कीचड़ उछालनेवाले इस गुस्ताख को सजा देने की इच्छा और भी तीव्र हो गयी तथा मैं बड़ी बेसब्री से उचित अवसर पाने की राह देखने लगा।

मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। अगले दिन जब मैं शोक-गीत रच रहा था और तुक के इन्तजार में लेखनी का सिरा कुतर रहा था, श्वाब्रिन ने मेरी खिड़की पर दस्तक दी। मैंने कलम नीचे रख दी और तलवार लेकर उसके पास बाहर चला गया। "मामले को टालने की क्या जरूरत है?" श्वाब्रिन ने मुझसे कहा, "हम पर नजर नहीं रखी जा रही है। नदी पर चलते हैं। वहा कोई खलल नहीं डालेगा।" हम चुपचाप चल दिये। खड़ी पगडंडी से नीचे उतरकर हम नदी के बिल्कुल पास रुक गये और हमने तलवारें निकाल लीं। श्वाब्रिन मुझसे ज्यादा दक्ष था, मगर मैं अधिक ताकतवर और साहसी। इसके अलावा श्रीमान बोप्रे ने, जो कभी सैनिक रह चुका था, मुझे पटेबाजी के जो कुछ दाव-पेच सिखाये थे, मैंने अब उन्ही का उपयोग किया। श्वाब्रिन को यह आशा नही थी कि मेरे रूप मे उसे ऐसे जोरदार प्रतिद्वन्द्वी का सामना करना पड़ेगा। देर तक हम एक-दूसरे को किसी तरह हानि नहीं पहुंचा सके और आखिर यह देखकर कि श्वाब्रिन की जवाब देती जा रही है, मैं अधिक दिलेरी से उस पर वार करने

लगा और उसे लगभग नदी तक पीछे हटा दिया। सहसा मुझे बहुत ऊंची आवाज में अपना नाम सुनाई दिया। मैंने मुड़कर देखा, तो मुझे सावेलिच पहाड़ी पगडंडी से नीचे भागा आता नजर आया। इसी समय दायें कंधे के नीचे मुझे अपनी छाती में जोर का दर्द महसूस हुआ। मैं गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

पांचवां अध्याय

प्रेम

अभी उमरिया छोटी है सुन्दर युवती!
अभी न सोचो अभी न सोचो शादी की
पूछो अपने बापू से तुम अम्मा से
बापू से, अम्मा से, रिश्तेदारों से
अक्ल-समझ तुम थोड़ी-सी जानो समझो
समझ-बूझ भी कुछ दहेज संचित कर लो।

लोक गीत

मुझसे अच्छा मिला अगर कोई तुमको, भूल मुझे तुम जाओगी
बुरा मिला यदि मुझसे कोई, दिल में मुझे बसाओगी।

लोक गीत

होश आने पर कुछ समय तक मैं यह याद नहीं कर सका और समझ नहीं पाया कि मेरे साथ हुआ क्या था। मैं एक अनजाने-अपरिचित कमरे में लेटा हुआ था और बड़ी कमजोरी महसूस कर रहा था। हाथ में मोमबत्ती लिये हुए सावेलिच मेरे सामने खड़ा था। कोई मेरी छाती और कंधे पर बंधी हुई पट्टी को बड़ी सावधानी से खोल रहा था। धीरे-धीरे मेरे विचारों में स्पष्टता आने लगी। मुझे अपना द्वन्द्व-युद्ध याद हो आया और यह भांप गया कि मैं घायल हो गया था। इसी क्षण चूं-चीं करता हुआ दरवाजा खुला। "कहो, कैसा है?" किसी ने फुसफुसाकर पूछा और इस आवाज से मेरे बदन में झुरझुरी-सी दौड़

गयी। "उसी, पहले जैसी हालत में ही," सावेलिच ने गहरी उसास छोड़ते हुए कहा, "पांच दिन हो गये, वही मूर्च्छा बनी हुई है।" मैंने करवट लेनी चाही, किन्तु ऐसा नही कर सका। "मैं कहा हू? यहां कौन है?" मैंने बडी मुश्किल से पूछा। मरीया इवानोव्ना मेरे पलग के पास आई और मेरी ओर झुककर उसने पूछा, "कैसी तबीयत है आपकी?" – "भगवान की कृपा है," मैंने बडी क्षीण-सी आवाज मे जवाब दिया। "यह आप हैं मरीया इवानोव्ना? मुझे बताइये..." मुझमें अपनी बात जारी रखने की शक्ति नहीं थी और मैं चुप हो गया। सावेलिच ने हर्षोच्छ्वास छोड़ा। उसके चेहरे पर खुशी झलक उठी। "होश आ गया! होश आ गया!" वह दोहरा रहा था। "भला हो भगवान तुम्हारा! भैया, प्योतर अन्द्रेइच! तुमने तो मुझे डरा ही दिया था! मामूली बात है क्या? पाच दिन तक बेहोशी!.." मरीया इवानोव्ना ने उसे टोक दिया। "उसके साथ ज्यादा बात नहीं करो, सावेलिच," वह बोली। "वह अभी कमजोर है।" वह धीरे से दरवाजा बन्द करके बाहर चली गयी। मेरे विचारो मे हलचल जारी थी। तो मैं दुर्गपति के घर मे था। मरीया इवानोव्ना मेरा हालचाल जानने के लिये आयी थी। मैंने सावेलिच से कुछ प्रश्न पूछने चाहे, किन्तु बुड्ढे ने सिर हिला दिया और कानो में उगलिया ठूस ली। मैंने निराशा से आखें मूद ली और जल्द ही नींद मे खो गया।

आख खुलने पर मैंने सावेलिच को पुकारा और उसकी जगह मरीया इवानोव्ना को अपने सामने पाया। अपनी मृदुल आवाज मे उसने मेरा अभिवादन किया। इस क्षण मैं जिस मधुर भावना से ओतप्रोत हो गया, उसे व्यक्त नही कर सकता। मैंने उसका हाथ पकडकर अपने होठो से लगा लिया और उसे खुशी के आसुओ से तर कर दिया। माशा ने अपना हाथ छुडाया नही अचानक उसके होठो ने मेरे गालों को छुआ और मुझे उनके गर्म और ताजा चुम्बन की अनुभूति हुई। मेरे बदन में बिजली-सी दौड गई। "मेरी प्यारी, मेरी अच्छी मरीया इवानोव्ना," मैंने उससे कहा, "मेरे सुख के लिये मेरी पत्नी बनना स्वीकार करो।" वह सम्भली। "भगवान के लिये शान्त हो जाइये," अपना हाथ [illegible] हुए उसने कहा। "आप अभी खतरे से बाहर नही हुए हैं, घाव [illegible] है। और कुछ नहीं तो मेरी खातिर ही अपनी चिन्ता की-

दिये।" इतना कहकर और मुझे खुशी से मदहोश-सा बनाकर वह चली गयी। खुशी ने मुझे नई जिन्दगी दे दी। वह मेरी हो जायेगी! वह मुझे प्यार करती है! मेरा रोम-रोम इस विचार से पुलकित हो उठा।

इस क्षण से मेरी तबीयत लगातार बेहतर होने लगी। रेजिमेंट का नाई मेरी चिकित्सा कर रहा था, क्योंकि दुर्ग में कोई दूसरा चिकित्सक नहीं था और, भला हो भगवान का, वह मुझ पर अपने तजरबे नहीं करता था। जवानी और प्रकृति ने मेरे जल्दी से स्वस्थ होने में योग दिया। दुर्गपति का सारा परिवार मेरी देख-भाल करता था। मरीया इवानोव्ना तो मेरे बिस्तर के पास से हटती ही नहीं थी। जाहिर है कि पहला अच्छा अवसर मिलते ही मैंने अपने प्रेम-निवेदन की बात चलाई, जो अधूरी रह गयी थी और मरीया इवानोव्ना ने बड़े सब्र से उसे सुना। उसने किसी प्रकार की भेंप-झिझक के बिना मेरे प्रति अपने हृदय के झुकाव को स्वीकार कर लिया और कहा कि उसके माता-पिता तो उसके सुख-सौभाग्य से खुश होंगे। "लेकिन तुम अच्छी तरह से यह सोच लो," उसने इतना और जोड़ दिया, "कि तुम्हारे माता-पिता की ओर से तो कोई बाधा नहीं होगी?"

मैं सोच में पड़ गया। मां के हृदय की कोमलता के बारे में तो मुझे कोई सन्देह नहीं था, किन्तु पिता जी के मिजाज और आचार-विचार को जानते हुए मैंने यह अनुभव किया कि मेरा प्यार उनके हृदय को बहुत नहीं छुएगा और वे इसे एक जवान आदमी की सनक मानेंगे। मैंने सच्चे मन से मरीया इवानोव्ना के सामने इस बात को स्वीकार कर लिया और फिर भी यह तय किया कि पिता जी को यथासम्भव बहुत अच्छे ढंग से पत्र लिखूंगा और उनसे आशीर्वाद देने को कहूंगा। मैंने वह पत्र मरीया इवानोव्ना को दिखाया। उसे वह इतना प्रभावपूर्ण और मर्मस्पर्शी लगा कि सफलता का तनिक भी सन्देह नहीं रहा तथा जवानी और प्रेम की पूरी विश्वसनीयता के साथ उसने अपने को अपने मन की कोमल भावनाओं के अधीन कर दिया।

स्वस्थ होने के पहले ही दिन मैंने श्वाबरिन से सुलह कर ली। द्वन्द्व-युद्ध के लिये मुझे झिड़कते हुए इवान कुज्मिच ने मुझसे कहा, "ओह, प्योतर अन्द्रेइच! वैसे तो मुझे तुम्हें हिरासत में लेने का आदेश

और टेलकर कुछ [illegible] 'धन्यवाद है [illegible]
कि तुम्हारे कारण ही [illegible] हो गए और [illegible]
[illegible] पर [illegible]। [illegible]
हो। सावेलिच पर भी [illegible] हुआ। "यह [illegible]
हो तुम [illegible] मालिक ?' उसने [illegible] लिखते हुए कहा। "मैं
कारण हूं तुम्हारे घायल होने का ? भगवान जानता है, मैं तो दौड़ा
तुम्हारे पास आ रहा था कि अपनी छाती सामने करके
तुम्हें अलेक्सेई इवानोविच की तलवार से बचा लूं! कमबख्त बुढ़ापा
ही आड़े आ गया, और तुम्हारी माता जी के साथ मैंने क्या बुराई
की है ?' – क्या बुराई की है तुमने ?' मैंने प्रश्न करते हुए उत्तर दिया।
किसने तुम्हें मेरी चुगली लिखने को कहा था ? क्या तुम्हें मेरी जासूसी
करने के लिये मुझ पर तैनात किया गया है ?"—"मैंने ? मैंने तुम्हारे बारे में
चुगली लिखी ?' सावेलिच ने आंसू बहाते हुए कहा। "हे मेरे ईश्वर!
तो कृपया यह पढ़ लो जो बड़े मालिक ने मुझे लिखा है और तुम जान
जाओगे कि कैसी चुगली की है मैंने तुम्हारी।' इतना कहकर उसने
जेब से पत्र निकाला और मैंने उसमें यह पढ़ा—

तुम्हें बुड्ढे कुत्ते को शर्म आनी चाहिये कि मेरी कड़ी हिदायत के बावजूद तुमने मेरे बेटे प्योतर अन्द्रेइच के बारे में कुछ नहीं लिखा और पराये लोगों को मुझे उसकी शरारतों की सूचना देने को विवश होना पड़ा है। तो इस तरह तुम अपना कर्तव्य निभा रहे हो और अपने मालिक की इच्छा पूरी कर रहे हो ? तुम्हें, बुड्ढे कुत्ते को सचाई छिपाने और नौजवान के साथ मिली-भगत करने के लिये सूअरों की देख-भाल के काम में लगाऊंगा। पत्र मिलते ही तुम्हें फौरन यह लिखने का आदेश देता हूं कि अब उसका स्वास्थ्य कैसा है, जिसके बारे में मुझे लिखा गया है कि सुधर रहा है। हां, और यह भी लिखना कि घाव किस जगह पर है तथा उसका ढंग से इलाज हो रहा है या नहीं।"

यह स्पष्ट था कि सावेलिच मेरे सामने दोषी नहीं था और मैंने व्यर्थ ही ताने-बोलियों से तथा सन्देह प्रकट करके उसका अपमान किया
उससे क्षमा मांगी, किन्तु बूढ़े को इससे चैन नहीं हुआ।
[illegible] पड़े हैं मुझे," वह दोहराता जा रहा था, "क्या-
[illegible] है मुझे अपने मालिकों से ! मैं ही बुड्ढा कुत्ता हूं, मैं

ही सूअर-पालक हूं, मैं ही तुम्हारे घाव का कारण हूं? नहीं, मेरे छोटे मालिक प्योतर अन्द्रेइच! मैं नहीं, वह कमबख्त फ्रांसीसी ही दोषी है इस सबके लिये – उसी ने तुम्हें लोहे की सलाखें घोंपना और जमीन पर पाव पटकना सिखाया है मानो सलाखें घोंपने और पांव पटकने की बदौलत दुष्ट आदमी से बचा जा सकता है! बड़ी जरूरत थी उस फ्रांसीसी को नौकर रखने और उस पर बेकार पैसा खर्च करने की!"

तो पिता जी को मेरी हरकत की खबर देने की तकलीफ किसने उठाई? जनरल ने? किन्तु लगता है कि उसे तो मेरी बहुत फिक्र नहीं थी। इवान कुज़्मिच को मेरे द्वन्द्व-युद्ध की सूचना देने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई होगी। मैं अनुमानों में खो गया। श्वाब्रिन पर ही मुझे सन्देह हुआ। केवल उसे ही इस चुगली से लाभ हो सकता था, क्योंकि इसके फलस्वरूप मुझे इस दुर्ग से किसी दूसरी जगह भेजा जा सकता था और दुर्गपति के परिवार से मेरा नाता टूट सकता था। मैं इस सब के बारे में मरीया इवानोव्ना को बताने गया। उसके साथ ड्योढ़ी में मेरी भेंट हुई। "आपको क्या हुआ है?" मुझे देखकर उसने कहा, "कितना पीला चेहरा है आपका!" – "सब कुछ खत्म हो गया!" मैंने जवाब दिया और उसे पिता जी का पत्र दे दिया। अब उसके चेहरे का रंग उड़ गया। पत्र पढ़कर उसने कांपते हाथ से उसे मुझे लौटा दिया और कांपती आवाज़ में कहा, "लगता है कि मेरी किस्मत में यह नहीं लिखा है... आपके माता-पिता मुझे अपने परिवार में नहीं लेना चाहते। भगवान को जो मंज़ूर है, वही हो! भगवान हमसे ज्यादा अच्छी तरह यह जानता है कि हमारे लिये क्या अच्छा है। हो ही क्या सकता है प्योतर अन्द्रेइच, कम से कम आप सुखी रहें..." – "यह नहीं होगा!" उसका हाथ अपने हाथ में लेते हुए मैं चिल्ला उठा, "तुम मुझे प्यार करती हो, मैं हर चीज़ के लिये तैयार हूं। चलो, हम तुम्हारे माता-पिता के पांव पकड़ लेते हैं, वे सीधे-सादे लोग हैं, घमण्ड से उनके दिल कठोर नहीं हुए हैं... वे हमें आशीर्वाद दे देंगे, हम शादी कर लेंगे... बाद में, मुझे यकीन है कि कुछ वक्त बीतने पर हम मेरे पिता जी को भी मना लेंगे, मां हमारा पक्ष लेंगी और पिता जी मुझे क्षमा कर देंगे..." – "नहीं, प्योतर अन्द्रेइच," माशा ने जवाब दिया, "तुम्हारे माता-पिता के आशीर्वाद के बिना मैं तुमसे

शादी नहीं करूँगी। उनके आशीर्वाद के बिना तुम सुखी नहीं हो सकोगे। भगवान जैसे चाहता है हम वैसा ही मान लेते है। अगर आप मे किसी [illegible] मिल जाये या किसी दूसरी को प्यार करने लगो, तो भगवान तुम्हारा भला करे। मैं तुम दोनों के लिये प्रार्थना करूँगी ..." इतना कहकर वह रो पड़ी और चली गयी। मैंने उसके पीछे-पीछे कमरे में जाना चाहा किन्तु यह अनुभव किया कि अपनी भावनाओं को वश में करने में असमर्थ हूँ और इसलिये अपने यहां लौट आया।

मैं विचारों में गहरा डूबा हुआ था कि अचानक सावेलिच ने आकर मेरे ख्यालों में खलल डाल दिया। 'लो यह लो मालिक," उसने लिखा हुआ एक कागज मुझे देते हुए कहा, "इसे पढ़कर यह जान लो कि मैं अपने मालिक की निन्दा-चुगली करता हूँ और बेटे तथा पिता के बीच झगड़ा करवाना चाहता हूँ या नहीं।" मैंने उसके हाथ से कागज ले लिया। यह उसके द्वारा प्राप्त पत्र का उत्तर था। मैं उसे ज्यों का त्यों यहां दे रहा हूँ –

"माननीय अन्द्रेई पेत्रोविच,
मेरे कृपालु स्वामी!

आपका कृपापत्र मुझे मिला जिसमें आपने मुझ पर, अपने इस दास पर क्रोध प्रकट किया है कि आपका, अपने स्वामी का आदेश न मानने के लिये मुझे शर्म आनी चाहिये। किन्तु मैं, बूढ़ा कुत्ता नहीं, आपका सच्चा सेवक हूँ, स्वामी का आदेश मानता हूँ, सदा तन-मन से आपकी सेवा करता रहा हूँ और ऐसा करते हुए ही मेरे बाल सफेद हो गये हैं। प्योतर अन्द्रेइच के घाव के बारे में मैंने आपको कुछ नहीं लिखा, ताकि व्यर्थ आपको न डराऊं, अब यह सुनता हूँ कि हमारी स्वामिनी, हमारी माता जी अव्दोत्या वसील्येव्ना घबराहट के कारण बीमार पड गयी हैं और उनके स्वास्थ्य के लिये मैं भगवान का नाम जपूंगा। प्योतर अन्द्रेइच को दायें कंधे के नीचे छाती में हड्डी के बिल्कुल नीचे घाव लगा था, डेढ इंच गहरा था, वह दुर्गपति के घर में रहा, जहां हम उसे नदी-तट से लाये थे और स्थानीय नाई स्तेपान पारामोनोव ... भगवान की कृपा से प्योतर अन्द्रेइच

लिख ही नही सकता। सुना है, उसके अफ़सर उससे खुश हैं अ
वसिलीसा येगोरोव्ना उसे बेटे की तरह मानती है। उसके साथ अ
ऐसी अजीब बात हो गयी है, तो यह जवानी के लिये कोई अपम
नही—चार टांगे होने पर भी घोडा ठोकर खा जाता है। आपने
लिखने की भी कृपा की है कि मुझे सूअर चराने भेजेगे, तो यह अ
स्वामी जैसा चाहे, कर सकते हैं। दासवत आपको शीश नवाता

आपका निष्ठावान द
अर्खीप सावेल्येव

इस भले बूढ़े का पत्र पढते हुए मैं कई बार मुस्कराये बिना न
सका। पिता जी के पत्र का उत्तर देने लायक मेरी स्थिति नही
और माता जी के मन को शान्त करने के लिये मुझे सावेलिच का
काफी प्रतीत हुआ।

इस दिन से मेरी स्थिति मे परिवर्तन हो गया। मरीया इवानो
मेरे साथ लगभग नही बोलती थी और हर प्रकार मुझसे कन्नी का
का प्रयत्न करती थी। दुर्गपति के घर का मेरे लिये कोई आक
नही रहा। धीरे-धीरे मुझे अपने घर मे अकेले बैठने की आदत हो गय
वसिलीसा येगोरोव्ना ने शुरू मे ऐसा करने के लिये मुझे कुछ बुरा-भ
कहा, किन्तु मेरी ज़िद्द देखकर उन्होने मुझे मेरे हाल पर छोड दि
केवल फौजी काम-काज के सिलसिले मे ही मैं इवान कुज्मिच के
यदा-कदा जाता। श्वाबरिन से कभी-कभार और मन मारकर ही मिल
क्योकि उसमें अपने प्रति छिपे हुए शत्रुभाव को अनुभव करता जि
मेरे सन्देहो की पुष्टि होती। मेरा जीवन असह्य हो उठा। मैं उदासी
विचारो मे डूबा रहने लगा जो निठल्लेपन और एकाकीपन का
होते हैं। एकाकीपन मे मेरा प्यार दहक उठा और मेरे लिये अधिका
बोझिल बनने लगा। पुस्तकें पढने और कुछ रचने में मेरी
जाती रही। मेरे मन पर गहरी निराशा छा गयी। मुझे
लगता कि या तो मैं पागल हो जाऊगा या ऐय्याशी मे
जाऊगा। मेरे पूरे जीवन पर बहुत महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालनेव
अप्रत्याशित घटनाओ ने सहसा मेरी आत्मा को बहुत ज़ोर
और हितकर झटका दिया।

छठा अध्याय

पुगाचोव का दल-बल

> तुम सुनो ध्यान से युवा लोग
> हम बूढ़े तुम्हें सुनायें जो।
>
> गीत

इससे पहले कि मैं उन अजीब घटनाओं का वर्णन करूं, जिनका मैं साक्षी बना, मुझे उस स्थिति के बारे में कुछ शब्द कहने होंगे जो १७७३ के अन्त में ओरेनबुर्ग के गुबेर्निया में थी।

इस विशाल और समृद्ध गुबेर्निया में अनेक अर्ध-सभ्य जातियां रहती थीं जिन्होंने कुछ ही समय पहले रूसी ज़ारों की सत्ता स्वीकार की थी। उनके जब-तब विद्रोह करने, कानून-कायदे और सभ्य जीवन के अभ्यस्त न हो पाने तथा उनकी सनकों और क्रूरता के कारण सरकार को उन्हें अपने अधीन रखने के लिये उन पर लगातार कड़ी नज़र रखनी पड़ती थी। सुविधाजनक माने जानेवाले स्थानों पर, जहां एक ज़माने में याइक नदी-तटों पर बसे हुए अधिकतर कज़्ज़ाक लोग ही रहते थे, गढ़-गढ़ियां बनाई गयी थीं। किन्तु यही याइक कज़्ज़ाक, जिन पर इस सारे क्षेत्र की शान्ति और सुरक्षा को बनाये रखने की ज़िम्मेदारी थी, पिछले कुछ समय से सरकार के लिये बेचैनी का कारण बन गये थे, खतरनाक लोग हो गये थे। १७७२ में उनके प्रमुख नगर में विद्रोह हुआ। इसका कारण वे कठोर कदम थे, जो मेजर-जनरल त्राउबेन्बेर्ग ने फ़ौजों को पूरी तरह अपने अधीन करने के लिये उठाये थे। इसका नतीजा हुआ था त्राउबेन्बेर्ग की निर्दयतापूर्ण हत्या, प्रशासन में मनमाने परिवर्तन। अन्त में बड़ा दमन-चक्र चलाकर तथा कड़ी सज़ायें देकर इस विद्रोह को कुचला गया।

ये सारी घटनायें मेरे बेलोगोर्स्क के दुर्ग में आने से कुछ समय पहले घटीं। सब कुछ शान्त हो चुका था या कम से कम ऐसा प्रतीत होता था। अधिकारियों ने मक्कार विद्रोहियों के बनावटी पश्चाताप

की आग छिपाये हुए फिर से गडबड़ शुरू करने के लिये अच्छे मौके के इन्तज़ार मे थे।

तो मैं अपनी कहानी की ओर लौटता हूं।

एक शाम को (यह १७७३ के अक्तूबर महीने के आरम्भ की बात है) मैं घर मे अकेला बैठा हुआ पतझर की हवा की चीख-चिल्लाहट सुन रहा था और खिडकी मे से चाद के पास से भागे जा रहे बादलो को देख रहा था। इसी समय दुर्गपति ने मुझे बुलवा भेजा। मैं फौरन गया। दुर्गपति के यहा श्वावरिन, इवान इग्नातिच और कज़्ज़ाक सार्जेंट पहले से ही मौजूद थे। कमरे मे न तो वसिलीसा येगोरोव्ना थी और न ही मरीया इवानोव्ना। दुर्गपति ने कुछ परेशानी जाहिर करते हुए मेरा अभिवादन किया। उन्होंने दरवाजे को ताला लगाकर बन्द किया, सार्जेंट के सिवा, जो दरवाज़े के पास खडा था, हम सभी को बिठाया और जेब मे एक कागज़ निकालकर हम सभी को सम्बोधित करते हुए कहा, "महानुभावो, बडा महत्त्वपूर्ण समाचार है! जनरल साहब ने जो लिखा है, उसे सुनिये।" इतना कहकर उन्होंने चश्मा चढा लिया और यह पढा –

"बेलोगोर्स्क के दुर्गपति श्रीमान कप्तान मिरोनोव को।

सर्वथा गुप्त।

इसके द्वारा आपको सूचित करता हू कि जेल से भाग जानेवाले दोन तटवर्ती कज़्ज़ाक और विधर्मी येमेल्यान पुगाचोव ने, जिसने दिवगत सम्राट पीटर तृतीय का नाम धारण करने की अक्षम्य धृष्टता की है, चोर-उचक्को का एक गिरोह जमा करके याइक गावो मे गडबडी पैदा की है, कुछ दुर्गों पर अधिकार करके उन्हे नष्ट कर दिया है, सभी जगह लूट-मार और हत्याये की हैं। अत यह पत्र पाते ही आप, श्रीमान कप्तान, उल्लिखित दुष्ट और झूठे दावेदार के विरुद्ध आवश्यक उपाय करे और यदि वह आपके अधीन दुर्ग पर आक्रमण करे, तो सभव होने पर उसे पूर्णत नष्ट कर डाले।"

"आवश्यक उपाय करे।" दुर्गपति ने चश्मा उतारते और कागज को तह करते हुए कहा। "यह कह देना बडा आसान है। वह दुष्ट तो स्पष्टत काफी शक्तिशाली है और हमारे पास ...

छोड़कर, जिन पर बहुत भरोसा नहीं किया जा सकता, तुम्हारी भर्त्सना नहीं कर रहा हूं, मक्सीमिच (सार्जेंट व्यग्यपूर्वक मुस्करा दिया), कुल एक सौ तीस सैनिक हैं। किन्तु हमारे सामने और कोई मार्ग नहीं है, महानुभावो! अच्छी तरह अपनी ड्यूटी बजायें, सन्तरी और गश्त के पहरेदार तैनात कर दें। आक्रमण होने पर फाटक बन्द कर लें और सैनिकों को मैदान में ले आयें। मक्सीमिच, तुम अपने कज़ाकों पर कड़ी नजर रखो। तोप की खूब जांच-पड़ताल करके अच्छी तरह से साफ करवा लिया जाये। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस सारी चीज को गुप्त रखा जाये, ताकि दुर्ग में किसी को भी समय से पहले इसकी कानों कान खबर न मिले।"

ऐसे आदेश देने के बाद इवान कुज़्मिच ने हम लोगों से जाने को कहा। हमने जो कुछ सुना था, मैं उसी पर विचार करता हुआ श्वाब्रिन के साथ बाहर निकला। "तुम्हारे ख्याल से क्या अन्त होगा इसका?" मैंने उससे पूछा। "भगवान जाने," उसने उत्तर दिया, "देखा जायेगा। फिलहाल तो कोई खास बात नजर नहीं आती। अगर..." इतना कहकर वह सोच में डूब गया और खोया-खोया सा एक फ्रांसीसी प्रेम-गीत की धुन पर सीटी बजाने लगा।

हमारी पूरी सावधानी के बावजूद पुगाचोव के प्रकट होने की बात सारे दुर्ग में फैल गयी। इवान कुज़्मिच अपनी पत्नी का यद्यपि बहुत आदर करते थे, तथापि फौजी नौकरी के सिलसिले में उन्हें सौंपे गये राज़ को किसी भी हालत में अपनी बीवी को नहीं बताते थे। जनरल का खत मिलने पर उन्होंने बड़ी चालाकी से यह कहकर पत्नी को पादरी गेरासिम के यहां भेज दिया मानो पादरी के पास ओरेनबुर्ग से कोई अनूठी खबर आयी है जिसे वह बड़े राज़ की तरह छिपाये हैं। वसिलीसा येगोरोव्ना उसी समय पादरी की बीवी के पास जाने को तैयार हो गयी और इवान कुज़्मिच की सलाह के मुताबिक माशा को भी अपने साथ ले गयी, ताकि उसे अकेली रहने पर ऊब महसूस न हो।

घर का एकच्छत्र स्वामी रह जाने पर इवान कुज़्मिच ने हम सभी को फौरन बुलवा भेजा और पालाश्का को कोठरी में बन्द कर दिया, ताकि वह हमारी बातचीत न सुन सके।

वसिलीसा येगोरोव्ना पादरी की बीवी से कोई भी खबर हासिल किये बिना घर लौटी और उन्हे पता चला कि उनकी अनुपस्थिति मे इवान कुज्मिच के यहा बैठक हुई तथा पालाश्का को ताला लगाकर कोठरी मे बन्द कर दिया गया था। उन्हे फौरन यह सूझ गया कि पति ने उन्हे धोखा दिया है और वे कुरेद-कुरेदकर उनसे सवाल पूछने लगी। किन्तु इवान कुज्मिच ने अपने को पत्नी के ऐसे प्रश्न-प्रहार के लिये तैयार कर लिया था। तनिक भी घबराये बिना उन्होने बडी प्रफुल्लता से अपनी जीवन-संगिनी के प्रश्नो के उत्तर दिये, "सुनो तो, हमारी औरतो के दिमागो मे फूस से चूल्हे जलाने की बात समा गई है और चूकि इससे कोई मुसीबत हो सकती है, इसलिये मैंने यह कडा आदेश दे दिया है कि वे घास-फूस से नही, बल्कि सूखी टहनियो और झाड-झखाड से ही चूल्हे जलाये।' – "मगर तुमने पालाश्का को ताला लगाकर कोठरी मे क्यो बन्द किया?' बीवी ने पूछा। "किसलिये बेचारी नौकरानी हमारे लौटने तक कोठरी मे बैठी रही?" इवान कुज्मिच ऐसे सवाल के लिये तैयार नही थे, गडबडा गये और उन्होंने बहुत ही अटपटा-सा जवाब दे दिया। वसिलीसा येगोरोव्ना अपने पति की मक्कारी को समझ गयीं, किन्तु यह जानते हुए कि उनसे कुछ भी नही उगलवा सकेगी, उन्होंने अपने सवाल करने बन्द कर दिये और खीरो के अचार की चर्चा करने लगी जिसे अकुलीना पम्फीलोव्ना एक खास ही ढग से तैयार करती थी। वसिलीसा येगोरोव्ना को सारी रात नीद नही आई और वे किसी भी तरह इस बात का अनुमान नही लगा पाई कि उनके पति के दिमाग मे ऐसी क्या चीज़ थी जिसके बारे में उनके लिये जानकारी पाना अनुचित था।

अगले दिन सुबह की प्रार्थना के बाद गिरजाघर से लौटते हुए उनकी इवान इग्नातिच पर नज़र पडी, जो तोप के मुह मे से बच्चो द्वारा ठूसे गये चिथड़े, कंकड़-पत्थर, चैलियां और हड्डियां आदि निकाल रहा था। "युद्ध की ऐसी तैयारियों का क्या अर्थ हो सकता है?" वसिलीसा येगोरोव्ना सोचने लगी, "कही किर्गीज़ियो के हमले का तो अन्देशा नही है? क्या इवान कुज्मिच मुझसे ऐसी मामूली-सी बात छिपायेगा?" उन्होंने अपने नारी-हृदय को व्यथित करनेवाले रहस्य को इवान इग्नातिच से जानने का पक्का इरादा बनाकर उसे पुकारा।

वसिलीसा येगोरोव्ना ने उस न्यायाधीश की भांति, जो शुरू में उत्तर देनेवाले से उसे असावधान बनाने के लिये इधर-उधर के सवाल पूछता है, घरेलू कामकाज के बारे में कुछ टीका-टिप्पणियां कीं। इसके पश्चात कुछ मिनट तक चुप रहने के बाद गहरी सांस ली और सिर हिलाते हुए बोली –

"हे भगवान! खबर तो कैसी है! क्या होगा अब?"

"कोई चिन्ता न करें आप!" इवान इग्नातिच ने उत्तर दिया। "भगवान की दया चाहिये – हमारे पास बहुत सैनिक हैं, बारूद की कुछ कमी नहीं और तोप मैंने साफ कर दी है। पुगाचोव के दांत खट्टे कर ही देंगे। भगवान की कृपादृष्टि रही तो कुछ नहीं बनेगा उसका!"

"यह पुगाचोव है कौन?" वसिलीसा येगोरोव्ना ने पूछा।

इवान इग्नातिच की समझ में अब यह आया कि उसने भंडाफोड़ कर दिया है और फौरन चुप हो गया। किन्तु देर हो चुकी थी। वसिलीसा येगोरोव्ना ने उसे यह वचन देकर कि किसी को कुछ नहीं बतायेगी, उससे सारी बात जान ली।

वसिलीसा येगोरोव्ना ने अपना वचन निभाया और पादरी की पत्नी के अतिरिक्त किसी से भी एक शब्द नहीं कहा। पादरी की पत्नी से भी उन्होंने केवल इसलिये इसकी चर्चा की कि उसकी गाय अभी वहीं स्तेपी में चर रही थी और उचक्कों के हत्थे चढ़ सकती थी।

शीघ्र ही सभी पुगाचोव की चर्चा करने लगे। उसके बारे में तरह-तरह की बातें होने लगीं। दुर्गपति ने सार्जेंट को आस-पास के गांवों और दुर्गों से अधिकतम जानकारी हासिल करने के लिये भेजा। सार्जेंट ने दो दिन बाद लौटकर यह बतलाया कि दुर्ग से लगभग साठ वेर्स्ता की दूरी पर उसने बेशुमार अलाव जलते देखे और बश्कीरियों से यह सुना कि सेनाओं का कोई बहुत बड़ा दल-बादल उमड़ा आ रहा है। वैसे वह निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता था, क्योंकि आगे जाते हुए उसे डर महसूस हुआ था।

दुर्ग के कज़ाकों के बीच असाधारण उत्तेजना दिखाई देती थी। वे सभी दल बनाकर गलियों में जमा होते, आपस में खुसर-फुसर करते और किसी घुड़सवार या दुर्ग के सैनिक को देखकर इधर-उधर खिसक जाते। उनके बीच जासूसों को भेजा गया। काल्मीक जाति के ईसाई

धर्म ग्रहण कर लेनेवाले युलाई ने दुर्गपति को महत्त्वपूर्ण सूचना दी। युलाई के मतानुसार सार्जेंट ने गलत खबरें दी थी। धूर्त कज्ज़ाक ने लौटने पर अपने साथियों से यह कहा था कि वह विद्रोहियों के पास हो आया है, उनके सरदार से मिला है जिसने उसे अपना हाथ चूमने दिया और वह देर तक उससे बाते करता रहा। दुर्गपति ने सार्जेंट को फौरन पहरे मे रख दिया और उसकी जगह युलाई की नियुक्ति कर दी। कज्ज़ाकों को यह समाचार स्पष्टत बहुत बुरा लगा। उन्होंने ऊंचे-ऊंचे अपना गुस्सा जाहिर किया और दुर्गपति के आदेशों को पूरा करते हुए इवान इग्नातिच ने खुद अपने कानों से उन्हें यह कहते सुना, "अब जल्द ही तुम्हारी बारी आनेवाली है दुर्ग के चूहे!" दुर्गपति ने उसी दिन हिरासत मे लिये गये सार्जेंट से पूछताछ करनी चाही, मगर वह सम्भवत अपने हमख्यालों की मदद से भाग निकला था।

एक नई परिस्थिति से दुर्गपति की चिन्ता और बढ गयी। उकसाने-भडकानेवाले इश्तिहारों के साथ एक बश्कीरी पकडा गया था। इस मामले को लेकर दुर्गपति ने फिर से अपने अफसरों की बैठक बुलानी चाही और इसीलिये कोई अच्छा-सा बहाना बनाकर अपनी बीवी को फिर से कही भेज देना चाहा। किन्तु इवान कुज़्मिच चूंकि बहुत ही सीधे-सरल, सच्चे और ईमानदार आदमी थे, इसलिये उन्हे पहले भी उपयोग मे लाये गये उपाय के अतिरिक्त और कुछ नही सूझा।

"सुनो तो, वसिलीसा येगोरोव्ना," उन्होंने खासते हुए बीवी से कहा, "सुनने मे आया है कि फादर गेरासिम को शहर से " – "बस, काफी झूठ बोल लिया, इवान कुज़्मिच," बीवी ने उन्हें बीच मे ही टोक दिया, "मतलब यह है कि तुम फिर से अफसरों की बैठक बुलाना और मेरे बिना येमेल्यान पुगाचोव के बारे मे सोच-विचार करना चाहते हो। लेकिन इस बार तुम्हारी दाल नहीं गलेगी।" इवान कुज़्मिच आखे फाड-फाडकर देखते रह गये। "अगर तुम्हे सब कुछ मालूम ही है," उन्होंने कहा, "तो कृपया यहीं रहो, हम तुम्हारे सामने ही सोच-विचार कर लेगे।" – "यह हुई अक्ल की बात," पत्नी ने जवाब दिया, "तुमसे चालाकी करते नही बनेगी, बुलाओ अफसरों को।"

हम फिर से एकत्रित हुए। इवान कुज़्मिच ने अपनी पत्नी की उपस्थिति मे पुगाचोव का आह्वान-पत्र पढा जो किसी अर्ध-शिक्षित

कज्जाक द्वारा लिखा गया था। उस लुटेरे ने बहुत जल्द ही हमारे दुर्ग पर आक्रमण करने के इरादे की घोषणा की थी, कज्जाकों और सैनिकों को अपने गिरोह में शामिल होने की दावत दी थी और कमाडरों को यह सलाह दी थी कि वे उसका विरोध न करें, अन्यथा उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जायेगा। यह आह्वान-पत्र भद्दे, किन्तु जोरदार शब्दों में लिखा हुआ था और साधारण लोगों पर उसका भयानक प्रभाव होना चाहिये था।

"कैसा बदमाश है!" दुर्गपति की बीवी ने कहा। "हमें ऐसी सलाह देने की भी जुर्रत करता है! उसका स्वागत करें और उसके पैरों पर भण्डा रख दें! कुत्ते का पिल्ला! क्या वह यह नहीं जानता कि चालीस साल से हम फौजी नौकरी कर रहे हैं और भगवान की कृपा से बहुत कुछ देख-भाल चुके हैं? क्या ऐसे कमांडर भी होंगे जो इस उठाईगीरे की बातों पर कान देंगे?"

"ऐसे कमाडर तो शायद ही होंगे," इवान कुज्मिच ने उत्तर दिया। "मगर सुना है कि उस दुष्ट ने कई दुर्गों पर अधिकार कर भी लिया है।"

"लगता है कि वह सचमुच शक्तिशाली है," श्वाबरिन ने राय जाहिर की।

"हम अभी उसकी असली शक्ति जान लेंगे," दुर्गपति ने कहा। "वसिलीसा येगोरोव्ना, मुझे खत्ती की चाबी दो। इवान इग्नातिच, उस बश्कीरी को यहा लाओ और युलाई से कोड़े लाने को कहो।"

"जरा रुको, इवान कुज्मिच," दुर्गपति की बीवी ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। "मैं माशा को घर से कहीं बाहर ले जाती हूं वरना चीख-चिल्लाहट सुनकर वह डर जायेगी। और सच बात तो यह है कि इस तरह की जाच-पड़ताल में मुझे खुद भी कोई दिलचस्पी नहीं है। तो मैं चली।"

पुराने वक्तों में कानूनी मामलों में यातना देने की प्रथा ने इतनी गहरी जड़ जमा रखी थी कि इसे खत्म करने का कल्याणकारी आदेश बहुत समय तक कागजी कार्रवाई ही बना रहा। ऐसा सोचा जाता था कि अपराधी के अपराध का पूरी तरह भण्डाफोड़ करने के लिये यह जरूरी है कि वह स्वयं उसे स्वीकार करे। यह विचार न केवल निराधार,

बल्कि विवेकपूर्ण कानूनी तर्क-वितर्क के बिल्कुल विरुद्ध भी था। कारण कि यदि अपराधी न होने का प्रमाण नहीं माना जाता, तो उसका उसे स्वीकार कर लेना उसके अपराधी होने का और भी कम प्रमाण होना चाहिये। पुराने न्यायाधीश तो अब भी कभी-कभी इस बात के लिये खेद प्रकट करते सुनाई देते है कि इस बर्बर परम्परा का अन्त कर दिया गया। हमारे समय में न तो न्यायाधीशों और न अभियुक्तों को ही यातना देने की आवश्यकता के बारे में कोई सन्देह था। इसलिये दुर्गपति के आदेश से हम में से किसी को न तो हैरानी और न परेशानी ही हुई। इवान इग्नातिच बश्कीरी को लाने चला गया जो खत्ती में बन्द था और जिसकी चाबी दुर्गपति की बीवी के पास थी। कुछ मिनट बाद बन्दी को ड्योढ़ी में लाया गया। दुर्गपति ने उसे अपने सामने पेश करने का आदेश दिया।

बश्कीरी ने बड़ी मुश्किल से दहलीज़ लांघी (उसके पैरों में बेड़ी थी) और अपनी ऊंची टोपी उतारकर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। मैं उसे देखकर कांप उठा। इस आदमी को मैं कभी नहीं भूल सकूंगा। वह कोई सत्तर साल का लग रहा था। उसकी न तो नाक थी और न कान ही। उसका सिर मुंडा हुआ था, दाढ़ी की जगह कुछ सफेद बाल लटक रहे थे। वह नाटा और दुबला-पतला था तथा उसकी पीठ कुछ झुकी हुई थी, किन्तु उसकी छोटी-छोटी आंखों में अभी भी चिंगारी की चमक थी।

"अरे!" उसकी भयानक निशानियों से १७४१ के विद्रोह* के लिये दण्डप्राप्त एक अपराधी को पहचानकर दुर्गपति ने कहा। "देख रहा हूं कि पुराने भेड़िये हो, हमारे जाल में पहले भी फंस चुके हो। तुम्हारे सिर पर जिस तरह रंदा फिरा है, उससे पता चलता है कि तुम पहली बार विद्रोह नहीं कर रहे हो। ज़रा नज़दीक आकर बताओ कि किसने तुम्हें यहां भेजा है?"

बूढ़ा बश्कीरी चुप रहकर खाली-खाली आंखों से दुर्गपति को ताकता रहा।

"तुम बोलते क्यों नहीं?" इवान कुज़्मिच ने पूछना जारी रखा।

---

* १७४१ में बश्कीरिया के विद्रोह से अभिप्राय है जिसे ज़ारशाही सरकार ने निर्दयता से कुचल दिया था। —स०

या फिर तुम अभी नहीं समझे? युलाई, तुम इससे अपनी भाषा में पूछो कि किसने उसे हमारे दुर्ग में भेजा है?"

युलाई ने तातारी भाषा में इवान कुज्मिच का प्रश्न दोहराया किन्तु बश्कीरी पहले जैसी मुद्रा बनाये ताकता रहा और उसने उत्तर में एक भी शब्द नहीं कहा।

"यावशी*," दुर्गपति ने कहा, "अभी तुम्हारी ज़बान खुल जायेगी। तो सैनिको! इसका यह बेहूदा धारीदार चोगा उतारकर इसकी पीठ की चमड़ी उधेड़ो। युलाई, देखो, अच्छी तरह से!"

दो पगु सैनिक बश्कीरी के कपड़े उतारने लगे। उस किस्मत के मारे के चेहरे पर घबराहट झलक उठी। उसने बच्चों द्वारा पकड़ लिये गये जानवर की तरह सभी ओर नज़र दौड़ाई। जब एक पगु ने उसके दोनों हाथ पकड़े और उन्हें अपनी गर्दन के पास टिकाकर बूढ़े को अपने कंधों पर ऊपर उठाया और युलाई ने कोड़ा ऊपर उठाया, तो बश्कीरी धीमी-सी तथा मिन्नत करती आवाज़ से कराह उठा तथा सिर झुकाकर उसने मुंह खोल दिया जिसमें ज़बान की जगह उसका छोटा-सा टुकड़ा हिल रहा था।

मैं जब यह याद करता हूं कि हमारे ही समय में ऐसा हुआ था और मैं सम्राट अलेक्सान्द्र के विनयशील शासन** के समय तक जीवित हूं, तो मैं द्रुत गति से शिक्षा की सफलता और मानव-प्रेम के नियमों के प्रचार-प्रसार से आश्चर्य चकित हुए बिना नहीं रह सकता। नौजवान! यदि मेरी टिप्पणियां तुम्हारे हाथों में आ जायें, तो याद रखना कि वही परिवर्तन सबसे अच्छे और पक्के होते हैं जो किसी भी प्रकार की हिंसा-पूर्ण उथल-पुथल के बिना नैतिकता के सुधार द्वारा किये जाते हैं।

हम सभी स्तम्भित रह गये।

"तो," दुर्गपति ने कहा, "स्पष्ट है कि हम इससे कुछ नहीं

---

* अच्छा। – अनु०

** "विनयशील शासन" में निहित व्यंग्य तब स्पष्ट हो जाता है, जब हम पुश्किन द्वारा एक पद में दिये गये वर्णन को स्मरण करते हैं जिसमें उसे "दुर्बल और कपटी शासक... एक गंजा छैला... भाग्य की से ख्याति के मज़े लूटनेवाला काहिल" कहा गया है। – अनु०

किमलिये भरोसे का नही है? भगवान की दया से इसमे रहते हुए हमारा बाईसवा साल चल रहा है। हमने बश्कीरी भी देखे और किर्गीज भी। पुगाचोव से भी निपट लेगे!"

"अच्छी बात है," इवान कुज़िमच ने उत्तर दिया, "अगर तुम्हें हमारे दुर्ग पर भरोसा है, तो यहीं रहो। मगर माशा के बारे में ज़रूर कुछ सोचना चाहिये। अगर हम बच गये या कुमक आ गयी, तब तो अच्छा है। लेकिन अगर दुष्टों ने दुर्ग पर अधिकार कर ही लिया, तब?"

"तब " इतना कहकर वसिलीसा येगोरोव्ना हकलाई और बहुत ही परेशानी जाहिर करते हुए खामोश हो गयी।

"नही, वसिलीसा येगोरोव्ना," दुर्गपति ने यह देखकर कि शायद जिन्दगी मे पहली बार उनके शब्दो का असर हुआ है अपनी बात जारी रखी। "माशा का यहा रहना ठीक नही होगा। उसे ओरेनबुर्ग में उसकी धर्म-माता के पास भेज देते हैं – वहा सेनाये और तोपें भी काफ़ी हैं और दीवार भी पत्थर की है। तुम्हें भी वहीं जाने की सलाह दूगा – तुम बूढी औरत हो और अगर उन्होंने दुर्ग पर अधिकार कर ही लिया, तो सोचो कि तुम्हारा क्या होगा।"

"अच्छी बात है," दुर्गपति की बीवी ने कहा, "ऐसा ही सही, हम माशा को भेज देगे। मुझसे तो स्वप्न में भी ऐसी आशा नहीं करना – हरगिज़ नही जाऊगी। बुढ़ापे में मैं तुमसे अलग होकर किसी अजनबी जगह पर अपनी अकेली की कब्र बनवाऊ, यह नहीं होने का। एकसाथ जिये हैं, एकसाथ मरेंगे।"

"तो तय हो गया," दुर्गपति ने कहा। "लेकिन देर नहीं करो। माशा के लिये सफ़र की तैयारी कर दो। उसे कल तड़के ही रवाना कर देंगे, रक्षक-दस्ता भी साथ दे देंगे, यद्यपि हमारे पास फालतू लोग बिल्कुल नहीं हैं। लेकिन माशा है कहा?"

"अकुलीना पाम्फ़ीलोव्ना के यहा," दुर्गपति की बीवी ने जवाब दिया। उसने जैसे ही निज्नेओज़ेर्नाया दुर्ग पर कब्ज़ा हो जाने की बात सुनी, उसे ग़श आ गया। मुझे डर है कि कहीं बीमार न हो गयी हो। हे भगवान, कैसे दिन देखने के लिये ज़िन्दा रह गये हम!"

वसिलीसा येगोरोव्ना बेटी के जाने की तैयारी करने चली गयी।

दुर्गानि के यहां बातचीत जारी रही, मगर मैंने उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया और न कुछ सुना ही। मरीया इवानोव्ना शाम के भोजन के समय आई, पीला, उदास चेहरा लिये हुए। हमने मौन साधे रहकर ही खाना खाया, हर दिन की तुलना में मेज पर से जल्दी उठे और दुर्गानि के परिवार से विदा लेकर अपने-अपने घर को चल दिये। मैंने जान-बूझकर अपनी तलवार वहीं छोड़ दी और उसे लेने के लिये वापस आया। मुझे ऐसी पूर्वानुभूति हो रही थी कि मरीया इवानोव्ना वहां मुझे अकेली ही मिलेगी। वास्तव में ऐसा ही हुआ। वह दरवाजे पर ही मुझसे मिली और उसने मेरी तलवार मुझे सौंप दी। "तो विदा प्योतर अन्द्रेइच!" उसने आंसू बहाते हुए मुझसे कहा। "मुझे ओरेनबुर्ग भेजा जा रहा है। आप जिन्दा और खुशी रहें। हो सकता है कि भगवान की कृपा से हमारी फिर कभी भेंट हो जाये, अगर ऐसा न हो, तो..." इतना कहकर वह सिसकने लगी। मैंने उसे अपनी बांहों में भर लिया।

"विदा, मेरी जान," मैंने कहा, "विदा, मेरी प्यारी, मेरे दिल की रानी! मेरे साथ चाहे कुछ भी क्यों न गुजरे, यह विश्वास रखना कि अन्तिम सांस लेते हुए मैं तुम्हारे ही बारे में सोचूंगा और तुम्हारे लिये ही प्रार्थना करूंगा!" मेरी छाती से चिपकी हुई माशा सिसक रही थी। मैंने बहुत ही भाव-विह्वल होकर उसे चूमा और झटपट कमरे से बाहर चला गया।

सातवां अध्याय

आक्रमण

फिर बैठे, हो फिर बैठे [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

इस रात को मैं न तो सोया और न मैंने कपड़े ही उतारे। मेरा यह इरादा था कि पौ फटते ही दुर्ग के फाटक पर चला जाऊंगा, जहां मरीया इवानोव्ना को ओरेनबुर्ग के लिये जाना था, और वहां उससे अन्तिम बार विदा ले सकूंगा। मैं अपनी आत्मा में बहुत बड़ा परिवर्तन अनुभव कर रहा था – अपनी आत्मा की उत्तेजना मुझे उस उदासी की तुलना में कहीं कम बोझिल अनुभव हो रही थी जिसमें मैं कुछ समय पहले डूबा रहा था। बिछोह-वेदना के साथ-साथ मेरे भीतर अभी तक अस्पष्ट, किन्तु मधुर आशायें, खतरे की विह्वलतापूर्ण प्रत्याशा और उदात्त महत्त्वाकांक्षा की भावनाएं घुल-मिल गयी थीं। रात कब गुजर गयी, इसका पता भी नहीं चला। मैं घर से बाहर निकलने ही वाला था कि मेरा दरवाजा खुला और दफ़ादार ने मुझे यह सूचना दी कि हमारे कज़्ज़ाक रात के वक्त दुर्ग से भाग गये, युलाई को ज़बर्दस्ती अपने साथ ले गये और यह कि अजनबी घुड़सवार दुर्ग के आस-पास घूमते दिखाई देते हैं। इस ख्याल से मेरा दिल बैठ गया कि मरीया इवानोव्ना दुर्ग से नहीं जा पायेगी। मैंने दफ़ादार को जल्दी-जल्दी कुछ हिदायतें दीं और फौरन दुर्गपति की ओर भाग चला।

पौ फट रही थी। मैं गली में बहुत तेजी से कदम बढ़ाता जा रहा था कि किसी को अपना नाम पुकारते सुना। मैं रुका। "कहां जा रहे हैं आप?" इवान इग्नातिच ने मेरे करीब आकर पूछा। "इवान कुज़्मिच दुर्ग-प्राचीर पर हैं और मुझे आपको बुला लाने के लिये भेजा है। पुगाचोव आ गया है।" – "मरीया इवानोव्ना चली गयी या नहीं?" मैंने धड़कते दिल से पूछा। "नहीं जा पायी," इवान इग्नातिच ने उत्तर में कहा, "ओरेनबुर्ग का रास्ता काट दिया गया है और दुर्ग घेरे में है। हालत अच्छी नहीं है, प्योतर अन्द्रेइच!"

हम दुर्ग-प्राचीर पर गये। यह प्रकृति द्वारा बनायी गयी ऊंची जगह थी और इसे बाड़ से मज़बूत कर दिया गया था। सारे दुर्गवासी वहां जमा थे। सैनिक बन्दूकें लिये तैयार खड़े थे। तोप को पिछली शाम

ही वहां पहुंचा दिया गया था। दुर्गपति मिरोनोव अपने थोड़े से सैनिकों के सामने इधर-उधर आ-जा रहे थे। खतरे की निकटता से पुराने योद्धा में असाधारण स्फूर्ति आ गयी थी। दुर्ग से कुछ ही दूर कोई बीसेक घुड़सवार स्तेपी में आते दिखाई दे रहे थे। वे कज़ाक प्रतीत होते थे, किन्तु उनके बीच बश्कीरी भी थे जिन्हें उनकी वन-बिलाव की ऊनी टोपियों और तरकशों से आसानी से पहचाना जा सकता था। दुर्गपति अपनी फ़ौज के गिर्द चक्कर लगाते हुए कह रहे थे, "तो जवानो, आज हम सम्राज्ञी माता के लिये डटकर लड़ेंगे और सारी दुनिया को यह दिखा देंगे कि हम वीर और शपथ के प्रति निष्ठावान लोग हैं!" सैनिकों ने बहुत ज़ोर से अपना उत्साह प्रकट किया। श्वाबरिन मेरी बगल में खड़ा था और एकटक शत्रु को देख रहा था। स्तेपी में नज़र आनेवाले घुड़-सवार दुर्ग में हलचल देखकर एक जगह पर इकट्ठे हो गये और आपस में बातचीत करने लगे। दुर्गपति ने इवान इग्नातिच को आदेश दिया कि तोप का मुह उनकी ओर कर दे और उन्होंने स्वयं पलीते को आग लगाई। गोला भनभनाया और किसी को हानि पहुंचाये बिना उनके सिरों के ऊपर से गुज़र गया। घुड़सवार बिखर गये, उसी क्षण घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए नज़र से ओझल हो गये और स्तेपी निर्जन हो गयी।

इसी समय वसिलीसा येगोरोव्ना और उनके साथ माशा भी, जो मां से अलग नहीं रहना चाहती थी, यहां आ गयी। "तो?" दुर्गपति की बीवी ने पूछा, "लड़ाई कैसी चल रही है? दुश्मन कहां है?" – "दुश्मन दूर नहीं है," इवान कुज़्मिच ने जवाब दिया। "भगवान ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। क्यों, तुम्हें डर लग रहा है माशा?" – "नहीं, पापा," मरीया इवानोव्ना ने उत्तर दिया, "घर में अकेली रहने पर और ज़्यादा डर लगता है।" इतना कहकर उसने मेरी ओर देखा और किसी तरह से मुस्करा दी। यह याद आने पर कि पिछले दिन मुझे उसके हाथ से अपनी तलवार मिली थी, मेरा हाथ अनजाने ही उसकी मूठ पर चला गया मानो मैं अपनी प्यारी की रक्षा को तैयार हूं। मेरे दिल में जैसे आग-सी धधक रही थी। मैंने उसके रक्षक के रूप में अपनी कल्पना की। मैं यह प्रमाणित करने को बेचैन था कि उसके विश्वास के योग्य हूं और बड़ी बेसब्री से निर्णायक क्षण की प्रतीक्षा करने लगा।

इसी वक्त दुर्ग से कोई आध वेर्स्ता की दूरी पर फिर कुछ घुड़सवारों के नये दल दिखाई दिये और शीघ्र ही स्तेपी में बर्छियों तथा तीर-कमानों से लैस लोगों की बड़ी भीड़ जमा हो गयी। इनके बीच लाल अंगरखा पहने तथा हाथ में नंगी तलवार लिये एक व्यक्ति सफ़ेद घोड़े पर सवार था – यही पुगाचोव था। वह रुका, लोग उसके इर्द-गिर्द जमा हो गये और, जैसा कि स्पष्ट था, उसके आदेश पर चार व्यक्ति भीड़ से अलग होकर सरपट घोड़े दौड़ाते हुए दुर्ग के पास आ गये। हमने उनमें अपने गद्दारों को पहचान लिया। उनमें से एक अपनी टोपी के नीचे एक कागज़ दबाये था और दूसरे की बर्छी पर युलाई का सिर टंगा हुआ था जिसे उसने ज़ोर से झटका देकर बाड़ के ऊपर से हमारे पास फेंक दिया। बेचारे काल्मीक का सिर दुर्गपति के क़दमों पर आकर गिरा। गद्दारों ने चिल्लाकर कहा, "गोली नहीं चलाइये! हमारे महाराज के सामने आ जाइये। महाराज यहां हैं!"

"अभी चखाता हूं मैं तुम्हें मज़ा!" इवान कुज़्मिच चिल्लाये। "जवानो! चलाओ गोली!" हमारे सैनिकों ने गोलियों की बौछार की। ख़त लिये हुए कज़्ज़ाक काठी पर लड़खड़ाया और घोड़े से नीचे गिर गया, बाकी कज़्ज़ाक अपने घोड़ों को पीछे दौड़ा ले गये। मैंने मरीया इवानोव्ना की ओर देखा। ख़ून से लथपथ युलाई के सिर से चकित और गोलियां दगने की आवाज़ से डरी-सी हुई वह लगभग बेहोश लग रही थी। दुर्गपति ने दफ़ादार को बुलाया और उसे मृत कज़्ज़ाक के हाथ से कागज लाने का हुक्म दिया। दफ़ादार मैदान में गया और मरे हुए कज़्ज़ाक के घोड़े की लगाम थामे हुए लौटा। उसने पत्र दुर्गपति को दिया। इवान कुज़्मिच ने उसे मन ही मन पढ़ा और फिर फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। विद्रोहियों ने इसी बीच अपने को स्पष्टतः हमले के लिये तैयार कर लिया था। कुछ ही देर बाद गोलियां हमारे कानों के पास सनसनाने लगीं और कुछ तीर हमारे करीब धरती में और किलेबन्दी के बाड़ों में आकर धंस गये। "वसिलीसा येगोरोव्ना!" दुर्गपति ने कहा। "यहां औरतों का काम नहीं है, माशा को ले जाओ। देखती नहीं हो कि लड़की का दम निकला जा रहा है।"

गोलियों के कारण परास्त हुई वसिलीसा येगोरोव्ना ने स्तेपी की ओर देखा, जहां बहुत हलचल दिखाई दे रही थी। इसके बाद उन्होंने

पति को सम्बोधित करते हुए कहा, "इवान कुज्मिच, जीना-मरना तो भगवान के हाथ में है – माशा को आशीर्वाद दो। माशा, पिता के पास जाओ!"

उर्द चेहरा लिये और कांपती हुई माशा इवान कुज्मिच के पास गयी, घुटनों के बल हो गयी और उसने भुककर पिता को प्रणाम किया। बूढ़े दुर्गपति ने उसके ऊपर तीन बार सलीब का निशान बनाया, उसे उठाया और चूमने के बाद बदली हुई आवाज में उससे कहा, "सकुशल रहो, बेटी मेरी! भगवान का नाम लो – वह तुम्हारी मदद करेगा। अगर कोई भला आदमी मिल जाये, तो भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्बुद्धि दे। ऐसे ही जीना, जैसे मैं और तुम्हारी मा वसिलीसा येगोरोव्ना जिये हैं। तो विदा, माशा। वसिलीसा येगोरोव्ना, जल्दी से ले जाओ इसे।" (माशा पिता के गले से लगकर रो पड़ी।) "आओ, हम भी एक-दूसरे को चूम लें," दुर्गपति की बीवी ने रोते हुए कहा। "तो विदा, मेरे इवान कुज्मिच। अगर मैंने किसी तरह से तुम्हारा दिल दुखाया हो, तो क्षमा कर देना!" – "विदा, विदा, मेरी प्यारी!" अपनी बूढ़ी पत्नी को गले लगाकर दुर्गपति ने कहा। "बस, काफ़ी है! जाओ, घर जाओ, अगर समय मिल जाये, तो माशा को सराफ़ान* पहना देना।" दुर्गपति की पत्नी और बेटी चली गयीं। मैं मरीया इवानोव्ना को देखता जा रहा था – उसने मुड़कर मेरी ओर देखा और सिर भुकाकर विदा ली। इवान कुज्मिच ने अब हमारी ओर दृष्टि घुमाई और उनका ध्यान पूरी तरह से शत्रु पर केन्द्रित हो गया। घोड़ों पर सवार विद्रोही अपने सरदार को घेरे हुए थे और वे अचानक घोड़ों से नीचे उतरने लगे। "अब मज़बूती से डटे रहना," दुर्गपति ने कहा, "धावा बोला जायेगा..." इसी क्षण भयानक चीख़-चिल्लाहट सुनाई दी, विद्रोही तेज़ी से दुर्ग की ओर दौड़ने लगे। हमारी तोप में छर्रे भरे हुए थे। दुर्गपति ने विद्रोहियों को अधिक से अधिक निकट आ जाने दिया और फिर अचानक तोप दाग दी। छर्रे भीड़ के ठीक बीचोंबीच जाकर गिरे। विद्रोही दायें-बायें बिखरे और पीछे हटने लगे। सिर्फ़ उनका सरदार ही अकेला आगे खड़ा रहा... वह तलवार

---

* रूसी किसान औरतों की पोशाक। – अनु०

हिलाता हुआ बड़े जोश से उन्हें प्रेरित करता प्रतीत हो रहा था ... क्षण भर को शान्त होनेवाली चीख-पुकार फिर से सुनाई देने लगी। "तो जवानो," दुर्गपति ने कहा, "अब फाटक खोल दो और नगाड़े पर चोट लगाओ। जवानो! धावा बोलने के लिये मेरे पीछे-पीछे आगे बढ़ो!"

दुर्गपति, इवान इग्नातिच और मैं क्षण भर में ही दुर्ग की फसील के बाहर पहुंच गये, मगर दहशत में आई हुई दुर्ग-सेना टस से मस नहीं हुई। "तुम वहीं क्यों खड़े हो, जवानो?" इवान कुज्मिच ने चिल्लाकर कहा। "मरना है, तो मरना है—हम फौजियों का यही धर्म है!" इसी क्षण विद्रोही हम पर चढ़ आये और दुर्ग में घुस गये। नगाड़ा बन्द हो गया, दुर्ग-सेना ने हथियार डाल दिये। रेल-पेल में मुझे नीचे गिरा दिया गया, किन्तु मैं उठा और विद्रोहियों के साथ ही दुर्ग मे दाखिल हुआ। दुर्गपति, जिनके सिर पर चोट आई थी, बदमाशो की भीड़ से घिरे हुए थे जो उन्हें चाबिया देने को मजबूर कर रहे थे। मैं दुर्गपति की मदद करने के लिये लपका, किन्तु कुछ हट्टे-कट्टे कज्ज़ाको ने मुझे पकड़ लिया और यह कहते हुए "तो चखिये मज़ा हमारे महाराज की बात न मानने का!" मुझे कमरबन्दो से कस दिया। हमे गलियो मे से घसीटकर ले जाया गया। बस्ती के लोग नमक और रोटी लेकर घरो मे बाहर आ गये। गिरजाघर का घण्टा बजने लगा। सहसा भीड़ मे बहुत ऊचे यह सुनाई दिया कि महाराज चौक मे है और बंदियो के वहा लाये जाने तथा वफादारी की कसम खाने की राह देख रहे हैं। लोगो की भीड़ उस तरफ उमड़ पड़ी और हमे भी घसीटकर वही ले जाया गया।

पुगाचोव दुर्गपति के घर के ओसारे मे कुर्सी पर बैठा था। वह कज्ज़ाको के ढग का लाल अगरखा पहने था जिस पर गोटा लगा था। सुनहरी कलगी लगी सेबल की खाल की ऊची टोपी उसकी चमकती आखो पर खिची हुई थी। उसका चेहरा मुझे जाना-पहचाना प्रतीत हुआ। कज्ज़ाक मुखिया उसे घेरे हुए थे। फादर गेरासिम, जो काप रहा था और जिसके चेहरे पर हवाइया उड़ रही थी, हाथो मे सलीब थामे ओसारे के पास खड़ा था और ऐसा लगता था मानो कुछ समय बाद दी जानेवाली कुर्बानियो की माफी के लिये चुपचाप उसकी

प्रदान कर रहा था। चौक में जल्दी-जल्दी सूली बनाई जा रही थी। जब हम निकट पहुंचे, तो बश्कीरियो ने लोगों को खदेड दिया और हमें पुगाचोव के सामने पेश किया। घण्टा बजना बन्द हो गया और गहरी खामोशी छा गयी। "दुर्गपति कौन है?" नकली सम्राट ने पूछा। हमारे सार्जेंट ने भीड मे से आगे आकर इवान कुज़्मिच की तरफ इशारा किया। पुगाचोव ने कोप-दृष्टि से बूढे दुर्गपति की तरफ देखा और बोला, "मेरा, अपने सम्राट का विरोध करने की तुम्हे कैसे हिम्मत हुई?" घाव के कारण दुर्बल हुए दुर्गपति ने अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरी और दृढता से उत्तर दिया, "तुम मेरे लिये सम्राट नही, चोर-उचक्के और भूठे दावेदार हो, सुना तुमने।" पुगाचोव की गुस्से से भौहे चढ गयी और उसने सफेद रूमाल हिलाया। कई कज्ज़ाको ने बूढे कप्तान को पकड लिया और सूली के पास घसीट ले गये। अपग बश्कीरी, जिससे हमने एक दिन पहले पूछताछ की थी, सूली के शहतीर पर तैनात था। वह अपने हाथ मे रस्सी लिये था और एक मिनट बाद मैंने बेचारे इवान कुज़्मिच को सूली पर लटकते पाया। इसके बाद इवान इग्नातिच को पुगाचोव के सामने लाया गया। "मुझ सम्राट, प्योतर फ्योदोरोविच के सामने वफ़ादारी की क़सम खाओ!" पुगाचोव ने उससे कहा। "तुम हमारे लिये सम्राट नही हो," अपने कप्तान के शब्द दोहराते हुए इवान इग्नातिच ने उत्तर दिया। "चचा, तुम चोर-उचक्के और भूठे दावेदार हो!" पुगाचोव ने फिर से रूमाल हिलाया और बेचारा लेफ्टिनेंट अपने बूढे अफसर की बगल मे ही सूली पर लटक गया।

अब मेरी बारी थी। मन ही मन अपने भले साथियो के उत्तर दोहराने की तैयारी करते हुए मैं बडे साहस से पुगाचोव की ओर देख रहा था। इसी समय मैंने विद्रोही मुखियाओ के बीच कज्ज़ाको के ढग से बाल कटवाये और कज्ज़ाकों का अगरखा पहने श्वाबरिन को देखा और मुझे इतनी हैरानी हुई कि बयान से बाहर। उसने पुगाचोव के करीब आकर उसके कान मे कुछ शब्द कहे। "इसे सूली दे दो।" मेरी ओर देखे बिना ही पुगाचोव ने कहा। मेरी गर्दन मे फदा डाल दिया गया। मैं मन ही मन प्रार्थना और अपने सभी पापो का प्रायश्चित करता भगवान से यह अनुरोध करने लगा कि वह मेरे सभी प्रियजन की

तैयार करें। मुझे सूली के नीचे खींच ले गये। "डरो नहीं, डरो नहीं," मेरे हत्यारे बार-बार दोहराये जा रहे थे और वे शायद सचमुच ही मेरी हिम्मत बढ़ाना चाहते थे। अचानक मैंने किसी की यह चीख सुना - "रुक जाओ! दुष्टो! रुक जाओ!" जल्लाद रुक गये। देखता हूँ कि सावेलिच पुगाचोव के चरणों पर गिरा हुआ है। "प्यारे पिता!" बेचारा सावेलिच गिड़गिड़ा रहा था। "मेरे स्वामी के इस बच्चे की जान लेकर तुम्हें क्या मिलेगा? इसे छोड़ दो, इसके बदले में तुम्हें फिरौती मिल जायेगी और लोगों के सामने मिसाल पेश करने तथा दहशत पैदा करने के लिये अगर चाहो तो मुझ बूढ़े को सूली दे सकते हो।" पुगाचोव ने इशारा किया और मुझे उसी समय फौरन छोड़ दिया गया। "हमारे महाराज आपकी जान बख्शते हैं," मुझसे कहा गया। यह नहीं कह सकता कि अपनी जान बच जाने से मुझे खुशी हुई या नहीं, किन्तु यह भी नहीं कह सकता कि मुझे इसका अफसोस हुआ। बहुत ही धुंधली-धुंधली-सी भावनायें आ रही थीं उस वक्त मेरे दिल-दिमाग में। मुझे फिर से उस नकली सम्राट के सामने लाया गया और घुटनों के बल होने को विवश किया गया। पुगाचोव ने उभरी हुई नसोंवाला हाथ मेरी ओर बढ़ाया। "चूमो, हाथ को चूमो!" मुझे अपने आस-पास से आवाजें सुनाई दीं। किन्तु ऐसे नीचतापूर्ण अपमान की तुलना में मैंने बड़े से बड़े दण्ड को बेहतर माना होता। "भैया, प्योतर अन्द्रेइच!" मेरे पीछे खड़ा और मुझे आगे की ओर धकियाता हुआ सावेलिच फुसफुसाया, "ज़िद नहीं करो! तुम्हारा इसमें क्या जाता है? थूको और चूम लो नीच (छि!) मेरा मतलब उसका हाथ चूम लो।" मैं टस से मस नहीं हुआ। पुगाचोव ने व्यंग्यपूर्वक यह कहते हुए हाथ नीचे कर लिया - "लगता है कि जनाब का खुशी के मारे दिमाग ठिकाने नहीं रहा। इसे उठाकर खड़ा कर दीजिये।" मुझे खड़ा किया गया और मुक्त छोड़ दिया गया। मैं आगे जारी रहनेवाले इस भयानक तमाशे को देखता रहा।

दुर्गवासी वफ़ादारी की क़सम खाने लगे। वे बारी-बारी से आते, सलीब को चूमते और फिर उस नकली सम्राट के सामने सिर झुकाते। दुर्ग के सैनिक भी वहीं खड़े थे। अपनी कुंठित कैंची लिये हुए दुर्ग का दर्जी

उनकी चोटिया काट रहा था। अपने को झटककर वे पुगाचोव का हाथ चूमते जो उन्हे क्षमा-दान देता और अपने गिरोह मे शामिल कर लेता। यह सब कुछ लगभग तीन घण्टे तक चलता रहा। आखिर पुगाचोव अपनी कुर्सी से उठा और अपने सलाहकारो से घिरा हुआ ओसारे से नीचे उतरा। उसके लिये बढिया साज़ से सजा हुआ सफेद घोडा लाया गया। दो कज़्ज़ाको ने सहारा देकर उसे ज़ीन पर बिठाया। उसने फादर गेरासिम से कहा कि दिन का भोजन वह उसके यहा करेगा। इसी समय एक नारी की चीख सुनाई दी। कुछ लुटेरे वसिलीसा येगोरोव्ना को ओसारे मे घसीट लाये। उनके बाल अस्त-व्यस्त थे और वह एकदम नगी थी। उनमे से एक ने तो उनकी रूईदार जाकेट भी पहन ली थी। दूसरे लोग रोयो से भरे हुए गद्दे, सन्दूक, चीनी के वर्तन, गिलाफ-चादरे और दूसरी चीज़े उठाये ला रहे थे। "भले लोगो!" बेचारी बूढी वसिलीसा येगोरोव्ना चिल्ला रही थीं। "मुझे शान्ति से मर जाने दो! प्यारे लोगो, मुझे इवान कुज़्मिच के पास पहुचा दो।" अचानक उन्होने सूली की ओर देखा और अपने पति को पहचान लिया। "नीच दुष्टो," वह गुस्से से पागल होकर चिल्ला उठी। "यह तुमने क्या किया है उसके साथ? मेरी आखो की रोशनी, इवान कुज़्मिच, मेरे वीर सैनिक! न प्रशा की सगीन तुम्हारा कुछ बिगाड सकी, न तुर्की की गोली। न इन्साफ की सच्ची लडाई मे तुम खेत रहे, एक भगोडे अपराधी के हाथो मारे गये!" – "बन्द करो इस चुडैल बुढिया की ज़बान।" पुगाचोव ने कहा। इसी वक्त एक जवान कज़्ज़ाक ने उनके सिर पर तलवार से वार किया और वह ओसारे की पैडी पर निर्जीव होकर गिर पडी। पुगाचोव ने घोडा बढाया, लोगो की भीड उसके पीछे-पीछे भागने लगी।

आठवाँ अध्याय

बिन बुलाया मेहमान

बिन बुलाया मेहमान
तातार से भी बदतर।
कहावत

चौक खाली हो गया। मन पर पड़ी इतनी भयानक छापों के कारण बेहद परेशान हुआ मैं एक ही जगह पर खड़ा था और अपने विचारों को व्यवस्थित नहीं कर पा रहा था।

मरीया इवानोव्ना का क्या हुआ, यह बात मुझे सब से अधिक व्यथित कर रही थी। कहां है वह? कैसी है वह? कहीं छिप पाई या नहीं? उसके छिपने की जगह भरोसे की है या नहीं? मन को अत्यधिक चिन्तित करनेवाले ऐसे विचारों को लिये हुए ही मैं दुर्गपति के घर में दाखिल हुआ वहां बरबादी का नजारा था – कुर्सियां, मेजें, सन्दूक तोड़-फोड़ डाले गये थे, बर्तन टूटे-फूटे पड़े थे, सब कुछ लूटा जा चुका था। मैं भागता हुआ सोने के कमरे की ओर ले जानेवाला छोटा-सा जीना चढ़ गया और जीवन में पहली बार मरीया इवानोव्ना के कमरे में प्रवेश किया। मैंने उसका बिस्तर देखा जिसे उचक्कों ने खूब अच्छी तरह से उथला-पुथला था, अलमारी को तोड़ा और लूट लिया गया था, देव-प्रतिमा के सामने दीपक की बत्ती अभी तक धीरे-धीरे सुलग रही थी। खिड़कियों के बीच की दीवार पर लटकनेवाला दर्पण सही-सलामत था कुआरी कन्या के इस बहुत ही साधारण, छोटे-से और शांत कमरे की स्वामिनी कहां थी? मेरे मस्तिष्क में एक भयानक-सा विचार कौंध गया – अपनी कल्पना में मैंने उसे लुटेरों के हाथों में देखा . मेरा दिल बैठ गया मैं फूट-फूटकर रोने लगा और मैंने ऊंची आवाज में अपनी प्यारी का नाम लिया इसी समय हल्की-सी आहट सुनाई दी और अलमारी के पीछे से कांपती तथा पीला-जर्द चेहरा लिये हुए पालाशा सामने आई।

"ओह, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने हताशा से हाथ झटकते हुए ... 'कैसा मनहूस दिन है आज! कैसी भयानक चीजों का सामना ...!"

"मरीया इवानोव्ना कहा है?" मैंने अधीरता से पूछा। "क्या हुआ मरीया इवानोव्ना का?"

"छोटी मालकिन ज़िन्दा हैं," पालाशा ने उत्तर दिया। "अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना के यहा छिपी हुई हैं।"

"पादरी के यहा!" मैं भयभीत होकर चिल्ला उठा। "हे भगवान! पुगाचोव भी वही पर है!"

मैं पागलो की तरह कमरे से बाहर भागा, आन की आन मे सडक पर आ गया, कुछ भी सोचे-विचारे बिना, कुछ भी देखे-सुने और अनुभव किये बिना दौडता हुआ पादरी के घर जा पहुचा। वहा हो-हल्ला, ठहाके और गाने सुनाई दे रहे थे पुगाचोव अपने साथियो के साथ दावत उड़ा रहा था। पालाशा भी मेरे पीछे-पीछे दौडती हुई यही आ पहुची। मैंने उसे अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना को धीरे-से बुला लाने को भेजा। क्षण भर बाद हाथ मे खाली बोतल लिये हुए पादरिन ड्योढी मे मेरे पास आई।

"भगवान के लिये यह बताइये कि मरीया इवानोव्ना कहा है?" मैंने बेहद उत्तेजना से पूछा।

"वह, मेरी प्यारी, मेरे यहा बीच की ओट के पीछे मेरे पलग पर लेटी हुई है। ओह, प्योतर अन्द्रेइच, मुसीबत का पहाड टूटते-टूटते बचा। बडी कृपा है भगवान की कि बुरी घडी टल गयी – वह बदमाश दिन का भोजन करने बैठा ही था कि मेरी उस बेचारी बच्ची की आख खुल गयी और वह कराह उठी! मेरी तो जान ही निकल गयी। उसने कराहने की आवाज़ सुन ली – 'बुढिया, कौन तुम्हारे यहा कराह रहा है?' मैंने सिर झुकाकर चोर से कहा, 'मेरी भानजी हुज़ूर, उसकी बीमारी का दूसरा हफ्ता चल रहा है।' – 'जवान है तुम्हारी भानजी?' – 'जवान है हुज़ूर।' – 'बुढिया, मुझे दिखाओ तो अपनी भानजी।' मेरा दिल बहुत ज़ोर से धडकने लगा, मगर हो ही क्या सकता था। 'जैसी आपकी इच्छा हुज़ूर, लेकिन लडकी तो उठकर आपकी सेवा मे उपस्थित नही हो सकती।' – 'कोई बात नहीं बुढिया, मैं खुद जाकर उसे देख लेता हूं।' और वह दुष्ट सचमुच कमरे की ओट के पीछे चला गया। और क्या बताऊ तुम्हे! उसने पर्दा हटाया और अपनी बाज जैसी पैनी नज़र से उसे देखा। मगर कोई बात नही . भगवान

ने बड़ी दया की! यकीन मानिये, मैंने और मेरे पति ने तो दफ़नाने तक का सत्कार करने के लिये अपने को तैयार भी कर लिया था। मार्या इवानोव्ना! कहिये, मेरी इस प्यारी बच्ची ने उसे पहचाना नहीं। हे भगवान, कैसा दिन दिखाया है तुमने! कुछ कहते नहीं बनता! बेचारे इवान कुज़्मिच! कौन सोच सकता था ऐसी बात! और वसिलीसा येगोरोव्ना? इवान इग्नातिच भी? उसके साथ भला ऐसा सुलूक क्यों किया? आप पर कैसे रहम कर दिया उसने? और वह अलेक्सेई इवानोविच श्वाब्रिन भी खूब है? कज़ाकों की तरह बाल कटवा लिये और अब उन्हीं के साथ हमारे यहा बैठा हुआ दावत उड़ा रहा है! बड़ा चलता पुर्जा है! जैसे ही मैंने बीमार भानजी के बारे में कहा, वैसे ही यकीन मानिये उसने मेरी ओर ऐसे देखा मानो छुरी से आर-पार कर दी हो. लेकिन भण्डाफोड़ नहीं किया, इसके लिये हैं शुक्रिया उसका।' इसी समय नशे में धुत मेहमानों की चीख-पुकार और फादर गेरासिम की आवाज सुनाई दी। मेहमान शराब माग रहे थे, मेज़बान अपनी पत्नी को पुकार रहा था। पादरिन ने हड़बड़ाते हुए कहा "अपने घर जाइये, प्योतर अन्द्रेइच, आपका यहा रुकना ठीक नहीं। बदमाशों की पियाई चल रही है। कहीं किसी शराबी के हत्थे चढ़ गये, तो बहुत बुरा होगा। विदा प्योतर अन्द्रेइच। जो होगा, सो होगा। शायद भगवान रक्षा करेगा।"

पादरिन चली गयी। कुछ शान्त होकर मैं अपने घर की ओर चल दिया। चौक के पास से गुज़रते हुए मुझे कुछ बश्कीरी दिखाई दिये जो सूली के आसपास जमा थे और लटकते हुए मुर्दों के बूट उतार रहे थे। यह अनुभव करते हुए कि उन्हें मना करने में कोई तुक नहीं, मैंने बड़ी मुश्किल से अपने गुस्से पर काबू पाया। अफ़सरों के घरों को लूटते हुए लुटेरे दुर्ग में जहा-तहा भागे फिर रहे थे। हर जगह पीते-पिलाते विद्रोहियों का चीखना-चिल्लाना सुनाई दे रहा था। मैं घर पहुचा। सावेलिच दहलीज पर ही मेरी राह देख रहा था।

"भला हो भगवान का!" मुझे देखकर वह चिल्ला उठा। "मैं तो सोच रहा था कि बदमाशों ने तुम्हें फिर से पकड़ लिया। भैया, प्योतर अन्द्रेइच! यकीन मानोगे, शैतान के बच्चे हमारे यहा से सब लूट ले गये — कपड़े-लत्ते, गिलाफ-चादर, चीज़े, बर्तन —

कुछ भी तो नही छोडा। भाड में जाये यह सब कुछ! भगवान की यही बडी कृपा है कि तुम्हे जिन्दा छोड दिया! इनके सरदार को तो पहचाना तुमने, मालिक?"

"नही, नही पहचाना। कौन है वह?"

"क्या कहते हो मालिक? तुम उस शराबी को भूल गये जिसने सराय मे तुमसे खरगोश की खाल का कोट ठग लिया था? कोट बिल्कुल नया था, मगर उस जगली ने पहनते वक्त उसे उधेड डाला था।"

मैं दग रह गया। वास्तव मे ही पुगाचोव और उस तूफानी रात के मेरे मार्गदर्शक के बीच बहुत समानता थी। मुझे विश्वास हो गया कि पुगाचोव वही व्यक्ति था तथा यह समझने मे देर न लगी कि क्यो मुझ पर दया की गयी थी। परिस्थितियो के ऐसे अजीब उलट-फेर पर मैं आश्चर्यचकित हुए बिना न रह सका – एक आवारा को भेट किये गये बालक के फर-कोट ने मुझे सूली के फदे से बचा लिया और एक सराय से दूसरी मे भटकते रहनेवाला पियक्कड अब दुर्गों की नाका-बन्दिया कर रहा था और राज्य की नीव हिला रहा था।

"कुछ खाना चाहोगे न?" सावेलिच ने अपनी आदत के मुताबिक पूछा। "घर मे तो कुछ भी नही, जाकर ढूढता-ढाढता हू और तुम्हारे खाने के लिये किसी तरह कुछ तैयार कर दूगा।"

अकेला रह जाने पर मैं अपने विचारो मे खो गया। मुझे क्या करना चाहिये? इस दुष्ट के अधीन दुर्ग मे ही रहना या उसके गिरोह मे शामिल हो जाना अफसर को शोभा नही देता था। मेरा कर्तव्य इस बात की माग करता था कि मैं वहा जाऊ, जहा इस समय की कठिन परिस्थितियो मे मातृभूमि के लिये मेरी सेवा उपयोगी हो सकती थी किन्तु प्रेम बहुत जोर से यह सलाह देता था कि मैं मरीया इवानोव्ना के पास रहू, उसका रक्षक और सरक्षक बनू। यद्यपि मैं पहले से ही यह देख रहा था कि परिस्थितियो मे निश्चय ही और बहुत शीघ्र परिवर्तन होगा, तथापि मरीया इवानोव्ना की स्थिति के खतरे की कल्पना करके काप बिना नही रह सकता था।

एक कज्जाक के भागते हुए भीतर आने और यह घोषणा करने से मेरी विचार-शृखला टूटी कि "महान सम्राट ने तुम्हे अपने यहा आने का आदेश दिया है"।

"कहां है वह?" आदेश-पालन के लिये तत्पर होते हुए मैंने

"दुर्गपति वाले घर में," कज्जाक ने जवाब दिया। "भोज

बाद हमारे महाराज गुसल करने गये और अब आराम कर रहे

हुजूर, सभी बातो से पता चलता है कि बहुत बडी हस्ती हैं वह।

के वक्त उन्होंने सूअर के दो तले हुए बच्चे खाये और वह इतना

भाप-स्नान करते हैं कि तराम कूरोच्किन भी बर्दाश्त न कर

उसने तन साफ करने का झाड़ू फोमका बिक्बायेव को दे दिया

फिर खुद बडी मुश्किल से ठण्डे पानी की बदौलत होश में आया।

कहना चाहिये कि हमारे महाराज के सभी रग-ढग बड़े निराले

और सुनने मे आया है कि गुसलघर में उन्होंने अपनी छाती पर

सम्राट-चिह्न दिखाये – एक ओर तो पाच कोपेक के सिक्के जितना

दो सिर वाला उकाब और दूसरी ओर अपना चित्र।"

मैंने कज्जाक के मत का खण्डन करना आवश्यक नही सम

और पुगाचोव के साथ अपनी भेट तथा इस बात की पहले से ही कल

करने का प्रयास करते हुए कि इसका क्या अन्त होगा, कज्जाक

साथ दुर्गपति के घर की ओर चल दिया। पाठक बहुत आसानी

ही यह अनुमान लगा सकता है कि मेरा मन बेचैन था।

जब मैं दुर्गपति के घर पहुचा, तो भुटपुटा होने लगा था। लटक

लाशोवाली सूली अब काली और बहुत भयानक लग रही थी। बेच

वसिलीसा येगोरोव्ना की लाश अभी भी ओसारे के नीचे, जहा

कज्जाक पहरा दे रहे थे, पड़ी हुई थी। मुझे बुलाकर लानेवाला कज्ज

मेरे बारे मे सूचना देने गया और उल्टे पाव लौटकर मुझे उस क

मे ले गया जहा पिछली शाम को मैंने इतने प्यार से मरीया इवानोव

से विदा ली थी।

मेरी आखो के सामने बडा असाधारण-सा दृश्य था – मेज़पोश

ढकी मेज़ पर सुराहिया और गिलास रखे थे और कोई दसेक कज्जा

मुखियो के साथ, जो ऊची टोपियां और रगीन कमीज़े पहने थे त

जिनके ... लाल और आखे चमक रही थी, पुगाचोव मेज़ के पा

... हुए गद्दार – यानी श्वाबरिन और हमारा सा

अरे, हुज़ूर आप है!" मुझे देखकर पुगाचोव ने कहा

"... हमारे लिये बड़े गौरव की बात है, बैठिये।"

लोग एक-दूसरे के साथ तनिक सट गये। मैं चुपचाप मेज़ के सिरे पर बैठ गया। मेरी बगल में बैठे हुए जवान, सुघड़-सुडौल और सुन्दर कज़्ज़ाक ने मेरे लिये शराब का गिलास भर दिया जिसे मैंने छुआ भी नहीं। मैं यहा एकत्रित लोगो को जिज्ञासा से देखने लगा। मेज़ पर कोहनी टिकाये और काली दाढ़ी को अपनी चौड़ी मुट्ठी पर फैलाये पुगाचोव मुख्य स्थान पर बैठा था। तीखे और मासे प्यारे नाक-नक्शे वाले उसके चेहरे पर क्रूरता की झलक तक नही थी। वह रह-रहकर पचासेक साल के एक व्यक्ति को सम्बोधित करता था और कभी तो उसे काउट कभी तिमोफ़ेइच और कभी चाचा कहता था। सभी साथियो की तरह एक-दूसरे के साथ पेश आते थे और अपने सरदार के प्रति कोई ख़ास आदर-सत्कार नही दिखा रहे थे। सुबह के हमले, विद्रोह की सफलता और भावी गतिविधियो के बारे मे बातचीत चल रही थी। हर कोई अपनी डीग हाक रहा था, अपनी राय ज़ाहिर करता था और बेरोक-टोक पुगाचोव की बात काटता था। इस अजीब क़िस्म की युद्ध-परिषद मे ओरेनबुर्ग पर हमला करने का फ़ैसला किया गया – यह बड़ा साहसपूर्ण निर्णय था जो आपदपूर्ण सफलता के चरम-बिन्दु तक पहुचता-पहुचता रह गया। अगले दिन कूच करने की घोषणा की गयी। "तो बन्धुओ," पुगाचोव ने कहा, "बिस्तर पर जाने के पहले आओ मेरा मनपसन्द गीत गा ले। चुमाकोव! शुरू करो!" मेरी बगल मे बैठे कज़्ज़ाक ने पतली-सी आवाज़ मे बजरे खीचनेवालो का एक उदासीभरा गीत शुरू किया और सभी मिलकर गाने लगे –

हरे-भरे प्यारे बलूत, तुम नहीं करो सरसर
मुझे सोचना, खलल न डालो, बोझ बड़ा मन पर,
रौद्र ज़ार के न्यायालय मे कल मुझको जाना –
जो कुछ पूछेगा वह मुझसे होगा बतलाना।
पूछेगा यह ज़ार – "मुझे तुम इतना बतलाओ
ओ किसान के बेटे, किसके सग मिल चोरी की
जब डाके डाले, तब किसने तेरा साथ दिया,
बहुत अधिक थे साथी, जिनको तूने साथ लिया?"
"न्यायप्रिय सम्राट, तुम्हे मैं सब कुछ बतलाता,
सब कुछ सच-सच कहूं, ज़रा भी कपट न कर पाता।
सिर्फ़ चार थे मेरे साथी –

पहला तो था – रात अन्धेरी
दूजा – तेज छुरी यह मेरी
और तीसरा साथी तो था – बढ़िया घोड़ा
चौथा साथी – धनुष कसा यह मेरा
मेरे सन्देशों के वाहक तेज तीर थे।"
न्याय-धर्म का प्यारा, जार कहेगा तब यह –
"ओ किसान के बेटे, है शाबाश, तुम्हे है
आता तुमने चोरी करना, उत्तर देना!
भैया, इसके लिये बड़ा सम्मान तुम्हारा –
महल खुले मैदान बीच मैं बनवाऊंगा,
दो खम्भों के बीच कड़ी मैं डलवाऊंगा।

सूली के बारे में इस साधारण लोक-गीत ने, जिसे उन्हीं लोगों ने गाया था जिनके भाग्य में सूली लिखी थी, मेरे मन पर कितनी गहरी छाप अंकित की, यह बयान करना मुमकिन नहीं। उनके रौद्र चेहरे, सधी हुई आवाजें, उनकी वह उदासी भरी अभिव्यक्ति जिससे वे उन शब्दों को गाते थे जो स्वयं ही बहुत अभिव्यक्तिपूर्ण थे – इन सब चीजों ने मुझे अजीब, काव्यमय भय से झकझोर डाला।

मेहमानों ने शराब का एक-एक गिलास और पिया, मेज पर से उठे और पुगाचोव से विदा लेकर जाने लगे। मैंने भी ऐसा ही करना चाहा, किन्तु पुगाचोव ने मुझसे कहा "बैठो, मैं तुम से कुछ बातचीत करना चाहता हूं।" हम दोनों ...

तो कभी नही सोचा होगा कि तुम्हे रास्ता दिखानेवाला व्यक्ति स्वयं महान सम्राट है?" (इतना कहकर वह अपने चेहरे पर बहुत रोबीला और रहस्यपूर्ण भाव ले आया)। "तुम मेरे सम्मुख बहुत अपराधी हो," वह कहता गया, "किन्तु मैने तुम्हारी नेकी के लिये, इस चीज के लिये तुम्हे माफ कर दिया कि तुमने उस वक्त मेरी मदद की थी जब मैं अपने दुश्मनो की नजर से छिपने के लिये मजबूर था। मगर अभी तो क्या है और आगे देखना! जब अपना राज्य प्राप्त कर लूगा, तो तुम्हारे लिये और बहुत कुछ करूगा! निष्ठा से मेरी सेवा करने का वचन देते हो?"

इस बदमाश का प्रश्न और उसका ऐसा साहस, मुझे ये दोनो चीजे इतनी मनोरंजक प्रतीत हुई कि मैं मुस्कराये बिना न रह सका।

"किसलिये मुस्करा रहे हो?" उसने नाक-भौह सिकोडकर मुझसे पूछा। "या तुम यह विश्वास नही करते कि मैं महान सम्राट हू? साफ़-साफ़ जवाब दो।"

मैं उलझन मे पड गया—एक आवारा को सम्राट मान लेना मेरे बस की बात नही थी—मुझे लगा कि यह अक्षम्य कायरता होगी। उसके मुह पर उसे धोखेबाज कहना मौत को बुलावा देना था। गुस्से की पहली झोक मे सूली के फदे के नीचे और सभी की आखो के सामने मैं जो करने को तैयार था, वह अब मुझे व्यर्थ डीग मारना प्रतीत हो रहा था। मैं दुविधा मे पड गया। पुगाचोव निष्ठुरता का भाव लिये मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। आखिर (आज भी मैं बहुत आत्मसन्तोष से इस क्षण को याद करता हू) मानवीय दुर्बलता पर कर्तव्य-भावना की विजय हुई। मैंने पुगाचोव को उत्तर दिया, "सुनो, मैं तुमसे सब कुछ सच-सच कहे देता हू। खुद ही सोचो, क्या मैं तुम्हें सम्राट मान सकता हू? तुम चतुर व्यक्ति हो—मेरे ऐसा करने पर तुमने स्वयं यह जान लिया होता कि मैं मक्कारी कर रहा हू।"

"तो तुम्हारे ख्याल मे मैं कौन हू?"

"भगवान ही जानता है। लेकिन तुम कोई भी क्यो न हो, तुम एक भयानक खिलवाड कर रहे हो।"

पुगाचोव ने झटपट मेरी ओर देखा।

"तो तुम यह विश्वास नही करते," उसने कहा, "कि मैं सम्राट

जहा तुम्हारा मन चाहे, वहा जाओ और जो चाहो, वह करो। कल मुझसे विदा लेने आ जाना और अब जाकर सो जाओ। मुझे भी नीद आ रही है।"

मैं पुगाचोव के कमरे से बाहर सडक पर आ गया। रात शान्त और पाले से ठण्डी-ठिठुरी हुई थी। चाद-सितारे खूब चमक रहे थे, चौक और सूली को रोशन कर रहे थे। दुर्ग मे सब कुछ शान्त था, अन्धेरा छाया था। केवल मदिरालय मे रोशनी थी और रात को देर तक पीने-पिलानेवालो का चीखना-चिल्लाना सुनाई दे रहा था। मैंने पादरी के घर की ओर देखा। उसके शटर और फाटक-दरवाजे बन्द थे। वहा सब कुछ शान्त प्रतीत हो रहा था।

मैं घर लौटा और सावेलिच को अपनी अनुपस्थिति के कारण दुख मे घुलते पाया। मुझे आज़ाद कर दिया गया है, इस खबर से उसे इतनी खुशी हुई कि बयान से बाहर। "भला हो तुम्हारा भगवान।" उसने सलीब का निशान बनाते हुए कहा। "सुबह होते ही हम दुर्ग से चल देगे और कही भी चले जायेगे। मैंने तुम्हारे खाने के लिये कुछ तैयार कर दिया है, उसे खा लो और सुबह तक चैन से सोये रहो।"

मैंने सावेलिच की इस सलाह पर अमल किया और बडे मन से भोजन करके मानसिक और शारीरिक रूप से बेहद थका-टूटा हुआ फ़र्श पर ही गहरी नीद सो गया।

नौवां अध्याय

जुदाई

बहुत मधुर था, मेरी प्यारी, तुमसे मिलना,
बहुत दुखद ज्यो हृदय गवाना रहा बिछुडना।

हेरास्कोव

ढोल की आवाज़ से तडके ही मेरी आख खुल गयी। मैं लोगो के एकत्रित होने के स्थान की ओर चल दिया। पुगाचोव के लोग-

बाग वहां सूली के करीब, जहां अभी तक पिछले दिन की लाशें लटक रही थी, कतारों में खड़े हो रहे थे। कज्जाक घोड़ों पर सवार थे और फौजी बन्दूकें लिये खड़े थे। झण्डे लहरा रहे थे। कुछ तोपें, जिनमें मैंने हमारी तोप भी पहचान ली, तोप-गाड़ियों पर लाद दी गयी थीं। सारे दुर्गवासी भी वहीं थे, नकली सम्राट का इन्तजार कर रहे थे। दुर्गपति के घर के ओसारे के करीब एक कज्जाक किर्गीज़ी नस्ल के एक बहुत ही बढ़िया सफेद घोड़े की लगाम थामे खड़ा था। मैंने दुर्गपति की बीवी की लाश को नजरों से ढूंढने की कोशिश की। अब उसे एक तरफ को हटाकर चटाई से ढक दिया गया था। आखिर पुगाचोव ड्योढ़ी से बाहर निकला। लोगों ने टोपियां उतार लीं। ओसारे में रुककर पुगाचोव ने सबका अभिवादन किया। उसके एक मुन्शी ने तांबे के सिक्कों की थैली पकड़ा दी और वह मुट्ठियां भर-भरकर उन्हें बिखेरने लगा। लोग शोर मचाते हुए उन्हें उठाने के लिये लपके और किसी-किसी का हाथ-पांव भी टूट गया। पुगाचोव के प्रमुख विद्रोही साथी उसे घेरे हुए थे। श्वाबरिन भी उनमें खड़ा था। हमारी नज़रें मिलीं। मेरी नज़र में तिरस्कार देखकर उसने दिली गुस्से तथा बनावटी उपहास के भाव से मुंह फेर लिया। भीड़ में मुझे पहचानकर पुगाचोव ने मेरी ओर सिर झुकाया और मुझे अपने पास बुलाया। "सुनो," उसने मुझसे कहा, "अभी ओरेनबुर्ग जाओ और मेरी ओर से गवर्नर तथा सभी जनरलों को यह बता दो कि एक हफ्ते बाद मेरी राह देखें। उन्हें यह सलाह देना कि बाल-सुलभ स्नेह के साथ मेरा स्वागत करें और मेरी बात मानें, वरना वे कठोर दण्ड से नहीं बच सकेंगे। हुज़ूर, तुम्हारी यात्रा शुभ रहे।" इसके बाद उसने श्वाबरिन की तरफ इशारा करते हुए लोगों से कहा, "यह तुम लोगों का नया दुर्गपति है – इसकी हर बात मानो और वह तुम्हारे तथा दुर्ग के लिये मेरे सामने ज़िम्मेदार है।" ये शब्द सुनकर मेरा दिल दहल गया – श्वाबरिन को दुर्गपति बना दिया गया, मरीया इवानोव्ना उसके हाथों में रह गयी! हे भगवान, उसका क्या होगा! पुगाचोव ओसारे से नीचे उतरा। उसके लिये घोड़ा लाया गया। उन कज्जाकों का इन्तज़ार किये बिना, जो घोड़े पर सवार होने में उसकी सहायता करना चाहते थे, वह फुर्ती [illegible] र चढ़ गया।

सम्भाले हुए घोडे को सरपट वापस दौडा ले चला और क्षण भर बाद नज़र से ओझल हो गया।

भेड की खाल का कोट पहनकर मैं घोड़े पर सवार हो गया और सावेलिच को मैंने अपने पीछे बिठा लिया। "देखा मालिक," बुड्ढे ने कहा, "व्यर्थ ही मैंने उस लुटेरे को अपनी अर्ज़ी नही दी थी – उचक्के को शर्म आई, यद्यपि लम्बी टागोवाला यह बश्कीरी घोडा और भेड की खाल का कोट उस सबकी आधी कीमत के बराबर भी नही है जो उन शैतान के बच्चो ने हमारे यहा से चुरा लिया और जो तुमने खुद उसे दे दिया था। फिर भी ये काम आयेगे, भागते भूत की लगोटी ही सही।"

दसवां अध्याय

शहर की नाकाबन्दी

डाल पड़ाव चरागाहो मे औ' पर्वत पर,
दृष्टि उकाब सरीखी डाली शहर, नगर पर,
हुक्म दिया – दीवार बना, सब भेद छिपाओ,
रात हुई तो धावा बोला, दल-बल लेकर।

हेरास्कोव

ओरेनबुर्ग के निकट पहुचने पर हमे मुडे सिरो और जल्लाद की मटियो द्वारा कुरूप बनाये गये चेहरोवाले कैदियो की भीड दिखाई । वे दुर्ग के पगु सैनिको की निगरानी मे किलेबन्दी के नज़दीक काम र रहे थे। उनमे से कुछ ठेलों मे भरकर खाई से कूडा-करकट निकाल हे थे, दूसरे फावडों से ज़मीन खोद रहे थे। राज लोग प्राचीर के पर ईंटे ढो-ढोकर नगर-दीवार की मरम्मत कर रहे थे। फाटक पर न्तरियो ने हमे रोका और पासपोर्ट मागे। किन्तु सार्जेंट को जैसे ही ह मालूम हुआ कि मैं बेलोगोर्स्क दुर्ग से आ रहा हू, वह मुझे सीधे नरल के पास ले गया।

जनरल बाग मे थे। वे पतझर से पातहीन हुए सेबो के पेडो को

मे, जिसे उसने अपना मित्र बताया, मुझसे पूछ-ताछ करने लगा, अक्सर अतिरिक्त प्रश्न तथा उपदेशात्मक टीका-टिप्पणियां करते हुए मुझे टोकता जाता था, जो उसे यदि युद्ध-कला का जानकार नही, तो कम से कम समझदार और जन्मजात कुशाग्र बुद्धिवाला व्यक्ति अवश्य प्रकट करती थी। इसी बीच अन्य आमन्त्रित लोग भी जमा हो गये। जनरल को छोडकर उनमे सेना से सम्बन्धित एक भी आदमी नही था। जब सभी लोग बैठ गये और सबके सामने चाय का प्याला आ गया, तो जनरल ने बहुत स्पष्ट रूप से और विस्तारपूर्वक सारी स्थिति पर प्रकाश डाला।

"तो महानुभावो," जनरल कहते गये, "अब हमे यह तय करना है कि हम विद्रोहियो के विरुद्ध आक्रमणात्मक या रक्षात्मक कार्रवाई करे? इन दोनो विधियो के पक्ष-विपक्ष मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। दुश्मन का जल्दी से मुह तोडने के लिये आक्रमणात्मक कार्रवाई ज्यादा उम्मीद बधवाती है, रक्षात्मक कार्रवाई अधिक विश्वसनीय है और उसमे कम जोखिम होती है सो हम उचित क्रम मे यानी सबसे छोटे पदवाले की राय जानने से इस काम को आरम्भ करते हैं। तो श्रीमान छोटे लेफ्टिनेट!" जनरल ने मुझे सम्बोधित करते हुए अपनी बात जारी रखी, "हमारे सामने अपना मत प्रकट करने की कृपा करे।"

मैं उठकर खडा हो गया और आरम्भ मे पुगाचोव और उसके गिरोह का सक्षिप्त वर्णन करने के बाद मैंने यह कहा कि नकली सम्राट नियमित सेना के सामने नही टिक सकेगा।

नगर-अधिकारियो को स्पष्टत मेरा मत अच्छा नही लगा। उन्हे इसमे युवा आदमी की गर्ममिजाजी और ढिठाई दिखाई दी। सुमर-फुसर होने लगी और मुझे किसी के द्वारा दबी जबान मे कहे गये "दूध पीता बच्चा है" शब्द साफ सुनाई दिये। जनरल ने मुझे सम्बोधित करते हुए मुस्कराकर कहा –

"श्रीमान छोटे लेफ्टिनेट! युद्ध-परिषदो की बैठको मे प्रारम्भिक मत आक्रमणात्मक कार्रवाई के पक्ष मे ही व्यक्त किये जाते हैं – यह स्वाभाविक क्रम है। अब हम दूसरो से अपने मत प्रकट करने को कहेगे। श्रीमान कौसिलर! अपनी राय जाहिर कीजिये।"

जनरल इतना कहकर रुके और पाइप में तम्बाकू भरने लगे। मेरे स्वाभिमान की विजय हो गयी थी। मैंने गर्व से सरकारी कर्मचारियों की ओर देखा, जो असन्तोष और बेचैनी जाहिर करते हुए आपस में खुसर-फुसर कर रहे थे।

"किन्तु महानुभावो," जनरल ने गहरी सांस के साथ-साथ तम्बाकू के धुएं का घना बादल-सा छोड़ते हुए अपनी बात जारी रखी, "जब हमारी कृपालु सम्राज्ञी द्वारा मेरे हाथों में सौंपे गये प्रान्त की सुरक्षा का प्रश्न सम्मुख हो, तो मैं अपने ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेने की हिम्मत नहीं कर सकता। इसलिये मैं बहुमत के साथ अपनी सहमति प्रकट करता हूं जिसके अनुसार शहर के भीतर रहते हुए नाकाबन्दी का इन्तजार करना कहीं अधिक समझदारी और कम जोखिम का काम होगा और दुश्मन के हमलों को तोपों और (यदि ऐसा सम्भव हो) तो जवाबी धावों से नाकाम बनाना चाहिये।

सरकारी कर्मचारियों ने अब मेरी ओर उपहासपूर्ण दृष्टि से देखा। परिषद की बैठक समाप्त हो गयी। मैं सम्माननीय जनरल की इस दुर्बलता पर अफसोस किये बिना न रह सका कि उन्होंने अपनी आस्था के विरुद्ध रणनीति से अनभिज्ञ और अनुभवहीन लोगों के मत का अनुकरण करने का निर्णय किया था।

इस विख्यात परिषद की बैठक के कुछ दिन बाद हमें पता चला कि पुगाचोव अपने वादे के मुताबिक ओरेनबुर्ग के नज़दीक आता जा रहा है। शहर की दीवार की ऊंचाई से मैंने विद्रोहियों की सेना को देखा। मुझे ऐसे लगा कि अन्तिम आक्रमण के बाद, जिसका मैं साक्षी रहा था, पुगाचोव का लशकर दस गुना बढ़ गया था। उसके पास तोपें भी थीं जो उसने कब्जे में कर लिये गये छोटे दुर्गों से हासिल की थीं। युद्ध-परिषद के निर्णय को याद करते हुए मैं अभी से ही यह देख रहा था कि ओरेनबुर्ग की दीवारों में लम्बे अर्से तक बन्द रहना पड़ेगा और इसलिये मुझे खीझ-निराशा से रुलाई आ रही थी।

मैं ओरेनबुर्ग की नाकेबन्दी का वर्णन नहीं करूंगा जो पारिवारिक टिप्पणियों की नहीं, इतिहास की थाती है। संक्षेप में इतना ही कहूंगा कि स्थानीय अधिकारियों की असावधानी के कारण यह नगरवासियों के लिये विनाशकारी सिद्ध हुई। उन्हें भुखमरी और सभी तरह की

या। उसे देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि बयान नही कर सकता।

नमस्ते मक्सीमिच," मैंने कहा। "बहुत समय हो गया तुम्हें गोगोर्स्क से आये हुए?"

नही भैया प्योतर अन्द्रेइच। कल ही लौटा हू। आपके लिये रे पास खत है।"

"कहा है वह?" मै बहुत ही बेचैनी से चिल्ला उठा।

"मेरे पास है," भीतर की जेब मे हाथ डालते हुए मक्सीमिच उत्तर दिया। "मैंने पालाशा से वादा किया था कि इसे किसी न सी तरह आप तक पहुचा दूगा।" तह किया हुआ एक कागज़ मुझे कर वह सरपट घोडा दौडाता हुआ चला गया। मैंने कागज़ खोला और डकते दिल से यह पढा –

"भगवान की ऐसी ही इच्छा थी और उसने सहसा मुझसे मेरे ाता-पिता छीन लिये इस धरती पर अब न तो मेरा कोई सगा-म्बन्धी है और न ही रक्षक-सरक्षक। यह जानते हुए कि आप हमेशा मेरी लाई चाहते रहे है और हर किसी की सहायता करने को तैयार हैं, आप ही से यह अनुरोध कर रही हू। भगवान से यही प्रार्थना है क यह पत्र किसी तरह आप तक पहुच जाये! मक्सीमिच ने वादा कया है कि वह इसे आप तक पहुचा देगा। पालाशा ने मक्सीमिच I यह भी सुना है कि धावो के वक्त वह अक्सर आपको दूर से देखता और यह कि आप अपनी जान की बिल्कुल चिन्ता नही करते तथा नके बारे मे नहीं सोचते जो आसू बहाते हुए आपकी रक्षा के लिये गवान से प्रार्थना करते रहते हैं। मैं लम्बे अर्से तक बीमार रही और ब स्वस्थ हुई तो अलेक्सेई इवानोविच ने, जो मेरे दिवगत पिता की जगह अब यहा दुर्गपति है, पुगाचोव को मेरे बारे में सूचित कर देने की धमकी देकर पादरी गेरासिम को मुझे उसे सौंपने के लिये विवश कर दिया। मैं सन्तरियो के पहरे मे अपने घर मे रह रही हू। अलेक्सेई इवानोविच मुझे अपने साथ शादी करने को मजबूर कर रहा है। वह कहता है कि उसने मेरी जिन्दगी बचाई है, क्योकि अकुलीना पम्फीलोव्ना के इस धोखे का भडाफोड नही किया जिसने बदमाशो से यह कहा था कि मैं मानो उसकी भानजी हू। अलेक्सेई इवानोविच जैसे व्यक्ति की पत्नी बनने के बजाय मैं मर जाना कही बेहतर मानती हू। वह मेरे

साथ बड़ा क्रूर व्यवहार करता है और यह धमकी देता है कि अगर मैं अपना इरादा नहीं बदलूगी और उसकी बीवी बनने को राजी नही हो जाऊगी, तो वह मुझे उस दुष्ट के डेरे पर ले जायेगा और तब मेरा भी लिजावेता मार्लोवा * जैसा ही हाल होगा। मैंने अलेक्सेई इवानोविच से प्रार्थना की है कि वह मुझे सोचने-विचारने का कुछ समय दे। वह तीन दिन तक और इन्तजार करने को राजी हो गया है। अगर तीन दिन बाद मैं उससे शादी नही करूगी, तो मुझ पर किसी तरह से रहम नहीं किया जायेगा। प्यारे प्योतर अन्द्रेइच ! केवल आप ही मेरे एकमात्र रक्षक हैं, मुझ असहाय की रक्षा कीजिये। जनरल और सभी कमाडरो से अनुरोध कीजिये कि हमारी सहायता को जल्दी से जल्दी सेनायें भेजे, और यदि सम्भव हो, तो स्वय भी आ जाइये। मैं हूं आपकी आज्ञाकारिणी असहाय यतीम

मरीया मिरोनोवा।"

यह पत्र पढकर मैं तो मानो पागल हो गया। बडी बेरहमी से अपने बेचारे घोडे को एड लगाता हुआ मैं उसे नगर की ओर बढा ले चला। रास्ते मे मैं असहाय मरीया की मदद करने के लिये तरह-तरह की तरकीबे सोचता रहा, मगर कुछ भी नही सोच पाया। घोड़े को सरपट दौडाता हुआ मैं नगर मे पहुचा, सीधे जनरल की तरफ चल दिया और कुछ भी सोचे-विचारे बिना भागता हुआ उनके सामने जा पहुंचा।

फेनिज पाइप से कश खीचते हुए जनरल कमरे में इधर-उधर आ-जा रहे थे। मुझे देखकर रुके। शायद मेरी सूरत देखकर उन्हे हैरानी हुई होगी और उन्होने चिन्ता प्रकट करते हुए मेरे इस तरह हडबडी मे आने का कारण जानना चाहा।

"हुजूर," मैंने उनसे कहा, "आपको अपने सगे पिता की तरह मानते हुए आपके पास आया हू। भगवान के लिये मेरा अनुरोध पूरा करने से इन्कार नही कीजिये – मेरे समूचे जीवन के सुख-सौभाग्य की बात है।"

---

* नीज्नेओजेर्नाया दुर्गपति मेजर मार्लोव की पत्नी। मेजर मार्लोव की पुगाचोव ने हत्या कर दी थी। – स०

"क्या बात है, भैया?" आश्चर्यचकित बूढ़े ने पूछा। "क्या कर सकता हू मैं तुम्हारे लिये? बोलो।"

"हुजूर, मुझे सैनिको की एक कम्पनी और पचासेक कज्जाक अपने साथ लेकर बेलोगोर्स्क दुर्ग जाने और उसे साफ करने की आज्ञा दीजिये।"

जनरल यह मानते हुए कि मेरा दिमाग चल निकला है (और इसमे उनसे लगभग भूल भी नही हुई थी) मुझे एकटक देखते रहे।

"क्या मतलब? क्या मतलब है बेलोगोर्स्क दुर्ग को साफ करने से आपका?" आखिर जनरल ने पूछा।

"कामयाबी की गारटी करता हू," मैंने बडे जोश से जवाब दिया। "बस, आप मुझे जाने दीजिये।"

"नही, मेरे नौजवान," उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा। "इतने बड़े फासले पर शत्रु के लिये मुख्य सेना-केन्द्र से आपका सम्पर्क काट देना और आप पर पूरी तरह विजय प्राप्त कर लेना आसान होगा। सम्पर्क कट जाने पर "

मैं इस बात से डर गया कि जनरल रणनीति पर विचार-विनिमय आरम्भ करने जा रहे है और इसलिये मैंने झटपट उन्हे टोका।

"कप्तान मिरोनोव की बेटी ने मुझे पत्र लिखा है," मैंने जनरल से कहा। "उसने सहायता की प्रार्थना की है। श्वाबरिन उसे मजबूर कर रहा है कि वह उससे शादी करे।"

"सच? ओह, यह श्वाबरिन बडा Schelm* है और अगर मेरे हत्थे चढ गया तो हुक्म दूगा कि चौबीस घण्टे के भीतर उस पर मुकदमा चलाकर फैसला किया जाये और हम उसे किले की दीवार के सामने खड़ा करके गोली से उडवा देगे! किन्तु फिलहाल तो सब्र से काम लेना होगा . "

"सब्र से काम लेना होगा!" मैं पागलो की तरह चिल्ला उठा। "और वह इसी बीच मरीया इवानोव्ना से शादी कर लेगा! "

"अरे, यह तो कोई बडी मुसीबत नही होगी," उन्होंने मेरी बात काटी। "उसके लिये फिलहाल श्वाबरिन की बीवी बन जाना

---

* बदमाश (जर्मन)।

15*

बेहतर होगा। इस वक्त वह तुम्हारी रक्षा कर सकता है। जब हम उन्हें लोगों से छुड़ा देंगे तो भगवान की कृपा से कोई वर भी मिल जायेगा। प्यारी विधवाएं कुंवारियां नहीं बैठी रहतीं। मेरा मतलब यह कि किसी लड़की की तुलना मे विधवा को अधिक जल्दी से पति मिल जाता है।"

"श्वाब्रिन उससे शादी कर ले? इसके बजाय तो मैं मर जाना बेहतर समझूंगा!" मैं दीवानों की तरह कह उठा।

"ओह, हां, हो!" बूढ़े जनरल ने अर्थपूर्ण ढंग से उत्तर दिया। "अब समझा। लगता है कि तुम खुद मरीया इवानोव्ना के प्रेम में डूबे हुए हो। यह दूसरी बात है! बेचारा नौजवान! लेकिन सैनिकों की कम्पनी और पचास कज्जाक मैं तुम्हें किसी हालत में भी नहीं दे सकता। ऐसी मुहिम बेसमझी की बात होगी। मैं अपने ऊपर इसकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता।"

मैंने निराशा से सिर भुका लिया। हताशा मुझ पर हावी हो गयी। अचानक मेरे दिमाग में एक ख्याल कौंध गया। वह ख्याल क्या था, पाठक इसके बारे में, जैसा कि पुराने उपन्यासकार कहा करते थे, अगले अध्याय में जान जायेंगे।

ग्यारहवां अध्याय

विद्रोही गांव

बेशक जन्मजात वह क्रोधी, पर उस क्षण था तृप्त बबर,
बड़े प्यार से पूछा उसने –
"कहो किसलिये आये हो तुम,
किस कारण, इस जगह, इधर?"

अ० सुमारोकोव

जनरल के यहां से मैं जल्दी-जल्दी अपने क्वार्टर में आया। सावेलिच ने सदा की भांति उपदेश और उलाहने देने शुरू किये। "इन शराबी लुटेरों के साथ लड़ने के लिये जाने की भी तुम्हें क्या सूझती है, मालिक! यह भी कोई कुलीनों का काम है? कौन जाने, कब व्यर्थ ही तुम्हारी

क्यों न कहो मालिक, मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा।"

मैं जानता था कि सावेलिच से बहस करना बेकार है और इसलिये मैंने उससे सफ़र की तैयारी करने को कह दिया। आध घण्टे बाद मैं अपने बढ़िया घोड़े पर सवार हो गया और सावेलिच मरियल-सी लंगड़ी घोड़ी पर, जो उसे एक नगरवासी ने इसलिये मुफ़्त भेंट कर दी थी कि उसके पास उसे खिलाने-पिलाने को कुछ नहीं था। हम नगर के फाटक पर पहुंचे, सन्तरियों ने हमें जाने दिया। हम ओरेनबुर्ग से बाहर आ गये।

झुटपुटा होने लगा था। मेरा रास्ता बेर्दा गांव से होकर जाता था, जहां अब पुगाचोव के लोगों की छावनी थी। सीधा रास्ता बर्फ़ से ढका हुआ था, मगर सारी स्तेपी में घोड़ों के सुमों के निशान दिखाई दे रहे थे, जो हर दिन नये हो जाते थे। मैं तेज़ दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ा रहा था। सावेलिच बड़ी मुश्किल से मेरे पीछे-पीछे आ पा रहा था और दूर से ही लगातार चिल्लाकर मेरी मिन्नत करता था– "धीरे, धीरे दौड़ाओ घोड़े को, मालिक। मेरी मनहूस घोड़ी तुम्हारे लम्बी टांगोंवाले शैतान का साथ नहीं दे सकती। कहां जाने की जल्दी में हो? अगर दावत पर जाते होते तो दूसरी बात थी, मगर सच मानना, कुल्हाड़े के नीचे सिर रखने जा रहे हो . भैया प्योतर अन्द्रेइच . प्योतर अन्द्रेइच! मेरी जान नहीं लो! हे भगवान, मेरे मालिक का बेटा यों ही अपनी जान गवाने जा रहा है!"

शीघ्र ही बेर्दा की बत्तियां जगमगा उठीं। हम खाइयों-खड्डों के निकट पहुंचे जो इस गांव की मानो प्राकृतिक किलेबन्दियां थीं। सावेलिच मेरे पीछे-पीछे अपनी घोड़ी बढ़ाता आ रहा था और लगातार दर्दभरी आवाज़ में गिड़गिड़ाता तथा मेरी मिन्नत-समाजत करता जा रहा था। मुझे आशा थी कि इस गांव के गिर्द चक्कर काटकर सही-सलामत आगे निकल जाऊंगा कि अचानक अन्धेरे में लट्ठ लिये पांच किसानों को अपने सामने देखा। पुगाचोव की छावनी की यह अग्रिम चौकी थी। उन्होंने हमें ललकारा। चूंकि मैं गुप्त संकेत-शब्द नहीं जानता था, इसलिये मैंने चुपचाप उनके पास से निकल जाना चाहा। किन्तु उन्होंने मुझे उसी क्षण घेर लिया और एक ने मेरे घोड़े की लगाम पकड़ ली। मैंने झटपट तलवार निकाली और किसान के सिर पर

[illegible]

[illegible] हुआ था [illegible] पाने की [illegible] और [illegible] कुछ [illegible] किसानों पर बैठा था। पुगाचोव [illegible] पहने ऊंची टोपी डाटे और कुल्हे पर बड़ी शान से हाथ रखे [illegible] प्रतिमाओं के नीचे बैठा था। उसके कुछ मुख्य साथी बनावटी अधीनता का सा दिखावा करते हुए उसके निकट खड़े थे। साफ नजर आ रहा था कि ओरेनबुर्ग के अफसर के आने की खबर ने विद्रोहियों में बड़ी जिज्ञासा पैदा कर दी थी और उन्होंने अपने पूरे ठाट-बाट के साथ मुझसे मिलने की तैयारी की थी। पुगाचोव ने मुझे देखते ही पहचान लिया। उसकी बनावटी शान एकायक गायब हो गयी। "अरे, आप है हुजूर!" उसने बड़े उत्साह से कहा। "क्या हालचाल है? यहा कैसे आना हुआ?" मैंने जवाब दिया कि अपने काम से जा रहा था और आपके लोगों ने मुझे रोक लिया। "किस काम से?" उसने मुझसे पूछा। क्या जवाब दू, मैं यह नही जानता था। पुगाचोव ने यह मानते हुए कि मैं दूसरे लोगो के सामने बताना नही चाहता, अपने साथियो से बाहर जाने को कहा। दो को छोडकर, जो अपनी जगह से नहीं हिले, बाकी सबने उसके आदेश का पालन किया। "तुम्हे जो कुछ भी कहना है किसी तरह की झिझक के बिना इनके सामने कहो।" पुगाचोव ने मुझसे कहा, "मैं इनसे कुछ भी नहीं छिपाता हू।" मैंने इस नकली सम्राट के राजदानों को कनखियो से देखा। उनमे से एक था नाटा-सा, झुकी पीठ और सफेद दाढ़ीवाला बूढ़ा। उसमे तो इस चीज के सिवा कोई खास बात नही थी कि वह अपने भूरे कोट के कंधे पर नीला रिबन डाले था। लेकिन उसके साथी को जिन्दगी भर नहीं भूल सकूगा।

लम्बा-तडगा, मोटा-तगड़ा, चौडे-चकले कधे। मुझे वह कोई पैतालीस साल का लगा। लाल रग की घनी दाढी, चमकती हुई भूरी आखे, नासिकाओ के बिना नाक और माथे तथा गालो पर लाल रग के धब्बे उसके चेचकरू चौडे चेहरे को ऐसा भाव प्रदान करते थे कि बयान से बाहर। वह लाल कमीज़, किर्गीज़ी चोगा और कज्जाकी शलवार पहने था। पहला (जैसा कि मुझे बाद मे पता चला) फरार दफादार बेलोबोरोदोव था और दूसरा अफ़नासी सोकोलोव (जिसे ख्लोपूशा के नाम से पुकारा जाता था) निर्वासित अपराधी था जो तीन बार साइबेरिया की खानो से भाग चुका था। मेरे मन मे भारी उथल-पुथल पैदा करनेवाली भावनाओ के बावजूद मैं सयोग से जिन लोगो की सगत मे आ गया था, उन्होने मेरी कल्पना को अत्यधिक वशीभूत कर लिया। किन्तु पुगाचोव ने प्रश्न दोहराकर फिर से मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया – "तो बोलो, किसलिये तुम ओरेनबुर्ग से आये हो?"

मेरे दिमाग में एक अजीब-सा ख्याल आया – मुझे लगा कि दूसरी बार पुगाचोव से मिला देनेवाली मेरी किस्मत ने मानो ऐसा मौका दिया है कि मैं अपने इरादे को अमली शक्ल दू। मैंने इस मौके का फायदा उठाने का फैसला किया और अपने फैसले पर सोच-विचार किये बिना पुगाचोव के सवाल का जवाब दिया –

"मैं एक यतीम लडकी को बचाने के लिये, जिसके साथ बहा बुरा बर्ताव किया जा रहा है, बेलोगोर्स्क जा रहा था।"

पुगाचोव की आखो मे बिजली-सी कौंध गई।

"मेरे लोगो मे से किसे यतीम लडकी के साथ बुरा बर्ताव करने की हिम्मत हुई?" वह चिल्ला उठा। "वह चाहे कितना ही धूर्त क्यो न हो, मेरे इन्साफ़ से नही बच सकेगा। बोलो, कौन है वह अपराधी?"

"श्वाब्रिन," मैंने जवाब दिया। "वह उस लडकी को बन्दी बनाये हुए है जिसे तुमने पादरिन के यहा बीमारी की हालत मे देखा था और उससे जबर्दस्ती शादी करना चाहता है।"

"मैं उस श्वाब्रिन की अक्ल ठिकाने करूगा," पुगाचोव ने रौद्र रूप धारण करते हुए कहा। "उसे मालूम हो जायेगा कि मनमानी और लोगो के साथ बुरा बर्ताव करने का क्या नतीजा होता है। मैं उसे सूली दे दूगा।"

"कुछ कहने की इजाजत दो," ख्लोपूशा ने भर्रायी-सी आवाज से कहा। "श्वाब्रिन को दुर्गपति बनाने में भी तुमने जल्दी की और अब सूली देने की भी जल्दी कर रहे हो। एक कुलीन को कज्जाकों के सिर पर बिठाकर तुम उनकी बेइज्जती कर चुके हो और अब उसके बारे में पहली निन्दा-चुगली सुनते ही उसे सूली देकर कुलीनों को नहीं डराओ।"

'कोई जरूरत नहीं है उन पर रहम करने की, उन्हें रुतबे देने की!' नीले रिबन वाले बूढ़े ने कहा। "श्वाब्रिन को सूली देने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन साथ ही इस अफसर साहब से अच्छी तरह यह पूछ लेना भी कुछ बुरा नहीं होगा कि किसलिये यहां पधारा है। अगर यह तुम्हें सम्राट नहीं मानता तो तुमसे इन्साफ की उम्मीद क्यों रखता है? अगर सम्राट मानता है, तो आज तक ओरेनबुर्ग में तुम्हारे जानी दुश्मनों की बगल में क्यों बैठा रहा? क्या तुम्हारे लिये यह हुक्म देना ठीक नहीं होगा कि इसे फौजी दफ्तर में ले जाया जाये और वहां लोहे की सलाखें गर्मायी जायें? मेरा दिल कहता है कि इस हजरत को ओरेनबुर्ग के अफसरों ने हमारे पास भेजा है।"

शैतान बुड्ढे की दलील मुझे काफी वजनी लगी। यह सोचकर कि मैं किन लोगों के हाथों में हूं मेरे रोंगटे खड़े हो गये। पुगाचोव मेरी घबराहट ताड़ गया।

"तो हुजूर?" उसने मेरी ओर आंख मारते हुए कहा, "लगता है कि मेरा फील्डमार्शल अक्ल की बात कह रहा है। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

पुगाचोव द्वारा ली गयी इस चुटकी से फिर मेरी हिम्मत बंध गयी। मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मैं पूरी तरह से उसके रहम पर हूं और वह मेरे साथ जैसा भी चाहे, बर्ताव कर सकता है।

"अच्छी बात है," पुगाचोव बोला। "अब यह बताओ कि तुम्हारे नगर की कैसी हालत है?"

"भगवान की कृपा से सब कुछ ठीक-ठाक है," मैंने जवाब दिया।

"सब कुछ ठीक-ठाक है?" पुगाचोव ने मेरे शब्दों को दोहराया। 'और लोग भूख से मर रहे हैं।"

नकली सम्राट सच कह रहा था। लेकिन मैंने वफादारी की कसम

निभाते हुए यकीन दिलाना शुरू किया कि ये सब झूठी अफवाहे हैं और ओरेनबुर्ग मे रसद की कोई कमी नही है।

"देख रहे हो," बूढे ने मेरी बात पकडी, "वह तुम्हारी आखो मे साफ-साफ धूल झोक रहा है। वहा से भागकर आनेवाले सभी लोग यह कहते हैं कि वहा भुखमरी और महामारी फैली हुई है, कि लोग जानवरो की लाशे खाते हैं और उनके मिल जाने पर भी अल्लाह का शुक्र करते हैं। मगर यह हजरत यकीन दिला रहा है कि वहा सब कुछ ठीक-ठाक है। अगर श्वाबरिन को सूली देना चाहते हो तो उसी सूली पर इस छैले को भी लटका दो, ताकि किसी को भी एक-दूसरे से ईर्ष्या न हो।"

ऐसा प्रतीत हुआ कि इस दुष्ट बुड्ढे के शब्दो से पुगाचोव का मन कुछ डावाडोल हो गया है। मेरी खुशकिस्मती थी कि ख्लोपूशा अपने साथी की बात का विरोध करने लगा।

"बस, काफी है, नाऊमिच," उसने कहा। "तुम तो सभी का गला घोटने और काटने पर उतारू रहते हो। क्या खूब सूरमा हो तुम भी? जाने कहा जान अटकी हुई है तुम्हारी। खुद कब्र मे पैर लटकाये हुए हो, मगर दूसरो की जान लेने पर उतारू रहते हो। क्या कम खून के धब्बे है तुम्हारी आत्मा पर?"

"और तुम तो बडे दूध के धोये हो?" बेलोबोरोदोव ने आपत्ति की। "तुम मे कहा से रहम आ गया?"

"बेशक, मैं भी गुनाहगार हू," ख्लोपूशा ने जवाब दिया, "यह हाथ (इतना कहकर उसने हड्डीली मुट्ठी भीच ली और आस्तीन ऊपर चढाकर बालो से ढकी हुई बाह दिखाई) भी ईसाइयो का खून बहाने के लिये अपराधी है। मगर मैंने दुश्मनो की जान ली, मेहमानो की नही। मैं चौराहे पर या घने जगल मे अपने शिकार को मारता हू, अगीठी के करीब घर पर नही। मैं लट्ठ और फरसे से वार करता हू, औरतो जैसी निन्दा-चुगलियो से काम नही लेता।"

बुड्ढे ने मुह फेर लिया और बडबडाया – "नककटा!"

"तुम वहा क्या बडबडा रहे हो, बुड्ढे खूसट?" ख्लोपूशा चिल्ला उठा। "मैं तुम्हे चखाऊगा नकटा होने का मजा। जरा सब्र करो, तुम्हारा वक्त भी आ जायेगा। खुदा ने चाहा, तो तुम्हारी नाक भी

"कुछ कहने की इजाज़त दो," ख्लोपूशा ने खरखरी-सी आवाज़ मे कहा। "श्वाबरिन को दुर्गपति बनाने में भी तुमने जल्दी की और अब सूली देने की भी जल्दी कर रहे हो। एक कुलीन को कज़ाकों के सिर पर बिठाकर तुम उनकी बेइज़्ज़ती कर चुके हो और अब उनके बारे मे पहली निन्दा-चुगली सुनते ही उसे सूली देकर कुलीनों को नहीं डराओ।"

"कोई जरूरत नही है उन पर रहम करने की, उन्हें डराने की!" नीले रिबन वाले बूढ़े ने कहा। "श्वाबरिन को सूली देने में कोई हर्ज नही, लेकिन साथ ही इस अफसर साहब से अच्छी तरह यह पूछ लेना भी कुछ बुरा नही होगा कि किसलिये यहां पधारा है। अगर वह तुम्हे सम्राट नही मानता तो तुमसे इन्साफ की उम्मीद क्यों रखता है? अगर सम्राट मानता है, तो आज तक ओरेनबुर्ग में तुम्हारे दुश्मनों की बगल मे क्यो बैठा रहा? क्या तुम्हारे लिये यह हुक्म देना ठीक नही होगा कि इसे फौजी दफ्तर मे ले जाया जाये और वहां मेरे को सलाखें गर्मायी जायें? मेरा दिल कहता है कि इस हज़रत को ओरेनबुर्ग के अफसरों ने हमारे पास भेजा है।"

शैतान बुड्ढे की दलील मुझे काफी वजनी लगी। यह सोचकर कि मैं किन लोगों के हाथों मे हू मेरे रोंगटे खड़े हो गये। पुगाचोव मेरी घबराहट ताड़ गया।

तो हुजूर?" उसने मेरी ओर आंख मारते हुए कहा, "लगता है कि मेरा फील्डमार्शल अक्ल की बात कह रहा है। क्या ख्याल है तुम्हारा?"

पुगाचोव द्वारा ली गयी इस चुटकी से फिर मेरी हिम्मत बंध गयी। मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मैं पूरी तरह से उसके रहम पर हूं और वह . भी चाहे, बर्ताव कर सकता है।

है," पुगाचोव बोला। "अब यह बताओ कि तुम्हारे ... है?"

... कुछ ठीक-ठाक है," मैंने जवाब दिया।

" पुगाचोव ने मेरे शब्दों को दोहराया।

।"

... था। लेकिन मैंने बातचीत की ...

निमटी की नजर हो जायेगी। फिलहाल तो इतनी ही खैर मनाओ कि कहीं मैं तुम्हारी दाढ़ी न नोच लूं!"

"ए मेरे जनरलो!" पुगाचोव ने बड़ी शान से कहा। "बस, काफी नोक-झोंक हो गयी। अगर ओरेनबुर्ग के सभी कुत्ते एक ही सूली पर लटक जायें, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन अगर हमारे कुत्ते एक-दूसरे पर झपटेंगे, तो बहुत बुरा होगा। सुलह कर लीजिये।"

ख्लोपूशा और बेलोबोरोदोव चुप्पी साधे हुए रुखाई से एक-दूसरे की ओर देखते रहे। मुझे इस बातचीत को बदलने की जरूरत महसूस हुई जिसका मेरे लिये बहुत ही बुरा अन्त हो सकता था। मैंने पुगाचोव को सम्बोधित करते हुए खुशमिजाजी से कहा—

"अरे, हां! घोड़े और भेड़ की खाल के कोट के लिये मैं तो तुम्हें धन्यवाद देना ही भूल गया। तुम्हारी इस मदद के बिना मैं शहर तक न पहुंच पाता और रास्ते में ही ठिठुरकर रह गया होता।"

मेरी यह चाल कामयाब रही। पुगाचोव खिल उठा।

"नेकी के बदले में नेकी करनी चाहिये," पुगाचोव ने आंख मारते और सिकोड़ते हुए कहा। "अच्छा, अब यह बताओ कि उस लड़की से तुम्हारा क्या वास्ता है जिसके साथ श्वाबरिन बुरा बर्ताव कर रहा है? कहीं उसने तुम्हारे दिल में तो घर नहीं कर रखा है? बोलो?"

"वह मेरी मंगेतर है," हवा का रुख अपने हक में देखते और सचाई को छिपाने की जरूरत न महसूस करते हुए मैंने पुगाचोव को जवाब दिया।

"तुम्हारी मंगेतर!" पुगाचोव चिल्ला उठा। "तुमने पहले क्यों नहीं कहा? हम तुम्हारी शादी करेंगे और तुम्हारी शादी की दावत उड़ायेंगे!" इसके बाद उसने बेलोबोरोदोव को सम्बोधित करते हुए कहा, "सुनो, फील्डमार्शल! इन हुजूर के साथ हमारी पुरानी दोस्ती है। आओ, अब सब एकसाथ खाना खायें। रात से प्रभात भला। कल सुबह देखा जायेगा कि हम इसके साथ क्या बर्ताव करें।"

मैंने खुशी से इस सम्मान से इन्कार कर दिया होता, मगर कोई चारा नहीं था। दो जवान कज्जाक लड़कियों ने, जो इस घर के मालिक की बेटियां थीं, मेज पर सफेद मेजपोश बिछा दिया, डबल रोटी और मछली का शोरबा और शराब तथा बियर की कुछ सुराहियां ले आईं।

मैं दूसरी बार पुगाचोव और उसके दुष्ट साथियों की सगत मे खाने की एक ही मेज पर बैठा था।

अपनी इच्छा के विरुद्ध मैं जिस रग-रस का साक्षी बना हुआ था, वह काफी रात तक जारी रहा। आखिर नशा मेरे साथियो पर हावी होने लगा। पुगाचोव अपनी जगह पर बैठा हुआ ही ऊघने लगा, उसके साथी उठे और उन्होंने मुझे उसे छोड़कर बाहर चलने का इशारा किया। मैं उनके साथ बाहर आ गया। ख्लोपूशा के हुक्म के मुताबिक सन्तरी मुझे फौजी दफ्तर मे ले गये। सावेलिच भी वहीं था और मुझे उसके साथ छोड़कर उन्होंने बाहर से ताला लगा दिया। बूढ़ा सावेलिच घटना-चक्र मे इतना चकित था कि उसने मुझसे कुछ भी पूछ-ताछ नहीं की। वह अधेरे मे लेट गया, देर तक आहे भरता तथा आह-ओह करता रहा और आखिर खर्राटे लेने लगा। मैं ख्यालो मे खो गया, जिन्होंने क्षण भर को भी मुझे पलक नहीं झपकने दी।

अगली सुबह को पुगाचोव ने मुझे बुलवा भेजा। मैं उसके पास गया। उसके घर के बाहर तीन तातारी घोड़ो से जुती हुई स्लेज खड़ी थी। सड़क पर लोगो की भीड़ थी। पुगाचोव से मेरी ड्योढ़ी मे भेंट हुई। वह सफरी कपड़े—फर-कोट और किर्गीज़ी टोपी पहने था। पिछली शाम के उसके साथी उसे घेरे हुए थे और उनके चेहरो पर चापलूसी का ऐसा भाव था जो मेरे द्वारा पिछले दिन देखे गये भाव से सर्वथा भिन्न था। पुगाचोव ने प्रसन्नतापूर्वक मुझसे हाथ मिलाया और स्लेज मे बैठने को कहा।

हम स्लेज मे सवार हो गये। "बेलोगोर्स्क दुर्ग को चलो!" पुगाचोव ने चौड़े कन्धोवाले तातार कोचवान से कहा जो तीनो घोड़ो को हाकने के लिये स्लेज मे तैयार खड़ा था। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। घोड़े चल पड़े, घण्टिया बज उठीं और स्लेज हवा से बाते करने लगी

"रुको! रुको!" ज़ोर से आवाज सुनाई दी जो मेरी बहुत ही जानी-पहचानी थी। मैंने सावेलिच को हम लोगो की ओर भागे आते देखा। पुगाचोव ने स्लेज रोकने का आदेश दिया। "भैया, प्योतर अन्द्रेइच!" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा। "बुढ़ापे मे मुझे नहीं छोड़ो इन बद "—"अरे बुड्ढे खूसट!" पुगाचोव ने उससे कहा। "भगवान ने हमे फिर मिला दिया। बैठ जाओ, कोचवान की सीट पर।"—"धन्यवाद

महाराज, धन्यवाद हुजूर!" सावेलिच ने बैठते हुए कहा। "बूढ़े आदमी की चिन्ता करने और उसके दिल को तसल्ली देने के लिये भगवान तुम्हे सौ बरस तक जिन्दा रखे। जब तक जीता रहूगा, भगवान से तुम्हारे लिये प्रार्थना करूगा और खरगोश की खाल के कोट की अब कभी याद नही दिलाऊगा।"

खरगोश की खाल के कोट की चर्चा से पुगाचोव सचमुच ही आग-बबूला हो सकता था। लेकिन खुशकिस्मती कहिये कि नकली सम्राट ने या तो यह सुना नही या फिर बेमौके के इस इशारे की तरफ जान-बूझकर कोई ध्यान नही दिया। घोडे तेजी से दौड़ने लगे – लोग रास्ते मे रुक-रुककर दोहरे होते हुए उसका अभिवादन करते। पुगाचोव जवाब मे दाये-बाये सिर हिलाता जा रहा था। आन की आन मे हम गाव से बाहर आ गये और स्लेज बढिया रास्ते पर तेजी से बढ चली।

इस बात की आसानी से कल्पना की जा सकती है कि इस क्षण मैं क्या अनुभव कर रहा था। कुछ घण्टे बाद मैं उससे मिलनेवाला था जिसे मैं अपने लिये मानो खो ही चुका था। मैं हमारे मिलन-क्षण की कल्पना कर रहा था मैं उस व्यक्ति के बारे मे भी सोच रहा था जिसके हाथो मे मेरा भाग्य था और जो किसी अजीब कारणवश अदृश्य सूत्रो से मेरे साथ जुडा हुआ था। मुझे उस आदमी की बेसमझी की क्रूरता, खून के प्यासे रवैये का भी ध्यान आया जो अब मेरे दिल की रानी का रक्षक होनेवाला था! पुगाचोव को यह मालूम नही था कि वह कप्तान मिरोनोव की बेटी है। गुस्से से पगलाया हुआ श्वाब्रिन उसे यह सब कुछ बता सकता था। किसी और तरीके से भी पुगाचोव को सारी सचाई मालूम हो सकती थी . तब क्या होगा मरीया इवानोव्ना का? मुझे अपने सारे शरीर मे झुरझुरी-सी महसूस हुई, मेरे रोगटे खड़े हो गये

पुगाचोव ने यह प्रश्न करके सहसा मेरी विचार-शृंखला को भग कर दिया –

"हुजूर, किन ख्यालो मे खो गये?"

"ख्यालो मे खोये बिना रह ही कैसे सकता हू," मैंने उसे जवाब । "मैं फौजी अफसर और कुलीन हूं। अभी कल तक मैं तुम्हारे ... लोहा ले रहा था, आज तुम्हारे साथ एक ही स्लेज मे जा रहा

हू और मेरी जिन्दगी की खुशी तुम पर निर्भर है।"

"तो क्या डर लगता है तुम्हे?" पुगाचोव ने पूछा।

मैंने जवाब दिया कि जब एक बार वह मुझे माफ कर चुका है, तो मैं केवल उसका दया-पात्र होने की ही नही, बल्कि उसकी सहायता पाने की भी आशा रखता हूं।

"तुम ठीक कहते हो, भगवान की कसम, बिल्कुल ठीक कहते हो!" नक़ली सम्राट ने कहा। "तुमने देखा था न कि मेरे लोग तुम्हे कैसी नज़र से देखते थे। वह बुड्ढा तो आज भी इस बात की रट लगाये हुए था कि तुम जासूस हो, तुम्हे यातना और सूली देनी चाहिये। लेकिन मैं नही माना," उसने आवाज धीमी करके, ताकि सावेलिच और तातार उसकी बात न सुन सके, इतना और जोड दिया, "क्योकि तुम्हारा शराब का गिलास और खरगोश की खाल का कोट नही भूला था। देखते हो न, मैं दूसरो के खून का वैसा ही प्यासा नही हू, जैसा कि तुम्हारे लोग मेरे बारे मे कहते हैं।"

बेलोगोर्स्क दुर्ग पर जब कब्ज़ा किया गया था और तब क्या हुआ था, मुझे वह सब याद हो आया, लेकिन पुगाचोव की बात का खण्डन करना मैंने आवश्यक नही समझा और कुछ भी नही कहा।

"मेरे बारे मे ओरेनबुर्ग मे क्या कहा जा रहा है?" कुछ देर चुप रहने के बाद पुगाचोव ने पूछा।

"वहा जा रहा है कि तुमसे मोर्चा लेना लोहे के चने चबाने के बराबर है। निश्चय ही तुमने अपनी धाक मनवा ली है।"

नक़ली सम्राट के चेहरे पर अहंभाव की तुष्टि झलक उठी।

"हा!" उसने खुश होते हुए कहा। "मैं लडता तो खूब डटकर हू। तुम्हारे ओरेनबुर्ग मे युज़ेयेवा के निकट हुई लडाई के बारे मे जानते हैं या नही? चालीस जनरल मार डाले गये, चार पलटने बन्दी बना ली गयी। क्या ख्याल है तुम्हारा, प्रशा का बादशाह मेरे मुकाबले मे डटा रह सकता?"

इस उचक्के का डीग हाकना मुझे दिलचस्प लगा।

"तुम्हारा अपना क्या ख्याल है इस बारे मे?" मैंने उससे पूछा, "तुम फ्रेडरिक से निपट लेते?"

फ़्रेडरिक फ़्रेडरिकोविच* से? क्यों नहीं? तुम्हारे जनरलों से तो मैं निपट लेता हूं और उन्होंने उसे पीट डाला था। अभी तक तो मेरे हथियारों ने मेरा साथ दिया है। अभी क्या है, जब मास्को पर चढ़ाई करूंगा, तब देखना।

"तुम्हारा ख्याल है कि तुम मास्को पर भी चढ़ाई कर पाओगे?"

नकली सम्राट कुछ देर को मौन में डूब गया और धीमे से बोला–

भगवान ही जानता है। मेरी राह तंग है, विस्तार की कमी है। मेरे जवानों के दिमागों में सभी तरह की उल्टी-सीधी बातें आती हैं। वे चोर-उचक्के हैं। मुझे हर वक्त अपने कान खड़े रखने चाहिये। पहली नाकामी होते ही वे अपनी गर्दन बचाने के लिये मेरा सिर कटवा देंगे।

'यही तो बात है!' मैंने पुगाचोव से कहा। "क्या तुम्हारे लिये वक्त रहते उनसे पिंड छुड़ा लेना और अपने को सम्राज्ञी की दया पर छोड़ देना ज़्यादा अच्छा नहीं होगा?"

पुगाचोव बड़ी कटुता से मुस्कराया।

"नहीं," उसने जवाब दिया, "मेरे लिये क़दम पीछे हटाने के मामले में देर हो चुकी है। मुझे माफ़ नहीं किया जायेगा। जैसे शुरू किया था, वैसे ही जारी रखूंगा। कौन जाने? शायद कामयाबी मिल जाये! ग्रीश्का ओत्रेप्येव ने तो आखिर मास्को पर शासन किया ही था।"

"उसका अन्त क्या हुआ था, यह तो जानते हो न? उसे खिड़की से बाहर फेंका गया था, उसके टुकड़े-टुकड़े किये गये थे, उसे जलाया गया था, उसकी राख को तोप में भरकर उड़ाया गया था!"

"सुनो," पुगाचोव ने एक अजीब उत्साह से ओतप्रोत होकर कहा। "तुम्हें वह किस्सा सुनाता हूं जो एक कल्मीक बुढ़िया ने मुझे बचपन में सुनाया था। एक बार उकाब ने कौवे से पूछा– 'कौवे, तुम इस दुनिया में तीन सौ साल तक जीते रहते हो, जबकि मैं कुल

* पुगाचोव ने व्यंग्यपूर्वक प्रशा के बादशाह फ़ेडरिक द्वितीय को रूसी नाम से सम्बोधित किया है। रूस और प्रशा के बीच सातवर्षीय युद्ध में पुगाचोव सैनिक था। इस युद्ध में रूस ने प्रशा को पराजित । और १७६० में रूसी सेना बर्लिन में दाखिल हुई। –स०

तैंतीस वर्ष तक ही जी पाता हूँ भला क्या? – इसलिये पक्षीराज कौवे ने उसे जवाब दिया कि तुम ताजा खून पीते हो और मैं मुर्दा मांस पर ज़िन्दा रहता हूँ। उकाब ने कुछ देर सोचा और बोला अच्छी बात है, मैं भी ऐसा ही करके देखता हूँ। सो उकाब और कौवा उड़ चले। उन्होंने एक मरा हुआ घोड़ा देखा – दोनों नीचे उतरकर उसकी लाश पर जा बैठे। कौवा मांस नोचकर खाने और उसकी तारीफ करने लगा। उकाब ने एक बार चोंच मारी, दूसरी बार चोंच मारी, पंख फड़फड़ाये और कौवे से कहा, नहीं, भैया कौवे, तीन सौ साल तक लाश का गोश्त खाने के बजाय एक बार ताज़ा खून पी लेना कहीं बेहतर है और फिर भगवान जो करे, वही ठीक है!' तो कैसा है यह कल्मीक किस्सा?"

"बड़ा दिलचस्प है," मैंने जवाब दिया। "किन्तु मेरी नज़र में हत्या और लूट-मार से जीना भी लाश खाने के बराबर है।"

पुगाचोव ने मुझे हैरानी से देखा और कोई जवाब नहीं दिया। अपने-अपने ख्यालों में खोये हुए हम दोनों खामोश रहे। तातार कोचवान ने कोई उदासी भरा गीत गाना शुरू कर दिया। सावेलिच कोचवान की सीट पर ऊंघते हुए डोल रहा था। जाड़े की साफ़-सपाट सड़क पर स्लेज उड़ी जा रही थी. अचानक मुझे बाड़ और गिरजे की घण्टे वाली मीनार सहित याइक नदी के खड़े तट पर छोटा-सा गांव दिखाई दिया और कोई पन्द्रह मिनट बाद हमने बेलोगोर्स्क दुर्ग में प्रवेश किया।

बारहवां अध्याय

यतीम

> पेड़ सेब का जैसे अपना –
> नहीं कुलमिया नहीं नई शाखाएं इस पर
> हाय नहीं अपनी दुल्हन का –
> नहीं मिला है और न मां का स्नेह-दुलार।

कौन करे उसका शृंगार?
दे आशीष, उसे दे प्यार?

विन्ड्-मैन

स्लेज दुर्गपति के घर के निकट पहुच गयी। लोगो ने पुगाचोव की स्लेज की घण्टियो की आवाज पहचान ली और उनके दल के दल हमारे पीछे-पीछे दौडने लगे। श्वाबरिन ने बाहर ओसारे मे आकर नकली सम्राट का स्वागत किया। वह कज्जाकों की तरह कपडे पहने था और उसने दाढी बढा ली थी। ग़द्दार ने पुगाचोव को सहारा देकर स्लेज से उतारा और दास सरीखी भावाभिव्यक्तियों द्वारा अपनी प्रसन्नता और निष्ठा व्यक्त की। मुझे देखकर वह घबरा-सा गया, किन्तु शीघ्र ही उसने अपने को सम्भाल लिया और यह कहते हुए मेरी ओर हाथ बढाया – "और तुम भी हमारे हो गये? बहुत पहले ही ऐसा कर लेना चाहिये था!" मैंने मुह फेर लिया और कोई उत्तर नहीं दिया।

चिर-परिचित कमरे मे जाने पर, जहा अतीत के करुण समाधि-लेख की तरह दिवगत दुर्गपति का डिप्लोमा अभी तक दीवार पर लटका हुआ था, मेरा दिल टीस उठा। पुगाचोव उसी सोफे पर बैठ गया जहा अपनी बीवी की बडबड सुनते हुए इवान कुज्मिच ऊघ जाया करते थे। श्वाबरिन खुद उसके लिये वोदका लेकर आया। पुगाचोव ने एक जाम पी लिया और मेरी ओर सकेत करते हुए उससे कहा, "इन हुजूर की भी खातिरदारी करो!" श्वाबरिन ट्रे लिये हुए मेरे पास आया, लेकिन मैंने दूसरी बार उसकी ओर से मुह फेर लिया। वह बेहद परेशान नजर आ रहा था। अपनी सहज बुद्धि से उसने निश्चय ही यह अनुमान लगा लिया था कि पुगाचोव उससे नाराज है। वह उससे डरता था और मेरी ओर अविश्वास से देखता था। पुगाचोव ने दुर्ग की स्थिति और शत्रु-सेनाओ आदि के बारे मे पूछ-ताछ की और फिर अचानक उससे यह प्रश्न किया –

"यह बताओ, भैया, किस लडकी को तुम बन्दी बनाये हुए हो? उसे मुझे दिखाओ तो।"

श्वाबरिन का चेहरा मुर्दे की तरह पीला हो गया।

"महाराज," वह कापती आवाज मे बोला, – "महाराज,

वह बन्दी नहीं है .. वह बीमार है .. अपने कमरे मे लेटी हुई है।"

"मुझे उसके पास ले चलो," नकली सम्राट ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। टाल-मटोल करना सम्भव नही था। श्वाबरिन पुगाचोव को मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर ले चला। मैं उनके पीछे-पीछे हो लिया। श्वाबरिन ज़ीने मे रुका।

"महाराज!" वह बोला। "आप मुझे कुछ भी करने का हुक्म दे सकते हैं, लेकिन किसी पराये आदमी को मेरी बीवी के कमरे मे नही जाने दीजिये।"

मैं सिर से पाव तक काप उठा।

"तो तुमने शादी कर ली!" मैंने श्वाबरिन से कहा और इस क्षण मे उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालने को तैयार था।

"बस, काफी है!" पुगाचोव ने मुझे चुप करवा दिया। "यह मेरा मामला है। और तुम," उसने श्वाबरिन को सम्बोधित करते हुए कहा, "बहुत होशियारी दिखाने और बहानेबाज़ी करने की कोशिश नही करो। वह तुम्हारी बीवी है या नही, मै जिसको चाहूगा, उसके पास ले जाऊगा। हुज़ूर, तुम आओ मेरे साथ।"

कमरे के दरवाज़े के करीब श्वाबरिन फिर से रुका और टूटती-सी आवाज मे बोला –

"महाराज, आपको पहले से ही आगाह कर देना चाहता हू कि उसे बहुत ज़ोर का बुखार है और वह तीन दिन से सरसाम मे लगातार बड़बड़ा रही है।"

"दरवाज़ा खोलो!" पुगाचोव ने कहा।

श्वाबरिन अपनी जेबे टटोलने लगा और बोला कि चाबी अपने साथ लाना भूल गया है। पुगाचोव ने दरवाज़े पर ठोकर मारी, ताला टूट गया, दरवाज़ा खुल गया और हम भीतर दाखिल हुए।

मैंने कमरे मे नज़र डाली और सकते मे आ गया। किसान औरतो के ढग की फटी-पुरानी पोशाक पहने दुबली-पतली, पीले चेहरे और अस्त-व्यस्त बालोवाली मरीया इवानोव्ना फर्श पर बैठी थी। उसके सामने रोटी के टुकड़े से ढकी हुई पानी की गागर रखी थी। मुझे देखकर वह चौकी और चीख उठी। तब मेरी क्या हालत हुई थी – मुझे याद नही।

पुगाचोव ने श्वाब्रिन की ओर देखा और कटु मुसकान होंठों पर लाते हुए कहा,

"खूब अच्छा अस्पताल है हुजूरवाला!" इसके बाद मरीया इवानोव्ना के पास जाकर उसने पूछा, "मेरी रानी, मुझे यह बताओ कि तुम्हारा पति तुम्हें किस बात की सजा दे रहा है? किस कारण अपराधी हो तुम इसके सम्मुख?"

"मेरा पति!" मरीया इवानोव्ना ने इन शब्दों को दोहराया। "यह मेरा पति नहीं है। मैं कभी भी इसकी पत्नी नहीं बनूंगी! अगर कोई मुझे इसके चंगुल से छुटकारा नहीं दिलायेगा, तो मैं मर जाना बेहतर समझूंगी और मर जाऊंगी।"

पुगाचोव ने जलती नज़र से श्वाब्रिन की ओर देखा।

"तुमने मुझे धोखा देने की हिम्मत की!" उसने कहा। "जानते हो कमीने, तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया जाना चाहिये?"

श्वाब्रिन घुटनों के बल हो गया। इस क्षण तिरस्कार की भावना ने मेरे घृणा और गुस्से की जगह ले ली। मैं एक फरार कज़्ज़ाक के पैरों पर पड़े हुए कुलीन को तिरस्कारपूर्वक देख रहा था। पुगाचोव कुछ नर्म पड़ गया।

"इस बार तुम्हें माफ करता हूं," उसने श्वाब्रिन से कहा, "लेकिन याद रखना कि अगर तुमने फिर ऐसी हरकत की, तो तुम्हें इस अपराध की भी सजा दी जायेगी।" इसके बाद मरीया इवानोव्ना को सम्बोधित करते हुए वह स्नेहपूर्वक बोला, "बाहर जाओ, सुन्दरी, मैं तुम्हें मुक्त करता हूं। मैं सम्राट हूं।"

मरीया इवानोव्ना ने झटपट पुगाचोव की तरफ देखा और उसे यह भांपते देर न लगी कि उसके सामने उसके माता-पिता का हत्यारा खड़ा है। उसने दोनों हाथों से मुंह ढक लिया और मूर्च्छित होकर गिर गयी। मैं उसकी ओर लपका, किन्तु इसी क्षण मेरी पुरानी परिचिता पालाशा बेधड़क कमरे में दाखिल हुई और अपनी मालकिन की देख-भाल करने लगी। पुगाचोव कमरे से बाहर चला गया और हम तीनों नीचे मेहमानखाने में आ गये।

"... हुजूर?" पुगाचोव ने हंसते हुए कहा। "सुन्दरी को तो ... करवा लिया! क्या ख्याल है, अब पादरी को बुलवाकर

तुम्हारे साथ उसे अपनी भानजी की शादी करने को कहा जाये? मैं धर्म-पिता का कर्तव्य निभाऊगा और श्वाबरिन बनेगा दूल्हे का साथी। खूब छककर पियेगे और जी भरकर मौज मनायेगे।"

मुझे जिस बात की शंका थी, वही हुई। पुगाचोव का यह प्रस्ताव सुनकर श्वाबरिन आपे से बाहर हो गया।

"महाराज!" वह पागलो की तरह चिल्ला उठा। "मैं कुसूरवार हू मैंने आपके सामने झूठ बोला, लेकिन ग्रिनेव भी आपको धोखा दे रहा है। यह लडकी यहा के पादरी की भानजी नही इवान मिरोनोव की बेटी है जिसे इस दुर्ग पर अधिकार करने के समय सूली दी गयी थी।"

पुगाचोव ने अपनी दहकती आखे मेरे चेहरे पर टिका दी।

"यह और क्या मामला है?" उसने हैरान होते हुए पूछा।

"श्वाबरिन ने तुमसे सच कहा है," मैंने दृढता से उत्तर दिया।

"तुमने तो मुझे यह नही बताया," पुगाचोव ने कहा, जिसका चेहरा मुरझा सा गया था।

"तुम खुद ही सोचो," मैंने उसे उत्तर दिया, "क्या मै तुम्हारे लोगो के सामने ऐसा कह सकता था कि मिरोनोव की बेटी जिन्दा है? वे तो उसे नोच खाते। किसी हालत मे भी उसकी जान न बच पाती!"

"हा, यह भी सच है," पुगाचोव ने हसते हुए कहा। "मेरे उन पियक्कडो ने बेचारी लडकी पर रहम न किया होता। पादरिन ने अच्छा ही किया कि उन्हे चकमा दे दिया।"

"मेरी बात सुनो," पुगाचोव का अच्छा मूड देखकर मैंने अपनी बात आगे बढाई। "तुम्हे क्या कहकर सम्बोधित करू, मै यह नही जानता और जानना भी नही चाहता किन्तु भगवान जानता है कि तुमने मेरे लिये जो कुछ किया है, मैं उसके बदले मे खुशी से अपनी जान तक दे सकता हू। केवल मुझसे उस बात की माग न करो जो मेरी मान-मर्यादा और ईसाई के नाते मेरी आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध है। तुम मेरे उद्धारक हो। तुमने जैसे आरम्भ किया था, वैसे ही अन्त भी करो – इस बेचारी यतीम लडकी के साथ हमे जहा भी भगवान ले जाये, वहीं जाने दो। और तुम कही भी क्यो न होगे, कैसे भी क्यो न

होंगे, हम हर दिन तुम्हारी पापी आत्मा के उद्धार के लिये भगवान से प्रार्थना करेंगे "

पुगाचोव की कठोर आत्मा पसीज गयी।

"जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही सही!" उसने कहा। "सज़ा देता हूं तो सज़ा देता हूं और माफ़ करता हूं, तो माफ़ करता हूं — मेरा यही उसूल है। अपनी इस हसीना को जहां चाहो, वहां ले जाओ। भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्‌बुद्धि दे!"

इतना कहकर उसने श्वाबरिन को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सभी दुर्गों और नगर-द्वारों को लांघने का अनुमति-पत्र लिख दे। पूरी तरह से पराजित श्वाबरिन बुत बना खड़ा था। पुगाचोव दुर्ग देखने चल दिया। श्वाबरिन उसके साथ गया और मैं सफर की तैयारी का बहाना करके यहीं रुक गया।

मैं मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर भाग गया। दरवाज़ा बन्द था। मैंने दस्तक दी। "कौन है?" पालाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया। दरवाज़े के पीछे से मरीया इवानोव्ना की प्यारी सी आवाज़ सुनाई दी — "ज़रा रुकिये, प्योतर अन्द्रेइच! मैं कपड़े बदल रही हूं। आप अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना के यहां चले जाइये — मैं भी अभी वहां आ जाऊंगी।

उसकी बात मानते हुए मैं पादरी गेरासिम के घर की ओर चल दिया। पादरी और पादरिन मुझसे मिलने के लिये बाहर आ गये। सावेलिच ने उन्हें मेरे बारे में पहले से ही सूचना दे दी थी। "नमस्ते प्योतर अन्द्रेइच!" पादरिन ने कहा। "भगवान की कृपा से फिर भेंट हो गयी। कैसा हालचाल है? हम तो आपको हर दिन याद करते थे। प्यारी मरीया इवानोव्ना को तो आपके बिना बहुत कुछ सहना पड़ा! हां, कैसे, यह तो बताइये कि पुगाचोव के साथ आपने कैसे पटरी बिठा ली? आपकी बात कैसे मान ली उसने? और कुछ नहीं तो इसी के लिए हम इस बदमाश को धन्यवाद दे सकते हैं।" — "बस, बस, है बुढ़िया," पादरी गेरासिम ने उसे टोका। "जो कुछ जानती हो, सभी कुछ कह डालना तो ज़रूरी नहीं। बहुत बोलना अच्छा नहीं। [illegible] प्योतर अन्द्रेइच! कृपया भीतर आइये! बहुत बहुत [illegible] हुई है।"

पादरिन ने घर मे उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीजें मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बाते भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नही होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बडी साहसी लडकी है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारो पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने सक्षेप मे उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमे तो!" अकुलीना पम्फीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलो को दूर भगा दो, प्रभु! और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहते हैं उसके! खूब है वह!" इसी क्षण दरवाजा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और देर तक मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकला। हम दोनो इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नही कह पा रहे थे। हमारे मेजबानो ने अनुभव किया कि हमे अब उनकी सुध नही थी और इसलिये उन्होंने हमे अकेले छोड दिया। हमे दीन-दुनिया की खबर नही रही। हम बाते करते जाते थे और उनका अन्त नही होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पड़ा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतों-आजमाइशो का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनो रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग मे उसके लिये रहना सम्भव नही था। दुश्मन के घेरे मे सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नही सोची जा सकती

होंगे, हम हर दिन तुम्हारी पापी आत्मा के उद्धार के लिये भगवान से प्रार्थना करेंगे "

पुगाचोव की कठोर आत्मा पसीज गयी।

"जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही सही!" उसने कहा। "सज़ा देता हू तो सज़ा देता हू और माफ करता हू, तो माफ़ करता हू - मेरा यही उसूल है। अपनी इस हसीना को जहा चाहो, वहा ले जाओ। भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्बुद्धि दे!"

इतना कहकर उसने श्वाब्रिन को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सभी दुर्गों और नगर-द्वारों को लाघने का अनुमति-पत्र लिख दे। पूरी तरह से पराजित श्वाब्रिन बुत बना खड़ा था। पुगाचोव दुर्ग देखने चल दिया। श्वाब्रिन उसके साथ गया और मैं सफर की तैयारी का बहाना करके यहीं रुक गया।

मैं मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर भाग गया। दरवाज़ा बन्द था। मैंने दस्तक दी। "कौन है?" पालाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया। दरवाजे के पीछे से मरीया इवानोव्ना की प्यारी-सी आवाज़ सुनाई दी-"ज़रा रुकिये, प्योतर अन्द्रेइच! मैं कपड़े बदल रही हू। आप अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना के यहा चले जाइये - मैं भी अभी वहा आ जाऊगी।"

उसकी बात मानते हुए मैं पादरी गेरासिम के घर की ओर चल दिया। पादरी और पादरिन मुझसे मिलने के लिये बाहर आ गये। सावेलिच ने उन्हे मेरे बारे मे पहले से ही सूचना दे दी थी। "नमस्ते, प्योतर अन्द्रेइच," पादरिन ने कहा। "भगवान की कृपा से फिर भेंट हो गयी। कैसा हालचाल है? हम तो आपको हर दिन याद करते थे। प्यारी मरीया इवानोव्ना को तो आपके बिना बहुत कुछ सहना पड़ा! हा भैया, यह तो बताइये कि पुगाचोव के साथ आपने कैसे पटरी बिठा ली? आपकी जान कैसे बख्श दी उसने? और कुछ नहीं तो इसी के लिये हम उस बदमाश को धन्यवाद दे सकते हैं।" - "बस, बस, काफ़ी है, बुढ़िया," पादरी गेरासिम ने उसे टोका। "जो कुछ जानती हो, सभी कुछ कह डालना तो ज़रूरी नहीं। बहुत बोलना अच्छा नहीं होता। भैया प्योतर अन्द्रेइच! कृपया, भीतर आइये! बहुत, बहुत दिनों बाद मिल रहे है!"

पादरिन ने घर मे उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीज़ें मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बातें भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नही होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बडी साहसी लडकी है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारो पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने सक्षेप मे उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमे तो!" अकुलीना पम्फ़ीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलो को दूर भगा दो, प्रभु। और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहते हैं उसके! खूब है वह!" इसी क्षण दरवाज़ा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और देर तक मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकला। हम दोनो इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नही कह पा रहे थे। हमारे मेजबानो ने अनुभव किया कि हमे अब उनकी सुध नही थी और इसलिये उन्होंने हमे अकेले छोड दिया। हमे दीन-दुनिया की खबर नही रही। हम बाते करते जाते थे और उनका अन्त नही होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पडा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतो-आज़माइशो का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनो रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग मे उसके लिये रहना सम्भव नही था। दुश्मन के घेरे मे सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नही सोची जा सकती

पारशिन ने घर मे उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीजे मेरे सामने लाकर रख दी। साथ ही वह लगातार बाते भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाबरिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नही होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बडी साहसी लडकी है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारो पर नचाया) के जरिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने सक्षेप मे उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमे तो!" अकुलीना पम्फीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलो को दूर भगा दो, प्रभु! और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहने हैं उसके! खूब है वह!" इसी क्षण दरवाजा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ मे ले लिया और देर तक मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकला। हम दोनो इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नही कह पा रहे थे। हमारे मेजबानो ने अनुभव किया कि हमे अब उनकी सुध नही थी और इसलिये उन्होंने हमे अकेले छोड दिया। हमें दीन-दुनिया की खबर नही रही। हम बाते करते जाते थे और उनका अन्त नही होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पडा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतो-आजमाइशो का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाबरिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनो रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाबरिन द्वारा शासित दुर्ग मे उसके लिये रहना सम्भव नही था। दुश्मन के घेरे मे सभी तरह की मुसीबते सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नहीं सोची जा सकती

देंगे। हम हर दिन तुम्हारी पापी आत्मा के उद्धार के लिये भग-
वान से प्रार्थना करेंगे..."

पुगाचोव की कठोर आत्मा पसीज गयी।

"जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही सही!" उसने कहा। "या तो फांसी देता हूं या सजा देता हूं और माफ करता हूं, तो माफ करता हूं - मेरा यही उसूल है। अपनी इस हसीना को जहां चाहो, वहां ले जाओ। भगवान तुम दोनों को प्यार और सद्बुद्धि दे!"

इतना कहकर उसने श्वाब्रिन को सम्बोधित करते हुए आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सभी दुर्गों और नगर-द्वारों को लाघने का अनुमति-पत्र लिख दे। पूरी तरह से पराजित श्वाब्रिन बुत बना खड़ा था। पुगाचोव दुर्ग देखने चल दिया। श्वाब्रिन उसके साथ चला और मैं सफर की तैयारी का बहाना करके यहीं रुक गया।

मैं मरीया इवानोव्ना के कमरे की ओर भाग गया। दरवाजा बन्द था। मैंने दस्तक दी। "कौन है?" पालाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया। दरवाजे के पीछे से मरीया इवानोव्ना की प्यारी-सी आवाज सुनाई दी - "जरा रुकिये, प्योतर अन्द्रेइच! मैं कपड़े बदल रही हूं। आप अकुलीना पम्फीलोव्ना के यहां चले जाइये - मैं भी अभी वहां आ जाऊंगी।"

उसकी बात मानते हुए मैं पादरी गेरासिम के घर की ओर चल दिया। पादरी और पादरिन मुझसे मिलने के लिये बाहर आ गये। सावेलिच ने उन्हें मेरे बारे में पहले से ही सूचना दे दी थी। "नमस्ते, प्योतर अन्द्रेइच," पादरिन ने कहा। "भगवान की कृपा से फिर भेंट हो गयी। कैसा हालचाल है? हम तो आपको हर दिन याद करते थे। प्यारी मरीया इवानोव्ना को तो आपके बिना बहुत कुछ सहना पड़ा! हां भैया, यह तो बताइये कि पुगाचोव के साथ आपने कैसे पटरी बिठा ली? आपकी जान कैसे बख्श दी उसने? और कुछ नहीं तो इसी के लिये हम उस बदमाश को धन्यवाद दे सकते हैं।" - "बस, बस, काफी है, बुढ़िया," पादरी गेरासिम ने उसे टोका। "जो कुछ जानती हो, सभी कुछ कह डालना तो जरूरी नहीं। बहुत बोलना अच्छा नहीं होता। भैया प्योतर अन्द्रेइच! कृपया, भीतर आइये! बहुत, बहुत दिनों बाद मिल   है!"

पादरिन ने घर में उपलब्ध खाने-पीने की सभी चीज़ें मेरे सामने लाकर रख दीं। साथ ही वह लगातार बातें भी करती जाती थी। उसने मुझे बताया कि श्वाब्रिन ने कैसे मरीया इवानोव्ना को उसके हवाले कर देने के लिये विवश किया, मरीया इवानोव्ना कैसे फूट-फूटकर रोई और कैसे वह उनसे अलग नहीं होना चाहती थी, कैसे मरीया इवानोव्ना ने पालाशा (बड़ी साहसी लड़की है, जिसने सार्जेंट को भी अपने इशारों पर नचाया) के ज़रिये उसके साथ सम्पर्क बनाये रखा और कैसे उसने मरीया इवानोव्ना को मुझे पत्र लिखने की सलाह दी आदि। दूसरी ओर, मैंने संक्षेप में उसे अपनी कहानी सुनाई। यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके द्वारा दिये गये धोखे की जानकारी है, पादरी और पादरिन ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। "भगवान का ही भरोसा है हमें तो!" अकुलीना पम्फीलोव्ना ने कहा। "दुख के बादलों को दूर भगा दो, प्रभु। और अलेक्सेई इवानोविच, क्या कहने हैं उसके। खूब है वह!" इसी क्षण दरवाज़ा खुला और पीले चेहरे पर मुस्कान लिये हुए मरीया इवानोव्ना भीतर आई। उसने किसान युवती की पोशाक उतार दी थी और पहले की तरह ढंग की सादी-सी पोशाक पहने थी।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और देर तक मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकला। हम दोनों इतना कुछ कहना चाहते थे कि कुछ भी नही कह पा रहे थे। हमारे मेज़बानों ने अनुभव किया कि हमें अब उनकी सुध नहीं थी और इसलिये उन्होंने हमें अकेले छोड़ दिया। हमें दीन-दुनिया की खबर नही रही। हम बातें करते जाते थे और उनका अन्त नहीं होने को आ रहा था। मरीया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया जो दुर्ग पर अधिकार होने के बाद उसे सहन करना पड़ा था। उसने अपनी स्थिति की सारी भयानकता और उन सभी मुसीबतों-आज़माइशों का वर्णन किया जिनका कमीने श्वाब्रिन ने उसे शिकार बनाया था। हमने पहले के अच्छे और सुखी समय को भी याद किया हम दोनों रोये आखिर मैं उसे भविष्य की योजना बताने लगा। पुगाचोव के अधीन और श्वाब्रिन द्वारा शासित दुर्ग में उसके लिये रहना सम्भव नहीं था। दुश्मन के घेरे में सभी तरह की मुसीबतें सहते हुए ओरेनबुर्ग जाने की भी बात नहीं सोची जा सकती

और जब घोडे चल पडे तो फिर एक बार स्लेज से सिर बाहर निकालकर चिल्लाया – "तो विदा, हुजूर! शायद फिर कभी मुलाकात हो जाये।" सचमुच हमारी मुलाकात हुई, लेकिन किन परिस्थितियो मे!

पुगाचोव चला गया। मैं बहुत देर तक उस सफेद स्तेपी को देखता रहा जिसमे उसकी स्लेज तेजी से बढी जा रही थी। लोग-बाग अपनी-अपनी राह चलते बने। श्वाबरिन भी गायब हो गया। मैं पादरी के घर मे लौट आया। हमारे जाने की पूरी तैयारी हो चुकी थी, मैं देर नही करना चाहता था। दुर्गपति की पुरानी घोडा-गाडी पर हमारा सारा सामान लादा जा चुका था। कोचवानो ने आन की आन मे घोडे जोत दिये। मरीया इवानोव्ना गिरजे के पीछे दफनाये गये अपने माता-पिता की कब्रो से विदा लेने गयी। मैंने उसके साथ जाना चाहा, किन्तु उसने अनुरोध किया कि उसे अकेली ही रहने दिया जाये। कुछ मिनट बाद वह मूक आसू बहाती हुई चुपचाप वापस आ गयी। घोडा-गाडी लाई गयी। पादरी गेरासिम और उसकी पत्नी बाहर आकर खडे हो गये। मरीया इवानोव्ना, पालाशा और मैं – हम तीनो घोडा-गाडी मे बैठ गये। सावेलिच कोचवान की बगल मे जा बैठा। "नमस्ते, मेरी प्यारी मरीया इवानोव्ना! नमस्ते, प्योतर अन्द्रेइच, हमारे बाके सूरमा!" दयालु पादरिन ने कहा। "यात्रा शुभ हो और भगवान तुम दोनो को सुख-सौभाग्य दे!" हम रवाना हो गये। दुर्गपति के घर की खिडकी मे मुझे श्वाबरिन खडा दिखाई दिया। उसके चेहरे पर उदासी भरा क्रोध झलक रहा था। मैं पराजित शत्रु पर अपनी विजय का प्रदर्शन नही करना चाहता था और इसलिये मैंने नजर दूसरी ओर कर ली। आखिर हम दुर्ग के फाटक से बाहर निकले और हमेशा के लिये बेलोगोर्स्क दुर्ग से विदा हो गये।

तेरहवां अध्याय

गिरफ्तारी

बुरा नही माने हुजूर, मुझको कर्तव्य निभाना है –
जेल आपको इसी घडी, अब मुझको तो भिजवाना है।

— जाने को तैयार, जान पर मगर मुझे हर मेरे हैं,
क्या कारण है, मुझको मन की शाखें हर मेरे हैं।

क्न्याज़्निन

अगले दिन भी रानी मे, जिसके बारे मे मैं आज सुबह ही इतनी यातनापूर्ण चिन्ता मे घुल रहा था, ऐसे अप्रत्याशित मेल हो जाने पर मुझे हकीकत का यकीन नही हो रहा था और मैं यही कल्पना कर रहा था कि जो कुछ घटा है, वह केवल सपना है। ख्यालो मे डूबी-खोई-सी मरीया इवानोव्ना कभी मेरी ओर तो कभी सडक की ओर देखती थी और ऐसे लगता था कि अभी तक उसके होश-हवास ठीक नहीं हुए है, वह पूरी तरह सम्भल नही पाई है। हम दोनो खामोश थे। हमारे हृदय बहुत क्लान्त थे। हमे पता भी नही चला कि दो घण्टे बीत गये और हम पुगाचोव के ही अधीन एक अन्य दुर्ग मे पहुच गये। यहा हमने घोडे बदले। पुगाचोव द्वारा नियुक्त किये गये इस दुर्ग के दढियल कज्जाक दुर्गपति ने जिस तेजी से घोडे बदलवाये, जैसे हमारी लल्लो-चप्पो की, उससे मैं यह समझ गया कि हमारी स्लेज के बातूनी कोचवान की बदौलत मुझे यहा पुगाचोव का कृपा-पात्र मान लिया गया है।

हम आगे चल दिये। झुटपुटा होने लगा था। हम उस बस्ती के निकट पहुच रहे थे, जहा दढियल दुर्गपति के शब्दो मे एक शक्तिशाली दस्ता पडाव डाले था और वह नकली सम्राट की सेना में शामिल होने जा रहा था। पहरेदारो ने हमे रोका। यह पूछा जाने पर कि कौन जा रहा है, कोचवान ने ऊची आवाज मे जवाब दिया, "अपनी पत्नी सहित महाराज का मित्र"। अचानक हुस्सारो की भीड ने धुआधार गालिया बकते हुए हमे घेर लिया। "बाहर निकल, शैतान के दोस्त!" मुच्छल सार्जेंट-मेजर ने मुझसे कहा। "अभी तुम्हारी और तुम्हारी बीवी की खातिर की जायेगी!"

घोडा-गाडी से नीचे उतरकर मैंने यह माग की कि मुझे उनके सबसे बडे अफसर के पास ले जाया जाये। मुझ अफसर को अपने सामने देखकर फौजियो ने गालिया बकना बन्द कर दिया। सार्जेंट-मेजर मुझे मेजर के पास ले गया। सावेलिच बडबडाता हुआ मेरे पीछे-पीछे बना रहा – "ले लो मजा महाराज का मित्र होने का! गढे से बचे, खाई

मे गिरे... हे भगवान! क्या अन्त होगा इस सब का?" घोडा-गाडी धीरे-धीरे हमारे पीछे-पीछे आती रही।

पाच मिनट बाद हम रोशनी से जगमगाते घर के नजदीक पहुच गये। सार्जेंट-मेजर मुझे पहरे मे छोडकर मेरे बारे मे सूचना देने गया। उसने उसी वक्त लौटकर मुझे बताया कि मेजर साहब के पास मुझसे मिलने का वक्त नही है, उन्होंने हुक्म दिया है कि मुझे जेल भेज दिया जाये और श्रीमती जी को उनके पास लाया जाये।

"क्या मतलब है इसका?" मैं गुस्से से बौखलाकर चिल्ला उठा। "क्या उसका दिमाग चल निकला है?"

"मालूम नही, हुजूर," सार्जेंट-मेजर ने जवाब दिया। "हा, उन बडे हुजूर ने हुक्म दिया है कि आप हुजूर को जेल भेज दिया जाये और श्रीमती जी को उन बडे हुजूर के पास ले जाने का हुक्म दिया गया है, हुजूर!"

मैं दरवाजे की तरफ लपका। सन्तरियो ने मुझे रोकने की कोशिश नही की और मैं भागता हुआ उस कमरे मे घुस गया जहा छ हुस्सार अफसर जुआ खेल रहे थे। मेजर खजाची था। कितनी हैरानी हुई तब मुझे जब मैंने उसे देखते ही पहचान लिया। यह इवान इवानोविच जूरिन था, जिसने कभी सिम्बीर्स्क के होटल मे मुझसे पैसे जीत लिये थे।

"यह क्या देख रहा हू?" मैं चिल्ला उठा। "इवान इवानोविच? यह तुम्ही हो क्या?"

"अरे वाह, प्योतर अन्द्रेइच! यहा कैसे आना हुआ? कहा से आ टपके? बहुत खूब, मेरे भाई। तो बाजी हो जाये?"

"शुक्रिया। यही ज्यादा अच्छा होगा कि तुम मेरे कहीं ठहरने का इन्तजाम करने का हुक्म दो।"

"कही ठहरने का क्या सवाल पैदा होता है? मेरे यहा ठहरो।"

"ऐसा नही कर सकता – मैं अकेला नही हू।"

"तो अपने दोस्त को भी यही ले आओ।"

"मैं दोस्त के साथ नही एक महिला के साथ हू।"

"महिला के साथ! कहा तुमने उसे अपने गले बाध लिया? अरे, भैया! (इतना कहकर जूरिन ने ऐसे अर्थपूर्ण ढग से सीटी बजायी कि सभी ठठाकर हस पडे और मैं बिल्कुल चकरा गया।)

"खैर," जूरिन ने अपनी बात जारी रखी, "ऐसा ही सही। रहने की जगह का इन्तज़ाम हो जायेगा। मगर अफसोस की बात है, हमने पहले की तरह मौज उड़ाई होती... अरे, सुनो तो! पुगाचेव की उस सहेली को यहा क्यो नही लाया जा रहा? या वह ज़िद्दी है? उससे कह देना चाहिये कि डरे नही, कि रईसज़ादा बहुत ही शरीफ है, किसी तरह उसके दिल को ठेस नही लगायेगा। अगर बहुत हठ करे, तो उसे धकेलकर ले आओ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो?" मैंने जूरिन से कहा। "कैसी पुगाचेव की सहेली? वह तो शहीद हुए कप्तान मिरोनोव की बेटी है। मैं उसे रिहा करवाकर लाया हू और अब पिता जी के पास गाव ले जा रहा हू और वही छोड आऊगा।"

"क्या कहा! तो क्या तुम्हारे बारे मे ही मुझे अभी सूचना दी गयी थी? कृपया यह बताओ कि यह सब क्या किस्सा है?"

"बाद मे सब कुछ बताऊगा। भगवान के लिये अभी तो उस बेचारी लडकी को तसल्ली दो जिसे तुम्हारे हुस्सारो ने बुरी तरह डरा दिया है।"

जूरिन ने उसी समय सारी व्यवस्था कर दी। अनजाने ही हो जानेवाली इस भूल के लिये उसने खुद बाहर जाकर मरीया इवानोव्ना से माफी मागी और सार्जेंट-मेजर को उसे बस्ती के सबसे अच्छे मकान मे ले जाकर टिकाने का आदेश दिया। मैं जूरिन के साथ ही ठहर गया।

हमने रात का भोजन किया और जब हम दोनों ही रह गये तो मैंने उसे अपनी सारी दास्तान सुनाई। जूरिन बहुत ध्यान से मेरी बातें सुनता रहा। मेरे सब कुछ कह लेने पर उसने सिर हिलाते हुए कहा -

यह सब तो अच्छा है भैया मगर एक बात अच्छी नहीं - तुम्हारे सिर पर यह शादी का भूत क्यों सवार हुआ है? मैं ईमानदार अफसर हूं, तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता - मेरी बात पर यकीन करो कि शादी निरी बकवास चीज है। क्या लेना है तुम्हें बीवी और बच्चों के फेर में पड़कर? गोली मारो। मेरी बात मानो - कप्तान की बेटी से तुम अपना पिंड छुड़ा लो। सिम्बीर्स्क जाने का रास्ता मैंने दुश्मनों से साफ कर दिया है और वहां कोई खतरा नहीं। कल ही उसे अकेले माता-पिता के पास रवाना कर दो और खुद मेरी टुकड़ी में ही रह

जाओ। तुम्हारे ओरेनबुर्ग लौटने मे कोई तुक नही। अगर फिर से विद्रोहियो के हत्थे चढ गये, तो शायद ही फिर उनके पजे से निकल पाओगे। इस तरह यह मुहब्बत का जनून भी अपने आप ही दिमाग से निकल जायेगा और सारी बात ठीक हो जायेगी।"

यद्यपि मैं जूरिन के साथ पूरी तरह सहमत नही था, तथापि यह अनुभव करता था कि अफसर के नाते मेरी प्रतिष्ठा और मेरा कर्तव्य यह माग करते हैं कि मैं सम्राज्ञी की सेनाओ मे डटा रहूं। मैंने जूरिन की सलाह पर अमल करने का फैसला किया – मरीया इवानोव्ना को गाव भेज दूगा और खुद उसकी पलटन मे ही रह जाऊगा।

सावेलिच सोने के लिये मेरे कपडे बदलवाने को आया। मैंने उससे कहा कि वह अगले दिन ही मरीया इवानोव्ना को साथ लेकर गाव जाने की तैयारी कर ले। उसने हठ करते हुए विरोध किया –

"यह क्या कह रहे हो, मालिक? मैं तुम्हे छोडकर कैसे जा सकता हू? कौन तुम्हारी देख-भाल करेगा? तुम्हारे माता-पिता क्या कहेगे?"

मैं अपने इस बुजुर्ग की हठधर्मी से परिचित था, इसलिये मैंने प्यार और मन की सच्ची बात कहकर उसका दिल जीतने का फैसला किया।

"मेरे दोस्त, अर्खीप सावेलिच!" मैंने उससे कहा। "मुझे इन्कार नही करो, मुझ पर एहसान करो! मुझे यहा देख-भाल करनेवाले की जरूरत नहीं पडेगी, लेकिन अगर मरीया इवानोव्ना तुम्हारे बिना अकेली जायेगी, तो मेरा दिल बहुत परेशान रहेगा। उसकी सेवा करते हुए तुम मेरी भी सेवा करोगे, क्योकि मैंने यह पक्का इरादा बना लिया है कि सम्भव होते ही मैं उससे शादी कर लूगा।"

यह सुनकर सावेलिच ने इतनी हैरानी से हाथ झटके कि बयान से बाहर।

"'शादी कर लूगा!'" उसने मेरे शब्द दोहराये। "बेटा शादी करना चाहता है! लेकिन तुम्हारे पिता क्या कहेगे, माता क्या सोचेगी?"

"वे मान जायेगे, जरूर मान जायेगे," मैंने जवाब दिया, "मरीया इवानोव्ना को समझ भर लेने की देर है। मैं तुम पर भी भरोसा करता हू। मेरे माता-पिता तुम पर यकीन करते हैं, तुम भी हमारी वकालत करोगे न?"

बूढ़े का दिल पसीज गया।

"ओह, मेरी आखों की रोशनी, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने उत्तर दिया। "बेशक तुम शादी के मामले में जल्दी कर रहे हो, फिर भी मरीया इवानोव्ना इतनी भली हैं कि ऐसा अवसर हाथ से जाने देना पाप होगा। मो वही हो, जो तुम चाहते हो! मैं इस फ़रिश्ते को घर पहुंचा दूगा और बडी नम्रता से तुम्हारे माता-पिता से कहूंगा कि ऐसी दुलहन के लिये दहेज जरूरी नहीं।"

मैंने सावेलिच को धन्यवाद दिया और जूरिन के कमरे में अपने बिस्तर पर जा लेटा। अत्यधिक उत्साहित और भाव-विह्वल होने के कारण मैं खूब बतियाता रहा। शुरू मे जूरिन बहुत खुशी से मेरे साथ बाते करता रहा, मगर धीरे-धीरे उसके मुह से निकलनेवाले शब्द कम होते गये और उनके बीच सिलसिला टूटता चला गया। आखिर मेरे किसी सवाल का जवाब देने के बजाय उसने खर्राटे लेना शुरू किया और उसकी नाक बजने लगी। मैं चुप हो गया और कुछ देर बाद खुद भी सो गया।

अगली सुबह को मैं मरीया इवानोव्ना के पास पहुचा। मैंने उनसे अपने दिल की बात कही। उसे ठीक मानते हुए वह मेरे साथ फौरन सहमत हो गयी। जूरिन की पलटन उसी दिन नगर से रवाना होनेवाली थी। देर करना सम्भव नही था। मैंने उसी क्षण मरीया इवानोव्ना से विदा ली और अपने माता-पिता के नाम एक खत देते हुए उसे सावेलिच की देख-रेख मे छोड दिया। मरीया इवानोव्ना रो पडी। "तो विदा, प्योतर अन्द्रेइच!" उसने धीमी-सी आवाज मे कहा। "फिर कभी हमारी मुलाकात होगी या नही, यह तो भगवान ही जानता है। लेकिन मैं तुम्हें कभी नही भूलूगी, आखिरी सास तक तुम ही मेरे दिल मे बसे रहोगे।" मैं कोई जवाब नही दे पाया। हमारे आस-पास बहुत-से लोग थे। मै उनके सामने अपने हृदय को उद्वेलित करनेवाले भाव व्यक्त नही करना चाहता था। आखिर वह रवाना हो गयी। मैं उदास और गुमसुम-सा जूरिन के पास वापस आ गया। उसने मुझे रंग में लाने की कोशिश की और मैं खुद भी ऐसा ही चाहता था। हमने हो-हल्ला करते और मौज मनाते हुए दिन बिताया और शाम को हमारी पलटन यहा से चल दी।

यह फरवरी के अन्त की बात है। जंगी कार्रवाइयो को मुश्किल बनानेवाला जाडा खत्म हो रहा था और हमारे जनरल मिल-जुलकर कदम उठाने की तैयारिया कर रहे थे। पुगाचोव अभी भी ओरेनबुर्ग की नाकाबन्दी किये हुए था। इसी बीच हमारे दस्ते उसके निकट जमा होकर सभी दिशाओ से इन दुष्टो के गढ की ओर बढते जा रहे थे। विद्रोही गाव हमारी सेनाओं को देखते ही अधीनता स्वीकार कर लेते थे, लुटेरो के गिरोह सभी जगह हमे देखते ही भाग उठते थे और हर चीज इस बात का विश्वास दिलाती थी कि जल्द सब कुछ अच्छे ढग से समाप्त हो जायेगा।

शीघ्र ही प्रिंस गोलीत्सिन ने ततीश्चेव दुर्ग के निकट पुगाचोव के छक्के छुड़ा दिये, उसके गिरोहो को तितर-बितर कर दिया, ओरेनबुर्ग को घेरे से मुक्त करवा लिया और ऐसे प्रतीत हुआ मानो पुगाचोव के विद्रोह पर अन्तिम और निर्णायक चोट कर दी गयी है। जूरिन को उस समय विद्रोही बश्कीरियो के विरुद्ध भेजा गया था और ये हमे देखने के पहले ही भाग जाते थे। वसन्त ने हमे एक तातार गाव में रुके रहने के लिये विवश कर दिया था। नदियो मे बाढ आ गयी थी और रास्ते लाघना सम्भव नही था। हम अपने निठल्लेपन को इस विचार से तसल्ली देते थे कि चोर-लुटेरो और जगलियो के विरुद्ध इस ऊबभरी तथा मामूली-सी लड़ाई का जल्द ही अन्त हो जायेगा।

किन्तु पुगाचोव गिरफ्तार नही हुआ था। वह साइबेरिया के कारखानो मे नमूदार हुआ, वहा उसने नये गिरोह जमा किये और फिर से अपनी काली करतूते शुरू कर दी। पुन उसकी सफलताओ के समाचार फैलने लगे। हमे साइबेरिया के दुर्गो के मटियामेट किये जाने की खबरे मिली। जल्द ही कज़ान पर पुगाचोव के कब्जे और नकली सम्राट के मास्को की ओर कूच करने के समाचार ने घृणित विद्रोही के कुछ न कर सकने की आशा सजोये हुए चैन से सो रहे हमारे सेना-सचालको की निद्रा भग कर दी। जूरिन को वोल्गा लाघने का आदेश मिला।

अपने अभियान और युद्ध के अन्त का मैं वर्णन नही करूगा। केवल इतना ही कहूगा कि दुख-मुसीबतो की कोई हद नही थी। हम विद्रोहियो द्वारा बरबाद किये गये गावो मे से गुज़रते थे और बेचारे गाववाले जो कुछ बचा पाये थे, वह भी अनिच्छापूर्वक उनसे छीन लेते थे।

प्रशासन नाम की कही कोई चीज नही रही थी। जमीदारों ने जंगलों मे जाकर पनाह ली थी। लुटेरो के गिरोह सभी जगह लूट-मार कर रहे थे। अलग-अलग सैनिक अधिकारी मनमाने ढग से लोगो को दण्ड देते और क्षमा करते थे। इस पूरे क्षेत्र की, जहा यह आग भडकी हुई थी, बहुत बुरी हालत थी भगवान न करे कि किसी को बेमानी और निर्मम रूसी विद्रोह को देखना पडे!

पुगाचोव भाग खडा हुआ था और इवान इवानोविच मिखेलसोन* उसका पीछा कर रहा था। जल्द ही हमे यह पता चला कि उसे पूरी तरह से कुचल दिया गया है। आखिर जूरिन को नकली सम्राट के गिरफ्तार कर लिये जाने का समाचार और साथ ही यह आदेश मिला कि वह आगे बढना बन्द कर दे। लडाई खत्म हो गयी थी। आखिर तो मैं अपने माता-पिता के पास जा सकता था! यह विचार कि उनके गले मिल सकूगा, मरीया इवानोव्ना को देख सकूगा, जिससे कोई समाचार नही मिला था, मुझे खुशी से दीवाना-सा बना रहा था। मैं बालक की तरह उछलता-कूदता था। जूरिन हसता और कधे झटककर कहता, "नही, तुम्हारा बुरा हाल होगा! शादी करोगे और बरबाद हो जाओगे!"

किन्तु इसी बीच एक अजीब-सी भावना मेरी खुशी में जहर घोल रही थी। दुष्ट पुगाचोव का, जिसने इतनी बडी सख्या मे निर्दोष लोगो के खून से अपने हाथ रगे थे और अब उसे जो दण्ड मिलनेवाला था, उसका भी मुझे बरबस ध्यान आ रहा था। "येमेल्या, येमेल्या!" मैं दुखी मन से सोचता, "क्यो तुम किसी सगीन या गोली का निशाना नही बन गये? तुम्हारे लिये इससे बेहतर और कुछ नही हो सकता था।" मैं उसके बारे मे भला सोचता कैसे नही? उसके बारे में मेरे मन मे आनेवाला विचार उस दया-भाव के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था जो उसने जीवन के एक भयानक क्षण मे उसने मेरे प्रति दिखाया

---

* लेफ्टिनेंट कर्नल (१७४०-१८०७), जिसने स्यारीनिन और चोर्नी यार के बीच २५ अगस्त, १७७४ को हुई लडाई मे पुगाचोव को पूरी तरह से पराजित किया था। – स०

ा और यह भी कि कैसे उसने मेरे दिल की रानी को नीच श्वाबरिन
ं निजात दिलवाई थी।

जूरिन ने मुझे घर जाने की छुट्टी दे दी। कुछ दिन बाद मैं फिर
ा अपने परिवार मे पहुचनेवाला था, फिर से अपनी मरीया इवानोव्ना
ा मेरी भेट होनेवाली थी . अचानक मानो बिजली टूटी जिसने मुझे
तम्भित कर दिया।

मेरे जाने के दिन, ठीक उसी क्षण जब मैं सफर के लिये रवाना
ोने को तैयार हो रहा था, जूरिन हाथ मे एक कागज और चेहरे पर
गहरी चिन्ता का भाव लिये हुए मेरे पास आया। मेरे दिल मे फास-सी
चुभी। मुझे मालूम नही कि किस चीज से, लेकिन मैं डर जरूर गया।
उसने मेरे अर्दली को बाहर भेज दिया और बोला कि उसे मुझसे
कुछ काम है। "क्या बात है?" मैंने घबराकर पूछा। "छोटी-सी
अप्रिय बात है," उसने कागज मुझे पकडाते हुए उत्तर दिया। "इसे
पढो, मुझे अभी-अभी मिला है।" मैं पढने लगा – यह सभी सैनिक
विभागाध्यक्षो के नाम भेजा गया गुप्त आदेश था कि मुझे, मैं जहा
भी होऊ, फौरन गिरफ्तार करके फौजी पहरे मे कज़ान भेज दिया जाये,
जहा पुगाचोव के मामले की जाच-पडताल करने का आयोग नियुक्त
किया गया था।

कागज मेरे हाथ से नीचे गिरते-गिरते रह गया। "कुछ भी नही
हो सकता!" जूरिन ने कहा। "आदेश का पालन करना मेरा कर्तव्य
है। सम्भवत. पुगाचोव के साथ तुम्हारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धो की खबर
किसी तरह सरकार तक पहुच गयी है। मुझे आशा है कि इस मामले
का कोई बुरा नतीजा नही होगा और आयोग के सामने तुम अच्छी
तरह से अपनी सफाई दे सकोगे। दिल छोटा नही करो और रवाना
हो जाओ।" मेरे मन मे किसी तरह की अपराध-भावना नही थी
और फौजी अदालत के सामने जाने मे मुझे किसी तरह का डर नही
महसूस हो रहा था। किन्तु मधुर मिलन के क्षणो को, सो भी शायद
कई महीनो के लिये स्थगित करने के विचार से मैं काप उठा। घोडा-
गाडी तैयार थी। जूरिन ने मैत्रीपूर्ण ढग से मुझसे विदा ली। मुझे
घोडा-गाडी मे बिठा दिया गया, नगी तलवारें लिये हुए दो हुस्सार
मेरे साथ बैठ गये और घोडा-गाडी बडी सडक पर चल दी।

चौदहवाँ अध्याय

मुकदमा

लोगों में जो फैलती बात
जैसे बहती हुई लहर।

कहावत

मुझे इस बात का विश्वास था कि अपनी इच्छानुसार ओरेनबुर्ग में मेरा अनुपस्थित रहना ही मेरा मुख्य अपराध था। मैं बड़ी आसानी से अपनी सफाई पेश कर सकता था, क्योंकि शत्रु से जूझने के लिये दुर्ग से बाहर जाने की न केवल कभी मनाही नहीं की गयी थी, बल्कि इसे हर तरह से प्रोत्साहित किया जाता था। मुझ पर जरूरत से ज्यादा जोश दिखाने का अपराध लगाया जा सकता था, मगर अनुशासन भंग करने का नहीं। किन्तु पुगाचोव के साथ मेरे हेल-मेल की अनेक गवाह पुष्टि कर सकते थे और मेरे ऐसे सम्बन्ध कम से कम काफी सन्देहपूर्ण अवश्य प्रतीत हो सकते थे। रास्ते भर मैं उन प्रश्नों पर विचार करता रहा जो मुझसे पूछे जा सकते थे, अपने जवाबों के बारे में भी सोचता रहा और अदालत के सामने सब कुछ सच-सच कह देने को ही अपनी सफाई का सबसे सीधा-सादा और साथ ही विश्वसनीय उपाय मानते हुए मैंने यही करने का निर्णय किया।

मैं जलकर खाक हुए और सुनसान कज़ान में पहुंचा। सड़कों पर मकानों की जगह राख और जली चीजों के ढेर लगे थे और छतों तथा खिड़कियों के बिना धुएं से काली हुई दीवारें खड़ी थीं। तो पुगाचोव अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ गया था! भस्म हुए नगर के बीचोंबीच बिल्कुल क्षतिहीन रह गये दुर्ग में मुझे ले जाया गया। हुस्सारों ने मुझे सन्तरियों के अफसर के हवाले कर दिया। उसने लुहार को बुला लाने का आदेश दिया। मेरे पैरों में बेड़ियां डालकर उन्हें अच्छी तरह से कस दिया गया। इसके बाद मुझे जेलखाने में ले जाकर खाली दीवारों और लोहे का जंगला लगी छोटी-सी खिड़की वाली तंग तथा अंधेरी कोठरी में अकेला छोड़ दिया गया।

इस तरह का आरम्भ किसी अच्छी बात की आशा नहीं बंधवाता

था। फिर भी मैंने न तो हिम्मत हारी और न उम्मीद ही छोडी। मैंने सभी दुखियो-पीडितो को सान्त्वना देनेवाले मार्ग का सहारा लिया और पहली बार सच्चे, किन्तु विदीर्ण मन से प्रार्थना के सुख का मधु-पान किया और इस बात की चिन्ता किये बिना कि मेरे साथ क्या होगा, चैन की नींद सो गया।

अगले दिन जेल के चौकीदार ने यह कहते हुए मुझे जगा दिया कि जाच-आयोग के सामने बुलाया गया है। दो सैनिकों के साथ अहाते को लाघकर हम दुर्गपति के घर मे दाखिल हुए, सैनिक प्रवेश-कक्ष मे ही रुक गये और मुझे अकेले ही भीतर जाने दिया।

मैंने काफी बडे हॉल में प्रवेश किया। कागजो से ढकी मेज के पीछे दो व्यक्ति बैठे थे – कठोर और रुखा-सा दिखनेवाला बुजुर्ग जनरल और गार्ड सेना का जवान कप्तान, जिसकी उम्र कोई अट्ठाईस साल थी, प्रियदर्शी, चुस्त-फुर्तीला और स्वाभाविक ढंग से व्यवहार करनेवाला। खिडकी के पास एक खास मेज के पीछे कान मे कलम अटकाये कागज पर झुका हुआ और मेरा बयान लिखने को तैयार मुशी बैठा था। पूछ-ताछ शुरू हुई। मुझसे मेरा नाम और ओहदा पूछा गया। जनरल ने प्रश्न किया कि क्या मैं अन्द्रेई पेत्रोविच ग्रिनेव का बेटा तो नही हू? मेरा उत्तर सुनने के बाद उसने बडी कठोरता से कहा, "बडे अफसोस की बात है कि ऐसे सम्माननीय व्यक्ति का ऐसा नालायक बेटा है!" मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मुझ पर चाहे कैसे भी आरोप क्यो न लगाये जाये, मुझे आशा है कि मैं ईमानदारी से सचाई बयान करके उन्हें गलत सिद्ध कर दूगा। मेरा यह आत्मविश्वास उसे अच्छा नही लगा।

"तुम बहुत तेज हो, भैया," उसने नाक-भौंह सिकोडते हुए कहा, "किन्तु हमने तुमसे भी कहीं ज्यादा तेज देखे हैं!"

तब जवान कप्तान ने मुझसे पूछा कि किन परिस्थितियो मे और किस समय मैंने पुगाचोव की नौकरी की और उसने मुझे क्या काम सौंपे थे?

मैंने गुस्से से जवाब दिया कि एक अफसर और अभिजात होने के नाते मैं पुगाचोव की कभी नौकरी नहीं कर सकता था और उसके लिये कुछ भी करने को तैयार नही हो सकता था।

17*

सो भला किस तरह उस नकली सम्राट से," जिरह करनेवाले कप्तान ने आपत्ति की, "इस अभिजात और अफसर को बख्श दिया, जबकि उसके बाकी सभी साथियों की निर्दयता से हत्या कर दी गयी थी? कैसे इसी अफसर और अभिजात ने विद्रोहियों के साथ बैठकर दावत उड़ाई और बदमाशों के सरदार से तोहफे—फर-कोट, घोड़ा और पचास कोपेक लिये? यदि गद्दारी या कम से कम कमीनी और अपराधपूर्ण कायरता इस अजीब दोस्ती की बुनियाद नहीं थी, तो और क्या कारण था इसका?"

गार्ड-सेना के अफसर के शब्दों से मेरे दिल को बड़ी ठेस लगी और मैं खूब जोश से अपनी सफाई पेश करने लगा। मैंने बताया कि बर्फ़ के तूफान के वक्त कैसे पुगाचोव से स्तेपी में मेरी जान-पहचान हुई, कैसे बेलोगोर्स्क दुर्ग पर अधिकार करने के समय उसने मुझे पहचानकर क्षमा कर दिया। मैंने कहा, यह सच है कि उस नकली सम्राट से फर-कोट और घोड़ा लेते हुए मुझे शर्म नहीं आई, किन्तु बदमाशों से बेलोगोर्स्क दुर्ग की रक्षा के लिये मैंने अपनी पूरी ताक़त लगाई। अन्त में मैंने अपने जनरल का हवाला दिया जो ओरेनबुर्ग की भयानक क़िले-बन्दी के समय मेरे जोश की गवाही दे सकता था।

कठोर बूढ़े जनरल ने मेज पर से खुला हुआ पत्र उठाया और उसे ऊंचे-ऊंचे पढ़ने लगा—

"महामान्य, छोटे लेफ्टिनेंट ग्रिनेव से सम्बन्धित आपकी पूछ-ताछ के उत्तर में, जिसने मानो हाल के विद्रोह में भाग लिया और सैनिक नियमों तथा वफादारी की कसम का उल्लंघन करते हुए बदमाशों के सरदार के साथ सम्बन्ध स्थापित किया, मैं सादर यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि छोटा लेफ्टिनेंट पिछले, १७७३ के अक्तूबर महीने से इस वर्ष के फरवरी महीने की २४ तारीख तक ओरेनबुर्ग में सैनिक ड्यूटी पर रहा, इसी दिन शहर से गायब हो गया और उसके बाद मेरी कमान में नहीं लौटा। भगोड़ों से सुनने को मिला है कि वह गांव में पुगाचोव के साथ था और उसके साथ बेलोगोर्स्क गया जहां वह पहले फौजी ड्यूटी पर रहा था। जहां तक उसके आचरण का प्रश्न है, तो मैं यह कह सकता हूं..." यहां उसने पत्र पढ़ना बन्द कर दिया और कठोरतापूर्वक मुझसे कहा, "अब तुम्हें क्या कहना है अपनी सफ़ाई में?"

मैंने जैसे अपना बयान शुरू किया था, वैसे ही जोश और निश्छलता से मरीया इवानोव्ना के साथ अपना सम्बन्ध और बाकी सब कुछ भी स्पष्ट करना चाहा। किन्तु सहसा मैंने एक अदम्य वितृष्णा अनुभव की। मेरे दिमाग में यह बात आई कि अगर मैं मरीया इवानोव्ना का नाम ले दूंगा तो आयोग उसे पूछ-ताछ के लिये बुला लेगा और बदमाशों के घटिया लांछनों के साथ उसका नाम जोड़ने तथा उनके सामने खुद उसके आने के विचार से मैं ऐसे विह्वल हो उठा कि मेरी ज़बान लड़खड़ा और गड़बड़ा गई।

मेरे भाग्य-निर्णायकों के दिलों में, जो कुछ अनुकूल भाव दिखाते हुए मेरे उत्तर सुनने लगे थे, मेरी घबराहट देखकर फिर से मेरे विरुद्ध पूर्वाग्रह जाग उठे। गार्ड-सेना के अफ़सर ने यह माग की कि मुझे मुख्य मुख़बिर के आमने-सामने किया जाये। जनरल ने हुक्म दिया कि "पिछले दिन के बदमाश" को भीतर लाया जाये। मैं अपने अभियोक्ता के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते हुए बड़ी उत्सुकता से दरवाज़े की तरफ़ देखने लगा। कुछ मिनट बाद बेड़ियां झनझनाईं, दरवाज़ा खुला और श्वाबरिन भीतर आया। मैं उसमें हुआ परिवर्तन देखकर दंग रह गया। वह बेहद दुबला हो गया था और उसके चेहरे का रंग बिल्कुल पीला था। कुछ ही समय तक रात की तरह काले उसके बाल अब एकदम सफ़ेद हो गये थे और उसकी लम्बी दाढ़ी बिखरी हुई थी। उसने क्षीण, किन्तु दृढ़ आवाज़ में अपना अभियोग दोहराया। उसके कथनानुसार पुगाचोव ने मुझे जासूस बनाकर ओरेनबुर्ग भेजा था, मैं हर दिन इसलिये मुठभेड़ को दुर्ग से बाहर जाता था कि शहर में जो कुछ हो रहा था, उसका लिखित ब्योरा भेज सकूं, कि आखिर मैं खुलकर नकली सम्राट का साथ देने लगा, एक के बाद एक दुर्ग में उसके साथ जाने लगा, ताकि अपने जैसे गद्दार साथियों को हर सम्भव तरीके से तबाह कर सकूं, उनके पद छीन सकूं और झूठे दावेदार द्वारा दिये जानेवाले इनाम पा सकूं। मैंने चुपचाप उसका बयान सुना और मुझे एक बात की खुशी हुई – इस कमीने ने मरीया इवानोव्ना का नाम नहीं लिया था। शायद उसने इसलिये ऐसा किया था कि उसका विचार आने पर, जिसने तिरस्कारपूर्वक उसे ठुकरा दिया था, उसके आत्माभिमान को ठेस लगी या फिर इसलिये कि उसके दिल में भी वही उसी भावना की चिंगारी

छिपी हुई थी जिसने मुझे चुप रहने को विवश किया था। कारण कुछ भी रहा हो, बेलोगोर्स्क के दुर्गपति की बेटी का नाम जांच-आयोग के सामने नहीं लिया गया। मेरा इरादा और भी ज्यादा पक्का हो गया। और जब निर्णायकों ने यह पूछा कि मैं श्वाब्रिन के बयान का कैसे खण्डन कर सकता हू, तो मैंने जवाब दिया कि अपने पहले स्पष्टीकरण को ज्यों का त्यों रखना चाहता हू और अपनी सफ़ाई में और कुछ भी नहीं जोड़ सकता। जनरल ने हम दोनों को ले जाने का आदेश दिया। हम एकसाथ बाहर निकले। मैंने शान्ति से श्वाब्रिन की ओर देखा, किन्तु उससे एक भी शब्द नहीं कहा। वह द्वेषपूर्वक हंसा, बेड़ियां ऊपर उठाते हुए मुझसे आगे निकल गया और तेज़ी से बढ़ गया। मुझे फिर से जेल की कोठरी में ले जाकर बन्द कर दिया गया और इसके बाद फिर कभी पूछ-ताछ के लिये नहीं बुलाया गया।

अपने पाठकों को मुझे जो कुछ और बताना है, मैं उसका भुक्तभोगी नहीं हू। किन्तु ये बातें मैंने इतनी अधिक बार सुनी हैं कि उनकी हर छोटी-छोटी तफ़सील मेरे मानसपट पर ऐसे अंकित हो गयी है मानो अदृश्य रूप से मैं इनका साक्षी रहा हू।

मेरे माता-पिता ने उसी हार्दिकता से मरीया इवानोव्ना को स्वीकार किया जो पिछली सदी के लोगों का विशेष लक्षण थी। वे इसी बात के लिये भगवान के आभारी थे कि उन्हें एक यतीम को शरण और स्नेह देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। जल्द ही उन्हें उससे सच्चा लगाव हो गया, क्योंकि उसे जान-समझकर प्यार न करना सम्भव नहीं था। मेरा प्यार पिता जी को अब कोरी सनक नहीं प्रतीत होता था और मां तो केवल यही चाहती थी कि उनका पेत्रूशा कप्तान की प्यारी बेटी से शादी कर ले।

मेरी गिरफ़्तारी की खबर से मेरे परिवार के सभी लोग हैरान रह गये। पुगाचोव के साथ मेरी अजीब जान-पहचान का मरीया इवानोव्ना ने इतनी सरलता से वर्णन किया कि इससे उन्हें न केवल कोई चिन्ता नहीं हुई, बल्कि इसने उन्हें अक्सर सच्चे दिल से हंसने को भी मजबूर किया। पिता जी इस बात पर विश्वास नहीं करना चाहते थे
नीचतापूर्ण विद्रोह से, जिसका उद्देश्य गद्दी उलटना और कुलीनों
करना था, मेरा कोई वास्ता था। उन्होंने बड़ी कड़ाई से

सावेलिच से पूछ-ताछ की। बुजुर्ग सावेलिच ने यह नही छिपाया कि छोटे मालिक की येमेल्यान पुगाचोव के यहा खातिरदारी हुई थी और वह उस बदमाश का कृपा-पात्र था, किन्तु कसम खाई कि किसी तरह की गद्दारी की बात उसने नही सुनी थी। बूढे माता-पिता शान्त हो गये और बड़ी बेसब्री से कोई अच्छी खबर सुनने का इन्तजार करने लगे। मरीया इवानोव्ना बहुत ज्यादा परेशान थी, किन्तु उसने मौन साध रखा था क्योकि उसमे नम्रता और सावधानी के गुण तो अपनी चरम सीमा पर पहुचे हुए थे।

कुछ सप्ताह बीत गये . अचानक पिता जी को पीटर्सबर्ग के एक हमारे रिश्तेदार प्रिस ब.. का पत्र मिला। प्रिस ने उन्हें मेरे बारे मे लिखा था। शुरू की कुछ रस्मी पक्तियो के बाद उन्होंने बताया था कि दुर्भाग्य से, विद्रोहियो के मसूबो मे मेरे सहभाग के बारे मे सन्देह बहुत ठोस सिद्ध हुआ और मुझे उसका उपयुक्त दण्ड मिलना चाहिये था, किन्तु पिता जी की सेवाओं और उनके बुढापे को ध्यान मे रखते हुए सम्राज्ञी ने अपराधी बेटे को क्षमा करने और सूली का कलकपूर्ण दण्ड देने के बजाय साइबेरिया के किसी दूरस्थ स्थान पर सदा के लिये जा बसने की सज़ा देने का निर्णय किया है।

इस अप्रत्याशित आघात ने मेरे पिता जी की लगभग जान ही नही ले ली। उनकी सामान्य दृढता जाती रही और उनका दुख (सामान्यत: मूक) कटु शिकवे-शिकायतो मे व्यक्त होने लगा। "यह क्या है!" वे आपे से बाहर होते हुए दोहराते, "मेरे बेटे ने पुगाचोव के काले कारनामो मे हिस्सा लिया! हे ईश्वर, कैसे बुरे दिन देखने लिखे थे मेरे नसीब मे! सम्राज्ञी ने उसकी जान बख्श दी! क्या इससे मेरा दुख कुछ कम हो सकता है? मौत की सज़ा भयानक नही – मेरे एक पूर्वज ने उस चीज़ की रक्षा करते हुए, जिसे अपनी आत्मा के लिये पावन मानते थे, अपने प्राण दे दिये। मेरे पिता जी वोलीन्स्की और ख्रुश्चेव* के साथ शहीद हुए। लेकिन कुलीन अपनी कसम के प्रति

* अर्तेमी वोलीन्स्की, आन्ना इओआनोव्ना के शासन (१७३०–१७४०) मे एक मन्त्री, जिसने सम्राज्ञी के कृपापात्र और रूसी दरबार के एक नीचतम भाड़े के विदेशी टट्टू बिरोन के विरुद्ध षड्यन्त्र का निर्देशन किया। अन्द्रेई ख्रुश्चेव, एडमिरैल्टी के एक सलाहकार, षड्यन्त्र में भागीदार, जिसे वोलीन्स्की के साथ सूली दी गयी। – स०

तुम भी जाओ!" उन्होंने आह भरते हुए कहा। "हम तुम्हारे सुख-सौभाग्य के मार्ग मे रोड़ा नही अटकाना चाहते। भगवान तुम्हे एक बदनाम ग़द्दार के बजाय पति के रूप में कोई भला आदमी दे।" इतना कहकर वे कमरे से बाहर चले गये।

माता जी के साथ अकेली रह जाने पर मरीया इवानोव्ना ने उन्हे अपनी कुछ योजनाएं स्पष्ट की। माता जी ने आसू बहाते हुए उसे गले लगा लिया और भगवान से प्रार्थना की कि उसे अपने इरादो मे कामयाबी मिले। मरीया इवानोव्ना के सफर की तैयारी की गयी और कुछ दिन बाद वह अपनी वफादार पालाशा और सेवानिष्ठ सावेलिच के साथ, जिसे मैंने जबर्दस्ती अपने से अलग कर दिया था और जो अपने को कम से कम इस विचार से तसल्ली देता था कि मेरी भावी पत्नी की सेवा कर रहा है, रवाना हो गयी।

मरीया इवानोव्ना सही-सलामत सोफ़ीया* पहुच गयी और डाक-चौकी पर यह जानकारी पाकर कि सम्राज्ञी और उनके दरबारी इस समय त्सार्स्कोये सेलो मे हैं, उसने वही रुकने का निर्णय किया। उसे बीच की दीवार के पीछे ठहरने के लिये थोड़ी-सी जगह दे दी गयी। डाक-चौकी के मुशी की बीवी उसी क्षण उसके साथ बतियाने लगी। उसने बताया कि वह दरबार मे आतिशदान गर्मानेवाले की भानजी है और उसने उसे दरबारी जीवन के सभी रहस्यो की जानकारी दे दी। उसने उसे बताया कि सम्राज्ञी आम तौर पर किस वक्त जागती हैं, कॉफ़ी पीती हैं, सैर करती हैं और उस समय कौनसे दरबारी उनके साथ होते हैं, पिछले दिन खाने की मेज पर उन्होंने क्या कुछ कहा, शाम को किससे मिलीं – थोड़े मे यही कि आन्ना व्लास्येव्ना की बातचीत ऐतिहासिक महत्त्व की टिप्पणियो के कुछ पृष्ठो के समान थी और भावी पीढ़ियो के लिये बहुत मूल्यवान हो सकती थी। मरीया इवानोव्ना बहुत ध्यान से उसकी बाते सुनती रही। वे बाग मे घूमने गयी। आन्ना व्लास्येव्ना ने हर वीथी और हर पुल की कहानी सुनाई तथा सैर करने के बाद वे दोनो बहुत खुश-खुश डाक-चौकी पर वापस आई।

---

* त्सार्स्कोये सेलो के पार्क के पीछे फौजी बस्ती, जो १८०८ से त्सार्स्कोये सेलो का भाग है। – स०

"जी, नही। मैं न्याय नही, कृपा-अनुकम्पा के लिये अनुरोध करने आई हू।"

"कृपया यह बताइये कि आप है कौन?"

"मैं कप्तान मिरोनोव की बेटी हू।"

"कप्तान मिरोनोव! उसी कप्तान मिरोनोव की, जो ओरेनबुर्ग प्रदेश के एक दुर्गपति थे?"

"जी, बिल्कुल ठीक।"

ऐसे लगा कि महिला द्रवित हो उठी थी।

"अगर मैं किसी तरह से आपके मामलो मे दखल दे रही हू तो क्षमा चाहूगी," उसने और भी अधिक प्यार भरी आवाज मे कहा, "लेकिन दरबार मे मेरा आना-जाना बना रहता है। मुझे बताइये कि आप किस बात का अनुरोध करना चाहती हैं और बहुत सम्भव है कि मैं आपकी मदद कर सकू।"

मरीया इवानोव्ना ने खडी होकर बडे आदर से महिला को धन्यवाद दिया। इस अज्ञात महिला की हर चीज बरबस मन को छूती थी और भरोसा पैदा करती थी। मरीया इवानोव्ना ने तह किया हुआ एक कागज जेब से निकाला और अपनी इस अपरिचित सरक्षिका को दे दिया जो मन ही मन उसे पढ़ने लगी।

शुरू में वह ध्यान और सहानुभूति से पढती रही, किन्तु अचानक उसका चेहरा कुछ बदल-सा गया और मरीया इवानोव्ना, जो नजरो से ही उसकी हर भगिमा को देख रही थी, उसके चेहरे के कठोर भाव से, जो क्षण भर पहले इतना मधुर और शान्त था, भयभीत हो उठी।

"आप ग्रिनेव के लिये अनुरोध कर रही हैं?" महिला ने रुखाई से पूछा। "सम्राज्ञी उसे क्षमा नही कर सकती। उसने अज्ञानता या भोलेपन से नक्ली सम्राट का साथ नही दिया, बल्कि दुराचारी और भयानक दुष्ट के रूप मे ऐसा किया।"

"ओह, यह झूठ है!" मरीया इवानोव्ना कह उठी।

"झूठ कैसे है!" महिला ने गुस्से से लाल होते हुए आपत्ति की।

"झूठ है, भगवान की कसम झूठ है! मैं सब कुछ जानती हू, सब कुछ आपको बताती हू। उसके साथ जो कुछ बीती है, वह सब मेरे कारण ही। यदि उसने फौजी अदालत मे अपनी सफाई नही दी, तो

अगले दिन मरीया इवानोव्ना तड़के ही जागी, उसने कपड़े पहने और दबे पांव बाग में चली गयी। सुबह बहुत सुहावनी थी, सूरज की तरुण किरणों से पीली हुई लाइम वृक्षों की फुनगियां धूप में चमक रही थीं। विस्तृत चौड़ी झील चमचमा रही थी। अभी-अभी जागे हंस [illegible] झाड़ियों के नीचे से निकलकर बड़ी शान से झील में तैर रहे थे। मरीया इवानोव्ना उस प्यारी चरागाह के पास से गुजर रही थी जहां काउंट प्योतर अलेक्सान्द्रोविच रुम्यान्त्सेव की कुछ ही समय पहले की विजयों के सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था। अचानक अंग्रेजी नस्ल का एक छोटा-सा कुत्ता भौंकने लगा और उसकी ओर भाग आया। मरीया इवानोव्ना डरकर वहीं रुक गयी। इसी समय एक औरत की प्यारी-सी आवाज सुनाई दी–"डरो नहीं, यह काटेगा नहीं"। मरीया इवानोव्ना को स्मारक के सामने बेंच पर एक महिला बैठी दिखाई दी। मरीया इवानोव्ना बेंच के दूसरे सिरे पर बैठ गयी। महिला उसे एकटक देखती जा रही थी। मरीया इवानोव्ना ने भी कनखियों से उस पर कुछ बार नज़र डालकर उसे सिर से पांव तक देख लिया। महिला सुबह के समय का सफ़ेद फ्राक, रात की टोपी और रूईदार जाकेट पहने थी। उसकी उम्र चालीस के क़रीब प्रतीत हो रही थी। उसके भरे हुए और लाल-लाल चेहरे पर रोब और चैन तथा नीली-नीली आखों एवं हल्की मुस्कान में अवर्णनीय आकर्षण था। महिला ने ही मौन भंग किया।

"आप तो सम्भवत यहां की रहनेवाली नहीं हैं?" उसने कहा।

"जी, बिल्कुल ठीक। मैं कल ही प्रान्तीय नगर से आई हूं।"

"अपने परिवार वालो के साथ?"

"जी, नहीं। अकेली आई हू।"

"अकेली! लेकिन आपकी उम्र तो अभी बहुत कम है।"

"मेरे न तो पिता और न मा ही हैं।"

"आप निश्चय ही किसी काम से आई होंगी?"

"जी, हां। मैं सम्राज्ञी को अपना आवेदन-पत्र देने आई हूं।"

"आप यतीम हैं और इसलिये सम्भवतः अन्याय और ज्यादती के खिलाफ शिकायत करने आई हैं?"

हो रही थी। उसका दिल बहुत ज़ोर से धड़कता और फिर मानो उसकी धड़कन बन्द हो जाती। कुछ मिनट बाद बग्घी महल के सामने जा खड़ी हुई। मरीया इवानोव्ना घबराहट अनुभव करती हुई ज़ीना चढ़ने लगी। उसके सामने दरवाज़े खुलते जाते थे। उसने अनेक सुन्दर और खाली कमरे लांघे – हरकारा उसे रास्ता दिखाता जा रहा था। आखिर एक बन्द दरवाज़े के सामने पहुंचकर उसने कहा कि अभी उसके बारे में सूचना देगा और उसे अकेली छोड़कर भीतर चला गया।

सम्राज्ञी के सामने जाने के ख्याल से उसे ऐसी दहशत महसूस हुई कि वह बड़ी मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ी रह पा रही थी। एक मिनट बाद दरवाज़ा खुला और उसने सम्राज्ञी के शृंगार-कक्ष में प्रवेश किया।

सम्राज्ञी शृंगार की मेज़ पर बैठी थी। कुछ दरबारी उन्हें घेरे हुए थे और उन्होंने बड़े आदर से मरीया इवानोव्ना को आगे जाने दिया। सम्राज्ञी ने बड़े स्नेह से उसे सम्बोधित किया और मरीया इवानोव्ना ने उनमें उस महिला को पहचान लिया जिसके साथ कुछ ही मिनट पहले उसने बहुत खुलकर बातचीत की थी। सम्राज्ञी ने उसे अपने पास बुलाया और मुस्कराकर कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि मैं अपना वचन निभा सकी और आपका अनुरोध पूरा कर पाई। आपका मामला तय हो गया। मुझे इस बात का यकीन हो गया कि आपका मंगेतर निरपराध है। यह पत्र ले लीजिये और स्वयं ही इसे अपने भावी ससुर तक पहुंचाने का कष्ट कीजिये।"

मरीया इवानोव्ना ने कांपते हाथ से पत्र लिया और रोते हुए सम्राज्ञी के पैरों पर गिर पड़ी। सम्राज्ञी ने उसे उठाकर चूमा और बातचीत करने लगी। "मुझे मालूम है कि आप धनी नहीं हैं," वह बोली, "किन्तु कप्तान मिरोनोव की बेटी की मैं ऋणी हूं। आप भविष्य की कोई चिन्ता न करें। आपकी सुख-समृद्धि का दायित्व मैं अपने ऊपर लेती हूं।"

बेचारी यतीम को दुलराकर सम्राज्ञी ने उसे विदा किया। मरीया इवानोव्ना उसी बग्घी में वापस आ गयी। बहुत बेसब्री से उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही आन्ना व्लास्येव्ना ने उस पर प्रश्नों की बौछार कर दी। मरीया इवानोव्ना ने जैसे-तैसे प्रश्नों के जवाब दिये। आन्ना

भी केवल इसलिये कि मुझे इस मामले में नहीं उलझाना चाहता था।' इसके बाद मरीया इवानोव्ना ने बड़े जोश से वह सब कुछ कह सुनाया जो हमारे पाठकों को मालूम है।

महिला ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी।

"आप कहां ठहरी हैं?" उसने बाद में पूछा और आन्ना व्लास्येव्ना के यहां ठहरने के बारे में जानकर मुस्कराते हुए बोली –

'हां। जानती हूं उसे। तो अब विदा, किसी से भी हमारी भेंट की चर्चा नहीं कीजियेगा। मुझे आशा है कि आपको अपने पत्र के उत्तर की देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।"

इतना कहकर वह उठी और बन्द वीथी में चली गयी, जबकि मरीया इवानोव्ना खुशी भरी उम्मीद लिये हुए आन्ना व्लास्येव्ना के पास लौट आई।

आन्ना व्लास्येव्ना ने पतझर के दिनों में तड़के ही सैर को जाने के लिये उसकी लानत-मलामत की, जो उसके शब्दों में, जवान लड़की के लिये हानिकारक था। वह समोवार ले आई और चाय की चुस्कियां लेते हुए दरबार के बारे में अपने अन्तहीन क़िस्से-कहानियां शुरू ही करनेवाली थी कि अचानक दरवाजे के सामने शाही बग्घी आकर रुकी और शाही हरकारे ने भीतर आते हुए यह घोषणा की कि सम्राज्ञी ने मिरोनोव की बेटी को अपने पास बुलाया है।

आन्ना व्लास्येव्ना अत्यधिक चकित होकर दौड़-धूप करने लगी। "हे भगवान!" वह चिल्लाई। "सम्राज्ञी आपको महल में बुला रही है। उन्हें आपके बारे में कैसे मालूम हो गया? अरे, आप कैसे सम्राज्ञी के सामने जायेंगी? आपको तो शायद दरबारी तौर-तरीक़े भी नहीं आते! क्या मैं आपके साथ चलूं? मैं आपको थोड़ा-बहुत तो समझा-बुझा ही सकती हूं। सफ़र का फ़्राक पहने हुए भला आप कैसे जायेंगी? क्या दाई के यहां से उसकी पीली पोशाक न मंगवा दूं?" हरकारे ने कहा कि सम्राज्ञी ने मरीया इवानोव्ना को अकेली और जो कुछ पहने हों, उसी पोशाक में आ जाने के लिये कहा है। अब कोई चारा नहीं था – मरीया इवानोव्ना बग्घी में बैठ गयी और आन्ना व्लास्येव्ना की सलाहों तथा शुभकामनाओं के साथ महल की ओर रवाना हो गयी।

मरीया इवानोव्ना को हम दोनों के भाग्य-निर्णय की पूर्वानुभूति

परिशिष्ट

छोड़ा हुआ अध्याय*

हम वोल्गा के तट के निकट पहुंच रहे थे। हमारी रेजिमेंट ने ..गाव मे पहुंचकर रात के लिये वहा पडाव डाल लिया। गाव के मुखिया ने मुझे बताया कि उस पार के सभी गावो ने विद्रोह कर दिया है, कि सभी जगहो पर पुगाचोव के गिरोह घूम रहे हैं। इस खबर ने मुझे बेहद परेशान कर दिया। हमे अगली सुबह को उस पार जाना था। मैं अधीर हो उठा। मेरे पिता जी का गांव नदी के उस पार तीस वेर्स्ता की दूरी पर था। मैंने पूछा कि उस पार ले जानेवाला कोई माझी मिल सकता है या नही। यहां के सभी किसान मछुए भी थे, नावें बहुत-सी थी। मैंने ग्रिनेव के पास जाकर उसके सामने अपना इरादा जाहिर किया – "जोखिम नही उठाओ," उसने मुझसे कहा, "अकेले जाना खतरनाक है। सुबह तक इन्तज़ार करो। हम ही सबसे पहले उस पार चले जायेगे और कोई जरूरत आ पडे, इसलिये ५० हुस्सार भी तुम्हारे माता-पिता के यहा अपने साथ ले जायेगे।"

किन्तु मैं अपनी बात पर अडा रहा। नाव तैयार थी। मैं दो माझियों को लेकर उसमें सवार हो गया। वे नाव बढा ले चले।

आकाश निर्मल था। चाद चमक रहा था। मौसम शान्त था। वोल्गा मन्द-मन्थर गति से बह रही थी। धीरे-धीरे हिलती-डोलती नाव अधेरे मे काली दिखती लहरो पर तेज़ी से चली जा रही थी। मैं कल्पनाओ से ओत-प्रोत विचारों मे खो गया। कोई आध घण्टा बीता। हम नदी के मध्य मे पहुच गये थे. अचानक माझी आपस मे खुसुर-फुसुर करने लगे। "क्या बात है?" मैंने सम्भलते हुए पूछा। "मालूम नही, भगवान

* सेसर को ध्यान मे रखते हुए 'कप्तान की बेटी' उपन्यास की प्रकाशन के लिये तैयार की गयी पाण्डुलिपि मे यह अध्याय शामिल नहीं किया गया था और पाण्डुलिपि के रूप मे ही सुरक्षित रखा गया। इसलिये स्वय पुश्किन ने इसे 'छोड़ा हुआ अध्याय' कहा है। इस अध्याय मे कुछ पात्रो के नाम भी बदल दिये गये हैं। ग्रिनेव यहा बुलानिन है और जूरिन ग्रिनेव।

व्लास्येव्ना यद्यपि उसकी बुरी याददाश्त से नाखुश थी, तथापि उसने इसे उसकी प्रान्तीय झेंप-शर्म मानते हुए उसे उदारता से क्षमा कर दिया। मरीया इवानोव्ना पीटर्सबर्ग को देखने के लिये रुके बिना उसी दिन ही गांव वापस चली गयी ..

प्योतर अन्द्रेइच ग्रिनेव की पाण्डुलिपि यहा समाप्त हो जाती है। परिवार मे प्रचलित कथा से यह पता चलता है कि १७७४ के अन्त मे उसे सम्राज्ञी के आदेशानुसार जेल से रिहा कर दिया गया, कि वह पुगाचोव को मृत्यु-दण्ड देने के समय वहां उपस्थित था, कि पुगाचोव ने उसे पहचानकर उसकी ओर सिर झुकाया जो एक मिनट बाद निर्जीव और खून से लथ-पथ हुआ लोगो को दिखाया गया। कुछ ही समय बाद प्योतर अन्द्रेइच ने मरीया इवानोव्ना से शादी कर ली। उनके वंशज सिम्बीर्स्क गुबेर्निया में फल-फूल रहे हैं। .से तीस वेर्स्ता की दूरी पर एक गाव है जिसके दस जमीदार मालिक हैं। वहीं, एक हवेली के एक भाग मे येकतेरीना द्वितीय के हाथ का लिखा शीशे और चौखटे मे जडा हुआ पत्र रखा है। वह प्योतर अन्द्रेइच के पिता के नाम है। उसमे उनके बेटे को निरपराध बताया गया है तथा कप्तान मिरोनोव की बेटी के दिल-दिमाग की तारीफ की गयी है। प्योतर अन्द्रेइच ग्रिनेव की पाण्डुलिपि हमे उनके पोते से मिली, जिसे यह मालूम हो गया था कि हम उनके दादा द्वारा वर्णित समय पर खोज-कार्य कर रहे हैं। उनके रिश्तेदारो की अनुमति से हमने प्रत्येक अध्याय के लिये उचित आदर्श-वाक्य चुनकर तथा कुछ नामो को बदलने की स्वतन्त्रता लेते हुए उसे अलग मे छापने का निर्णय किया।

प्रकाशक

१९ अक्तूबर, १८३६

परिशिष्ट

छोड़ा हुआ अध्याय *

हम वोल्गा के तट के निकट पहुच रहे थे। हमारी रेजिमेंट ने ..गाव मे पहुंचकर रात के लिये वहा पडाव डाल लिया। गाव के मुखिया ने मुझे बताया कि उस पार के सभी गावो ने विद्रोह कर दिया है, कि सभी जगहो पर पुगाचोव के गिरोह घूम रहे है। इस खबर ने मुझे बेहद परेशान कर दिया। हमे अगली सुबह को उस पार जाना था। मैं अधीर हो उठा। मेरे पिता जी का गाव नदी के उस पार तीस वेर्स्ता की दूरी पर था। मैंने पूछा कि उस पार ले जानेवाला कोई माझी मिल सकता है या नही। यहा के सभी किसान मछुए भी थे, नावे बहुत-सी थी। मैंने ग्रिनेव के पास जाकर उसके सामने अपना इरादा जाहिर किया – "जोखिम नही उठाओ," उसने मुझसे कहा, "अकेले जाना खतरनाक है। सुबह तक इन्तजार करो। हम ही सबसे पहले उस पार चले जायेंगे और कोई जरूरत आ पडे, इसलिये ५० हुस्सार भी तुम्हारे माता-पिता के यहा अपने साथ ले जायेगे।"

किन्तु मैं अपनी बात पर अडा रहा। नाव तैयार थी। मैं दो माझियो को लेकर उसमें सवार हो गया। वे नाव बढा ले चले।

आकाश निर्मल था। चाद चमक रहा था। मौसम शान्त था। वोल्गा मन्द-मन्थर गति से बह रही थी। धीरे-धीरे हिलती-डोलती नाव अधेरे मे काली दिखती लहरो पर तेजी से चली जा रही थी। मैं कल्पनाओ से ओत-प्रोत विचारो मे खो गया। कोई आध घण्टा बीता। हम नदी के मध्य मे पहुच गये थे अचानक माझी आपस मे खुसुर-फुसुर करने लगे। "क्या बात है?" मैंने सम्भलते हुए पूछा। "मालूम नही, भगवान

---

* सेसर को ध्यान मे रखते हुए 'कप्तान की बेटी' उपन्यास की प्रकाशन के लिये तैयार की गयी पाण्डुलिपि मे यह अध्याय शामिल नही किया गया था और पाण्डुलिपि के रूप मे ही सुरक्षित रखा गया। इसलिये स्वयं पुश्किन ने इसे 'छोडा हुआ अध्याय' कहा है। इस अध्याय मे कुछ पात्रो के नाम भी बदल दिये गये हैं। ग्रिनेव यहा बुलानिन है और जूरिन ग्रिनेव।

जाने," एक ही दिशा मे देखते हुए दोनों ने जवाब दिया। मेरी न
भी उसी दिशा में घूम गयी और मुझे अंधेरे मे वोल्गा में नीचे
ओर बही आती कोई चीज़ दिखाई दी। यह अपरिचित चीज़ नि
आती जा रही थी। मैंने माझियों से रुककर उसका इन्तज़ार क
को कहा। चाद बादलो की ओट मे हो गया। बही आ रही छाया
और भी अस्पष्ट हो गयी। वह मेरे निकट आ चुकी थी, मगर
अभी भी यह नही जान पा रहा था कि वह क्या है। "यह क्या चं
हो सकती है," माझी एक-दूसरे से कह रहे थे, "ये न तो पाल
और न मस्तूल " अचानक चाद बादल के पीछे से सामने आ ग
और मेरे सामने एक भयानक दृश्य उभरा। एक बेड़े पर सूली तैर
चली आ रही थी और उसके साथ तीन लाशे लटक रही थीं। ए
विचित्र-सी जिज्ञासा मेरे मन पर हावी हो गयी। मैंने लाशों के चे
देखने चाहे।

मेरे आदेश पर माझियो ने उस बेड़े को हुक से रोक लिया अ
मेरी नाव तैरती सूली से टकराई। मैं कूदकर उस पर गया और मैं
अपने को भयानक खम्भो के बीच पाया। चाद के प्रखर प्रकाश ने
किस्मत के मारो के विकृत चेहरो को रोशन कर दिया। उनमे से ए
बूढ़ा चुवाश था, दूसरा कोई बीस साल का हट्टा-कट्टा रूसी किसान
किन्तु तीसरे को देखकर मैं अत्यधिक आश्चर्यचकित हुआ और दु
से चीखे बिना न रह सका – यह वान्या था, बेचारा वान्या जो अप
बेवकूफी के कारण पुगाचोव के साथ हो गया था। इनके ऊपर ए
काला तख्ता ठोक दिया गया था जिस पर मोटे-मोटे सफेद अक्ष
मे लिखा था – "चोर और विद्रोही"। माझी उदासीनता से मार
को देखते और हुक से बेड़े को थामे हुए मेरा इन्तज़ार कर रहे थे
मैं नाव पर लौट आया। सूली वाला बेड़ा नदी मे नीचे की ओर बह
लगा। सूली देर तक अंधेरे मे काली-सी झलक देती रही। आखि
वह गायब हो गयी और मेरी नाव ऊचे तथा खड़े तट पर जा लगी

मैंने माझियो को खूब पैसे दिये। उनमे से एक मुझे घाट के निकट
वर्ती गाव के विद्रोही मुखिया के पास ले गया। मैं उसके साथ घर मे
गया। मुखिया यह सुनकर कि मुझे घोड़े चाहिये, मेरे साथ काफी
रुखाई से पेश आया। किन्तु माझी ने धीमे-से उससे कुछ शब्द कहे

स्वचित्र। स्याही। १८२६।

प्योतर व्याज़ेम्स्की (१७९२–१८७८)। रूसी कवि, समालोचक और पत्रकार। जीवन के अन्तिम वर्षों में ज़ार के एक प्रमुख कर्मचारी। तीसरे दशक में पुश्किन और उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखनेवाले प्रगतिशील साहित्यकारों के निकट रहे।

स्वचित्र। स्याही। १८२६। पुश्किन ने अपने को कज्जाकों का झबरीला लबादा पहने और हाथ में बर्छी लिये चित्रित किया है। इस चित्र का आधार १४ जून, १८२६ की वह घटना है, जब काकेशिया में यात्रा करते हुए महाकवि को एक फौजी झड़प में हिस्सा लेना पड़ा।

येकातेरीना उशाकोवा (१८०१–१८७२)। मास्को के एक सुसंस्कृत तथा कुलीन उशाकोव परिवार की सबसे बड़ी बेटी। तीसरे दशक में पुश्किन इस परिवार में अक्सर जाते थे और उनका बड़ा आदर-सत्कार होता था। पुश्किन और उशाकोव के बीच मधुर और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे। जलरंग-चित्र। १८३०-४०।

आन्ना ओलेनिना (१८०८–१८८८)। ललित कला अकादमी के अध्यक्ष अलेक्सेई ओलेनिन की बेटी। पुश्किन इसे बहुत चाहते थे, उन्होंने इससे विवाह करना चाहा, मगर यह प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। रेखाचित्र। १८२३।

बोल्दीनो गाव। नीज्नी नोव्गोरोद गुबेर्निया मे महाकवि के पिता की जागीर। १८३० की पतझर मे पुश्किन पडोस के कीस्तेनेव्का गाव का कब्जा लेने गये जो पिता ने बेटे की शादी के मौके पर उन्हे उपहार मे दे दिया था। बोल्दीनो मे बिताये गये तीन महीनो के दौरान पुश्किन ने पाच 'लघु त्रासदिया', 'बेल्किन की कहानिया', 'कोलोमना मे एक घर' खण्ड-काव्य, तीस कविताये और अनेक लेख लिखे।

बोल्दीनो के आस-पास की झाकी। 'लूचीन्निक' नामक वन जहा महाकवि को सैर करना अच्छा लगता था।
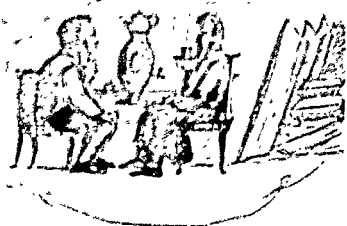
पीटर्सबर्ग। शस्त्रागार। लीथोग्राफ। १८२०-३०।

नताल्या गोलीत्सिना (१७४१–१८३७)। मास्को के गवर्नर-जनरल द्मीत्री गोलीत्सिन की मां। ऊंचे कुलीन समाज की एक विशिष्ट महिला जिसे Princess Moustache (मूंछोंवाली प्रिंसेस) का उपनाम दिया गया था। पुश्किन ने 'हुकम की बेगम' कहानी में बूढ़ी काउंटेस का चित्रण करने के लिये इस महिला के लक्षणों का उपयोग किया।

लघु चित्र। १८१०-२०।

निकोलाई गोगोल (१८०९–१८५२)। महान रूसी लेखक। रूसी साहित्य में आलोचनात्मक यथार्थवाद के जन्मदाता। पुश्किन ने गोगोल की प्रतिभा का ऊंचा मूल्यांकन किया था। "यह है वास्तविक हर्ष-उल्लास, सहज और स्वाभाविक, किसी भी तरह की बनावट और कृत्रिमता के बिना," पुश्किन ने गोगोल के कहानी-संग्रह 'दिकान्का गांव के निकट ग्रामे' की समालोचना करते हुए लिखा था। लीथोग्राफ। १८३४।

देनीस दवीदोव (१७८४–१८३९)। कवि और हुस्सार, जो अद्भुत साहस और निडरता के लिये विख्यात थे। पुश्किन उनके स्वभाव की मौलिकता के लिये उन्हें विशेष महत्त्व देते थे। प० सोकोलोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३६।

पुश्किन। प० सोकोलोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३६।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी। नताल्या बहुत ही सुन्दर थी, उनके समकालीनो ने उनके रूप की भूरि-भूरि प्रशसा की। अपनी भावी पत्नी को समर्पित 'सौन्दर्य-देवी' कविता मे पुश्किन ने लिखा था

तुम हो निर्मलनम सुन्दरता, तुम निर्मलतम रूप-छटा,
मैंने जो चाहा, सो पाया
स्रष्टा ने है अब तो मेरी तुम्हें बनाया।

अ० ब्र्यूल्लोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३१।

पुश्किन। प० सोकोलोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३६।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोंचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी। नताल्या बहुत ही सुन्दर थीं, उनके समकालीनों ने उनके रूप की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अपनी भावी पत्नी को समर्पित 'सौन्दर्य-देवी' कविता में पुश्किन ने लिखा था

तुम हो निर्मलतम सुन्दरता, तुम निर्मलतम रूप-छटा,
मैंने जो चाहा, सो पाया
स्रष्टा ने है अब तो मेरी तुम्हें बनाया।

अ० ब्रयूल्लोव द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८३१।

पीटर्सबर्ग के निकट त्सारस्कोये सेलो (ज़ार का गांव)। पार्क। १८३१ में पुश्किन ने त्सारस्कोये सेलो में एक बंगला किराये पर लिया। उन्हें "अद्भुत उपवनों" में, जो स्कूल के ज़माने में उन्हें बहुत प्रिय थे, पत्नी के साथ घूमना बहुत अच्छा लगता था। मेश्चेरिनाव द्वारा बनाया गया चित्र। १८२०-३०।

अलेक्सान्द्रा स्मिर्नोवा, विवाहपूर्व रोस्सेत कुलनाम (१८०६–१८८२)। सम्राज्ञी की सेविका-सगिनी। पुश्किन की मित्र। पुश्किन इसकी समझ-बूझ और स्वतंत्र चिन्तन को ऊंचा आंकते थे। १८२०-३० के लघु चित्र से।
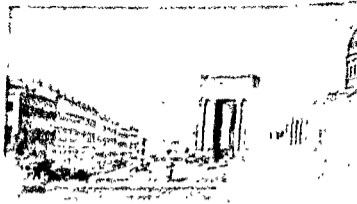
पावेल नाश्चोकिन (१८००–१८५४)। मास्को के एक कुलीन। मौलिक और भावावेशी प्रकृति के व्यक्ति। चौथे दशक में पुश्किन के एक घनिष्ठतम मित्र। जलरंग-चित्र। १८३६।

विस्सारिओन बेलिन्स्की (१८११–१८४८)। साहित्य-समालोचक और पत्रकार रूसी साहित्य में शास्त्रीय समालोचना के जनक। पुश्किन के कृतित्व पर कुछ बहुत ही श्रेष्ठ लेखों के रचयिता। जलरंग-चित्र। १८३०-३०।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोंचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी। व० गाउ द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८४३।

पुश्किन। त० राइट द्वारा बनाया गया उत्कीर्ण चित्र। १८३७।

नताल्या पुश्किना, विवाहपूर्व गोंचारोवा (१८१२–१८६३)। महाकवि की पत्नी।
व० गाउ द्वारा बनाया गया जलरंग-चित्र। १८४३।

लेर्मोन्तोव (१८१४–१८४१)। महान रूसी कवि जिन्होंने [illegible] पुश्किन की मृत्यु कविता रची जिसके लिये [illegible] से रूस सेना में काकेशिया भेज दिया गया। जलरंग-चित्र। १८४१।

येमेल्यान पुगाचोव (१७४४–१७७५)। ८वे दशक मे किसान-क्रान्ति के नेता। पुगाचोव के व्यक्तित्व मे पुश्किन ने बडी दिलचस्पी ली – उन्होने न केवल लेखागार मे सचित सभी दस्तावेजो का अध्ययन किया, बल्कि विद्रोह मे भाग लेनेवाले स्थानो पर भी गये और वहा उन्होने साक्षियो से बातचीत की। इसके परिणामस्वरूप 'कप्तान की बेटी' ऐतिहासिक उपन्यास और 'पुगाचोव का विद्रोह' शोध-ग्रन्थ का सृजन हुआ। 'पुगाचोव का विद्रोह' के प्रथम सस्करण मे प्रकाशित उत्कीर्ण-चित्र। १८३४।

येकातेरीना कारामजीना (१७८०–१८५१)। प्रसिद्ध इतिहासकार कारामजीन की पत्नी। युवाकाल में ही पुश्किन अक्सर पीटर्सबर्ग में कारामजीन परिवार में जाया करते थे। कारामजीना के प्रति वे स्नेह और आदर की भावना रखते थे। १८४०-५० का चित्र।

कोन्स्तान्तीन दान्जास (१८०१–१८७०)। स्कूल के जमाने में पुश्किन के मित्र और दान्तेस के साथ द्वन्द्व-युद्ध के समय पुश्किन की ओर से साक्षी। १९वीं शताब्दी के ४०वें दशक का रेखाचित्र।

येकातेरीना द्वितीया (१७२९-१७९६)। रूसी सम्राज्ञी जो १७६२ में सिंहासन पर बैठीं। "कप्तान की बेटी" उपन्यास में "अंग्रेजी नस्ल के कुत्ते के साथ ... सुबह का सफेद फ्राक", "रात की टोपी और रुईदार जाकेट पहने ... त्सारस्कोये सेलो के पार्क में सैर करती हुई येकातेरीना द्वितीया का जो अपनी देखा-सा बिम्ब प्रस्तुत किया गया है, उसकी प्रेरणा सम्भवतः चित्रकार बोरोवीकोव्स्की द्वारा १८२७ में बनाये गये उक्त उत्कीर्ण-चित्र से मिली।

येकातेरीना कारामज़ीना (१७८०–१८५१)। प्रसिद्ध इतिहासकार कारामज़ीन की पत्नी। युवाकाल से ही पुश्किन अक्सर पीटर्सबर्ग में कारामज़ीन परिवार में जाया करते थे। कारामज़ीना के प्रति वे स्नेह और आदर की भावना रखते थे। १८४०-५० का चित्र।

कोंस्तान्तीन दानज़ास (१८०१–१८७०)। स्कूल के ज़माने से पुश्किन के मित्र और दान्तेस के साथ द्वन्द्व-युद्ध के समय पुश्किन की ओर से साक्षी। १९वीं शताब्दी के ४थे दशक का रेखाचित्र।

२७ जनवरी (८ फरवरी), १८३७ को पुश्किन और दान्तेस का द्वन्द्व-युद्ध।
नाऊमोव द्वारा १८८४ में बनाया गया तैल चित्र।

अलेक्सान्द्र तुर्गेनेव (१७८४-१८४५)। इतिहासज्ञ, विद्वान, लेखक, ऊंचे सरकारी पदाधिकारी। पुश्किन के वरिष्ठ साथी, जो पीटर्सबर्ग से प्स्कोव और स्व्यातोगोर्स्क गिरजाघर तक पुश्किन के शव के साथ गये। लीथोग्राफ। १८३०।

व्लादीमिर दाल (१८०१-१८७२)। लेखक विद्वान डाक्टर। पुश्किन के मित्र। उन्होंने घायल पुश्किन का इलाज किया।

स्व्यातोगोर्स्क गिरजे में पुश्किन की कब्र। लीथोग्राफ। १८३७।

अलेक्सान्द्र तुर्गेनिव (१७८४–१८४५)। इतिहासज्ञ, विद्वान, लेखक, ऊंचे सरकारी पदाधिकारी। पुश्किन के वरिष्ठ साथी, जो पीटर्सबर्ग मे प्स्कोव और स्व्यातोगोर्स्क गिरजाघर तक पुश्किन के शव के साथ गये। लीथोग्राफ। १८३०।

व्लादीमिर दाल (१८०१–१८७२)। लेखक, विद्वान डाक्टर। पुश्किन के मित्र। उन्होंने घायल पुश्किन का इलाज किया।

ओपेकुशिन के खाके के मुताबिक मास्को में बनाया गया पुश्किन का स्मारक। यह स्मारक चन्दा जमा करके बनाया गया और १८८० में इसका उद्घाटन हुआ।

और उसकी कठोरता फौरन मेरी लल्लो-चप्पो में बदल गयी। तीन घोड़ो की बग्घी आन की आन मे तैयार हो गयी, मैं उसमे बैठा और कोचवान से कहा कि वह मुझे मेरे पिता जी के गाव की ओर ले चले।

बग्घी सोये हुए गावों के पास से बडी सडक पर भागी जा रही थी। मुझे एक बात का डर था – कही रास्ते मे रोक न लिया जाऊ। वोल्गा पर रात के समय बेडे और उस पर लटकी लाशों से हुई भेंट यदि विद्रोहियों की उपस्थिति को प्रमाणित करती थी, तो साथ ही इस बात का सबूत भी देती थी कि सरकार की ओर से भी जोरदार विरोध हो रहा है। किसी विकट स्थिति के लिये मेरी जेब मे पुगाचोव द्वारा दिया हुआ अनुमति-पत्र भी था और कर्नल ग्रिनेव का आदेश-पत्र भी। किन्तु रास्ते मे कोई नही मिला और सुबह होते न होते मुझे नदी और फर-वृक्षों का वह झुरमुट नजर आने लगा जिसके पीछे हमारा गाव था। कोचवान ने घोडो पर चाबुक बरसाया और पन्द्रह मिनट बाद मैं ... गाव मे पहुंच गया।

हमारी हवेली गांव के दूसरे सिरे पर थी। घोड़े पूरे जोर से सरपट दौड रहे थे। अचानक कोचवान उन्हे सड़क के बीचोबीच रोकने लगा। "क्या बात है?" मैंने बेसब्री से पूछा। "फौजी चौकी है, हुजूर," बहुत जोश में आये अपने घोड़ो को मुश्किल से रोक पाते हुए कोचवान ने उत्तर दिया। वास्तव मे ही मुझे मार्ग-बाधा और लट्ठ लिये सन्तरी दिखाई दिया। किसान-सन्तरी ने मेरे पास आकर टोपी उतार ली और पासपोर्ट मागा।

"क्या मतलब है इसका?" मैंने उससे पूछा। "किसलिये यहा यह बाधा बनायी गयी है? किसकी पहरेदारी कर रहे हो तुम?"

"हुजूर, हम विद्रोह कर रहे हैं," उसने सिर खुजलाते हुए जवाब दिया।

"आपके मालिक लोग कहा है?" मैंने पूछा और अनुभव किया कि मेरा दिल बैठा जा रहा है।

"मालिक लोग कहा हैं?" किसान ने सवाल दोहराया। "हमारे मालिक लोग खत्ती मे हैं।"

"खत्ती मे, यह कैसे?"

"बात यह है कि गाव-कमेटी के अन्द्रेई ने उनके पैरो मे शिकजे

डाल दिये हैं और वह उन्हे ज़ार-पिता के सामने ले जाना चाहता
"हे भगवान! अरे उल्लू, बाधा को हटा ले। मुह बाये देख रहा है?"

सन्तरी ने झिझक दिखाई। मैंने बग्घी से कूदकर उसके का घूसा जमाया (माफी चाहता हू) और खुद मार्ग-बाधा को हटा f किसान कुछ न समझ पाते हुए एक बुद्धू की तरह टुकुर-टुकुर मेरी देखता रह गया। मैं फिर से बग्घी मे सवार हुआ और हवेली की चलने का आदेश दिया। खत्ती अहाते मे थी। तालाबन्द दरवाजे दो किसान लट्ठ लिये खड़े थे। बग्घी बिल्कुल उनके सामने जाकर र मैं कूदकर नीचे उतरा और सीधा उनकी तरफ लपका। "दरव खोलो!" मैंने उनसे कहा। सम्भवत मैं बहुत भयानक लग रहा कुछ भी हो, वे दोनो लट्ठ फेंककर भाग गये। मैंने ताला और दरव तोड़ने की कोशिश की, मगर दरवाज़ा बलूत की लकड़ी का था बहुत बड़ा ताला तोड़ना मुमकिन नही था। इसी क्षण एक लम्बा-त जवान किसान नौकरो के घर से बाहर आया और उसने बड़ी अकड़ यह पूछा कि मैं हगामा करने की हिम्मत कैसे कर रहा हू।

"गाव-कमेटी वाला अन्द्रेई कहा है?" मैंने चिल्लाते हुए उ पूछा। "उसे बुलाओ मेरे पास।"

"अन्द्रेई नहीं, मैं ही हू अन्द्रेई अफानासियेविच," बड़े घम से कूल्हों पर हाथ रखे हुए उसने जवाब दिया। "क्या बात है?

जवाब देने के बजाय मैंने उसका गरेबान पकड़ लिया, खींचकर उसे खत्ती के दरवाजे पर ले गया और दरवाज़ा खोलने का हुक्म दिया उसने कुछ ज़िद्द की, मगर "पैतृक" दण्ड ने उस पर भी असर डाला उसने चाबी निकालकर खत्ती का दरवाज़ा खोल दिया। मैंने सरपट दहलीज़ लाघी और अन्धेरे कोने मे, जहा छत मे किये गये छोटे-स सूराख से धीमी-सी रोशनी आ रही थी, मुझे अपने माता-पिता दिखाई दिये। उनके हाथ बधे हुए थे और पैरो मे शिकजे थे। मैंने उन्हे अपनी बाहो मे भर लिया और मेरे मुह से एक भी शब्द नही निकल सका। दोनो हतप्रभ-से मेरी ओर ताक रहे थे – सैनिक जीवन के तीन सालों ने मुझे इतना बदल दिया था कि उनके लिये पहचान पाना सम्भव नही था। मा अचम्भे से चीख उठी और टपटप आसू गिराने लगी।

अचानक मुझे प्यारी और जानी-पहचानी आवाज़ सुनाई दी – "प्योतर अन्द्रेइच! यह आप हैं!" मैं स्तम्भित रह गया मैंने मुड़कर देखा तो पाया कि दूसरे कोने में मरीया इवानोव्ना भी उसी तरह बंधी हुई है।

पिता जी मुझे चुपचाप देखते जा रहे थे, खुद अपने पर विश्वास नही कर पा रहे थे। उनके चेहरे पर खुशी चमक रही थी। मैं झटपट तलवार से उनकी रस्सियों की गाठे काटने लगा।

"नमस्ते, नमस्ते पेत्रूशा," मुझे अपनी छाती से लगाते हुए पिता जी ने कहा, "भला हो भगवान का, तुम्हे देख पाये "

"पेत्रूशा, मेरे प्यारे," मा बोली, "भगवान तुम्हे यहा ले आया! तुम ठीक-ठाक तो हो?"

मैंने उन्हे इस जेल से बाहर निकालने की उतावली की, किन्तु दरवाज़े के पास जाने पर मैंने उसे फिर से बन्द पाया।

"अन्द्रेई," मैं चिल्लाया, "दरवाज़ा खोलो!"

"नही खुलेगा दरवाजा," गाव-कमेटी के मुखिया ने बाहर से जवाब दिया। "खुद भी यही बैठे रहो। हम तुम्हे हगामा करने और सरकारी कर्मचारियो को गरेबान से पकडने का मज़ा चखायेगे!"

मैं इस आशा से खत्ती मे इधर-उधर नज़र दौडाने लगा कि वहा से बाहर निकलने का कोई उपाय है या नही।

"बेकार कोशिश नही करो," पिता जी ने मुझसे कहा, "ऐसा बुरा मालिक नही हू मैं कि मेरी खत्ती मे चोर आसानी से घुस सके और बाहर निकल जाये।"

मेरे आने पर कुछ देर के लिये खुश हो उठनेवाली मेरी मा यह देखकर हताश हो गयी कि सारे परिवार की तरह मुझे भी अपनी जान गवानी होगी। किन्तु मैं जिस समय से माता-पिता और मरीया इवानोव्ना के पास आया था, अपने को अधिक शान्त अनुभव कर रहा था। मेरे पास तलवार और दो पिस्तौले थी और मैं घेरे का सामना कर सकता था। शाम होने तक ग्रिनेव को यहा पहुचना और हमें आज़ाद करवा लेना चाहिये था। मैंने अपने माता-पिता को यह सब कुछ बता दिया और मा को शान्त करने मे सफल हो गया। वे पूरी तरह मिलन की खुशी की तरग मे बह गये।

मैंने मा और मरीया इवानोव्ना को चुपचाप इशारा किया कि वे कोने मे चली जाये, म्यान से अपनी तलवार निकाल ली और दरवाज़े के बिल्कुल क़रीब दीवार से सटकर खडा हो गया। पिटा जी ने पिस्तौले लीं, दोनो के घोड़े चढा लिये और मेरी बगल मे खडे हो गये। ताले मे चाबी डालने की आवाज़ हुई, दरवाज़ा खुला और गाव-कमेटी के मुखिया का सिर दिखाई दिया। मैंने उस पर तलवार से वार किया, वह वही गिर गया और उसने भीतर आने का रास्ता रोक दिया। इसी समय पिता जी ने पिस्तौल से एक गोली चला दी। हमे घेरे मे लेनेवाले लोगो की भीड गालिया बकते हुए तितर-बितर हो गयी। मैंने घायल को दहलीज से भीतर खीच लिया और अन्दर से कुडी चढा दी। अहाता हथियारबन्द लोगो से भरा हुआ था। मैंने श्वाबरिन को उनमे पहचान लिया।

"डरे नही," मैंने अपनी मा और मरीया इवानोव्ना से कहा। "अभी उम्मीद बाकी है। और पिता जी, आप और गोली नही चलाइये। हमें आखिरी गोली बचाकर रखनी चाहिये।"

मा चुपचाप भगवान को याद कर रही थी। मरीया इवानोव्ना फरिश्ते जैसी शान्ति से उसके पास खडी हुई अपने भाग्य-निर्णय की प्रतीक्षा कर रही थी। दरवाज़े के उस ओर से धमकियां, गाली-गलौज और गन्दी बाते सुनाई दे रही थी। मैं अपनी पहलेवाली जगह पर और भीतर आने की हिम्मत करनेवाले को मौत के घाट उतारने को तैयार खडा था। बदमाश लोग अचानक खामोश हो गये। मेरा नाम लेकर पुकारनेवाले श्वाबरिन की आवाज़ मुझे सुनाई दी।

"मैं यहा हू, क्या चाहिये तुम्हे?"

"हथियार फेक दो, बुलानिन, सामना करना बेकार है। अपने बुजुर्गों पर रहम करो। ज़िद्द करके बच नही सकोगे। मैं तुम तक पहुच जाऊगा!"

"कोशिश करके देखो, गद्दार!"

"न तो खुद बेकार ही भीतर आऊगा और न अपने लोगो की ही जान खतरे मे डालूगा। मैं खत्ती को आग लगाने का हुक्म दे दूगा और फिर देखेगे कि तुम क्या करते हो, बेलोगोर्स्क के डोन क्विग्ज़ोट। अब तो दोपहर के खाने का वक्त हो गया। तुम इसी बीच फुरसत मे

भड़क उठी, छत्ती मे रोशनी हो गयी और दहलीज के नीचे वाले सूराखो मे धुआ निकलने लगा। तब मरीया इवानोव्ना मेरे पास आई और मेरा हाथ अपने हाथ मे लेकर धीरे-से बोली –

"बस, काफी हो चुका, प्योतर अन्द्रेइच! मेरी खातिर अपनी और अपने माता-पिता की जान नही लीजिये। मुझे बाहर जाने दीजिये। श्वाबरिन मेरी बात मान लेगा।"

"हरगिज ऐसा नही करूंगा," मैं बडे जोर से चिल्ला उठा। "आपको मालूम है न कि आपके साथ क्या बीतनेवाली है?"

"बेइज्जती मैं बर्दाश्त नही करूगी," मरीया इवानोव्ना ने शान्ति से जवाब दिया। "किन्तु यह सम्भव है कि मैं अपने मुक्तिदाता और उस परिवार को बचा पाऊ जिसने इतनी उदारता से मुझ यतीम को शरण दी। तो विदा अन्द्रेई पेत्रोविच, अब्दोत्या वसील्येव्ना। आप मेरे सरक्षक ही नही, इससे कही अधिक थे। मुझे अपना आशीर्वाद दीजिये। आप भी मुझे क्षमा करे, प्योतर अन्द्रेइच। आप विश्वास कर सकते हैं कि.. कि..." इतना कहते हुए वह रो पडी और उसने हाथो से मुह ढक लिया.. मैं तो पागल जैसा हो रहा था। मा रो रही थी।

"बस, अब यह सब रहने दो मरीया इवानोव्ना," मेरे पिता जी ने कहा। "कौन तुम्हे उठाईगीरो के पास अकेली जाने देगा! यहा बैठ जाओ और चुप रहो। मरना ही है, तो सभी एकसाथ मरेगे। सुनो, वे और क्या कह रहे है?"

"मेरी बात मानते हो या नही?" श्वाबरिन चिल्ला रहा था। "देख रहे हैं? पाच मिनट मे आप सब जलकर राख हो जायेगे।"

"नही मानेगे, नीच!" मेरे पिता जी ने दृढ आवाज मे जवाब दिया।

पिता जी के झुर्रियोवाले चेहरे पर अद्भुत उत्साह की सजीवता दिखाई दे रही थी, सफेद भौहो के नीचे चमकती हुई आखे दहशत पैदा कर रही थी। मुझे सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा –

"अब देर नही करनी चाहिये!"

उन्होने दरवाजा खोला। आग भीतर की ओर लपकी तथा शहतीरो और उनके बीच जमी हुई सूखी काई की तरफ बढने लगी। पिता जी ने पिस्तौल से गोली चलाई और "सब मेरे पीछे आओ!" चिल्लाते हुए दहकती दहलीज को लांघ गये। मैंने मा और मरीया इवानोव्ना

इस बात पर सोच-विचार कर लो। अलविदा, मरीया इवानोव्ना, आपसे क्षमा नही मागूगा – सम्भवत आपको तो अपने सूरमा के साथ अधेरे मे बैठे हुए ऊब महसूस नही हो रही होगी।"

बत्ती के पास सन्तरी तैनात करके श्वाबरिन चला गया। हम मौन रहे। हममें से हर कोई अपने-अपने विचारो मे खोया हुआ था, दूसरे से उन्हे कहने की हिम्मत नही कर पा रहा था। मैं उस सब की कल्पना करने लगा कि गुस्से मे आया हुआ श्वाबरिन क्या कुछ कर सकता है। अपनी तो मुझे लगभग कोई चिन्ता नही थी। मैं यह भी स्वीकार कर लेता हू कि अपने माता-पिता के भाग्य से भी मुझे मरीया इवानोव्ना के बारे मे कही ज्यादा फिक्र थी। मैं जानता था कि किसान और नौकर-चाकर मेरी मा को पूजते हैं तथा कडाई के बावजूद पिता जी को भी प्यार करते हैं, क्योकि वे न्यायप्रिय थे और अपने अधीन लोगो की वास्तविक आवश्यकताओ से परिचित थे। उनका विद्रोह रास्ते से भटक जाना था, कुछ देर का नशा था और उनके गुस्से की अभिव्यक्ति नही था। इसलिये वे जरूर ही उन पर रहम करेंगे। लेकिन मरीया इवानोव्ना? बदमाश और बेहया श्वाबरिन उसके साथ कैसा सुलूक करनेवाला है? इस भयानक विचार पर मैं तो सोचने की भी हिम्मत नही कर पा रहा था। भगवान क्षमा करे, उसे फिर से ज़ालिम दुश्मन को सौंपने के बजाय मैं तो खुद अपने हाथो से उसकी हत्या करने को तैयार था।

लगभग एक घण्टा और बीत गया। गाव मे नशे मे धुत लोगो के गाने गूजते थे। हमारी पहरेदारी करनेवालो को उनसे ईर्ष्या होती थी और वे हम पर झल्लाते हुए कोसने और हमें यातनाये देने तथा मार डालने की धमकिया दे रहे थे। हम यह इन्तज़ार कर रहे थे कि श्वाबरिन ने जो धमकिया दी हैं, उनका क्या नतीजा निकलता है। आखिर अहाते में बडी हलचल हुई और हमें फिर से श्वाबरिन की आवाज सुनाई दी –

"आप लोगो ने सोच-विचार कर लिया? अपनी खुशी से मेरे सामने हथियार फेंकने को तैयार हैं?"

किसी ने भी उसे उत्तर नही दिया। कुछ देर इन्तज़ार करने के बाद श्वाबरिन ने फूस लाने का हुक्म दिया। कुछ मिनट बाद आग

' हाथ पकड़े और रस्सी से उन्हें बाहर ले गया। पिता जी के कमज़ोर
रूप से घायल हुआ श्वाबरिन दहलीज़ के करीब पड़ा था। हमारे ऐसे
[illegible] लुटेरों-बदमाशों की भीड़ फिर से
हमला बोलकर हमें घेरने लगी। मैं तलवार से कुछ और वार करने
। सफल रहा किन्तु अच्छा निशाना बांधकर फेंकी गयी ईंट सीधी
री छाती में आकर लगी। मैं गिर पड़ा और एक क्षण को बेहोश हो
गया। होश आने पर मैंने श्वाबरिन को खून से सनी हुई घास पर बैठे
पाया और हमारा सारा परिवार उसके सामने था। मुझे बगलों में हाथ
डालकर सहारा दिया जा रहा था। किसानों कज़्ज़ाकों और बश्कीरियों
की भीड़ हमें घेरे थी। श्वाबरिन के चेहरे का रंग भयानक रूप से पीला
था। एक हाथ से वह अपनी घायल बगल को दबाये हुए था। उसके
चेहरे पर पीड़ा और क्रोध अंकित थे। उसने धीरे-धीरे सिर ऊपर उठाया,
मेरी ओर देखा और क्षीण तथा अस्पष्ट आवाज़ में कहा –

"इसे सूली दे दो सभी को सिर्फ इस लड़की को छोड़कर..."

बदमाशों की भीड़ ने इसी क्षण हमें घेर लिया और चीखते-चिल्लाते हुए फाटक की ओर घसीट ले गयी। किन्तु ये लोग हमें छोड़कर अचानक भाग खड़े हुए। ग्रिनेव और उसके पीछे नंगी तलवारें लिये हुए पूरा दस्ता फाटक को लांघकर अहाते में आ रहा था।

विद्रोही सभी दिशाओं में भागे जा रहे थे, हुस्सार उनका पीछा कर रहे थे, उनके टुकड़े कर रहे थे और बन्दी बना रहे थे। ग्रिनेव ने घोड़े से नीचे उतरकर मेरे माता-पिता को प्रणाम किया और तपाक से मेरे साथ हाथ मिलाया। "तो मैं ठीक वक्त पर पहुंच गया," उसने हमसे कहा। "लो, यह है तुम्हारी मंगेतर!" मरीया इवानोव्ना लज्जारुण हो गयी। पिता जी उसके पास गये और यद्यपि वे मन में बड़ी भाव-विह्वलता अनुभव कर रहे थे, तथापि बाहरी तौर पर शान्त-स्थिर रहते हुए उन्होंने उसके प्रति आभार प्रकट किया। मां ने उसे गले लगाया, रक्षक-फरिश्ता कहा। "हमारे यहां पधारिये," पिता जी ने उससे कहा और ग्रिनेव को हमारे घर की ओर ले चले।

श्वाबरिन के पास से गुजरते हुए ग्रिनेव रुका।

"यह कौन है?" घायल की तरफ देखते हुए उसने पूछा।

"यह है इनका मुखिया, इस गिरोह का सरदार," पिता जी ने कुछ गर्व के साथ उत्तर दिया, जिससे यह प्रकट हो गया कि वे पुराने फ़ौजी हैं, "भगवान ने मेरे कमजोर हाथ मे इस जवान बदमाश को दण्ड देने और अपने बेटे की चोट का बदला लेने की शक्ति देकर बड़ी मदद की।"

"यह श्वाबरिन है " मैंने ग्रिनेव से कहा।

"श्वाबरिन! बहुत खुशी हुई! हुस्सारो! इसे ले जाओ! हमारे चिकित्सक से कहें कि इसके घाव पर पट्टी बाध दे और आख की पुतली की तरह इसकी रक्षा करे। श्वाबरिन को अवश्य ही कज़ान के गुप्त आयोग के सामने पेश करना चाहिये। वह मुख्य अपराधियो मे से एक है और उसकी गवाही महत्वपूर्ण होनी चाहिये।"

श्वाबरिन ने अपनी थकी हुई आखे खोली। उसके चेहरे पर शारीरिक पीडा के अलावा और कुछ नज़र नही आ रहा था। हुस्सार उसे चोगे पर लिटाकर ले गये।

हम कमरे मे दाखिल हुए। मैंने अपने बचपन के वर्षों को याद करते हुए धडकते दिल से इधर-उधर नजर घुमाई। घर मे कोई परिवर्तन नही हुआ था, सब कुछ अपनी पहले वाली जगह पर था। श्वाबरिन ने उसे लूटने नही दिया था और बेहद पतन के बावजूद उसमे तुच्छ लालच के प्रति स्वाभाविक घृणा बनी रही थी। नौकर-चाकर प्रवेश-कक्ष मे सामने आये। उन्होंने विद्रोह मे भाग नही लिया था और हमारे निजात पाने पर सच्चे मन से खुशी ज़ाहिर की। सावेलिच तो विजेता की तरह रग मे था। यहा यह बताना उचित होगा कि लुटेरो के हमले से पैदा हुई घबराहट के वातावरण मे वह अस्तबल मे भाग गया जहा श्वाबरिन का घोडा खडा था, उसने उस पर जीन कसा, धीरे-से उसे बाहर लाया और हल्ले-गुल्ले की बदौलत सब की आख बचाकर उसे घाट पर सरपट दौडा ले गया। वहा उसे वोल्गा के इस पार आराम करती हुई रेजिमेंट दिखाई दी। हमारे सिरो पर मडरा रहे खतरे के बारे मे जानकर ग्रिनेव ने फौरन घोडो पर सवार होने तथा सरपट घोडे दौडाते हुए हमारे पास पहुचने का

श्वाबरिन के पास से गुजरते हुए ग्रिनेव रुका।

"यह कौन है?" घायल की तरफ देखते हुए उसने पूछा।

"यह है इनका मुखिया, इस गिरोह का सरदार," पिता जी ने कुछ गर्व के साथ उत्तर दिया, जिससे यह प्रकट हो गया कि वे पुराने फौजी हैं, "भगवान ने मेरे कमजोर हाथ मे इस जवान बदमाश को दण्ड देने और अपने बेटे की चोट का बदला लेने की शक्ति देकर बडी मदद की।"

"यह श्वाबरिन है" मैंने ग्रिनेव से कहा।

"श्वाबरिन! बहुत खुशी हुई! हुस्सारो! इसे ले जाओ! हमारे चिकित्सक से कहे कि इसके घाव पर पट्टी बाध दे और आख की पुतली की तरह इसकी रक्षा करे। श्वाबरिन को अवश्य ही कज़ान के गुप्त आयोग के सामने पेश करना चाहिये। वह मुख्य अपराधियो में से एक है और उसकी गवाही महत्वपूर्ण होनी चाहिये।"

श्वाबरिन ने अपनी थकी हुई आखे खोली। उसके चेहरे पर शारीरिक पीडा के अलावा और कुछ नज़र नही आ रहा था। हुस्सार उसे चोगे पर लिटाकर ले गये।

हम कमरे मे दाखिल हुए। मैंने अपने बचपन के वर्षो को याद करते हुए धडकते दिल से इधर-उधर नज़र घुमाई। घर मे कोई परिवर्तन नही हुआ था, सब कुछ अपनी पहले वाली जगह पर था। श्वाबरिन ने उसे लूटने नही दिया था और बेहद पतन के बावजूद उसमे तुच्छ लालच के प्रति स्वाभाविक घृणा बनी रही थी। नौकर-चाकर प्रवेश-कक्ष मे सामने आये। उन्होंने विद्रोह मे भाग नही लिया था और हमारे निजात पाने पर सच्चे मन से खुशी जाहिर की। सावेलिच तो विजेता की तरह रग मे था। यहा यह बताना उचित होगा कि लुटेरो के हमले से पैदा हुई घबराहट के वातावरण में वह अस्तबल मे भाग गया जहा श्वाबरिन का घोड़ा खडा था, उसने उस पर ज़ीन कसा, धीरे-से उसे बाहर लाया और हल्ले-गुल्ले की बदौलत सब की आख बचाकर उसे घाट पर सरपट दौडा ले गया। वहा उसे वोल्गा के इस पार आराम करती हुई रेजिमेट दिखाई दी। हमारे सिरो पर मडरा रहे खतरे के बारे मे जानकर ग्रिनेव ने फौरन घोडो पर सवार होने तथा सरपट घोडे दौड़ाते हुए हमारे पास पहुचने का

आलिंगन कर रही थी। कोई मेरे कान में मानो फुसफुसा रहा था कि मेरे सभी दुर्भाग्यों का अभी अन्त नहीं हुआ है। दिल यह महसूस कर रहा था कि अभी एक नया तूफ़ान आयेगा।

हमारे कूच और पुगाचोव के साथ लड़ाई के अन्त की चर्चा नहीं करूंगा। हम पुगाचोव द्वारा तबाह किये गये गांवों-बस्तियों में से गुजरे और हमने अनिच्छा से बदकिस्मत लोगों से वह छीन लिया जो लुटेरे छोड़ गये थे।

लोग यह नहीं जानते थे कि किसके आदेशों का पालन करें। शासन तो सभी जगह पर समाप्त हो गया था। ज़मींदार जंगलों में जा छिपे थे। डाकुओं-लुटेरों के गिरोह सभी जगह लूट-मार कर रहे थे। अलग-अलग फ़ौजी दस्तों के अफ़सर, जिन्हें उस वक्त अस्त्राखान की तरफ़ भागे जा रहे पुगाचोव का पीछा करने के लिये भेजा गया था, अपनी मर्जी से दोषियों और निर्दोषों को भी सज़ा देते थे. जहां यह आग भड़की हुई थी, उस सारे इलाके की ही भयानक हालत थी। भगवान न करे कि कभी बेमानी और क्रूरतापूर्ण रूसी विद्रोह को देखना पड़े। हमारे यहां जो लोग असम्भव उथल-पुथल की कल्पना करते हैं, वे या तो जवान हैं और हमारी जनता को नहीं जानते या फिर संगदिल हैं जिनके लिये दूसरों का सिर एक दमड़ी का है और अपनी गर्दन की कीमत एक कौड़ी है।

पुगाचोव भागता जा रहा था और जनरल इवान इवानोविच मिख़ेलसोन उसका पीछा कर रहा था। जल्द ही हमें यह पता चला कि उसे पूरी तरह कुचल दिया गया है। ग्रिनेव को अपने जनरल से यह ख़बर मिली कि नकली सम्राट को गिरफ़्तार कर लिया गया है और साथ ही उसे आगे न बढ़ने का आदेश प्राप्त हुआ। आख़िर तो मैं घर जा सकता था। मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था–लेकिन एक अजीब-सी भावना मेरी ख़ुशी पर छाया डाल रही थी।

पुश्किन के गद्य पर एक दृष्टि

कथा-साहित्य का सृजन महाकवि पुश्किन के कृतित्व के विकास का नया चरण था।

तीसरे दशक के मध्य मे पुश्किन गद्य की ओर उन्मुख हुए। १८२७ मे उन्होने 'पीटर महान का सेवक' ऐतिहासिक उपन्यास लिखना आरम्भ किया जो अधूरा ही रह गया।

तीसरे दशक के अन्त मे उन्होने १८१२ के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध और १८२५ के दिसम्बरवादियो के विद्रोह के विषय से घनिष्ठ रूप मे सम्बन्धित कई गद्य-रचनाओ के अश लिखे और पाण्डुलेख तैयार किये।

१८३० मे पुश्किन ने बोल्दीनो गाव मे एक के बाद एक पाच लम्बी कहानिया लिखी और उन्हें 'बेल्किन की कहानिया' शीर्षक के अन्तर्गत सूत्रबद्ध किया। रूसी साहित्य मे पुश्किन ही ऐसे पहले लेखक थे जिन्होने रूसी लोगो की विभिन्न सामाजिक श्रेणियो के जीवन और रहन-सहन का चित्रण आरम्भ किया। भूदासो की स्थिति की ओर कवि ने विशेषत बहुत ध्यान दिया। जीवन के अन्तिम वर्षों मे उनके प्रचारलेखो तथा कलात्मक गद्य-रचनाओ – 'गोर्यूखिनो गाव की कहानी', 'दुब्रोव्स्की', 'कप्तान की बेटी' आदि मे किसानो का विषय उनके कृतित्व का मुख्य विषय बन गया।

अत्यधिक स्पष्टता, अभिव्यक्ति की सक्षिप्तता और यथातथ्यता, अलकृत करनेवाले किसी भी प्रकार के रूपको और विशेषणो का सर्वथा अभाव, जल्दी मे बढता हुआ कथानक – ये हैं पुश्किन की शैली के

किया है। उसके पोते गोलीत्सिन ने पुश्किन को बताया कि एक बार वह जुए मे हार गया और दादी से पैसे मागने के लिये उसके पास आया। उसने पैसे तो नही दिये, मगर उसे तीन पत्ते बता दिये "पोते ने पत्ते चले और जीत गया। आगे का कथानक मनगढन्त है।"

पुश्किन के ही कथनानुसार यह लघु-उपन्यास बहुत लोकप्रिय हुआ–"मेरी 'हुक्म की बेगम' का बडा चलन है। खिलाडी तिक्की, सत्ती और इक्के पर दाव लगाते हैं।"

कप्तान की बेटी

चौथे दशक के आरम्भ से पुश्किन ने किसानो के विद्रोह की विषय-वस्तु मे विशेष रुचि ली। इस विषय पर चिन्तन करते हुए येमेल्यान पुगाचोव (१७४४–१७७५) के विद्रोह की ओर उनका ध्यान गया। कवि के मस्तिष्क मे पुगाचोव के विद्रोह और कुलीन अनुयायी के बारे मे उपन्यास लिखने के विचार ने जन्म लिया। जनवरी १८३३ मे पुश्किन ने उपन्यास की पहली योजना तैयार की। शुरू मे उन्होने एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच श्वानविच को उपन्यास का नायक बनाना चाहा। श्वानविच ग्रेनादेर रेजिमेंट मे अफसर था, पुगाचोव के साथ हो गया था और बाद मे उसे साइबेरिया मे निर्वासित कर दिया गया था।

पुश्किन ने ऐतिहासिक उपन्यास 'कप्तान की बेटी' और वैज्ञानिक ग्रन्थ 'पुगाचोव के विद्रोह का इतिहास' पर एकसाथ काम करते हुए लेखागारो की सामग्री का अध्ययन किया और कभी विद्रोह की लपेट मे आनेवाले स्थानो पर जाकर साक्षियों से बातचीत की।

उपन्यास की प्रारम्भिक योजना मे बहुत काफी परिवर्तन हुआ। पुगाचोव के विद्रोह का विषय अधिकाधिक सशक्त होता गया और साथ ही इसकी "रोमानी घटना"–उपन्यास के नायक और दुर्गपति की बेटी के प्रेम की दास्तान–ठोस शक्ल हासिल करती गयी।

उपन्यास धीरे-धीरे लिखा गया और १८३६ की पतझर मे समाप्त हुआ। सेसर के सामने इसे पेश करते हुए पुश्किन ने २५ अक्तूबर, १८३६ को सेसर-अधिकारी प० कोर्साकोव को लिखा –"मिरोनोव

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन को इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के सबध मे आपकी राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बडी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमे इस पते पर भेजे

प्रगति प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।